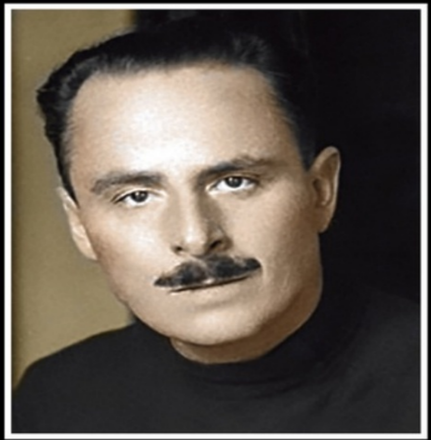
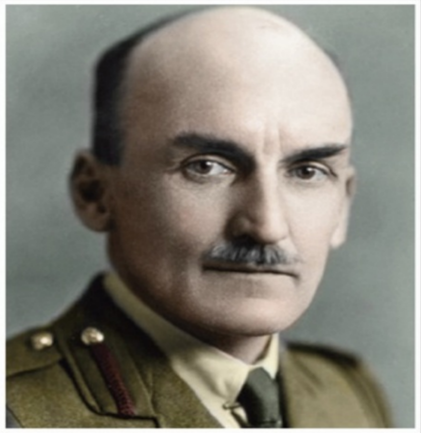




FASCIST VOICES

ESSAYS FROM THE 'FASCIST QUARTERLY' 1936-1940



Volume One

फासीवादी आवाज़ें

'फासीस्ट क्वार्टरली' से निबंध 1936-1940

खंड एक

फासीवादी आवाज़ें

'फासीस्ट क्वार्टरली' से निबंध 1936-1940

खंड एक

सैंक्चुअरी प्रेस लिमिटेड
71-75 शेल्टन स्ट्रीट
कोवेंट गार्डन
लंदन WC2H 9JQ
www.sanctuarypress.com ईमेल:
info@sanctuarypress.com

फ़ासीवादी आवाज़ें - भाग एक

इस संस्करण में निम्नलिखित के निबंध शामिल हैं:

जॉन बेकेट

जेम्स ड्रेनन नोरा एलाम जनरल

फ्रेंको मेजर-जनरल जे.

एफ: सी. फुलर जोसेफ

गोएबल्स जे.के. हेडन मैक्स हंगर जोरियन जेन्क्स विलियम

जॉयस डॉ. रॉबर्ट ले फ्रांसिस

मैकेवॉय सर ओसवाल्ड

मोस्ले एज्रा पाउंड
विदकुन क्विस्लिंग

अल्फ्रेड रोसेनबर्ग आर्थर रीड

ऐनी सीलिग-थॉमन क्लाउड

सटन अलेक्जेंडर रेवेन थॉमसन

ए. यूसुफ अली

विषयसूची

सर ओसवाल्ड मोस्ले द्वारा फासीवाद का दर्शन

बुधवार, 22 मार्च 1933 को इंग्लिश स्पीकिंग यूनियन में सर ओसवाल्ड मोस्ले द्वारा दिया गया व्याख्यान।

हे हमारे विरोधी आरोप लगाते हैं कि फ़ासीवाद की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या दर्शन नहीं है, और आज दोपहर मेरा काम यह सुझाव देना है कि फ़ासीवाद की जड़ें इतिहास में गहरी हैं और इसे चिंतनशील मन की कुछ बेहतरीन उड़ानों ने पोषित किया है। मैं निश्चित रूप से जानता हूँ कि दैनिक प्रेस के स्तंभों में हमारी गतिविधियों से ज़्यादा दर्शन जुड़ा नहीं है, और जब आपने पढ़ा कि मुझे "फ़ासीवाद का दर्शन" पर व्याख्यान देना है, तो शायद आप में से कई लोगों ने कहा होगा: "इस गैंगस्टर का दर्शन से क्या लेना-देना है?" हालाँकि, मुझे विश्वास है कि आप यह मानेंगे कि जनमानस के ये महान दर्पण हमेशा बहुत सटीक प्रतिबिंब नहीं देते हैं, और जबकि आप हमारी प्रगति के केवल अधिक प्रेरक क्षणों के बारे में ही पढ़ते हैं, फिर भी ऐसे अन्य क्षण भी हैं, जिनमें विचार और रचनात्मक अवधारणा की कुछ गहराई है। अभी तक यह कुछ हद तक सच है कि फ़ासीवादी दर्शन ने कोई ठोस और निश्चित रूप धारण नहीं किया है, लेकिन आपको यह याद रखना चाहिए कि फ़ासीवादी आस्था केवल दस वर्षों से ही अस्तित्व में है: यह पिछले दशक का विकास है। हालाँकि, इसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि पहले से ही कुछ सूत्रीकरण करने में सक्षम है, और यह इतिहास के किसी भी अन्य महान राजनीतिक धर्म में हुए विकास की तुलना में बहुत कम समय में हुआ है। जिस प्रकार कई महान देशों में फ़ासीवादी आंदोलन स्वयं अभूतपूर्व गति से सत्ता की ओर बढ़ा है, उसी प्रकार एक स्थायी अवधारणा, जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण के रूप में फ़ासीवादी धर्म और दर्शन, पुराने धर्मों के दर्शनों की तुलना में कहीं अधिक तेज़ी से आगे बढ़ा है। उदारवाद को ही लें: वोल्टेयर और रूसो जैसे लोगों के लेखन और अठारहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में अंग्रेज राजनेताओं के हाथों उदारवादी सिद्धांत के अंतिम रूप से निर्माण के बीच एक बहुत लंबा अंतराल बीता।

वास्तव में, ये महान राजनीतिक आंदोलन और मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल बहुत धीरे-धीरे एक निश्चित विचार-प्रणाली और साथ ही एक कार्य-प्रणाली के रूप में विकसित हुए; और फ़ासीवादी मामले में, यह अपेक्षा करना शायद जल्दबाज़ी होगी कि दस वर्षों के अंत में, इसने एक ठोस रूप धारण कर लिया होगा। फिर भी, मेरा मानना है कि फ़ासीवादी दर्शन को सुबोध शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है, और हालाँकि यह इस युग के विचार में एक बिल्कुल नया योगदान देता है, फिर भी यह सिद्ध किया जा सकता है कि इसकी उत्पत्ति और ऐतिहासिक समर्थन, दोनों ही अतीत के स्थापित विचार से प्राप्त हुए हैं।

सबसे पहले, मेरा सुझाव है कि अधिकांश क्रिया दर्शन किसी पूर्ववर्ती काल के सांस्कृतिक संघर्षों के संश्लेषण से निकले हैं। जहाँ संस्कृति, विचार और अमूर्त चिंतन के युग में आपको दो महान संस्कृतियाँ एक-दूसरे के विपरीत मिलती हैं, वहीं क्रिया के अगले युग में आपको प्रायः उन दो विपरीतताओं के बीच व्यवहार में कुछ संश्लेषण मिलता है जो क्रिया के एक व्यावहारिक सिद्धांत की ओर ले जाता है। यह अवधारणा आपको कुछ हद तक स्पेंग्लर के दृष्टिकोण का सुझाव दे सकती है; और यह बिल्कुल सच है कि महान जर्मन दार्शनिक ने फ़ासीवादी विचार की व्यापक पृष्ठभूमि में चित्रण करने के लिए संभवतः किसी अन्य की तुलना में अधिक काम किया है। लेकिन यह एक बहुत व्यापक पृष्ठभूमि है। यह विश्व इतिहास की एक महान पृष्ठभूमि है जहाँ से एक फ़ासीवादी सुझाव उभरता है।

इससे ज़्यादा कुछ नहीं। और हो सकता है कि वह अपने जन्मजात निराशावाद के कारण इस विषय के करीब आने से रुका हुआ हो, और मैं विनम्रतापूर्वक कहूँगा कि यह आधुनिक विज्ञान और यांत्रिक विकास के प्रति उसकी पूरी अज्ञानता से उपजा है।

यदि आप स्पेंग्लरियन चश्मे से देखेंगे, तो आप इस निष्कर्ष पर अवश्य पहुंचेंगे कि

अत्यधिक निराशावाद इसलिए क्योंकि वे उस कारक को अस्पष्ट कर देते हैं जो पहली बार मनुष्य के हाथों में गरीबी की समस्या को पूरी तरह से खत्म करने की क्षमता प्रदान करता है। और मेरा मानना है कि इस विशाल नए कारक के बारे में हमारे जर्मन दार्शनिक की गलतफहमी ही उन्हें उनके निराशावादी निष्कर्ष पर ले जाती है। फिर भी, यह किसी भी तरह से विश्व चिंतन में उनके महान योगदान को अमान्य नहीं करता।

आप सही ही यह निष्कर्ष निकालेंगे कि मेरे इस सुझाव कि प्रतीत होता है कि विरोधी संस्कृतियों का मेल, जो कर्म के अगले युग की ओर ले जाता है, उस काल के एक दार्शनिक बच्चे के निर्माण में, जो कर्म में अभिव्यक्त होता है, स्पेंग्लरियन विचार से कुछ हद तक व्युत्पन्न है। लेकिन मुझे लगता है कि मैं आपको दिखा सकता हूँ कि फ़ासीवादी मामले में यह सिद्धांत वास्तविक व्यवहार में कैसे लागू होता है। मैं आपको सुझाव दूँगा कि पिछली शताब्दी में, दो हज़ार साल पुरानी ईसाई सभ्यता पर नीत्शे के विचारों के ज़बरदस्त प्रभाव से प्रमुख बौद्धिक संघर्ष उत्पन्न हुआ था। वह प्रभाव बहुत धीरे-धीरे महसूस किया गया। इसके पूर्ण निहितार्थ आज ही सामने आ रहे हैं। लेकिन आधुनिक विचार में आप जहाँ भी मुड़ेंगे, आपको मनुष्य के मन और आत्मा पर प्रभुत्व के लिए उस विशाल संघर्ष के परिणाम मिलेंगे। एक धर्म था जिसने, जहाँ तक पश्चिम का संबंध है, कई शताब्दियों तक मानव विचार पर व्यापक रूप से प्रभुत्व बनाए रखा। और अचानक, पहली बार, उस धर्म और उस विचार को प्रभावी ढंग से चुनौती दी गई, और कम से कम उस समय के लिए उसकी नींव हिल गई। इसकी तीव्र ऊर्जा और असाधारण प्रतिभा के साथ निंदा की गई - मौलिक रूप से निंदा की गई।

जैसा कि आप बाद में देखेंगे, मैं स्वयं ईसाई धर्म के विरुद्ध तर्क नहीं दे रहा हूँ, क्योंकि मैं आपको यह दिखाने जा रहा हूँ कि मैं कैसे मानता हूँ कि नीत्शेवादी और ईसाई सिद्धांत संश्लेषण योग्य हैं। लेकिन इस बिंदु पर मेरे लिए इन दोनों धर्मों में मूलभूत अंतरों की जाँच करना और यह देखना आवश्यक है कि अंतर कहाँ जमा हुए हैं और समानताएँ कहाँ उभरती हैं।

जैसा कि आप जानते हैं, नीत्शे ने ईसाई विचारधारा की पूरी बुनियाद को चुनौती दी थी। उन्होंने कहा था: 'यह गुलामों और कमज़ोरों का धर्म है। यह उन लोगों का विश्वास है जो जीवन से भाग रहे हैं, जो वास्तविकता का सामना नहीं करना चाहते, जो किसी स्वप्निल परलोक में मोक्ष की तलाश में हैं—ऐसा मोक्ष जिसे पाने के लिए उनके पास न तो इतनी ऊर्जा है और न ही इतनी मर्दानगी कि वे इस धरती पर खुद को पा सकें। यह कमजोरी और समर्पण की भावना से उपजा है।' उन्होंने इसकी निंदा एक बड़े ही तीखे शब्द में की थी, अगर मुझे ठीक से याद है, तो 'वह धर्म जिसने मानवजाति को जकड़ लिया है और कमज़ोर कर दिया है।'

और इस विश्वास के स्थान पर उन्होंने महामानव की अवधारणा गढ़ी, एक ऐसा मनुष्य जो कठिनाइयों और खतरों का सामना करता है, भौतिक वस्तुओं और पर्यावरण की कठिनाइयों से जूझता हुआ आगे बढ़ता है, ताकि इस धरती पर, अपनी एक अलग दुनिया हासिल कर सके, जीत सके और रच सके। यह न केवल विचार के, बल्कि जीवन के पूरे आधार के लिए एक चुनौती थी। और इसने दुनिया के विचार की नींव हिला दी। उस समय जो लोग उस विवाद से गंभीरता से जुड़े थे, उन्हें लगा होगा कि इन पंथों में से एक या दूसरे को विजयी होना ही होगा, और एक या दूसरे को नष्ट होना ही होगा; उन परस्पर विरोधी सिद्धांतों का कोई भी संयोजन, कोई भी संश्लेषण पूरी तरह से असंभव था।

अब मेरा मानना है, जैसा कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अक्सर होता है, कि जो पंथ इतने अलग-अलग दिखते हैं, वे वास्तव में बारीकी से जाँच करने पर कुछ सामंजस्य और निश्चित रूप से एक निश्चित संश्लेषण की संभावना रखते हैं; और मुझे लगता है कि मैं आपको दिखा सकता हूँ कि वास्तव में, आज के फ़ासीवादी सिद्धांत में, आपको दोनों पंथों की महान विशेषताओं का पूर्ण मेल मिलता है। एक ओर, ईसाई धर्म से, सीधे ईसाई अवधारणा से लिए गए फ़ासीवाद में, आप दूसरों के हित में, दुनिया के हित में, अपने देश के हित में सेवा, आत्म-त्याग और आत्म-बलिदान की विशाल दृष्टि पाते हैं; व्यक्ति का उन्मूलन नहीं, बल्कि व्यक्ति का अपने से कहीं अधिक महान किसी चीज़ में विलय; और आपके पास फ़ासीवाद का वह मूल सिद्धांत है—सेवा, आत्म-समर्पण—जिसे फ़ासीवादी सबसे बड़ा उद्देश्य मानता है

और दुनिया का सबसे बड़ा आवेग। दूसरी ओर, आप नीत्शे के विचार से पुरुषत्व, मानवजाति के मार्ग में बाधा डालने वाली सभी विद्यमान चीज़ों को चुनौती, समर्पण के सिद्धांत का पूर्ण त्याग; सभी बाधाओं से जूझने और उन पर विजय पाने की दृढ़ क्षमता पाते हैं। वास्तव में, आपने शक्तिशाली और आत्म-सहायता वाले पुरुषों के सिद्धांत की रचना की है, जो फ़ासीवाद की एक और उत्कृष्ट विशेषता है।

इसलिए हम पाते हैं—मुझे लगता है कि मैं दावा कर सकता हूँ—कि इन दो महान सिद्धांतों का एक मेल आज के फ़ासीवाद के व्यावहारिक सिद्धांत में अभिव्यक्त हो रहा है। और यह, वास्तव में, जीवन के प्रति हमारे संपूर्ण दृष्टिकोण में परिलक्षित होता है। हम इसे सामान्य अस्तित्व के सबसे छोटे विवरणों तक सीमित कर सकते हैं। सबसे व्यापक और सबसे अमूर्त अवधारणा से लेकर हम दैनिक जीवन की सबसे विस्तृत चीज़ों तक पहुँच सकते हैं।

हम अपने सभी लोगों से लोक सेवा की एक सर्वोपरि अवधारणा की माँग करते हैं, लेकिन बदले में हम उन्हें यह भी प्रदान करते हैं और मानते हैं कि फ़ासीवादी अवधारणा के अनुसार राज्य को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए। अपने सार्वजनिक जीवन में, व्यक्ति को राज्य के एक योग्य सदस्य के रूप में आचरण करना चाहिए, अपने प्रत्येक कार्य में उसे राष्ट्र के कल्याण के अनुरूप होना चाहिए। दूसरी ओर, बदले में उसे राज्य से एक व्यक्ति के रूप में जीने और विकसित होने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है। और हमारी नैतिकता में—और मुझे लगता है कि संभवतः मैं यह दावा कर सकता हूँ कि यही एकमात्र सार्वजनिक नैतिकता है जिसमें निजी व्यवहार सार्वजनिक विरोध के साथ पूरी तरह मेल खाता है—हमारी नैतिकता में किसी भी नैतिक प्रश्न की एकमात्र कसौटी यह है कि क्या यह किसी भी तरह से व्यक्ति की राज्य की सेवा करने की शक्ति को बाधित या नष्ट करता है। उसे इन प्रश्नों का उत्तर देना होगा: "क्या यह कार्य राष्ट्र को क्षति पहुँचाता है? क्या यह राष्ट्र के अन्य सदस्यों को क्षति पहुँचाता है? क्या यह राष्ट्र की सेवा करने की मेरी अपनी क्षमता को क्षति पहुँचाता है?" और यदि इन सभी प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट है, तो व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता है; और यह राज्य के अंतर्गत व्यक्ति को अब तक की सबसे बड़ी स्वतंत्रता प्रदान करता है जो राज्य के अंतर्गत किसी भी प्रणाली या किसी भी धार्मिक प्राधिकरण ने व्यक्ति को कभी प्रदान की है।

उस नैतिक कसौटी के सबसे निकट का दृष्टिकोण संभवतः यूनानी सभ्यता का दृष्टिकोण था, जिसकी संगठनात्मक अवधारणा, निस्संदेह, राज्य की अवधारणा थी जो आज की फासीवादी अवधारणा से बहुत कमतर नहीं थी।

वह रवैया, वह दार्शनिक पृष्ठभूमि फासीवादियों पर सामाजिक आचरण के कुछ बहुत स्पष्ट नियम थोपती है, जो मौजूदा व्यवस्था को एक विस्तृत चुनौती के समान हैं, हालाँकि हम इस विवरण में गहराई से नहीं जाएँगे, सिवाय इसके कि ये व्यापक सिद्धांत विस्तार में कम किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम उस व्यवस्था को हास्यास्पद मानते हैं जिसमें किसी व्यक्ति पर जुर्माना लगाया जा सकता है यदि वह कानून द्वारा निर्धारित समय के बाद शराब पीकर खुद को चोट पहुँचाने का जोखिम उठाता है, लेकिन वह व्यक्ति, एक बड़े या छोटे सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में, पूरी तरह से दंड से मुक्त होकर ऐसी कार्रवाई कर सकता है जिससे राज्य की पूरी संरचना को खतरा हो सकता है। यदि वह खुद को थोड़ा सा भी नुकसान पहुँचाने का जोखिम उठाता है, तो कानून की पूरी ताकत उसके खिलाफ लामबंद हो जाती है; फिर भी अपनी सार्वजनिक हैसियत में वह राष्ट्र के पूरे जीवन को खतरे में डाल सकता है: वह राज्य के स्तंभों को ही खतरा पहुँचा सकता है।

फ़ासीवादी सिद्धांत निजी स्वतंत्रता और सार्वजनिक सेवा है। यह हमारे सार्वजनिक जीवन में, और दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार में, एक निश्चित अनुशासन और संयम लागू करता है; लेकिन केवल हमारे सार्वजनिक जीवन में; और मैं दृढ़ता से यह तर्क देना चाहूँगा कि निजी स्वतंत्रता प्राप्त करने का एकमात्र तरीका एक सार्वजनिक संगठन है जो आज दुनिया में व्याप्त आर्थिक अराजकता से कुछ व्यवस्था ला सके, और ऐसा सार्वजनिक संगठन केवल उन अधिकार और अनुशासन के तरीकों से ही सुरक्षित किया जा सकता है जो फ़ासीवाद में निहित हैं।

दार्शनिक पक्ष की ओर लौटते हुए, हम पाते हैं कि फ़ासीवादी दर्शन ने स्वाभाविक रूप से उसके जीवन में एक निश्चित अनुशासन, एक व्यवस्थित खेल-कूद, जैसा कि मैं कहूँगा, और नेतृत्व में विश्वास, सत्ता में विश्वास, को आरोपित कर दिया है, जो अन्य आंदोलनों के लिए अपरिचित हैं। और यहाँ हम समाजवाद और उदारवाद के मूल सिद्धांतों से एकाएक टकरा जाते हैं।

समाजवाद, आर्थिक संगठन की अपनी अवधारणा में, उदारवाद से निःसंदेह, बहुत भिन्न है;

लेकिन दर्शनशास्त्र में मुझे लगता है कि बहुत कम समाजवादी या उदारवादी हैं जो इस बात से असहमत होंगे कि वास्तव में उनका एक सामान्य मूल है यदि हम जीवन के वॉल्टेयर-रूसो दृष्टिकोण में काफी पीछे जाते हैं; और सबसे बढ़कर उत्तरार्द्ध में। अब क्या मैं आपको एक ओर उदारवाद और समाजवाद और दूसरी ओर फासीवाद के बीच जो मूलभूत अंतर उत्पन्न होता है, उसे सुझा सकता हूँ? हमारे विचार में, रूसो ने या तो बहुत बड़ी गलती की, या उन्हें बहुत गलत समझा गया। रूसो ने समानता कहा। हम उत्तर देते हैं, यदि आपका मतलब अवसर की समानता है, तो हाँ; यदि आपका मतलब मनुष्य की समानता है, तो नहीं। यह एक मूर्खता है। मेरा व्यक्तिगत रूप से मानना है कि यदि उसे ठीक से पढ़ा जाए, तो रूसो का मतलब अवसर की समानता था, कि रूसो का मुख्य हमला लक्ष्य था - और सही लक्ष्य था - उस पतनशील व्यवस्था पर जिसके तहत वह रहता था। उन्होंने कहा, "यह हास्यास्पद है कि फ्रांस का यह आलसी, पतित कुलीन वर्ग" (जैसा कि उस समय निस्संदेह था) "अपने लिए ऐसे विशेषाधिकारों का दावा करे जो राष्ट्र के जीवन का गला घोंट रहे हैं। अवसर की समानता एक बुनियादी चीज़ है। जो शासन करने के योग्य हैं, उन्हें शासन करने दो। किसी को भी केवल इसलिए शासन नहीं करना चाहिए क्योंकि उसके दादा ने खुद को शासन करने के योग्य साबित किया था।" यह विशेषाधिकार के विरुद्ध विद्रोह था, एक प्रतिज्ञान कि प्रतिभा और क्षमता वाला व्यक्ति ही एक महान राष्ट्र के कार्यों का संचालन करने वाला व्यक्ति होना चाहिए। लेकिन उनके बाद के अनुयायियों ने इस सिद्धांत को मानव समानता के अर्थ में ग्रहण किया, कि सभी मनुष्य समान हैं।

जैसा कि हम देखते हैं, इसी निर्माण से यह पूरी भ्रांति उत्पन्न होती है। यह एक स्पष्ट और स्पष्ट मूर्खता है। एक व्यक्ति, मन और शरीर में, दूसरे से बहुत भिन्न होता है। जैसा कि समाजवादी अक्सर कहते हैं, यह नैतिक या आध्यात्मिक समानता का प्रश्न नहीं है। यह बिल्कुल अलग बात है। नैतिक और आध्यात्मिक रूप से, जो व्यक्ति किसी बड़े व्यवसाय में झाड़ू लगाता है, वह उस व्यवसाय के प्रबंधक से बहुत श्रेष्ठ हो सकता है। लेकिन प्रश्न यह है कि कौन सा व्यक्ति कौन सा काम करने के लिए उपयुक्त है। उसे कौन सा उचित कार्य करना है? कुछ लोग एक काम में अच्छे होते हैं और कुछ दूसरे में।

बेशक हम फ़ासीवाद से सामाजिक वर्ग की अवधारणा को पूरी तरह से हटा देते हैं क्योंकि वह आनुवंशिकता की संभावना पर आधारित है; लेकिन हम यह ज़रूर कहते हैं कि कुछ लोग स्वभाव से ही कुछ ख़ास काम करने के लिए उपयुक्त होते हैं, और कुछ नहीं। और एक बार जब आप इस विचारधारा को अपना लेते हैं, तो आप लोकतंत्र की पूरी अवधारणा को चुनौती दे देते हैं।

आप इस विश्वास को चुनौती देते हैं कि दुनिया का हर सवाल, चाहे वह कितना भी जटिल क्यों न हो, किसी के द्वारा भी सुलझाया जा सकता है, चाहे वह कितना भी अनुभवहीन क्यों न हो; और वास्तव में इस दृष्टि से देखा जाए, तो यह एक बेतुकी बात है कि सरकार या किसी और चीज़ में एक तकनीशियन को ऐसे लोगों द्वारा निर्देश दिया जा सकता है जो साल में लगभग पाँच मिनट उस विषय पर नज़र रखते हैं। अगर मैं किसी इंजीनियरिंग की दुकान में चला गया, इंजीनियर को अपना काम करते हुए देखा, और फिर उसे यह बताना शुरू किया कि यह कैसे करना है, तो वह मुझसे कहेगा - और सही भी है - कि मैं एक अहंकारी गधा हूँ। इसी तरह, यह उम्मीद करना कि एक आदमी जिसने देश की समस्याओं का कोई अध्ययन नहीं किया है, उससे यह उम्मीद की जाए कि वह काउंटर पर अपना बीयर का मग रख दे और मतदान केंद्र तक जाए और अगले चार वर्षों के दौरान अपने देश को कैसे शासित किया जाए, इस बारे में विस्तृत निर्देश दे, हमें एक बेतुकी धारणा लगती है। "सभी मनुष्य समान हैं और सभी मनुष्य किसी भी विषय पर राय देने के लिए समान रूप से योग्य हैं, जब तक कि वह विषय किसी देश के शासन जैसा जटिल हो:" रूसो के लेखन पर सामाजिक लोकतंत्र द्वारा यही व्याख्या की गई है और यह अवधारणा स्पष्ट रूप से बेतुकी है। हालाँकि, यह संपूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था का दार्शनिक आधार है। इसलिए हम उस मूल अवधारणा को चुनौती देते हैं कि सभी मनुष्य सभी समस्याओं पर निर्णय लेने के लिए समान हैं। हम अवसर की समानता को अपनाते हैं और उसे अपना बनाते हैं और हम विशेषाधिकार प्राप्त आनुवंशिकता की अवधारणा के विरुद्ध खड़े हैं - और खड़े होने चाहिए।

जब कोई व्यक्ति खुद को साबित कर लेता है, तो वह देश के सबसे बड़े पदों पर पहुँच सकता है, और हमारी पूरी शिक्षा प्रणाली इसी तरह बनाई जानी चाहिए। लेकिन वह सिर्फ़ इसलिए शीर्ष पर नहीं होगा क्योंकि उसके पिता या दादा उससे पहले वहाँ थे। और इसलिए एक ओर हम दक्षिणपंथ के विशेषाधिकार को चुनौती देते हैं, और दूसरी ओर हम वामपंथ के उस बेतुके सिद्धांत को चुनौती देते हैं कि प्रकृति के उपहार से सभी मनुष्य समान हैं। अब आप कह सकते हैं, और शायद कुछ सच्चाई के साथ कह सकते हैं, कि

इन सिद्धांतों के बारे में पहले भी सुना जा चुका है कि यह बोनापार्टवाद का आधार था, या इसके मूल में और भी पीछे जाकर कहें तो यह सीज़रवाद का आधार था।

यह निश्चित रूप से सत्य है कि फ़ासीवाद का सीज़रवाद से एक ऐतिहासिक संबंध है, लेकिन आधुनिक विश्व प्राचीन विश्व के स्वरूपों और परिस्थितियों से बहुत भिन्न है। आधुनिक संगठन इतना विशाल और जटिल है कि इसे किसी भी व्यक्ति पर, चाहे वह कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो, निर्भर नहीं किया जा सकता। आधुनिक सीज़रवाद, सभी आधुनिक चीज़ों की तरह, सामूहिक है। अकेले व्यक्ति की इच्छाशक्ति और प्रतिभा का स्थान उन अनुशासित हज़ारों लोगों की इच्छाशक्ति और क्षमता ले लेती है जिनसे फ़ासीवादी आंदोलन बना है। प्रत्येक ब्लैकशर्ट सामूहिक सीज़रवाद का एक व्यक्तिगत कोशिका है। समर्पित जनसमूह की संगठित इच्छाशक्ति, जो स्वैच्छिक अनुशासन के अधीन है और राष्ट्रीय अस्तित्व के उत्कट आदर्श से प्रेरित है, व्यक्तिगत महामानव की शक्ति और उच्चतर क्रम की इच्छाशक्ति का स्थान ले लेती है। फिर भी, आधुनिक विज्ञान के हथियारों से लैस यह सामूहिक सीज़रवाद, उसी ऐतिहासिक संबंध में खड़ा है जैसा प्राचीन सीज़रवाद एक ओर प्रतिक्रियावाद और दूसरी ओर अराजकता के साथ था। सीज़रवाद एक ओर स्पार्टासवाद के विरुद्ध और दूसरी ओर पैट्रिशियन सीनेट के विरुद्ध खड़ा था। यह स्थिति पिछले दो हज़ार वर्षों के इतिहास जितनी पुरानी है। लेकिन उन दिनों उनके पास रचनात्मक उपलब्धि के अवसर नहीं थे जो आज मौजूद हैं, और इस सिद्धांत के पिछले साक्ष्य से हम जो एकमात्र सबक ले सकते हैं, वह बस यही है कि जब भी स्पार्टाकस के प्रभाव में दुनिया पूरी तरह से पतन और अराजकता की ओर बढ़ी, तो हमेशा वही लोग थे जिन्हें स्पेंगलर ने "महान तथ्य-पुरुष" कहा था, जिन्होंने दुनिया को परिणामी अराजकता से निकाला और मानव जाति को अक्सर एक नई प्रणाली और एक नई स्थिरता में शांति और व्यवस्था की सदियों की अवधि दी। और आधुनिक फ़ासीवादी आंदोलनों द्वारा ऐसा किया गया है, और किया भी गया है, "राजनीति और दर्शन के कुछ मूलभूत तथ्यों को मान्यता देकर। फिर से, दो परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले सिद्धांतों का एक विशिष्ट मेल है। हम पर अक्सर दक्षिणपंथ से कुछ और वामपंथ से कुछ लेने का आरोप लगाया जाता है। खैर, दूसरे धर्मों से उधार लेना एक बहुत ही समझदारी की बात है; जो बुरा है उसे त्यागना और जो अच्छा है उसे रखना; और जैसे ही आप पुरानी संसदीय मानसिकता से दूर होते हैं, आपको निश्चित रूप से ऐसे किसी भी मार्ग की बुद्धिमत्ता दिखाई देती है। और फ़ासीवाद, निश्चित रूप से, दक्षिणपंथ से कुछ और वामपंथ से कुछ लेता है, और उसमें आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नए तथ्य जोड़ता है।

फ़ासीवाद के इस नए संश्लेषण में, जो हमारी तात्कालिक स्थिति के और भी निकट आता है, हम पाते हैं कि हम सत्ता, व्यवस्था और अनुशासन द्वारा समर्थित स्थिरता के महान सिद्धांत को, जो दक्षिणपंथ का गुण रहा है, लेते हैं और उसे प्रगति, गतिशील परिवर्तन के सिद्धांत से जोड़ते हैं, जिसे हम वामपंथ से लेते हैं। रूढ़िवाद—इसे इस देश में जिस नाम से जाना जाता है, उसी नाम से पुकारा जाए—स्थिरता में विश्वास करता है और व्यवस्था में अपने विश्वास के द्वारा उसका समर्थन करता है; लेकिन आधुनिक दुनिया में रूढ़िवाद हमेशा इस बात को समझने में विफल रहा है कि स्थिरता केवल प्रगति के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है: कि परिवर्तन के प्रति अडिग प्रतिरोध उस क्रांतिकारी स्थिति को जन्म देता है जिससे रूढ़िवाद सबसे अधिक भयभीत है। दूसरी ओर, वामपंथी हमेशा अपने रूसो मनोग्रंथि के कारण यह समझने में विफल रहे हैं कि प्रगति प्राप्त करने का एकमात्र तरीका कार्यकारी साधनों को अपनाना है जिनके द्वारा ही परिवर्तन संभव है।

इसलिए, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं: कि आप स्थिरता तभी प्राप्त कर सकते हैं जब आप व्यवस्थित परिवर्तनों को अपनाने के लिए तैयार हों, क्योंकि स्थिर बने रहने के लिए आपको नए युग के नए तथ्यों के अनुसार खुद को ढालना होगा। दूसरी ओर, आप प्रगति तभी प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी वामपंथी आकांक्षा रखते हैं, जब आप प्रगति के कार्यकारी साधनों, अर्थात् अधिकार, अनुशासन और निष्ठा, को अपनाएँ, जिन्हें हमेशा से केवल दक्षिणपंथियों का ही हिस्सा माना जाता रहा है। इन दोनों सिद्धांतों को मिलाकर, हम फ़ासीवादी आस्था और फ़ासीवादी संगठन का आधार प्राप्त करते हैं।

आप फिर कहेंगे: "यह एक बार फिर सीज़रवाद या बोनापार्टवाद है। यह अब विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत नेतृत्व का मामला नहीं रहा। जिस तंत्र से हम निपट रहे हैं, वह इतना विशाल है कि उसे कोई एक व्यक्ति अकेले नहीं संभाल सकता। इसलिए यह एक सामूहिक सीज़रवाद बन गया है—

एक संगठित और अनुशासित जनसमूह का नेतृत्व, जो राष्ट्रीय और विश्व पुनरुत्थान के आदर्शों द्वारा स्वैच्छिक अनुशासन में बंधा हो, जो उसे जोश से प्रेरित करते हैं। लेकिन मूल सिद्धांत वही रहते हैं; और इसलिए, जबकि आपका फ़ासीवादी आंदोलन उस उद्देश्य को पूरा कर सकता है जो पहले सीज़रवाद ने किया था, स्पार्टाकस और प्रतिक्रियावाद के बीच संघर्ष से उत्पन्न अराजकता से व्यवस्था ला सकता है, कुछ वर्षों या कुछ शताब्दियों के लिए दुनिया को महान शांति प्रदान कर सकता है, फिर भी यह अपने भीतर अपना क्षय लिए हुए है, और वास्तव में वह हासिल नहीं कर पाता जिसे हम आवश्यक मानते हैं।"

मेरा मानना है कि उस मामले का उत्तर, जो वास्तव में एकमात्र मान्य मामला है, यह है कि पहले हमेशा आधुनिक विज्ञान का कारक अनुपस्थित था। अब आपके पास एक बिल्कुल नया कारक है। यदि आप अपनी शासन प्रणाली में एक नई दक्षता ला सकते हैं, और हर कोई यह स्वीकार करता है कि सत्ता में आने पर ऐसे आंदोलन कम से कम कुशल होते हैं: यदि आप सरकार में कुछ वर्षों के लिए भी एक कार्यकारी शक्ति और एक दक्षता ला सकते हैं जो काम पूरा करती है, तो आप विज्ञान की कैद प्रतिभा को मुक्त कर सकते हैं - और आप मुक्त करेंगे - आधुनिक दुनिया में उसे जो कार्य करना है उसे करने के लिए। राज्य और अर्थशास्त्र की संरचना पर हमारे अलग-अलग विचार चाहे जो भी हों, मुझे लगता है कि हम सभी को इस बात पर सहमत होना चाहिए कि आधुनिक विज्ञान और उद्योग की उत्पादन शक्ति के साथ, दुनिया के विवेकपूर्ण संगठन द्वारा, गरीबी की समस्या को हमेशा के लिए हल करना और दुनिया से गरीबी और बीमारी व पीड़ा जैसे सबसे बुरे गुणों को हमेशा के लिए समाप्त करना संभव होगा।

इसलिए, यदि एक कुशल शासन प्रणाली संभव है, तो इतिहास में पहली बार, आपके पास ऐसी व्यवस्था के लिए एक ऐसा साधन उपलब्ध है जिसके द्वारा पृथ्वी का स्वरूप हमेशा के लिए बदला जा सकता है। एक बार आवश्यक कार्य हो जाने पर, एक बार आधुनिक विज्ञान और तकनीक प्रकट होकर अपना कार्य कर चुके हों, एक बार आपने अपनी राजनीतिक और दार्शनिक प्रणाली को क्षणिक और राजनीतिक से स्थायी और तकनीकी आधार पर बदल लिया हो, तो राजनीति और उन विवादों की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी जो आज दुनिया को विचलित करते हैं। यदि आधुनिक विज्ञान को उचित रूप से क्रियान्वित किया जाए, तो गरीबी की समस्या का समाधान हो जाएगा, प्रमुख समस्याओं को, जैसा कि वे हो सकती हैं, दूर किया जा सकेगा, और जैसा कि सभी जानते हैं, उन्हें दूर किया जा सकता है। तब मानवजाति जीवन में उन चीज़ों के लिए मुक्त हो जाएगी जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

इसलिए, जबकि यह शायद सच है कि इतिहास की शाश्वत पुनरावृत्तियों में इनमें से कुछ घटनाएं दुनिया में पहले भी देखी गई हैं, और मानव जाति के लिए बहुत लाभकारी रही हैं, फिर भी इससे पहले कभी भी महान कार्यकारी आंदोलनों को अपना कार्य पूरा करने का अवसर नहीं मिला था, जो आधुनिक विज्ञान और आविष्कार अब उन्हें प्रदान करते हैं।

एक बड़े विश्व संकट के क्षण में, एक ऐसा संकट जो अंततः अनिवार्य रूप से गहरा ही जाएगा, एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से एक आंदोलन उभरता है जो इसके उद्भव को अपरिहार्य बनाता है। यह आंदोलन एक अत्यंत गौरवशाली अतीत से प्राप्त कुछ पारंपरिक विशेषताओं को धारण करता है, लेकिन आज के तथ्यों का सामना उन उपकरणों से करता है जो केवल इसी युग ने मानवजाति को प्रदान किए हैं। उपकरण और घटना के इस नए और अद्भुत संयोग से इस युग की समस्याओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है, और भविष्य को एक प्रगतिशील स्थिरता में सुनिश्चित किया जा सकता है। संभवतः यह अमर, शाश्वत रूप से आवर्ती सीज़ेरियन आंदोलन की अंतिम महान विश्व लहर है; लेकिन विज्ञान की सहायता से, और आधुनिक मन की प्रेरणा से, यह लहर मानवता को और आगे ले जाएगी।

तब, अंततः, 'सीज़रवाद', स्थायी उपलब्धि की ओर अग्रसर मानव आत्मा का सबसे शक्तिशाली प्रकटीकरण, अपना विश्व मिशन पूरा कर चुका होगा, युगों के संघर्ष में अपने बलिदान का प्रायश्चित कर चुका होगा, और अपनी ऐतिहासिक नियति को पूरा कर चुका होगा। गरीबी और बीमारियों की अनेक भयावहताओं और कष्टों से मुक्त होकर विज्ञान द्वारा पुनर्जन्म प्राप्त विश्व का आनंद लेने वाली मानवता को अभी भी एक नए और श्रेष्ठ मानवजाति क्रम के उद्देश्य से रूपांतरित एक फ़ासीवादी आंदोलन की आवश्यकता होगी; लेकिन आपको अब उन अजीब और परेशान करने वाले लोगों की आवश्यकता नहीं होगी।

जिन्होंने संघर्ष और खतरे के दिनों में तथा अंधकार और श्रम की रातों में इस्पात का वह उपकरण गढ़ा है जिसके द्वारा संसार उच्चतर चीजों की ओर बढ़ेगा।

जर्मनी और उसकी महिलाएँ, ऐनी सीलिग-थॉमन द्वारा

डी इंग्लैंड की मेरी पिछली यात्रा के दौरान, कई अंग्रेज़ महिलाओं ने मुझसे तीसरे रैह में महिलाओं की स्थिति के बारे में पूछा था। उन्होंने जो कहानियाँ सुनी थीं, उनके अनुसार उन्हें लगता था कि हम गुलामों के अलावा कुछ नहीं हैं। दरअसल, उन्होंने यह बात खुलकर कही, और यह भी कहा कि उन्हें हम पर दिल से दया आती है। मैं आपको बताना चाहूँगी कि हम जर्मन महिलाएँ नए रैह के बारे में कैसा महसूस करती हैं, और मैं पत्नियों और माताओं से शुरुआत करूँगी।

हम सभी इतिहास से जानते हैं कि हर क्रांति के बाद नए संवैधानिक स्वरूप सामने आते हैं, और इन नए स्वरूपों को जन्म देने वाले विद्रोह के कारण, हम आम तौर पर लोगों के सामाजिक जीवन में भी मूलभूत परिवर्तन देखते हैं। जर्मनी में नई व्यवस्था, "राष्ट्रीय समाजवाद", उन लाखों परिवारों के लिए एक स्वागत योग्य बदलाव के रूप में आई, जो युद्ध के परिणामों से बुरी तरह पीड़ित थे, जिसने कई माताओं और उनके बच्चों के लिए जीवन को बोझ बना दिया था।

एडोल्फ हिटलर का काम था उनकी मदद करना, और इस विनाशकारी विचार को ख़त्म करना कि "कोई बच्चा न होना ही बेहतर है।"

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि फ्यूहरर के नए रीच के निर्माण के लिए आने से पहले, स्वार्थ ही पुरानी व्यवस्था का आधार था। उन्होंने ही जर्मन महिलाओं को एक बार फिर यह विश्वास दिलाया कि परिवार ही राज्य की अनिवार्य इकाई है, और इसमें माँ स्वस्थ बच्चों के पालन-पोषण के माध्यम से राष्ट्रीय अस्तित्व का जीवंत प्रतीक है। मातृत्व और नारीत्व ने अपना पुराना अर्थ और गौरव पुनः प्राप्त किया।

माताओं के लिए सेवा

1934 में, महिलाओं की राष्ट्रीय समाजवादी लीग पहली बार गंभीर सहयोगात्मक कार्य के लिए एक साथ आई और माताओं के लिए रीच सेवा की स्थापना की। यह सेवा लीग की प्रत्येक शाखा द्वारा संचालित की जाती है और इसमें सभी महिलाओं, विवाहित या अविवाहित, युवा और वृद्ध, के लिए विशेष शिक्षण पाठ्यक्रम शामिल हैं। 1934 से, कम से कम 600,000 जर्मन महिलाओं ने इन पाठ्यक्रमों में भाग लिया है और गृह प्रबंधन, खाना पकाने और सिलाई के साथ-साथ स्वच्छता और नर्सिंग के तत्वों का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके अलावा, चूँकि हम जर्मन एक ऐसे राष्ट्र के निवासी हैं जिसके पास कोई उपनिवेश नहीं है, हमें हर प्रकार के कच्चे माल का ध्यान रखना पड़ता है, और इन पाठ्यक्रमों में महिलाएँ सीखती हैं कि कैसे बेकार लगने वाली चीजों को उपयोगी उद्देश्य में बदला जाए। आमतौर पर, प्रत्येक पाठ्यक्रम में दस शामें होती हैं और कुल मिलाकर चौबीस घंटे का प्रशिक्षण होता है।

इस तरह के कोर्स की फीस देहात में दो से तीन मार्क्स और शहर में तीन से पाँच मार्क्स के बीच होती है। जो लोग इसे वहन कर सकते हैं, उनसे पूरी फीस देने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन जो लोग यह भुगतान नहीं कर सकते, उनके लिए लेबर फ्रंट का महिला अनुभाग और राष्ट्रीय समाजवादी कल्याण संगठन अतिरिक्त राशि का योगदान करते हैं। अक्सर पूरी राशि नियोक्ता द्वारा उस लड़की के लिए चुकाई जाती है जो जल्द ही शादी के लिए काम से सेवानिवृत्त हो रही होती है। जर्मनी में ऐसे सैकड़ों मदर्स स्कूल स्थायी रूप से स्थापित हैं, जो हजारों स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं को अभिभावक, लोक कल्याण शिक्षक, युवा नेता आदि के रूप में काम करने का अवसर प्रदान कर रहे हैं।

यह ऐसा कार्य है जो प्रत्येक जर्मन महिला को राष्ट्रीय समाजवादी राज्य के जीवन में सक्रिय भाग लेने का अवसर देता है, क्योंकि प्रत्येक महिला को यह एहसास होता है कि उसे हमारे राष्ट्र के भविष्य के लिए समान जिम्मेदारी वाले पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी भूमिका निभानी होगी।

कामकाजी महिला

तीसरे रैह में पेशेवर और कामकाजी महिलाओं की स्थिति पर अन्य देशों द्वारा जितनी चर्चा की गई है, उतनी किसी और चीज़ पर नहीं हुई है। राष्ट्रीय समाजवाद के विरोधियों ने ज़ोर देकर कहा है कि जिस क्षण एडॉल्फ हिटलर सत्ता में आया, सभी कामकाजी महिलाओं को जबरन उनके व्यवसायों से हटा दिया जाएगा और उनकी जगह पुरुषों को नियुक्त किया जाएगा। वास्तव में, सच्चाई से इससे ज़्यादा विरोधाभासी कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि उद्योग और व्यवसायों में सभी सक्रिय महिलाएँ लेबर फ्रंट के भीतर संगठित हैं, और वे महिलाएँ जो पहले नौकरी नहीं करती थीं, लेकिन नए रैह के निर्माण में मदद करना चाहती थीं, उन्होंने फ्राउ स्कोल्ज़-क्लिंक के राष्ट्रीय नेतृत्व में स्वेच्छा से महिला लीग में प्रवेश किया। इन दोनों संगठनों में हम गृहिणी, शिक्षिका, नर्स, दाई, कलाकार, महिला डॉक्टर और विश्वविद्यालय योग्यता वाली सभी महिलाओं को पाते हैं।

चूँकि परिवार को राज्य की अनिवार्य इकाई के रूप में संरक्षित रखना राष्ट्रीय समाजवाद का आदर्श है, यह सच है कि लेबर फ्रंट ने महिलाओं को ऐसे कारखानों के काम से हटा दिया है जो महिलाओं के शरीर के लिए अनुपयुक्त हैं, और उनकी जगह बेरोजगार पुरुषों को नियुक्त किया है। हालाँकि, इन महिलाओं को अन्यत्र अधिक अनुकूल काम मिल गया है।

जर्मन महिलाएँ अभी भी कपड़ों से जुड़े सभी व्यवसायों में कार्यरत हैं, और लाखों महिलाएँ शिक्षिकाएँ, नर्सें और घरेलू नौकरानियाँ भी हैं। इसके अलावा, कई महिलाएँ डॉक्टर, आर्किटेक्ट, रंगमंच और फ़िल्मों में भी काम करती हैं, न केवल अभिनेत्री के रूप में, बल्कि उत्कृष्ट निर्माता के रूप में भी, जैसे कि प्रसिद्ध लेनी राइफेन्स्टहल, जो पार्टी की महत्वपूर्ण बैठकों और ओलंपिक खेलों में फोटोग्राफी का काम संभालती हैं। इसके अलावा, लाखों महिलाएँ सामान्य उद्योगों में कार्यरत हैं, जो, जैसा कि मैंने कहा, लेबर फ्रंट का एक विशेष वर्ग बनाती हैं। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि जर्मन महिलाओं को घर में ही धकेल दिया गया है।

घरेलू सेवा

यहाँ तक कि घरेलू नौकरानियों या गृहिणियों के रूप में, जो विशेष रूप से घरेलू कामों तक ही सीमित हैं, उन पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। जब एडॉल्फ हिटलर सत्ता में आया, तो महिला लीग को इस सर्वव्यापी पूर्वाग्रह को दूर करने का विशेष कार्य सौंपा गया कि घरेलू काम केवल निम्न वर्गों का व्यवसाय है। अब हर लड़की, चाहे वह अमीर हो या गरीब, स्कूल छोड़ने पर घरेलू कर्तव्यों की कड़ी परीक्षा से गुज़रती है, और इसके अलावा, अठारह वर्ष की आयु में, अपना पेशा शुरू करने से पहले, हमारी अधिकांश लड़कियाँ महिला श्रम सेवा के लिए स्वेच्छा से काम करती हैं, जिसमें अक्सर किसी मेहनती माँ की मदद के लिए घरेलू काम शामिल होते हैं।

नई सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की हिस्सेदारी की योजना "महिला अधिकार" के पुराने नारे के आधार पर नहीं, बल्कि उस सेवा के संदर्भ में बनाई गई है जो महिला समग्र रूप से समुदाय - राष्ट्र - के लिए कर सकती है। चूँकि राष्ट्र के अंतरंग सामाजिक जीवन को आकार देने में महिलाओं का प्रभाव हमेशा सबसे अधिक रहा है, इसलिए हमें इस बात की उतनी चिंता नहीं है कि हमारी सेवा कहाँ दी जाती है, बल्कि इस बात की है कि यह कैसे दी जाती है।

जर्मन लड़की

स्कूल में ही, यह जर्मन लड़की BDM (बुंड डॉयचर माडेल) में शामिल हो जाती है, जो दुनिया में अपनी तरह का सबसे बड़ा संगठन है। हिटलर युवा आंदोलन से संबद्ध, BDM को प्रशिक्षण में, और विशेष रूप से राष्ट्रीय युवा नेता, बाल्डुर वॉन शिराच से एक स्वस्थ जीवन दर्शन (वेल्टनशाउंग) के विकास में, विस्तृत निर्देश प्राप्त होते हैं।

देश भर में चालीस स्कूल केवल लड़कियों को शिक्षा देने के उद्देश्य से बनाए गए हैं।

युवा नेताओं को इन सिद्धांतों पर बल देना चाहिए।

भावी माताओं, डॉक्टरों, अर्थशास्त्रियों, शिक्षिकाओं, वकीलों आदि के रूप में, सभी जर्मन लड़कियों का यह दायित्व है कि वे अपनी प्रतिभा का सर्वोत्तम राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए उपयोग करें, लेकिन इसके लिए उन्हें पहले एक ठोस सामाजिक पृष्ठभूमि तैयार करनी होगी। जर्मन लड़कियों के संगठन, बीडीएम, के सहयोग से यह और कहाँ से बेहतर संभव हो सकता है? पहली आवश्यकता शारीरिक प्रशिक्षण है, और इसलिए प्रत्येक लड़की को उम्र के अनुसार अपने शारीरिक मानकों का व्यवस्थित विकास करना होता है। साथ ही, प्राथमिक उपचार और नर्सिंग की शिक्षा भी दी जाती है। बीडीएम शिविर हैं जहाँ लड़कियाँ ज़मीन पर मदद करना सीखती हैं, और बच्चों की नर्स, आहार विशेषज्ञ और अन्य घरेलू कामों के प्रशिक्षण के लिए घरेलू स्कूल भी हैं।

जब लड़कियाँ स्कूल छोड़ती हैं, तो उन्हें "भूमि वर्ष सेवा" में एक वर्ष बिताने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जहाँ वे ज़मीन पर उपयोगी काम करती हैं। यह युवा पुरुषों के लिए "श्रम सेवा" के समानांतर एक संगठन है, और उपयोगी काम करता है जो सामान्य व्यवसायों से प्रतिस्पर्धा नहीं करता। वास्तव में, बीमारी से अक्षम महिलाओं की जगह लेने और उन्हें स्वस्थ होने के लिए पर्याप्त अवकाश देने में बहुत अधिक आर्थिक मूल्य का काम पाया गया है। यह विशेष रूप से अत्यधिक बोझ से दबी माँ के मामले में फायदेमंद रहा है, जिनके घरेलू काम "श्रम सेवा" की लड़कियों ने संभाल लिए हैं, जबकि उनके बच्चों की देखभाल एक स्थानीय "किंडरगार्टन" में की जाती है।

हालाँकि जर्मनी की महिलाओं के इस विशाल संगठन के आँकड़े ही काफी प्रभावशाली हैं, लेकिन असली मूल्य इसके द्वारा स्थापित नैतिक मानदंडों में निहित है। बीडीएम और "लैंड ईयर सर्विस" में भाग लेने वाली यह जर्मन लड़की न केवल व्यापक अनुभव प्राप्त करती है, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित करती है, क्योंकि उसे राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं पर ठीक वैसे ही व्याख्यान और निर्देश दिए जाते हैं जैसे उनके संगठनों के युवकों को दिए जाते हैं। जो भी महिला श्रम शिविर में गया है, वह वहाँ की हृष्ट-पुष्ट लड़कियों को देखकर प्रसन्न हुआ है, जिनकी आँखें स्वास्थ्य और खुशी से चमक रही थीं। मेरे कई अंग्रेज़ मित्रों ने मुझसे यहाँ पूछा है, "आपके युवाओं का पूरा वातावरण इतनी स्वच्छता और शक्ति व जीवन की चमक से कैसे भरा है?"

आपने यह कैसे किया?" इसका केवल एक ही उत्तर हो सकता है, "एडोल्फ हिटलर की आत्मा"!

समाजवाद क्या है? जोसेफ गोएबल्स द्वारा

ई बहुत ही तर्कसंगत आधुनिक राजनीतिक अवधारणा, चाहे इसे स्वीकार किया जाए या नहीं, भविष्य के सभी विकास के केंद्रीय कारक - सामाजिक समस्या - के इर्द-गिर्द घूमती है।

सामाजिक संकट रोज़ी-रोटी के सवाल से कहीं ज़्यादा है। अगर यह उससे ज़्यादा कुछ न होता, तो मार्क्सवादी सही होते। सर्वहारा वर्ग किसी अंतरराष्ट्रीय मेलजोल के शौक़ से अंतरराष्ट्रीय नहीं है, बल्कि इस दुखद अहसास के कारण है कि पहले उसके अस्तित्व की समस्या का कोई राष्ट्रीय समाधान नहीं था। बुर्जुआ स्वार्थ और यहूदी प्रतिस्पर्धा ने, सचेतन और अचेतन रूप से, मिलकर उस चीज़ को जन्म दिया जो लोगों से जीवन का प्रकाश और साँस ही छीन लेती है—वर्ग युद्ध।

सामाजिक संकट सुरक्षा के प्रति जुनून को जन्म देता है। सर्वहारा वर्ग के मन में घर, मिट्टी और मातृभूमि के प्रति प्रेम सुप्त है, जो अच्छे-बुरे दोनों रूपों में अभिव्यक्त होता है, और हमेशा श्रेष्ठतम बलिदान के लिए तत्पर रहता है। मार्क्सवाद के अंतर्गत भी सर्वहारा वर्ग पितृभूमि के प्रति घृणा नहीं करता, बल्कि पितृभूमि के उस बुर्जुआ विकृत रूप - व्यवस्था - के प्रति घृणा करता है। इस व्यवस्था ने वास्तव में ऐसी स्थिति पैदा की जिसमें राष्ट्रवाद और पूंजीवाद एक ही चीज़ थे। अंतर्राष्ट्रीयतावाद के विरुद्ध संघर्ष कभी भी मुहावरों से नहीं जीता जा सकता। सामाजिक संकट का समाधान केवल सामाजिक क्रियाकलापों से ही हो सकता है। सर्वहारा वर्ग तब तक अंतर्राष्ट्रीय रूप से सोचता रहेगा जब तक राष्ट्र में उसका कोई हिस्सा नहीं है। कोई किसी ऐसी चीज़ से प्रेम और सम्मान कैसे कर सकता है जिसे वह जानता ही नहीं?

सामाजिक समस्या अंतर्राष्ट्रीय शहरी-सर्वहारा वर्ग को अपनी ज़मीन के साथ अपने मूलभूत रिश्ते के प्रति एक बार फिर जागरूक करने का प्रश्न है। मनुष्य केवल अपनी ज़मीन में ही जड़ें जमा सकता है।
वह खुद को सिर्फ़ उसी से जुड़ा हुआ महसूस करता है जो उसका अपना है। बोल्शेविज़्म के ख़िलाफ़ एकमात्र प्रभावी संघर्ष पूँजीवाद का खात्मा है।

यह मध्यवर्ग में राजनीतिक प्रवृत्ति के अभाव को दर्शाता है कि उन्होंने खुद को पूंजीवाद से जोड़ लिया, जिससे उनका, आखिरकार, कोई खास लेना-देना नहीं था। पूंजीवाद पूंजी का अनैतिक वितरण है। अर्थशास्त्र में पूंजीवाद वही है जो राजनीति में लोकतंत्र है: अर्थात्, राज्य के भीतर सत्ता का अनैतिक वितरण। दोनों कारक, पूंजीवाद और लोकतंत्र—उनका संबंध पिता के प्रति पुत्र जैसा है—राज्य के एक नए सामाजिक संगठन के कट्टर दुश्मन हैं। अब तक वे सामाजिक समस्या की अनदेखी करके संतुष्ट थे, और परोपकार के पाखंडी दावे के ज़रिए जहाँ तक हो सका, इस मुद्दे से बचते रहे। उदारवाद—परोपकार—की यही त्रासदी है: बुर्जुआ कायरता, भावुकता, परपीड़न और भय का एक समूह। सामाजिक 'सुधार' की पूरी कहानी हमारी आँखों के सामने सामाजिक समस्या से निपटने में उदारवादी अक्षमता के एक भयानक उदाहरण के रूप में सामने आती है—उसकी गहराई को समझने की तो बात ही छोड़ दें। सामाजिक समस्या का भावुकता और 'दान' से कोई लेना-देना नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। यह राष्ट्रीय आवश्यकता की समस्या है। केवल यह तथ्य कि लाखों लोग भूखे रहते हैं, इस समस्या को विश्वव्यापी राजनीतिक महत्व नहीं देता, बल्कि यह तथ्य कि यह राष्ट्र के पतन का कारण बन सकता है, इस समस्या को निरन्तरता प्रदान करता है। भावुकता और 'दान' अपने आप में पूरी तरह अविश्वसनीय हैं। राष्ट्रीय आवश्यकता ही कट्टरता और आस्था के प्रचंड आवेग को जन्म देती है। इसलिए यह सामाजिक समस्या भविष्य के राजनीतिक विकास की संरचना में निहित है और युवाओं को नए कर्तव्य और नए कार्यभार प्रदान करती है।

इस अनुभूति से राज्य की एक सच्ची सामाजिक अवधारणा उभरती है, जिसका इससे बहुत कम लेना-देना है

मार्क्सवादी-सर्वहारा, उदार-लोकतांत्रिक विचारों के साथ। जब मैं अपने साथी देशवासियों के उत्पीड़ित वर्गों के लिए उनके स्वाभाविक अधिकारों की प्राप्ति की कामना करता हूँ, तो मैं सामाजिक अर्थ में सोच रहा होता हूँ, अधिकारों के रूप में, न कि कमोबेश स्वैच्छिक उपहारों के रूप में। जब मैं इन अधिकारों की माँग बुर्जुआ भय या भावुकता से नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आवश्यकता और सामाजिक न्याय की प्राप्ति से करता हूँ, तो मैं सामाजिक अर्थ में सोच रहा होता हूँ।

उदारवादी व्यक्ति बुर्जुआ की तरह सोचता है; मार्क्सवादी व्यक्ति सर्वहारा की तरह सोचता है; समाजवादी व्यक्ति राष्ट्रीय स्तर पर सोचता है, एक ऐसे राष्ट्रीय राज्य की दृष्टि से जो एक साझा नियति को पूरा करने के लिए बनाया गया हो। उसके लिए राष्ट्रीय और सामाजिक सोच का अर्थ एक ही है: राष्ट्र के प्रति प्रेम; उसके भविष्य में विश्वास; और स्वतंत्रता की इच्छा।

अल्फ्रेड रोसेनबर्ग द्वारा विश्व दर्शन और विदेशी राजनीति

मैं रोज़मर्रा की ज़िंदगी में, आम आदमी शायद ही कभी यह समझ पाता है कि राजनीतिक और सामाजिक जीवन अंततः दार्शनिक उद्देश्यों से ही आकार लेते हैं। बुर्जुआ नैतिक संहिता की अवधारणा, क़ानून की अवधारणा और उससे जुड़ी रोज़मर्रा की ज़िंदगी की हर चीज़ हमेशा किसी न किसी तरह उनके प्रति मनुष्य के आंतरिक दृष्टिकोण से निर्धारित होती है; लेकिन केवल महान क्रांतिकारी घटनाओं के अवसर पर, जो समग्र रूप से एक राष्ट्र के जीवन को प्रभावित करती हैं, लोग इस तथ्य के प्रति स्पष्ट रूप से सचेत होते हैं। यह कहा जा सकता है कि आज पूरी दुनिया में यही हो रहा है। 1914-1918 के संघर्ष का विभिन्न राष्ट्रों और राज्यों की राजनीतिक घटनाओं पर चाहे जो भी तात्कालिक प्रभाव पड़ा हो, एक तथ्य है जो उन सभी मनों पर, जिनके विचार केवल सतही नहीं हैं, लगातार बढ़ती मात्रा में प्रभाव डालता है, और वह यह है कि इतनी ज़बरदस्त उथल-पुथल के बाद लोग अपने पिछले दैनिक जीवन में ऐसे नहीं लौट सकते जैसे कुछ हुआ ही न हो। व्यावहारिक रूप से दुनिया का हर राष्ट्र विश्व युद्ध के महान संघर्षों से प्रभावित हुआ है, या कम से कम इसके परिणामों से कुछ हद तक पीड़ित हुआ है। लाखों-करोड़ों लोगों को ऐसी नियति का सामना करना पड़ रहा है, जिसने उन्हें अचानक से अभिभूत कर दिया है और जिसने उन प्रश्नों को जन्म दिया है, जो कई दशकों से प्रासंगिक रहे प्रश्नों से बहुत भिन्न हैं।

1914 से पहले दुनिया आशावाद के माहौल में जी रही थी। यह सच है कि विभिन्न देशों में ज़िम्मेदार पदों पर बैठे लोगों ने देखा कि राजनीतिक क्षितिज पर बार-बार बादल छा रहे थे, लेकिन राजनेताओं में भी कई ऐसे थे जो मानते थे कि, पिछले अवसरों की तरह, दैनिक समझौते की राजनीतिक व्यवस्था ही विजयी होगी। अर्थशास्त्रियों ने गणितीय सटीकता के साथ गणना की थी कि महान राष्ट्रों के बीच किसी भी संघर्ष के इतने विनाशकारी आर्थिक और सामाजिक परिणाम होंगे कि विश्व आर्थिक संरचना का पतन निश्चित होगा और कुछ ही महीनों में युद्ध का अंत हो जाएगा। बौद्धिक आशावादी अपनी आशाओं को इस विश्वास पर आधारित करते थे कि "विश्व की सामान्य बुद्धि" ही जीतेगी और प्रमुख अर्थशास्त्रियों से सहमत थे कि राष्ट्र कभी भी विश्व के पागलपन को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

युद्ध।

लेकिन, प्रकृति की ही तरह, लोगों और जातियों का जीवन तर्क के सीधे रास्ते पर नहीं, बल्कि उत्तेजित भावनाओं और उग्र जुनून के टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर आगे बढ़ा। इन्हीं अनगिनत तत्वों ने अंततः विश्व आपदा को बंधनमुक्त किया। मेरे विचार से, यह ज़रूरी है कि हम आज यह स्वीकार करें कि 1914 का वर्ष न केवल एक महान सैन्य संघर्ष की शुरुआत का प्रतीक था, बल्कि अगस्त के उन घातक दिनों में पूरी पुरानी दुनिया का पतन शुरू हो गया था। यह तथ्य कि राष्ट्र और उनके नेता ऐसे भयानक संघर्ष को होने से रोकने में असमर्थ थे, इस बात का निर्णायक प्रमाण है कि सामाजिक संघर्ष, उस समय की विश्व अर्थव्यवस्था की पूरी प्रवृत्ति और राष्ट्रों की सामाजिक संरचना, अब इतनी शक्तिशाली नहीं थीं कि एक स्पष्ट रूप से परिभाषित शांति नीति की गारंटी दे सकें। इसके विपरीत, निचले तबके के अराजक जन-आंदोलनों, राजनीतिक भावनाओं और आर्थिक हितों पर इतना अधिक ध्यान दिया गया कि अक्सर राजनेताओं के हाथों से कमान फिसल गई और विश्व टकराव की ओर बढ़ गया, जिससे वह कई वर्षों बाद ही उबर पाया, जब वीरतापूर्ण शक्तियां खर्च हो चुकी थीं और भारी बलिदान दिए जा चुके थे।

यह स्वाभाविक है कि आम लोगों की यह पुनः जागृति, अतीत और वर्तमान की यह आलोचना, सबसे पहले उन देशों में प्रकट हुई जहां सैन्य और राजनीतिक पराजय ने सत्ता को छीन लिया।

समस्याएँ उन राज्यों की तुलना में कहीं अधिक स्पष्ट हैं, जो कम से कम कुछ समय के लिए, अपनी युद्ध विजयों के फल पर जीवित रह सकते थे। रूस, हंगरी, जर्मनी और तुर्की में घटित, प्रकृति में व्यापक रूप से भिन्न, सभी किण्वन प्रक्रियाएँ, विश्व राजनीति के प्रत्येक बुद्धिमान पर्यवेक्षक को पहले बताई गई पुरानी व्यवस्था के पतन और किसी न किसी रूप में एक नई दुनिया बनाने के प्रयास के स्पष्ट संकेत प्रतीत होती हैं। यह उपयुक्त है या नहीं, इसकी तार्किक पहचान के कारण नहीं, बल्कि चरित्र के एक आंतरिक परिवर्तन के कारण है, जिसने वर्तमान के साथ-साथ अतीत की ओर भी मुड़कर घोषणा की: "यह अब और नहीं चल सकता।"

यह आंतरिक संकल्प किसी भी अन्य चीज़ से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है और इसे किसी भी तर्क से समाप्त नहीं किया जा सकता। राष्ट्रों की ये नई मानसिक प्रवृत्तियाँ, चाहे वे एक दिशा में हों या दूसरी दिशा में, निर्माण या विनाश का निर्णायक कारण होती हैं, जैसा भी मामला हो। विश्व राजनीति में हमारी वर्तमान गतिविधि का गुरुत्व केंद्र इन विभिन्न मानसिक ऊर्जाओं के समन्वय और बल का परिणाम है।

हम राष्ट्रीय समाजवादी एक सुस्पष्ट मानसिक दृष्टिकोण में वह भी देखते हैं जिसे हम "विश्व दर्शन" (वेल्टनशाउंग) कहते हैं। यह शब्द, जिसका अन्य भाषाओं में सटीक अनुवाद अत्यंत कठिन है, सर्वप्रथम ठीक वही दर्शाता है जो यह कहता है: दुनिया को देखने का एक विशिष्ट दृष्टिकोण, अर्थात् बाहरी वस्तुओं के प्रति आत्मा, मन और चरित्र का एक सुस्पष्ट बोधगम्य आंतरिक दृष्टिकोण। एक दृष्टिकोण जो "हाँ" या "ना" का निर्णय करता है, जो, यदि यह लाखों लोगों की आवाज़ है, तो जीवन-शैली, राज्य की संरचना, किसी जाति या लोगों के कर्तव्यों और विशेषाधिकारों को आकार देता है। इसलिए यह दृष्टिकोण आवश्यक, मौलिक और निर्णायक कारक है। यदि यह जीवन के सभी विविध क्षेत्रों में व्याप्त हो, तो हम एक एकीकृत और एकरूप राष्ट्र की बात कर सकते हैं; तब हम कह सकते हैं कि राज्य, लोग और "विश्व दर्शन" एक में विलीन हो गए हैं। निःसंदेह, ऐसा बहुत ही कम अवसरों पर होता है। नस्लीय विशेषताओं और राजनीतिक घटनाओं के प्रभाव में अधिकांश राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न धाराओं से प्रभावित होते हैं, जो अक्सर राष्ट्र के भीतर अत्यंत गंभीर संघर्षों को जन्म देते हैं।

इसलिए "विश्व दर्शन" धर्म के समतुल्य नहीं है, लेकिन इसमें धर्म को भी शामिल किया जा सकता है। एक "विश्व दर्शन" को धर्म या विज्ञान द्वारा एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया जा सकता है; इसे किसी राष्ट्र के कलात्मक या सांस्कृतिक गुणों द्वारा आकार दिया जा सकता है। यदि किसी राष्ट्र का "विश्व दर्शन" वास्तव में गहन और प्रामाणिक है, तो वह सब कुछ समाहित और विशिष्ट करेगा। दूसरी ओर, यह इतना विस्तृत है कि इसमें सबसे व्यापक रूप से भिन्न मानसिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ भी समाहित हो सकती हैं।

विश्व दर्शन से जुड़े प्रश्नों के प्रति विभिन्न राष्ट्रों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों का दृष्टिकोण, चाहे वे धार्मिक, वैज्ञानिक या सांस्कृतिक प्रकृति के हों, अतीत की सभी शताब्दियों में राष्ट्रों के न केवल बौद्धिक बल्कि राजनीतिक जीवन को भी निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण योगदान कारक रहा है, और मेरा मानना है कि इतिहास के महान युगों के दौरान विश्व दर्शन का विदेशी राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा, यह प्रश्न विश्व इतिहास की सबसे दिलचस्प समस्याओं में से एक है। मुझे वास्तव में संदेह है कि क्या यह प्रश्न अब तक पर्याप्त गहन अध्ययन का विषय बन पाया है, हालाँकि यह न केवल शोधार्थी को, बल्कि प्रत्येक राजनेता को भी आकर्षित करना चाहिए।

क्या मुझे कुछ उदाहरण देने की अनुमति दी जाए ताकि यह दर्शाया जा सके कि एक राजनीतिक दल कितनी निर्णायक भूमिका निभाता है? क्या “विश्व दर्शन” सदियों और सहस्राब्दियों तक इतिहास के विकास को प्रभावित कर सकता है?

जब ईसाई धर्म भूमध्य सागर से यूरोपीय महाद्वीप में फैला और एक के बाद एक जर्मनिक जनजातियाँ ईसाई बन गईं, तो पाया गया कि उनमें से लगभग सभी ने रोमन कैथोलिक सिद्धांत को स्वीकार नहीं किया, बल्कि एरियन बन गए, यानी एरियस के अनुयायी, जिनकी ईसाई धर्म के संस्थापक के व्यक्तित्व और दिव्य पद के बारे में धारणा रोमन कैथोलिक चर्च से काफ़ी भिन्न थी। केवल एक महत्वपूर्ण जनजाति ही रोमन कैथोलिक बनी, क्योंकि

नेता की सुविधानुसार, अर्थात् फ्रैंकोनियन, ये फ्रैंकोनियन जनजातियाँ थीं। हालाँकि, ये फ्रैंकोनियन सैन्य दृष्टि से भी सबसे शक्तिशाली जनजातियाँ थीं और पूर्वी जर्मनों की तरह अपने मूल निवास से बहुत दूर नहीं गई थीं, और इस प्रकार प्राचीन रोम एक दृढ़ युवा इच्छाशक्ति से जुड़ा था जो अब पूर्व की ओर उन्मुख थी। यह इच्छाशक्ति सैन्य और विश्व-दार्शनिक दोनों ही रूपों में विजयी रही। अलेक्जेंड्रिया के एरियस (मृत्यु 336 ई.) ने सिखाया कि ईसा मसीह ईश्वर नहीं थे, बल्कि उनके द्वारा रचित थे। उनके सिद्धांत पर निकेया की परिषद ने प्रतिबंध लगा दिया और इस प्रकार यूरोप एरियन नहीं बना जैसा कि पहले लग रहा था, बल्कि रोमन कैथोलिक बन गया। यहाँ, हम एक विचार की दूसरे पर विजय देख रहे हैं, जिसके विश्व इतिहास के दृष्टिकोण से अथाह परिणाम हैं। यदि अन्य, एरियन, जनजातियों ने फ्रैंकोनियनों को पराजित कर दिया होता, तो यूरोप एक बिल्कुल अलग आध्यात्मिक रूप धारण कर लेता और बाद में साकार हुआ पूरा प्रोटेस्टेंट आंदोलन प्रकट नहीं होता; कम से कम उसी रूप में तो नहीं।

धर्म पर आधारित एक "विश्व दर्शन" किस प्रकार समस्त राष्ट्रों पर अपनी इच्छा थोपता है, इसका दूसरा उदाहरण इस्लाम है। इस विश्वास ने असंख्य बेडौइन जनजातियों को एकजुट किया, जिन्होंने अपनी आस्था में दृढ़ होकर, पूरे उत्तरी अफ्रीका पर विजय प्राप्त की और दक्षिणी यूरोप पर आक्रमण किया। हालाँकि अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले यूरोपीय लोगों ने उन्हें खदेड़ दिया था, फिर भी मुस्लिम धर्म ने आबाद पृथ्वी के एक बड़े हिस्से पर अपनी छाप छोड़ी है: जिब्राल्टर से लेकर अफ्रीका, फ़िलिस्तीन और भारत तक। आज तक जारी राजनीतिक आंदोलन और कटु विवाद दर्शाते हैं कि कैसे एक विशिष्ट "विश्व दर्शन" एक सतत प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है, जो अपने प्रभाव में आने वाले सभी राष्ट्रों को अपने विशिष्ट "विश्व दर्शन", अपनी जीवन शैली, अपनी शासन-प्रणाली और अपनी संस्कृति का प्रचार और बचाव करने के लिए बाध्य करता है।

कई शताब्दियों तक विश्वव्यापी चर्च की विजय के बाद, यूरोप के कई हिस्सों में उसके विरुद्ध हिंसक विद्रोह भड़क उठे। इन विद्रोहों ने जनता के अंदर से ऐसे विरोधों को जन्म दिया जिसने दुनिया को हिलाकर रख दिया और जो एक साझा विचारधारा पर आधारित थे। सदियों तक विश्वव्यापी चर्च और उसके सैन्य प्रतिनिधित्व के विरुद्ध विभिन्न प्रोटेस्टेंट लोगों का संघर्ष पूरे यूरोप में व्याप्त रहा। लेकिन इस संघर्ष के बीच यूरोपीय सामूहिक मन एक बिल्कुल नई दिशा में मुड़ गया, एक अत्यंत विशिष्ट तरीके से: एक मूलतः धार्मिक या हठधर्मी संघर्ष से, यह विवाद राष्ट्रीय हो गया। एक राष्ट्रीय संरचना की रक्षा नैतिक मूल्यों का स्थान ले लेगी, भले ही उनके प्रतिनिधि सर्वोच्च कोटि के ही क्यों न हों। शायद इस नए युग की ओर मुड़ने का सबसे अच्छा उदाहरण कार्डिनल रिचेल्यू का मामला है। उन्होंने स्वयं को लुई तेरहवें के अग्रणी मंत्री और लुई ग्यारहवें के उत्तराधिकारी के रूप में देखा, जो राष्ट्रीय एकीकरण की उस योजना को क्रियान्वित कर रहे थे जिसकी कल्पना लुई ग्यारहवें ने की थी; दूसरी ओर, वे रोमन चर्च के एक बिशप और बाद में कार्डिनल थे। पेरिस के दरबार में रोमन कैथोलिक प्रभाव का बोलबाला था और उसका प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से स्पेनिश दल द्वारा किया जाता था। रोम की नीति निस्संदेह स्पेन और हैप्सबर्ग के पक्ष में थी, और फ्रांस पर हिस्पैनिक-हैप्सबर्ग विजय के पूर्ण होने से निश्चित रूप से यूरोप में लंबे समय तक विशुद्ध रूप से कैथोलिक वर्चस्व स्थापित होता। लेकिन रिचेल्यू ने, हालाँकि अपने प्रोटेस्टेंट सहयोगियों के साथ अपने सभी समझौतों में रोमन चर्च की स्वतंत्रता की माँग की थी, अपना समर्थन दूसरे पक्ष को हस्तांतरित कर दिया और दुनिया को हैप्सबर्ग के विरुद्ध संगठित करने, स्पेन की शक्ति को तोड़ने और साथ ही पोप की लौकिक शक्ति को निष्प्रभावी करने की पूरी कोशिश की। फ्रांसीसी दरबार में सभी पोप मित्रों के विरुद्ध उसने फ्रांस के वर्चस्व को मजबूत करने के सभी उपाय किए; अपनी स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए उसने अपने देश में प्रोटेस्टेंटों का सफाया कर दिया, लेकिन गुस्तावस एडोल्फस और वाइमर के ड्यूक बर्नहार्ड के साथ गठबंधन किया। उसने फ्रांसीसी तोपों को पोप सैनिकों पर गोलीबारी करने का आदेश भी दिया। मैं सोचता हूं कि रोमन कार्डिनल के आदेश पर रोम की सेना के खिलाफ दागी गई ये गोलियां यूरोप के एक नए रुख की ओर मुड़ने का प्रतीक हैं, जो तब से लेकर अब तक हमारे महाद्वीप के जीवन में मौजूद रहा है।

उन्नीसवीं सदी में इस दृष्टिकोण में एक नए यूरोपीय राष्ट्रवाद के प्रति परिवर्तन आया। दुनिया भर में राष्ट्रीय विचार जीवन का मुक्तिदायी विचार था। इसका प्रमाण उस समय के कई लेखों और वाशिंगटन, बोलिवर और गैरीबाल्डी जैसे व्यक्तित्वों में मिलता है। हालाँकि, इसी समय, विज्ञान और वाणिज्य का महत्व लगातार बढ़ता गया और वाल्टर राथेनौ का यह कथन: "भाग्य अर्थशास्त्र द्वारा तय होता है" अधिकांश सामाजिक समस्याओं के विस्तार का "प्रधानमंत्र" बन गया। एक अन्य महत्वपूर्ण कारक विभिन्न राज्यों की जनसंख्या का आंकड़ा था, जिसके कारण उन्हें दुनिया में कहीं भी उत्पादों और कच्चे माल की आपूर्ति के लिए बाज़ार तलाशने पड़े। इस दृष्टिकोण को मुख्यतः दुनिया भर में फैले लोगों द्वारा प्रायोजित और प्रचारित किया गया था। यह वकालत की गई कि एक "विश्व गणराज्य" का लक्ष्य रखा जाना चाहिए, और पहले से मौजूद राष्ट्रीय-आर्थिक प्रणालियों को एक तथाकथित विश्व-आर्थिक प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए, जो अधिमानतः एक केंद्रीय नियंत्रण के अधीन हो।

यह सच है कि सदी के मोड़ पर सैन्य-राजनीतिक चरित्र वाले कुछ राष्ट्रीय राज्य थे, लेकिन आर्थिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो कई विभिन्न आर्थिक समूहों, वाणिज्यिक और औद्योगिक ट्रस्टों और अंतर्राष्ट्रीय बैंकों का एक लगभग निराशाजनक भ्रम था, जो एक-दूसरे का विरोध करते थे और जिनकी सफलता या विफलता इतने सारे लोगों को प्रभावित करती थी कि राष्ट्रीय नीति को इन निजी हितों के अधीन होने और उन्हें बड़े हिस्से के लिए राष्ट्रीय महत्व के रूप में मान्यता देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस विशुद्ध आर्थिक व्यवस्था के सामाजिक प्रभावों के विरुद्ध हर तरह से विरोध स्वरूप, लाखों लोग उठ खड़े हुए और सभी राष्ट्रों को शामिल करने वाले एक आंदोलन, यानी मार्क्सवादी-कम्युनिस्ट इंटरनेशनल, के माध्यम से सामाजिक स्वतंत्रता का उपदेश देने वाले सिद्धांतों को सुना। ये सभी धाराएँ और प्रवृत्तियाँ, जो लगातार जटिल होती जा रही थीं और नए-नए मुद्दों से बढ़ती जा रही थीं, उन्नीसवीं सदी के अंत में एक अवरोध पैदा कर गईं और यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि फ्रेडरिक नीत्शे इन झटकों के सबसे संवेदनशील भूकंपदर्शी रहे हैं जिन्होंने पूरी दुनिया को हिला दिया। उन्होंने किसी भावुक दर्शन में लिप्त नहीं हुए, बल्कि आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास किया, जो करोड़ों लोगों को प्रभावित करने वाली थीं।

यह अहसास कि नागरिक और मार्क्सवादी, दोनों ही ताकतों के प्रभाव में सामाजिक ताना-बाना शून्यवाद में बदल जाएगा, और साथ ही यह आशा कि इस विपत्ति से एक सशक्त जाति का उदय होगा, उनके सूत्रों और उनके सभी लेखन की विशेषता है। उसी समय पॉल डी लागार्ड और रिचर्ड वैगनर जैसे लोगों को लगा कि दुनिया अपने अंत की ओर बढ़ रही है और एक नई दुनिया का जन्म होना है। रूस में, दोस्तोयेव्स्की ने रूस के अंत को गहरे रंगों में चित्रित किया। और जहाँ एक ओर अत्यधिक असुरक्षा की भावना सर्वव्यापी हो गई, वहीं इन विचारों को, जिनका कोई आकार नहीं था, सभी राष्ट्रों की राजधानियों में स्वीकृति मिली। रूस का पतन हुआ, और वे प्रवृत्तियाँ प्रबल हुईं जिनकी भविष्यवाणी दोस्तोयेव्स्की ने अपने "द ब्रदर्स करमाज़ोव" और "डेमन्स" में की थी। रूस में साम्यवाद सभी सामाजिक सिद्धांतों के विरुद्ध विजयी हुआ, शहरों के सर्वहारा जन संगठन के माध्यम से नहीं, बल्कि इस तथ्य के कारण कि एक इच्छाशक्ति, जो पहले ही टूट चुकी थी, एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले गैर-यूरोपीय चरित्र के प्रभाव में आ गई।

यदि हम इन विभिन्न विश्व-दर्शनों का, जो प्रायः एक-दूसरे के घोर विरोधी प्रतीत होते हैं, सर्वेक्षण करें, तो हम पाते हैं कि उन सभी में एक समानता है। ये सभी एक सुपरिभाषित सिद्धांत से उत्पन्न होते हैं, चाहे वह धार्मिक हो, वैज्ञानिक हो, या सामाजिक-नैतिक हो। इन सिद्धांतों या आस्था की स्वीकारोक्ति के आधार पर वे एक कार्यक्रम बनाते हैं, उस कार्यक्रम में विश्वास करने वाले सभी लोगों को एकत्रित करते हैं, और अपनी सभी राजनीतिक और सैन्य शक्तियों के साथ इस सैद्धांतिक कार्यक्रम को क्रियान्वित करने का प्रयास करते हैं।

सामान्य और राजनीतिक रूप से कहें तो, यह दृष्टिकोण उस चीज़ से जुड़ा है जिसे "सार्वभौमिकता" कहा जा सकता है। यह सार्वभौमिकता मौजूद है, चाहे किसी व्यक्ति को सर्वोच्च स्वामी नियुक्त किया गया हो जिससे विश्व-आंदोलन अपने नियम प्राप्त करता है, या चाहे वह अमूर्त पर आधारित हो

समाज या किसी विशेष सिद्धांत पर। वास्तव में यूरोपीय इतिहास की पिछली पंद्रह शताब्दियाँ दर्शाती हैं कि सभी राष्ट्र कहीं न कहीं ऐसे सार्वभौमिक रूप से कल्पित "विश्व दर्शन" के भीतर चलते हैं और राष्ट्रों के बीच सभी महान संघर्ष एक ऐसे सिद्धांत के भीतर अपना रास्ता बनाते हैं जिसका एक सार्वभौमिक चरित्र होता है। रोमन कैथोलिक "विश्व दर्शन" में इस सिद्धांत की विशेषता धार्मिक सार्वभौमिकता थी; और प्रोटेस्टेंट हठधर्मिता में भी यही विशेषता मौजूद थी, हालाँकि एक अलग रूप में और व्यक्तिवादी परिणामों के बावजूद; उदारवाद की प्रणाली में हम एक सामाजिक-नैतिक सार्वभौमिकता पाते हैं, जैसा कि फ्रांसीसी क्रांति के दौरान प्रचारित किया गया था; और यह एक शून्यवादी सार्वभौमिकता थी जो मार्क्सवादी आंदोलन की शाखा, विश्व-साम्यवाद की विशेषता थी, जो अब राष्ट्रीयताओं और राज्यों को मान्यता नहीं देता था, बल्कि केवल समाजवादी सोवियत गणराज्यों के एक संघ को मान्यता देता था, जिसमें किसी भी समय अन्य सोवियत गणराज्य जुड़ सकते थे।

निर्णायक और आमूल-चूल विश्व-दार्शनिक परिवर्तन, जैसा कि हम आज देखते हैं, हमारे इस दृढ़ विश्वास में निहित है कि आने वाले संघर्ष का स्वरूप अब पहले जैसा नहीं रहेगा और राष्ट्रीय संघर्ष किसी सार्वभौमिक प्रकार के "विश्व दर्शन" के अंतर्गत नहीं लड़े जाएँगे, बल्कि ये संघर्ष एक राष्ट्रवादी "विश्व-दर्शन" के अंतर्गत लड़े जाएँगे। दूसरे शब्दों में: जो प्रवृत्तियाँ पहले विशुद्ध रूप से राजकीय थीं, वे व्यापक होती जा रही हैं और विश्व-दार्शनिक दृष्टिकोण से देखी जा रही हैं, और जीवन को उसकी व्यापकतम अवधारणा में विनियमित करने वाले एक निर्णायक कारक के रूप में विकसित हो रही हैं। हमारे वर्तमान युग के आरंभ में एक सार्वभौमिक चर्च का शासन सर्वोच्च धार्मिक और राजनीतिक तत्व था। जब पहला विद्रोह हुआ, तो दो धार्मिक संप्रदायों ने एक-दूसरे का विरोध किया। इस संघर्ष के बाद के चरण में ये प्रमुख कारक धार्मिक से राजकीय-राजनीतिक क्षेत्र में स्थानांतरित हो गए, जिसने पहले राजतंत्र का रूप लिया और अंततः एक गणतंत्रात्मक विचार का।

उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत में हम पाते हैं कि लाखों लोगों के मन में वर्ग की भावना सबसे ज़्यादा प्रबल थी। और इन विभिन्न कारकों में से प्रत्येक ने विभिन्न दलों में से एक, विशेष रूप से जर्मनी में, के मूल राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण किया। मध्य युग के प्रमुख कारक का प्रतिनिधित्व सेंटर पार्टी द्वारा किया गया; वंशवादी विचार का प्रतिनिधित्व पूर्व रूढ़िवादी समूहों द्वारा; लोकतांत्रिक पार्टी द्वारा गणतंत्रात्मक विचार के साथ मिश्रित आर्थिक विचार का प्रतिनिधित्व किया गया; और मार्क्सवादी समूहों द्वारा वर्ग विचार का प्रतिनिधित्व किया गया। जर्मनी में मौजूद इन सभी समूहों के विरोध में, राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन ने एक नए, और फिर भी पुराने, प्रमुख कारक की घोषणा की, अर्थात्—राष्ट्रीय सम्मान का आदर्श।

पिछले चौदह वर्षों के सभी संघर्ष, 1933 तक, इसी झंडे तले लड़े गए हैं। हालाँकि, अगर इसने कोई रहस्यमयी ताकत हासिल की भी, तो यह केवल इसलिए संभव हुआ क्योंकि अपने सम्मान के प्रति सजग एक महान राष्ट्र का पतन हो गया था, जिसके बाद केवल एक ही निर्णय लेना बाकी था। या तो पुराने राजनीतिक समूहों को पुरानी दुनिया के दर्शनों का प्रतिनिधित्व करने के रूप में और भी सहन करना होगा, या नए सिद्धांतों पर आधारित एक नए राजनीतिक दर्शन को जर्मन जनता के जीवन की नींव के रूप में गढ़ना होगा। मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि राष्ट्रीय सम्मान का विचार कोई नया विचार नहीं है जो अचानक उत्पन्न हुआ हो; वास्तव में, जब से जर्मन जनता अस्तित्व में आई है, उसकी पूरी कला और साहित्य इसी के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। "हिल्डेब्राँड महाकाव्य", "निबेलुंगेनलाइड" और "गुद्रुन गाथा" इसे प्रमाणित करते हैं, और यही बात संपूर्ण जर्मन वीर संगीत भी प्रमाणित करता है। इसके अलावा, यह विचार पुराने जर्मन "सैक्सन कानूनों" और "नागरिक कानून" (स्टैडटेरेच्ट) की कानूनी संहिताओं के मूल में था, जो कई लोगों के लिए कई कारकों का आधार बने जिन्होंने अंततः एकीकरण को जन्म दिया। मेरे लिए इस बात पर ज़ोर देना भी ज़रूरी नहीं है कि मैं यहाँ जो कह रहा हूँ उसका उद्देश्य अन्य राष्ट्रों का संदर्भ या आलोचना नहीं है।

मेरा एकमात्र उद्देश्य यह बताना है कि जर्मनी में क्या हुआ है, और यह दिखाना है कि इस मामले में हम अनेक क्रांतियों में से किसी एक से नहीं निपट रहे हैं, बल्कि जर्मनी में निर्णायक क्रांति से निपट रहे हैं।

जर्मन इतिहास शुरू हो चुका था: एक क्रांति जो अचानक शुरू नहीं हुई थी, बल्कि जिसके सिद्धांत

जर्मन किसान युद्धों में, पुराने "स्वतंत्र शहरों" के कानूनी अधिनियमों में, फ्रेडरिक द ग्रेट में, 1813 के जर्मन मुक्ति युद्धों के नेताओं में, और अठारहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी के मोड़ पर महान विचारकों में पाया जा सकता है।

और क्या मुझे यहाँ यह घोषित करने की अनुमति दी जाए कि यह उत्कट जर्मन राष्ट्रवाद वास्तव में अन्य लोगों के वैध राष्ट्रवाद के लिए कोई ख़तरा नहीं है, बल्कि इसके विपरीत, यह जर्मन राष्ट्रवाद ही है जो अन्य सभी मुद्दों पर अपनी आध्यात्मिक श्रेष्ठता के द्वारा उस न्यायसंगत संतुलन की गारंटी दे सकता है जिसकी पूरी दुनिया लालसा कर रही है। आज राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन पर आधारित अधिनायकवादी राज्य, अन्य जातियों के लोगों के बीच एक अनुचित सांस्कृतिक प्रचार को, साथ ही एक अराजक आर्थिक विस्तार को समाप्त करने की स्थिति में है, जो अन्यथा जर्मन राष्ट्र को आर्थिक संघर्षों से अन्य राष्ट्रों के साथ राजनीतिक संघर्ष की ओर ले जा सकता था।

जर्मन राष्ट्रवाद, जो नस्ल और धरती पर आधारित एक "विश्व-दर्शन" है, सार्वभौमिकता से संबंधित कोई सिद्धांत नहीं है; न तो इसके आधारों और न ही इसके निष्कर्षों में यह पूर्वधारणा शामिल है कि इसे अन्य और इसलिए विभिन्न राष्ट्रों और जातियों को प्रभावित करना चाहिए। दूसरी ओर, हम मानते हैं कि हमारा दर्शन प्रकृति और उसके नियमों के प्रति श्रद्धापूर्ण प्रशंसा की ओर वापसी का भी प्रतीक है। इसलिए राष्ट्रीय समाजवादी "विश्व-दर्शन" का अर्थ हमारे लिए राष्ट्रीय जीवन के उन रूपों से जानबूझकर विमुख होना है जो विभिन्न लोगों और जातियों की विशेषताओं को उचित महत्व नहीं देते; उन सांस्कृतिक-वैज्ञानिक सिद्धांतों का त्याग जो सभी राष्ट्रों पर समान रूप से लागू होने का दावा करते हैं; और अंततः हम इसे इन्हीं क्षेत्रों में अपनी प्रेरक शक्तियों की एक उच्चतर और साथ ही गहन चेतना प्राप्त करने के प्रयास के रूप में देखते हैं। हमारा नया "विश्व-दर्शन", दूसरों का तिरस्कार करने से कहीं दूर, राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच पारस्परिक वास्तविक सम्मान पैदा करने का एक अनिवार्य तत्व है।

इसी कारण, उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन एक पूरी तरह से अलग नस्ल और राजकीय संविधान के प्रति अत्यधिक सम्मान रखता है, दोनों की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। सुदूर पूर्व के दो महान राष्ट्रों में हम ऐसी संरचनाएँ देखते हैं जो अपनी नींव पर खड़ी हैं। हमारे लिए जापान, जिसका इतिहास हज़ारों साल पुराना है, अपनी धार्मिक अभिव्यक्ति, राज्य सत्ता के प्रति अपनी अधीनता और राष्ट्रीय हितों के प्रति समर्पण के लिए प्रशंसनीय है। चीनी राष्ट्र भी "विश्व दर्शन", अर्थशास्त्र और सामाजिक नैतिकता के एक रूप से विकसित हुआ है, जो आज भले ही खंडित प्रतीत होता है, फिर भी पुनर्जीवित हो सकता है। और हम इस पुनर्गठन के प्रयास को उसी रुचि और सम्मान के साथ देखेंगे जो हम अन्य राष्ट्रों की सभी महान महत्वाकांक्षाओं को देते हैं।

यह सामान्य बात है कि दुनिया भर में कई राष्ट्रों के व्यावहारिक रूप से अनियंत्रित विस्तार के युग ने संघर्ष को जन्म दिया और इस तथ्य का एहसास हुआ कि आर्थिक विस्तार के इस दौर के बाद, संकुचन का एक दौर शुरू हो गया है। इसमें प्रत्येक राष्ट्र को अपना वास्तविक स्वरूप मिलेगा। यह संघर्ष बिना किसी अपवाद के सभी राष्ट्रों में विद्यमान है, यह बात पूरी दुनिया में सामाजिक या विश्व-दार्शनिक प्रकृति के हिंसक संघर्षों से स्पष्ट होती है। ये संघर्ष लगभग सार्वभौमिक अविश्वास के अस्तित्व को सिद्ध करते हैं और दर्शाते हैं कि राष्ट्रों के कार्य अंततः किसी सुपरिभाषित विचार से संचालित नहीं होते, बल्कि कई अलग-अलग व्यवस्थाएँ किसी स्थायी निर्णय पर पहुँचे बिना वर्चस्व के लिए संघर्ष कर रही हैं।

यदि हम समकालीन राजनीति के संकेतों और संकेतों की सही व्याख्या करें, तो ऐसा प्रतीत होता है कि सभी राष्ट्रों का मानसिक संघर्ष उन सभी प्रणालियों को, जो अनिर्णायक युद्ध लड़ रही हैं, किसी विशेष प्रणाली द्वारा, या एक पूरी तरह से नई प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित करने की इच्छा पर केंद्रित है, जो उन सभी को पार कर जाए।

जर्मनी इस विश्व संघर्ष में एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है - और जरूरी नहीं कि वह एक ऐसा उदाहरण हो जो...

अनुकरणीय उदाहरण - इस संभावना को मजबूत करने के लिए कि एक तथाकथित "भाग्यशाली" विकास किसी भी तरह से साम्यवाद में समाप्त होने के लिए बाध्य नहीं है, लेकिन यह कि एक मजबूत चरित्र से पैदा हुआ दृढ़ संकल्प उस पुरानी विचारधारा को दूर कर सकता है जो अब वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है। सार में स्वतंत्र और गुप्त जनमत संग्रह ने पूरी दुनिया को दिखा दिया है कि जीवन की नई अवधारणा ने सभी विरोधी धाराओं के बावजूद पूरे जर्मन राष्ट्र में कितनी गहराई से प्रवेश किया है, जिन्हें बिना किसी बाधा के अपना प्रभाव डालने की अनुमति दी गई थी। हम खुद, कम से कम, आश्वस्त हैं कि जर्मन प्रणाली, जिसमें यह किसी भी निजी राजनीतिक या निजी आर्थिक हितों को शक्ति प्राप्त करने से रोकती है, अकेले जर्मन रीच के लिए उन सीमाओं को परिभाषित करने में सक्षम है जो न केवल जर्मनी के बल्कि अन्य राज्यों के महत्वपूर्ण हितों में भी आवश्यक हैं।

इससे कई वर्षों में पहली बार, निजी हितों, चाहे वे कभी इतने प्रबल न भी हों, और समग्र रूप से राष्ट्र के महत्वपूर्ण हितों के बीच अंतर करना संभव हो गया है। साथ ही, हमारे पास एक स्थिर विदेश नीति की संभावना भी है, जिसकी प्रकृति ऐसी हो कि विभिन्न राष्ट्रों के जीवन से जुड़ी प्राकृतिक प्रेरक शक्तियाँ अब मनमाने ढंग से एक-दूसरे के विरुद्ध निर्देशित न हों, बल्कि व्यक्तिगत राष्ट्रों के हितों और सभी राष्ट्रों के एक संगठित सहयोग, दोनों में एक-दूसरे के साथ खड़ी हों। महाशक्तियों के इस समूह में, संख्यात्मक रूप से छोटे राष्ट्रों के लिए संकीर्ण स्वार्थ का साधन न रहकर, महाशक्तियों के बीच संगठित गतिविधियों में समान अधिकारों से संपन्न इकाइयाँ बनना संभव हो जाएगा। मैं यह भी जोड़ना चाहूँगा कि "छोटे राष्ट्रों" की बात करते समय, मैं केवल उनके क्षेत्रफल और जनसंख्या की बात कर रहा हूँ और किसी भी तरह से उनके बौद्धिक और सांस्कृतिक महत्व को कम नहीं करना चाहता।

इस प्रकार राष्ट्रीय समाजवादी "विश्व दर्शन" और राष्ट्रीय आदर्श का पुनर्जन्म राज्य और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की एक नई अवधारणा को जन्म देता है; व्यक्ति पर एक नया, सुव्यवस्थित राज्य नियंत्रण, जो अकेले ही वास्तविक स्वतंत्रता उत्पन्न कर सकता है, जो व्यक्तियों द्वारा दुरुपयोग के स्पष्ट विपरीत है, जिसने नियंत्रण के अभाव में, जीवन के कई क्षेत्रों को प्रभावित किया, पूरे राष्ट्रों की भावनाओं और विचारों को विषाक्त और भ्रष्ट कर दिया, जिससे भ्रष्टाचारियों को नहीं, बल्कि राष्ट्रों को नुकसान हुआ।

जीवन के विभिन्न रूपों के बीच सामंजस्य की स्थापना, राष्ट्रीय गतिविधि की सभी शाखाओं को नियंत्रित करने वाले एक आधिकारिक राज्य और अन्य राज्यों के बीच समझौते, और इस प्रकार गठित राज्यों के समूहों ("जटिल") और राजनीतिक, नस्लीय और भौगोलिक कारकों द्वारा निर्धारित अन्य इकाइयों के बीच समझौते—उन्नीसवीं सदी की विशेषता वाले अव्यवस्थित तत्वों के विपरीत—यह सब हमारे वर्तमान युग के निर्णायक परिवर्तन का निर्माण करते हैं। और राष्ट्रीय समाजवाद सभी राष्ट्रों के हित में इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तैयार है। इस प्रकार हम पाते हैं कि नए "विश्व-दर्शन" का राजनीतिक चिंतन और अंततः आर्थिक एवं विदेशी राजनीतिक गतिविधियों पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है।

हमारा मानना है कि इस संक्षिप्त सारांश में प्रस्तुत विचार, उनके संभावित व्यावहारिक अनुप्रयोगों और प्रभावों के दृष्टिकोण से गहन अध्ययन के लायक हैं; एक जर्मन के शब्दों को ध्यान में रखते हुए, जिसने एक शताब्दी पहले स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़ी थी: "दूसरों की मातृभूमि का सम्मान करें, लेकिन अपनी मातृभूमि से प्यार करें"।

फासीवाद, महिलाएँ और लोकतंत्र, नोरा एलाम द्वारा

"अनुभव से पता चलता है कि आज सभी देशों में लोकतंत्र अपनी प्रकृति को स्वतंत्र रूप से विकसित कर सकता है, सबसे घिनौना भ्रष्टाचार बिना किसी के विचार के प्रदर्शित किया जाता है ताकि उसकी दुष्टता को छुपाया जा सके। लोकतंत्र बेईमान वित्तपोषकों द्वारा देखे जाने वाले बहुतायत का · · देश है।"

- जॉर्जेस सोरेल, रिफ्लेक्शंस सुर ला वायलेंस।

टी हे एक सच्चे निंदक, जो 1906 से 1914 तक महिलाओं के लिए वोट के संघर्ष में रहा, कोई भी तमाशा युद्ध के बाद के उत्साही व्यक्ति से अधिक विचलित करने वाला नहीं है, जिसका एक जुनून फासीवादी ब्रिटेन में मताधिकार प्राप्त महिलाओं के लिए कथित खतरा प्रतीत होता है।

इस अप्रत्याशित चिंता को अप्रत्याशित जगहों पर सबसे ज़्यादा ज़ोरदार समर्थक मिल रहे हैं, और जो लोग युद्ध-पूर्व संघर्ष के इतने ख़िलाफ़ थे, उन्होंने आज पूरी तरह से पलटी मार ली है। हमारे नए संरक्षक इस दृढ़ संकल्प में बेजोड़ हैं कि महिलाओं को सिद्धांत रूप में किसी भी चीज़ से वंचित नहीं किया जाएगा, भले ही व्यवहार में उन्हें अपने अस्तित्व के लिए ज़रूरी ज़्यादातर चीज़ों से वंचित रखा जाए।

उस ऐतिहासिक लड़ाई में हिस्सा लेने वाली और वोट को सिर्फ़ एक प्रतीक मानने वाली, यह मानने वाली कि इसकी मदद से एक नई और बेहतर दुनिया संभव हो सकती है, उस महिला के लिए इस तरह का संरक्षण उतना ही अरुचिकर है जितना एक पीढ़ी पहले था। वह सोचती है, और कुछ हद तक सही भी है, कि यह बेतुकापन है कि जिन लोगों ने उन तमाम थकाऊ सालों में उसकी मदद के लिए कभी हाथ नहीं बढ़ाया, बल्कि इसके विपरीत उसे एक अविवाहित कुंवारी या निराश कुंवारी के रूप में वर्णित किया, वे सफलता के क्षण में एक प्रतिक्रियावादी और पतनशील व्यवस्था के हित में उसके लिंग का शोषण करने का प्रयास करें। ऐसी धृष्टता केवल इसलिए संभव है क्योंकि जो लोग इसका सहारा लेते हैं, उन्होंने उस संघर्ष के अर्थ को पूरी तरह से गलत समझा और अब भी गलत समझते हैं, और राजनीतिक स्वतंत्रता की माँग को व्यक्तिगत स्वतंत्रता की इच्छा के रूप में व्याख्यायित किया।

समय आ गया है कि उन सिद्धांतों को पुनः दोहराया जाए जो न केवल महिलाओं की स्थिति में बल्कि उनके प्रति स्वीकृत दृष्टिकोण में भी व्यवस्थित परिवर्तन के लिए उल्लेखनीय और दृढ़ अभिव्यक्ति के आधार हैं।

तो फिर, वह क्या था जिसने उन तूफ़ानी वर्षों में हजारों महिलाओं के दिलों को झकझोर दिया और उनके मन को दिशा दी? यह, जैसा कि बहुतों ने कल्पना की थी, व्यक्तिगत स्वार्थ की नीच इच्छा नहीं थी, न ही महिलाओं द्वारा केवल अपने लिंग के लिए संघर्ष। इसके विपरीत, नेताओं से लेकर सबसे विनम्र वर्ग तक, यह मूलभूत विश्वास था कि पुरुषों और महिलाओं द्वारा बसाई गई दुनिया में और दोनों लिंगों के भाग्य को नियंत्रित करने वाली राजनीतिक व्यवस्था के तहत, वह देश जो अपनी परिषदों से अपने आधे से अधिक लोगों के प्रभाव, दृष्टिकोण और प्रतिभा को बाहर रखता है, वह सर्वोत्तम शासन प्रणाली को कार्यान्वित करने में उस सीमा तक अक्षम होगा। यदि पुरुष अराजक आर्थिक परिस्थितियों के शिकार थे, तो महिलाओं ने भी उनके साथ कष्ट सहे। यदि वे सामाजिक परिस्थितियाँ जिनमें पुरुषों ने लगभग निराशाजनक जीवन जिया, असहनीय थीं, तो वे उनकी महिलाओं के लिए भी उतनी ही असहनीय थीं।

अपने देश के बड़े शहरों को उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक देखते हुए, उन्होंने ऐसी आवासीय स्थितियाँ देखीं जिनके बारे में पुरुष और महिलाएँ दोनों सहमत थे कि वे आधुनिक सभ्यता के लिए कलंक हैं; श्रम बाज़ार को देखते हुए, वे उस असुरक्षा के साये को लेकर आशंकित थे जो मज़दूरों को सताती है और जो पुरानी व्यवस्था में अंतर्निहित है। राजनीतिक क्षेत्र में, उन्होंने देखा

गृह और विदेश नीति, दोनों में, मामलों को इस तरह से संचालित किया जा रहा था कि ब्रिटेन की गहरी परवाह करने वाले या राज्य के सभी पक्षों पर पहले से ही शुरू हो चुके पतन को समझने वाले किसी भी व्यक्ति के दिल में दहशत फैल गई। उन्होंने माँग उठाई कि महिलाओं को पुरुषों के बराबर की भूमिका में बुलाया जाए, ताकि बहुत देर होने से पहले वे मदद कर सकें।

संक्षेप में, यह विद्रोह पुरानी शत्रुताओं को चुनौती देने तथा राज्य के निगमित निकाय में सहयोग का आह्वान था।

व्यावहारिक नागरिकता की इस अवधारणा में, महिलाओं का संघर्ष फ़ासीवाद के नए दर्शन से काफ़ी मिलता-जुलता है। वास्तव में, फ़ासीवाद एक पीढ़ी पहले की जुझारू महिलाओं द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण मुद्दों की तार्किक, बल्कि कहीं अधिक व्यापक, अवधारणा है। समानता के बिंदु यहीं समाप्त नहीं होते। फ़ासीवादी आंदोलन की तरह, महिला आंदोलन भी कड़े अनुशासन में चलाया गया और सभी दलों की निष्ठाओं को दरकिनार कर दिया गया; इसके समर्थक हर वर्ग और पार्टी से थे। इसने महिलाओं से स्वार्थ को भूलने; तुच्छ व्यक्तिगत लाभों और कुछ आश्रितों के विशेषाधिकारों को बहुसंख्यकों के लाभ के लिए त्यागने; और उन अन्यायों और कुकृत्यों के विरुद्ध एकजुट होने का आह्वान किया जो एक ऐसी व्यवस्था में निहित थे जो मानव जाति के कल्याण के लिए इतनी विनाशकारी थी। फ़ासीवादी आंदोलन की तरह, इसने भी अपना नेता चुना, और एक बार चुन लेने के बाद, उस नेता को अपनी नीति और नियति को निर्देशित करने का पूर्ण अधिकार दिया, इस देश के इतिहास में अभूतपूर्व निष्ठा और समर्पण का प्रदर्शन किया। इसके अलावा, फ़ासीवादी आंदोलन की तरह, इसे भी सड़कों पर क्रूरता का सामना करना पड़ा; अपने विरोधियों के उपहास; अच्छे लोगों की गलतफहमियाँ; और राजनेताओं का द्वेष। इसने मौजूदा सरकार की नफ़रत, और अंततः जेल की कोठरी का अकेलापन और जबरन खाना खिलाने की भयावहता को सहा। खुले स्थानों और गली के कोनों पर खड़े इसके वक्ताओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से वंचित रखा गया; इसके साहित्य बेचने वालों पर थूका गया और उन्हें गालियाँ दी गईं; इसके प्रतिनिधिमंडलों के साथ दुर्व्यवहार किया गया। मताधिकार आंदोलनकारी महिलाएँ किसी भी उपद्रवी का शिकार बन गईं जो कानून को अपने हाथ में लेना चाहता था। सादृश्य को और सटीक बनाने के लिए, कोई भी निंदा इतनी नीच और कोई भी बदनामी इतनी नीच नहीं थी कि उसके नेताओं के नैतिक चरित्र, या उन महिलाओं के उद्देश्यों और लक्ष्यों पर प्रहार न किया जा सके जो उनकी वफ़ादार थीं।

इस प्रकार यह हुआ कि इस तरह के संघ में एकजुट महिलाओं को राजनीतिक और पार्टी संबंधी सिद्धांतों के बारे में कोई भ्रम नहीं रहा, और जब "लोकतंत्र" और "व्यक्तिगत स्वतंत्रता" जैसे पवित्र शब्द उनके विरोधियों के होठों पर आम हो गए, तो उन्हें याद आया कि ये सब एक उदार प्रशासन के तहत, और एक ऐसी पार्टी के समर्थकों द्वारा किया गया था जिसने लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनी राजनीतिक बुद्धिमत्ता का शिखर बनाया था। कि इसके तहत, उन्हें अपराधियों, पागलों और बच्चों के साथ वर्गीकृत किया गया था। उन्होंने तर्क दिया और कुछ हद तक तर्क दिया कि अगर यह लोकतंत्र है तो महिलाओं को इससे बहुत कम उम्मीद है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था से बहिष्कृत होने के नाते उनका अनुभव उस अनुभव की तुलना में कुछ भी नहीं था, जब उन्होंने स्वयं को इसके संदिग्ध संरक्षण में सम्मानित नागरिक पाया।

यह सच है कि उन्होंने हर पांच साल में एक बार बहुत ही संक्षिप्त अवधि के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार अर्जित किया था, लेकिन जब उन्होंने मतपत्र पर वह घातक क्रॉस लगाया और अपने पीछे मतदान केंद्र का दरवाजा बंद कर दिया, उसी क्षण से उन्होंने खुद को लोकतांत्रिक मशीन के सामने पूरी तरह से असहाय पाया।

हालाँकि हमें बताया जाएगा कि हमने इसी के लिए लड़ाई लड़ी थी, लेकिन एक पल के विचार से पता चलेगा कि इसे सिर्फ़ एक प्रतीक माना गया था। महिलाओं ने कभी यह सोचने की घातक भूल नहीं की कि चूँकि पुरुष वोट देते हैं, इसलिए वे अनिवार्य रूप से स्वतंत्र हैं। आज की नासमझ महिला की यह धारणा ही उसकी पहचान है कि एक महिला इसलिए स्वतंत्र है क्योंकि वह भी वोट देती है, या यह कि लोकतंत्र कभी भी उन पुरुषों और महिलाओं के सावधानीपूर्वक और संगठित शोषण के अलावा कुछ भी नहीं दे सकता जो इसे अस्तित्व में रहने देते हैं।

युद्ध की समाप्ति पर सीमित आधार पर मतदान का अधिकार मिलने के साथ, महिलाओं को संसद में प्रवेश का अधिकार भी दिया गया, और 1918 की शरद ऋतु के उत्तरार्ध में हुए चुनावों ने उन्हें अपना पहला अवसर प्रदान किया। पार्टी व्यवस्था में पहले से ही क्षय के लक्षण दिखाई देने लगे थे, और प्रतिशोधात्मक न्याय के अटल नियम के तहत, ब्रिटेन में लोकतंत्र को जन्म देने वाली पार्टी अपनी कृतघ्न संतानों के सामने पूरी तरह से पीछे हट रही थी। फिर भी, अपनी विजय की पहली लहर में महिलाओं ने या तो मतदाता या संभावित उम्मीदवार के रूप में तत्कालीन मौजूदा पार्टियों की ओर रुख किया।

दलीय राजनीति के प्रति मेरे अपने अविश्वास ने मुझे इस दिशा में मुड़ने से रोका, और मैंने एक निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ना पसंद किया, और इस अवसर पर एक को छोड़कर बाकी सभी महिला उम्मीदवारों के साथ हार गई। अपवाद थीं सिन फेन काउंटेस मार्किएविच, जो ब्रिटेन की कुख्यात और घोषित दुश्मन होने के बावजूद, लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत उस देश की संसद में चुनाव जीतना बिल्कुल आसान समझती थीं, जिसके बारे में उन्होंने खुलेआम दावा किया था कि वे उसे नष्ट, विघटित और बदनाम कर देंगी। अगर मुझे ठीक से याद है, तो वे निर्विरोध चुनी गई थीं। अगला उदाहरण और भी उत्साहजनक नहीं था, क्योंकि एक अंग्रेजी निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित होने वाली पहली महिला एक अमेरिकी मूल की नागरिक थीं, जिनके पास अपनी संसद में ब्रिटिश महिलाओं का प्रतिनिधित्व करने का कोई अधिकार नहीं था, सिवाय इसके कि उन्होंने एक ब्रिटिश नागरिक से विवाह किया था, जो अपने पिता की मृत्यु के बाद उच्च सदन में जाने के लिए मजबूर हो गया था। महिला आंदोलन के आलोचकों ने इस परिणाम पर बहुत ही सहजता से ध्यान दिया, और इस महिला को स्त्री-गैरजिम्मेदारी का एक खेदजनक उदाहरण बताने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्हें इतना व्यक्तिगत होने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह ब्रिटिश हाउस ऑफ़ कॉमन्स में चुनी गई किसी भी अन्य महिला से न तो बेहतर थीं और न ही बदतर, जो कि जुझारू महिलाओं के वर्षों के प्रयास और संघर्ष का परिणाम था। यह एक दुखद तथ्य है, हालाँकि कम सच भी है, कि वेस्टमिंस्टर में पार्टी की महिलाओं के बाद के चुनाव ने न तो पुरुषों और न ही महिलाओं पर ज़रा भी फ़र्क़ डाला है, और हालाँकि कई योग्य महिलाएँ हमारे निर्वाचित प्रतिनिधियों की श्रेणी में शामिल हुई हैं, लेकिन ब्रिटेन या उसके साम्राज्य के भाग्य पर उनका प्रभाव बिल्कुल नगण्य रहा है। वे, अपने पुरुष सहयोगियों की तरह, लोकतांत्रिक व्यवस्था के पार्टी पहियों के सिर्फ़ दाँते हैं, पार्टी व्हिप की आवाज़ सुनते ही लॉबी में घुस जाती हैं, सरकारी मशीनरी के रथ के आगे असहाय, जो आगे बढ़ती रहती है, अपने सामने सभी पहल और स्वतंत्रता को कुचल देती है, और हर उस व्यक्ति को, जो उसकी नीतियों और उसके उपायों को लागू करने के लिए उसके प्रति वफ़ादार है, एक नाममात्र के व्यक्ति में बदल देती है। और अगर यह संसद के बारे में सच है—और इससे कौन इनकार कर सकता है?—तो यह महिला मतदाता के बारे में और भी सच है। वह भी इस कठोर व्यवस्था में फंस गई है, तथा अपनी पार्टी संगठन की गुलाम बन गई है।

जो लोग इसे चुनौती देते हैं, उनसे यह प्रश्न अवश्य पूछा जाना चाहिए: वर्तमान व्यवस्था में, किसी भी निर्वाचित सरकार की किसी भी नीति को बदलने का अधिकार किसी महिला सांसद या महिला मतदाता के पास कैसे है? क्या वर्तमान व्यवस्था का सबसे उत्साही प्रशंसक यह दावा करता है कि महिलाएँ, चाहे वे किसी भी दल की हों, इस देश की वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं? क्या वे आर्थिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं देखना चाहतीं, जिसके कारण रोज़गार के आँकड़े अविश्वसनीय रूप से दो से तीन मिलियन के बीच पहुँच गए हैं? क्या वे उन वीरान इलाकों के दृश्य देखकर संतुष्ट हैं जो हर जीवित व्यक्ति के दिल में निराशा भर देते हैं? क्या वे कृषि क्षेत्रों की दुर्दशा और कृषि उद्योग की दुर्दशा के प्रति उदासीन हैं और उन भयावह आवास स्थितियों से बेपरवाह हैं जिनकी सभी दल समान रूप से निंदा करते हैं?

साम्राज्यवादी और विदेशी राजनीति के विशाल क्षेत्र की ओर मुड़ते हुए, क्या यह तर्क दिया जा सकता है कि अधिकांश ब्रिटिश महिलाएँ साम्राज्य का विघटन देखना चाहती हैं, या कथित राष्ट्रीय सरकार की वर्तमान विदेश नीति की दिशा देखना चाहती हैं, जिसके तहत उनके नाम पर और इस देश के घोषित दुश्मनों के साथ गुप्त रूप से समझौते और प्रतिबद्धताएँ की जा रही हैं, जबकि साथ ही हमें न केवल अपनी तात्कालिक रक्षा के लिए, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर उन प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए भी निहत्था छोड़ दिया जा रहा है? क्या हम सचमुच जानते हैं कि हमें किस ओर धकेला जा रहा है?

प्रतिबद्ध; सामूहिक सुरक्षा की इस नीति में क्या शामिल है, या वह कौन सी भयावह शक्ति है जो इसे निर्देशित करती है? जॉर्जेस सोरेल कहते हैं, "लोकतंत्र वह समृद्धि की भूमि है जिसका सपना बेईमान वित्तपोषक देखते हैं।" क्या मताधिकार प्राप्त महिलाओं के पास उस सपने को साकार करने के उद्देश्य से निर्धारित गृह या विदेश नीति को रोकने की कोई शक्ति है? यह याद रखें कि जब बिल चुकाने का समय आएगा, तो हम इन नीतियों के परिणामों के आगे असहाय होकर, वध के लिए भेड़ों की तरह धकेले जाएँगे। तथाकथित स्वतंत्रता का क्या मूल्य है यदि यह हमें इन महत्वपूर्ण मुद्दों को बदलने की शक्ति नहीं दे सकती?

अगर यह सच है कि औसत महिला मतदाता इनमें से कुछ भी नहीं चाहती, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत आज़ाद होने पर भी वह इन्हें क्यों मंज़ूरी देती है? अगर उसे यह आज़ादी है, तो क्या एक घंटा और इन सब को सहने में वह दोगुनी-तिगुनी दोषी नहीं है? यही उसके देश की सरकार में ज़िम्मेदारी के उसके दावे की परीक्षा है। अगर उसे मौजूदा व्यवस्था के तहत ज़रूरी शक्ति और आज़ादी मिल गई है, तो यह आरोप कि वह अपने देश के मामलों में एक नागरिक की भूमिका निभाने में असमर्थ है, और वास्तव में ज़िम्मेदारी के लिए अयोग्य है, पूरी तरह साबित हो जाता है।

इनमें से कोई भी बात सच नहीं है। सच्चाई इस तथ्य में निहित है कि वर्तमान पुरातन व्यवस्था में न तो पुरुषों के लिए और न ही महिलाओं के लिए कोई स्वतंत्रता है। पुरुषों और महिलाओं दोनों को जो जकड़े हुए है, वह यह है कि दलीय व्यवस्था क्षयग्रस्त है, और यह बेलगाम लोकतंत्र में वयस्क मताधिकार दिए जाने के बाद से और भी स्पष्ट हो गया है। समय और परिस्थितियों के अपरिहार्य परिवर्तन के कारण, दुनिया भर में यही पतन व्याप्त हो गया है। गरीबी की दुनिया से असीम समृद्धि की दुनिया में परिवर्तन, व्यवस्थित नियोजन को न केवल आवश्यक बनाता है, बल्कि अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक भी बनाता है। इन परिवर्तनों के अंतर्गत पुरानी दुनिया के तरीके अप्रचलित हो जाते हैं और उन्हें नए तरीकों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। यदि महिलाओं को राष्ट्र की परिषदों में अपने स्थान के योग्य बनना है, तो उन्हें यथार्थवादी के रूप में उन नई विश्व परिस्थितियों का सामना करना होगा जो उनके चारों ओर उभर रही हैं। देर-सवेर उन्हें चुनाव करना ही होगा। यह निर्णय महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस पर महिलाओं की स्थिति लंबे समय तक निर्भर करेगी। इसलिए यह कोई मामूली बात नहीं है कि वे विश्व के इतिहास को तराजू पर अच्छी तरह से तौलें।

स्त्री के सामने दो रास्ते खुले हैं। पहला यह कि वह पुरानी दुनिया की क्षयग्रस्त व्यवस्था से जूझती रहे, और जिन विभिन्न दलों से वह जुड़ी है, उनके पेशेवर राजनेताओं की दासी बनकर संतुष्ट रहे। इसके बारे में यह कहा जा सकता है कि उसने इसे एक लंबी और निष्ठापूर्वक परीक्षा दी है, और यदि इसके तहत वह सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में कोई व्यावहारिक परिवर्तन ला सकती थी, तो वह इसमें बुरी तरह विफल रही है। अब उसे विचार करना होगा कि दोष स्वयं उसके भीतर है या उस व्यवस्था में जिससे वह अभी भी जुड़ी हुई है। इस संबंध में, वह देखेगी कि अलग-अलग दल स्वयं धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। उदारवादी दल अतीत के अंधकार में चला गया है; रूढ़िवादी दल तेजी से बिखर रहा है, और हम उसके अपने नेता के आश्वासन से जानते हैं कि उसकी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त करने की कोई आशा नहीं है। समाजवादी दल का भी यही हश्र होने वाला है, क्योंकि उसे भी उसी रास्ते पर चलना होगा, जिसने अन्य दो दलों को सामाजिक लोकतंत्र के दलदल में धकेल दिया है।

इसलिए उसे किसी बेहतर प्रणाली की तलाश करनी होगी; जो आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप हो।
अतीत की डगमगाती इमारत का स्थान क्या लेगा?

राजनीति का हर छात्र यह समझता है कि अब मुद्दा फासीवाद और साम्यवाद के बीच है।
जहाँ तक ब्रिटिश महिलाओं का सवाल है, साम्यवाद उन्हें ज़्यादा आकर्षित नहीं करता। इससे भी आगे बढ़कर, यह विनाश का दर्शन है और नारीत्व की स्वाभाविक प्रवृत्ति का खंडन है। यह उन सभी सिद्धांतों और प्रथाओं का विरोधी है जिन्हें महिलाएँ महत्व देती हैं और जिनकी उन्हें आवश्यकता है।

फ़ासीवाद ही एकमात्र समाधान प्रतीत होता है। इसमें हर वह सिद्धांत समाहित है जो ब्रिटिश चरित्र की प्रतिभा के लिए विशिष्ट रूप से उपयुक्त और अनुकूलनीय है। यह सभी मनुष्यों को वास्तविक स्वतंत्रता और स्वाधीनता प्रदान करता है।

इस देश के प्रति सद्भावना रखने वाली महिलाएँ। किसी भी तरह की ग़लतफ़हमी न हो, इसलिए हम इन अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों को ऐसे शब्दों में परिभाषित करेंगे जिनसे कोई भी लोकतंत्रवादी असहमत नहीं होगा, क्योंकि ये विशुद्ध लोकतंत्र के प्रचारक, जॉन स्टुअर्ट मिल से लिए गए हैं।

उन्होंने लिखा, "एकमात्र उद्देश्य, जिसके लिए मानव जाति को व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से अपने किसी भी सदस्य की कार्य-स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने का अधिकार है, आत्म-सुरक्षा है। सभ्य समुदाय के किसी भी सदस्य पर उसकी इच्छा के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग करने का एकमात्र उद्देश्य दूसरों को होने वाले नुकसान को रोकना है।"

यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता की फ़ासीवादी अवधारणा है, और यह स्पष्ट रूप से एक ऐसी अवधारणा है जो महिलाओं के संबंध में उन्हें हर वह अवसर प्रदान करती है जिसकी उन्हें महिला नागरिक के रूप में अपने भविष्य के दर्जे में वैध रूप से आवश्यकता हो सकती है। किसी अन्य व्यवस्था में ये सिद्धांत सन्निहित नहीं हैं। इसके अलावा, कॉर्पोरेट राज्य की व्यवस्था में, फ़ासीवाद महिलाओं को उनके पुरुषों के बराबर का दर्जा सुनिश्चित करता है, क्योंकि यह अपने भीतर एकमात्र ऐसा साधन रखता है जिसके द्वारा वे उन परिस्थितियों को निर्देशित और नियंत्रित कर सकेंगी जिनमें वे रहेंगी; इस प्रकार फ़ासीवाद ही 1906 से 1914 तक जुझारू महिलाओं द्वारा उनके लिए शुरू किए गए कार्य को पूरा करेगा। इसके अलावा, यह उन्हें पार्टी व्यवस्था में निहित भ्रष्टाचार के दूषित वातावरण से बचाएगा, और पहली बार यह उन्हें अपने विशेष निगमों की व्यवस्था के माध्यम से उन बड़े सवालों से सफलता की कुछ आशा के साथ निपटने का अवसर देगा जो उनके और उनके बच्चों के जीवन से इतने गहरे रूप से जुड़े हुए हैं।

आर्थिक क्षेत्र में यह समान कार्य के लिए समान वेतन के साथ सुरक्षा का आश्वासन देगा, जो शाश्वत आधार है।
विवाद ने लिंगों को अलग कर दिया है और उद्योग को इतने भयानक परिणाम मिले हैं।

सामाजिक क्षेत्र में यह सभी वर्ग बाधाओं को दूर करता है, जबकि राजनीतिक क्षेत्र में यह न्याय और समानता प्रदान करता है।
महिलाओं के संघर्ष के इतिहास में पहली बार समानता की बात कही गई।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि फासीवाद उन मूलभूत कारणों को हटाकर, जो अंतर्राष्ट्रीयता में विद्यमान हैं और जिनका अस्तित्व है, युद्ध के भयावह साये को हमेशा के लिए स्थापित कर देता है, जो एक ऐसा साधन है जिसका उद्देश्य "बेईमान वित्तपोषकों" को उस "प्रचुर भूमि" का लाभ उठाने में सक्षम बनाना है जिसे "लोकतंत्र" कहा जाता है, जिसका वे सपना देखते हैं।

इन सब को संभव बनाने के लिए, फ़ासीवाद यह अपेक्षा करेगा कि महिलाएँ पुरुषों के समान ही एक सुव्यवस्थित राज्य के निर्माण में अनुशासित सहयोग प्रदान करें, और फ़ासीवाद राज्य के सभी नागरिकों पर किसी एक वर्ग या वर्ग के हित में नहीं, बल्कि उसके सभी लोगों के हित में, सामंजस्य से काम करने की ज़िम्मेदारी और कर्तव्य डालता है। यह पुरुषों की तरह महिलाओं से भी सभी स्वार्थी व्यक्तिगत विशेषाधिकारों को गौण करने का आह्वान करेगा, ताकि कम भाग्यशाली लोग इसके संरक्षण में शोषण से सुरक्षित रह सकें।

यह फासीवाद है। बाकी सब मृगतृष्णा है। क्या यह कहा जा सकता है कि ब्रिटिश महिलाएँ अपने देश के इतिहास के इस महान अवसर पर नहीं पहुँच सकतीं? जो लोग उन्हें इस अवसर को अस्वीकार करने के लिए कहेंगे, वे न केवल महिलाओं के, बल्कि समस्त प्रगति और सभ्यता के दुश्मन हैं। जिन महिलाओं ने युद्ध-पूर्व के महान संघर्ष की कठिन परीक्षाएँ सहन कीं, उन्होंने कम से कम उन लोगों को चुनौती देने का अधिकार अर्जित किया है जो उन्हें एक बार फिर अतीत की अधीनता में गुलाम बना देंगे, और उन्हें एक ऐसी व्यवस्था में जकड़ देंगे जो उन्हें अपने देश के आवश्यक पुनर्गठन में सम्मानजनक भूमिका निभाने के सभी अवसरों से वंचित करती है। जब भी ब्रिटेन को उनकी आवश्यकता पड़ी, ब्रिटिश महिलाएँ कभी असफल या लड़खड़ाई नहीं हैं। वे भी, अपनी पीढ़ी के पुरुषों के साथ, ब्रिटिश फासीवाद का झंडा ऊँचा उठाएँगी, और उसे पार्टी व्यवस्था की उथल-पुथल और घिनौने झगड़ों से ऊपर उठाकर, उस दिन को शीघ्र लाएँगी जब उनके राष्ट्र का पुनर्जन्म होगा। उस विजयमय घड़ी में, उन्होंने सचमुच पुनर्जीवित ग्रेट ब्रिटेन को श्रद्धांजलि अर्पित करने का गौरवपूर्ण अधिकार अर्जित कर लिया होगा, तथा अंततः उसकी संप्रभु जनता की शांति, सुरक्षा और समृद्धि में विश्राम करने का अधिकार प्राप्त कर लिया होगा।

जोरियन जेन्क्स द्वारा

प्रेशियस एकर्स

टी होस, जो यह मानने के लिए प्रवृत्त हो सकते हैं कि चूंकि ब्रिटेन के पास कोई भूमि नीति नहीं है, इसलिए उसके पास भूमि की कोई समस्या नहीं है, उन्हें इन परेशान करने वाले तथ्यों पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए।

बेल्जियम और हॉलैंड को छोड़कर, ब्रिटेन दुनिया में सबसे अधिक घनी आबादी वाला देश है; और चूंकि इन द्वीपों में प्राकृतिक रूप से बंजर भूमि (जैसे, पहाड़) का अनुपात निम्न देशों की तुलना में बहुत अधिक है, इसलिए यह निर्विवाद प्रतीत होता है कि हमारे पास किसी भी अन्य देश की तुलना में प्रति व्यक्ति खाद्य-उत्पादक भूमि कम है।

ब्रिटेन दुनिया का एकमात्र सभ्य देश है जिसके पास भूमि संरक्षण, पुनर्ग्रहण और सुधार की कोई निश्चित नीति नहीं है। महायुद्ध की समाप्ति के बाद से, कृषि भूमि के वार्षिक नुकसान को रोकने के लिए किसी भी सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया है, जो अब 20 लाख एकड़ से ज़्यादा या कुल भूमि का 7% हो गया है।

ब्रिटेन इस मामले में अद्वितीय है कि यहां के लोगों का अनुपात बहुत अधिक है और वे अपनी मूल भूमि से सभी प्रकार के संपर्क से कटे हुए हैं, तथा राष्ट्रीय आहार में बासी, संरक्षित भोजन का अनुपात भी बहुत अधिक है।
वैज्ञानिक कुपोषण, तंत्रिका संबंधी विकारों और सामाजिक अशांति के संदर्भ में इस कृत्रिमता के परिणामों की खोज करने लगे हैं।

किसी विदेशी पर्यवेक्षक को यह निष्कर्ष निकालने के लिए क्षमा किया जा सकता है कि हम अपने विकृत ब्रिटिश अंदाज़ में खुद को एक बेहद खतरनाक प्रयोग का विषय बनाने की कोशिश कर रहे हैं, यानी यह पता लगाने की कोशिश कि क्या एक पूरी तरह से शहरीकृत और लगभग परजीवी समुदाय में, जो जीवन की ज़रूरतों के लिए दूसरे देशों के प्रयासों और सद्भावना पर निर्भर है, राष्ट्रीय जीवन को स्वस्थ रूप से बनाए रखा जा सकता है या नहीं। वह यह भी मान सकता है कि इतनी विकट स्थिति हमारे जलवायु की प्रतिकूलता या हमारी मिट्टी की गरीबी के कारण हम पर थोपी गई है। और हमारे प्रति उसका रवैया प्रशंसा के बजाय दया का होगा।

यह स्वीकार करना कितना कष्टदायक है कि यह भयावह स्थिति एक ही कारण से, और केवल एक ही कारण से, मूल सिद्धांतों की कठोर और निरंतर उपेक्षा से उत्पन्न हुई है। इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। हमारी जलवायु प्रतिकूल नहीं है; बल्कि, यह दुनिया की सबसे समतापूर्ण भूमियों में से एक है। हमारी भूमि खराब नहीं है; बल्कि, औसतन, यह दुनिया की सबसे अधिक उपजाऊ भूमियों में से एक है। लेकिन हमारे पापों के लिए, हमारे पास एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था है जो अगले चुनाव से आगे देखने से इनकार करती है, जिसे हर निहित स्वार्थी व्यक्ति और हर गुमराह अर्थशास्त्री, जिसकी अकादमिक प्रतिष्ठा बनी रहे, चुनौती दे रहा है।

यह मान लेना सबसे बड़ी भूल है कि शेष विश्व के लिए निर्माता, वाहक और बैंकर बनना हमारी स्वाभाविक नियति है और ऐसी स्थिति का अर्थ है कच्चे माल और खाद्यान्न की निरंतर आपूर्ति। निश्चित रूप से, कुछ समय के लिए यह परिकल्पना इस तथ्य से अस्पष्ट हो गई थी कि कई सौभाग्यशाली संयोगों ने हमें उन सेवाओं के विकास में अन्य देशों की तुलना में काफ़ी बढ़त दिलाई, जिनके लिए उस समय दुनिया लगभग कोई भी कीमत चुकाने को तैयार थी। लेकिन औद्योगिक और वित्तीय राष्ट्रवाद के तीव्र और लगभग सर्वव्यापी आगमन ने हमारे अस्थायी एकाधिकार को समाप्त कर दिया है और इस परिकल्पना को न केवल अस्थिर, बल्कि निश्चित रूप से ख़तरनाक बना दिया है। हम जितना अधिक समय तक इससे चिपके रहेंगे, आधुनिक जीवन की सच्चाइयों का सामना करने में हम उतने ही कम सक्षम होंगे। "अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की अपरिवर्तनीय बहाली" की दिशा में हर कदम उस अपरिहार्य दिन को टाल देता है जब हमें अपने पैरों पर खड़ा होना होगा और अपनी स्थिति का आकलन करना होगा।

संसाधन।

चूँकि यह जीवन की आवश्यकताओं का प्रमुख स्रोत है, इसलिए इसका सावधानीपूर्वक और सुविचारित विकास राष्ट्रीय समृद्धि की पूर्व शर्त है। चूँकि यह एक राष्ट्रीय धरोहर है, सांस्कृतिक और भौतिक दोनों, इसलिए इसका संरक्षण एक पवित्र राष्ट्रीय कर्तव्य है।

यह याद रखना ज़रूरी है कि अपेक्षाकृत आधुनिक समय तक इन तथ्यों को आम तौर पर मान्यता प्राप्त थी, भले ही हमेशा सही ढंग से व्याख्या न की गई हो। भू-स्वामित्व को न केवल बड़े विशेषाधिकार, बल्कि बड़ी ज़िम्मेदारियाँ, सामाजिक और आर्थिक, प्रदान करने वाला माना जाता था। शासक वर्ग लगभग पूरी तरह से ज़मींदार परिवारों से ही आते थे। कृषि को एक महान बुनियादी उद्योग माना जाता था, और इसका कल्याण राष्ट्रीय महत्व का विषय था।

जब तक एक दरिद्र भूस्वामी अभिजात वर्ग का स्थान नेपोलियन काल की अव्यवस्थित वित्तीय स्थिति से उत्पन्न नवोदित और अधिकांशतः विदेशी धनिकतंत्र ने नहीं ले लिया, तब तक भूमि के प्रति राष्ट्रीय दृष्टिकोण में कोई गंभीर गिरावट नहीं आई। और जब तक विक्टोरियन निर्यात-पूंजीवाद ने अपने विशाल आयात-राजस्व को आकर्षित करना शुरू नहीं किया, तब तक ब्रिटिश कृषि ब्रिटिश विनिर्माण के विकास के साथ कदमताल नहीं मिला सकी। लेकिन एक बार जब यह सिद्धांत स्थापित हो गया कि संगठित पूंजी का लाभ राष्ट्रीय समृद्धि का पैमाना है, तो असंगठित कृषि सहायता या नेतृत्व के लिए वेस्टमिंस्टर की ओर व्यर्थ ही देख सकती थी।

और इसलिए आज ब्रिटिश ग्रामीण इलाकों का अध्ययन लगभग एक विलुप्त सभ्यता का अध्ययन है।
गहरी-गहरी गलियां जिनमें एक पीढ़ी से पहिये नहीं लगे हैं, फैली हुई बाड़ें जिनमें एक दशक से लोहा नहीं लगा है, घने घास वाले चरागाहों में अभी भी दिखाई देने वाले प्राचीन हल के निशान, क्षय की हर अवस्था में खलिहान और झोपड़ियां, वर्तमान पल्लियों के आकार से पांच गुना बड़े मण्डलियों के लिए बनाए गए चर्च, खामोश पनचक्कियां और ढहती जागीरें - ये सभी उस खोई हुई ग्रामीण आबादी की बात करते हैं जो कभी सबसे मर्दाना कार्यों में सक्रिय रूप से लगी रहती थी।

यह सच है कि बेहतर ज़मीन पर अभी भी खेती हो रही है, और अक्सर अच्छी तरह से खेती हो रही है, हालाँकि इसमें सीधे तौर पर दिलचस्पी रखने वालों की संख्या साल-दर-साल घटती जा रही है। और कहीं-कहीं साहसी लोग सूअरों या मुर्गियों, फलों या दूध पर अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं। लेकिन ग्रामीण इलाकों के एक बड़े हिस्से में आत्मविश्वास की कमी से पैदा हुए हाथ-मुँह जोड़कर गुज़ारा करने के तरीकों का अभिशाप छाया हुआ है, जो उपेक्षित चरागाहों में प्रकट होता है, जहाँ पशु-संग्रह की कमी है। माहौल इतना उदासीन है कि सट्टेबाज़ बिल्डरों के फिजूलखर्ची और अप्रिय आक्रमणों को भी उस आक्रोश के लेशमात्र भी स्वीकार नहीं किया जाता जो कुछ पीढ़ियों पहले इस तरह की अपवित्रता से पैदा होता था।

एक अपूरणीय राष्ट्रीय संपत्ति को हुए नुकसान की सीमा को समझना ज़रूरी है। सैद्धांतिक रूप से भूमि अविनाशी है, जब तक कि वह समुद्र द्वारा बहा न ले जाए, और यह प्रक्रिया, वैसे, हमारे तटरेखा पर कई स्थानों पर देखी जा सकती है। लेकिन इसके साथ कई ऐसी घटनाएँ घट सकती हैं जो इसे खाद्य उत्पादन की दृष्टि से लगभग अनुपयोगी बना देंगी, और यही राष्ट्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है।

सबसे पहले, खेती की ज़मीन, चाहे वह कृषि योग्य हो या चरागाह, तेज़ी से जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच सकती है, जहाँ से भंडारण के लिए मवेशियों और भेड़ों के लिए बहुत कम चारा मिलता है, और अगर खरगोश पहले आ जाएँ तो उनके लिए भी चारा कम पड़ जाता है। ऐसे समय में जब खेती का क्षेत्रफल लगातार कम होता जा रहा है, "उबड़-खाबड़ चरागाहों" के रूप में रकबे में हुई अशुभ वृद्धि स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि क्या हो रहा है। हमारे उबड़-खाबड़ चरागाहों का बड़ा हिस्सा, बेशक, पहाड़ों की चोटियाँ और दलदली भूमि हैं। लेकिन हाल ही में हुई पूरी वृद्धि, और उससे भी कहीं ज़्यादा, उस प्रकार की सुधार योग्य ज़मीन से बनी है जिस पर किसी भी अन्य यूरोपीय देश या यहाँ तक कि हमारे अपने उपनिवेशों में भी खेती की जा सकती है, लेकिन लगातार सरकारी उपेक्षा के कारण यहाँ खेती नहीं की जा सकती।

इनस्किप प्रकार के राजनेता हमें यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि इस परित्यक्त भूमि को में लाया जा सकता है।

आपात स्थिति में उत्पादन। ज़ाहिर है, पिछले युद्ध के निराशाजनक अनुभवों ने उन्हें यह नहीं सिखाया है कि ज़मीन को कुछ ट्रैक्टरों और कुछ अकुशल मज़दूरों से छेड़कर अचानक उत्पादकता में नहीं लाया जा सकता। भूमि-पुनर्ग्रहण एक अत्यधिक कुशल कार्य है जिसके लिए परिणाम प्राप्त करने से पहले कुछ वर्षों के धैर्यपूर्ण परिश्रम की आवश्यकता होती है। इसे दीर्घकालिक कृषि नीति में बहुत उपयोगी रूप से शामिल किया जा सकता है; लेकिन आपात स्थिति में खाद्य उत्पादन के साधन के रूप में यह व्यावहारिक रूप से मूल्यहीन है।

दूसरी बात, निर्माण कार्य, चाहे आवासीय हों या औद्योगिक, हर साल ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा इस्तेमाल करते हैं और जितनी ज़मीन का वे वास्तव में इस्तेमाल करते हैं, उसे पूरी तरह बंजर बना देते हैं। 1929 से अब तक अकेले इंग्लैंड और वेल्स ने 421,000 एकड़ कृषि भूमि खो दी है, जिसमें से केवल 159,000 एकड़ ही अब कच्चे चरागाह के रूप में बची है; शेष लगभग पूरी 262,000 एकड़ ज़मीन बिल्डरों के हाथों में चली गई है, जिसमें से ज़्यादातर समतल और उपजाऊ कृषि योग्य ज़मीन है जहाँ अच्छी खेती होती है।

यह याद रखना चाहिए कि कृषि भूमि का नुकसान केवल कारखानों, घरों और बगीचों वाले क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। सड़कें और मनोरंजन के मैदान उपलब्ध कराए जाने चाहिए, और खासकर नए विकसित क्षेत्रों में, बंजर भूमि के बड़े-बड़े टुकड़े हमेशा मौजूद रहते हैं। इसके अलावा, किसी निर्मित क्षेत्र के किनारे की कृषि भूमि या आधुनिक तरीके से बिखरे हुए अलग-थलग आवासों वाली कृषि भूमि को भी काफी नुकसान होता है। गौरैया और चूहे हजारों की संख्या में आते हैं; फाटक और बाड़ें टूट जाती हैं; आवारा कुत्ते मवेशियों को परेशान करते हैं और छोटी-मोटी क्षति बहुत बढ़ जाती है। सस्ते सड़क परिवहन के आगमन और उसके परिणामस्वरूप उपनगरीय विकास के बाहरी जोर के कारण, इस प्रकार प्रभावित क्षेत्र, हालाँकि अभी भी कृषि भूमि के रूप में ही रहेगा, लाखों एकड़ तक पहुँच गया होगा।

इस निष्कर्ष से बचना असंभव है कि ब्रिटेन अपनी राष्ट्रीय विरासत को ऐसे समय में बर्बाद कर रहा है जब विश्व की घटनाओं के क्रम के कारण हर एकड़ भूमि का संरक्षण अत्यंत आवश्यक हो गया है। जो लोग इसे एक भयावह बयान मानते हैं, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे प्रोफेसर आर.जी. स्टेपलडन की हालिया कृति, " द लैंड; नाउ एंड टुमॉरो" का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। इस विशेषज्ञ का मानना है कि "हमारे कृषि क्षेत्र तेज़ी से घट रहे हैं, और घटने ही चाहिए, और जब तक खाद्य उत्पादन के लिए हर कीमत पर न्यूनतम कितने एकड़ क्षेत्र को बनाए रखा जाना चाहिए, इस बारे में कोई निर्णय नहीं लिया जाता और उचित कार्रवाई नहीं की जाती, तब तक अगले दो सौ वर्षों में इंग्लैंड की कृषि भूमि आधी रह जाएगी।"

दो सौ साल का समय बहुत लंबा लग सकता है, लेकिन क्या कोई इतना साहस कर सकता है कि यह सुझाव दे सके कि हमारे बच्चे, और हमारे पोते-पोतियाँ तो क्या, अमेरिका और एंटीपोड्स से असीमित खाद्य आपूर्ति प्राप्त कर पाएँगे? क्या हम इतिहास में उस पीढ़ी के रूप में दर्ज होना चाहते हैं जिसने राष्ट्रीय संपत्ति को बर्बाद कर दिया और अपने वंशजों को भुखमरी की बुनियादी समस्या का सामना करने के लिए छोड़ दिया? विक्टोरियन निर्यात-पूँजीवाद ने हमें संकटग्रस्त क्षेत्र विरासत में दिए हैं; क्या हमें बर्बाद क्षेत्रों के एक नए समूह के लिए ज़िम्मेदार होना चाहिए?

हमारी भूमि समस्या के पोषण संबंधी और आर्थिक पहलुओं पर आगे विचार करने से हमें राष्ट्रीय जीवन के अभिन्न अंग के रूप में कृषि के अनेक कार्यों की गहन चर्चा करने में मदद मिलेगी।
इसलिए, समान रूप से महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहलू पर चर्चा करने के लिए विराम लेना आवश्यक है।

यह सच है कि नगर-नियोजन आंदोलन के तहत इस पहलू पर पहले से ही अनियमित और एकतरफ़ा ध्यान दिया जा रहा है। लेकिन इस आंदोलन का नाम ही इसकी सीमाओं को उजागर करता है। एक समुदाय, जिसे अपनी कृषि के महत्व को भूलने और आयातित खाद्य आपूर्ति को एक प्राकृतिक घटना मानने के लिए प्रोत्साहित किया गया है, ग्रामीण इलाकों को शहरों का एक छोटा सा हिस्सा, एक तरह का महिमामंडित सार्वजनिक पार्क मानने लगा है। वास्तव में, एक बड़ा खतरा यह है कि ग्रामीण इंग्लैंड उसी तरह एक चरित्रहीन "खुली जगह" बन सकता है जिस तरह होम काउंटियों का एक बड़ा हिस्सा एक सुविधाहीन उद्यान-उपनगर बन गया है।

शहर के शोरगुल और दूषित वातावरण से बचने की शहरीकृत लोगों की सहज लालसा सहानुभूति के अलावा और कुछ नहीं जगा सकती। ये लोग खुशी-खुशी अपना आधा रविवार किसी भीड़भाड़ वाली मुख्य सड़क पर पेट्रोल का धुआँ निगलते हुए बिताएँगे ताकि बाकी आधा रविवार ताज़ी हवा में बिता सकें, यह बेहद दुखद है। अफ़सोस की बात यह है कि इनमें से बहुत से लोग अपने उद्यम का फल बिना खराब हुए नहीं ले पाते।

क्योंकि देहात तब तक अपना सांस्कृतिक कार्य पूरा नहीं कर सकता जब तक उसे अपना चरित्र सुरक्षित रखने की अनुमति न दी जाए, और वह चरित्र उसके भौतिक या कृषि संबंधी कार्य से अविभाज्य है। अगर शहर शहर को अपने साथ ले जाता है, तो वह शहर से बच नहीं सकता, ठीक वैसे ही जैसे कोई बुद्धिजीवी अपने मन को छुट्टी नहीं दे सकता, अगर वह अपने तर्कों को देहात की सैर पर अपने साथ ले जाए। "देहात में रहने" आए लोगों द्वारा उपनगरीकृत गाँव का दृश्य उतना ही दयनीय है जितना कि बुद्धिजीवियों के एक समूह का, जो बातों की बौछार में आगे बढ़ रहा हो, जबकि उनके चारों ओर उनकी गतिविधियों से दस हज़ार ज़्यादा दिलचस्प और महत्वपूर्ण गतिविधियाँ हों। जैसा कि एक किसान ने कुछ समय पहले कहा था, "मुझे उनके मेरे खेतों में घूमने से कोई ख़ास आपत्ति नहीं है। मुझे उनके मूर्ख कुत्तों को मेरे खर्च पर कसरत कराने से कोई ख़ास आपत्ति नहीं है। मुझे उनके उन दरवाज़ों पर चढ़ने से भी कोई आपत्ति नहीं है जिन्हें एक बच्चा भी खोल सकता है। लेकिन जब मैं सोचता हूँ कि वे दो मील से ज़्यादा अच्छी खेती की ज़मीन पर चल चुके हैं और एक बार भी यह देखने की ज़रूरत नहीं समझी कि क्या हो रहा है, तो मुझे लगता है कि मेरी विनम्रता व्यर्थ हो गई।"

जिसे हम "सार्वजनिक पार्क" वाला रवैया कह सकते हैं, उसकी अभिव्यक्ति ग्रामीण गतिविधियों के प्रति उदासीनता से कहीं ज़्यादा गंभीर रूप में होती है। जैसे एक छोटा बच्चा बत्तखों पर पत्थर फेंकने में कोई बुराई नहीं समझता जब रखवाला न देख रहा हो, वैसे ही हज़ारों पढ़े-लिखे वयस्क हैं जो छोटी-मोटी घुसपैठ में कोई बुराई नहीं देखते, जब पकड़े जाने की संभावना बहुत कम या न के बराबर हो। और छोटी-मोटी घुसपैठों का कुल मिलाकर शहरी पलायनवादियों के पसंदीदा ज़िलों में एक अप्रिय स्थिति पैदा हो रही है।

जर्मनी में सड़क किनारे की बाड़ों में फलों के पेड़ लगाए जाते हैं और ज़मीन की धातु की सीमा तक खेती की जाती है। इंग्लैंड में, ऐसी प्रक्रिया बिल्कुल असंभव है, क्योंकि संगठित छापामार दलों द्वारा पेड़ों को उखाड़ दिया जाएगा और फसलों को जंजीर की चौड़ाई तक रौंद दिया जाएगा। ब्रिटिश नागरिक ज़रूरी नहीं कि जर्मन से कम ईमानदार या ज़्यादा विनाशकारी हो; बस उसे इस हद तक ग्रामीणीकरण से वंचित कर दिया गया है कि उसके मूल्यों की समझ और नैतिक आचरण की आचार संहिता आखिरी लैंप-पोस्ट के साथ ही समाप्त हो जाती है। जो लोग दुकान के काउंटर से एक पेनी पेंसिल चुराने के विचार से ही चौंक जाते हैं, उन्हें मशरूम चुराने के लिए आधा दर्जन बाड़ों को तोड़ने में कुछ भी अनैतिक नहीं लगेगा।

ग्रामीण इलाकों में अपने आगंतुकों को देने के लिए इतनी वास्तविक संपदा है कि वर्तमान दयनीय प्रवृत्तियों पर विजय पाने का स्पष्ट तरीका यही है कि लोगों को दिखाया जाए कि यह संपदा कहाँ छिपी है। आज भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो एकांत के सुखदायक मरहम, शांति और सुरक्षा के आध्यात्मिक सुकून, और निरंतर बदलते खेतों और जंगलों की मनमोहक रुचि की सराहना कर सकते हैं और करते भी हैं; लेकिन ऐसे लोग बहुत कम हैं।

कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से उस चीज को नुकसान नहीं पहुंचाएगा या बिगाड़ेगा नहीं जिसमें उसकी गहरी व्यक्तिगत रुचि हो, और ग्रामीण इलाकों के संरक्षण की दिशा में पहला कदम एक राष्ट्रीय अभियान है, जिसे प्रोफेसर स्टेपलडन "ग्रामीण मानसिकता" कहते हैं।

एक फ़ासीवादी सरकार को स्वाभाविक रूप से भूमि समस्या का समग्र रूप से सामना करना होगा, क्योंकि भूमि उन आधारों में से एक है जिन पर उसकी जीवंत राष्ट्रवाद की अवधारणा आधारित है। वास्तव में, कृषि विकास की उसकी घोषित नीति, संपत्ति बाज़ार में सट्टा गतिविधि को बढ़ावा देकर, स्वयं एक गंभीर समस्या पैदा करेगी, और कृषि नीति को पूरी तरह से विकसित करने से पहले इस गतिविधि से सख्ती से निपटना होगा।

भूमि के प्रति फासीवादी दृष्टिकोण को कुछ वाक्यों में प्रस्तुत किया जा सकता है।

ज़मीन को अब सट्टेबाज़ी की वस्तु नहीं समझा जाना चाहिए। इसके मूल्य का निष्पक्ष मूल्यांकन किया जाना चाहिए, और सभी लाभ उन सभी लोगों को मिलना चाहिए जिन्होंने इसे बनाने में मदद की है, जिनमें शामिल हैं

राज्य।

भूमि-उपयोग को सावधानीपूर्वक दीर्घकालिक राष्ट्रीय योजना का विषय बनाया जाना चाहिए। जहाँ तक संभव हो, निर्माण गतिविधियाँ कम कृषि मूल्य वाले क्षेत्रों तक ही सीमित रखी जानी चाहिए।

भूमि-स्वामित्व का यथासंभव व्यापक वितरण होना चाहिए, और इसका उद्देश्य बड़ी संख्या में छोटे, सुरक्षित पारिवारिक फ्रीहोल्ड प्राप्त करना है। हालाँकि, इसके साथ ज़िम्मेदारियाँ भी जुड़ी होंगी, और जो लोग अपनी ज़मीन का दुरुपयोग करेंगे, उन्हें सामाजिक दुश्मन माना जाएगा।

खेत-पथों, शिविर-स्थलों और सड़क किनारे के पड़ावों का विस्तार और बेहतर परिभाषा करके भूमि तक जनता की पहुँच में सुधार किया जाना चाहिए। साथ ही, अतिक्रमण कानून में संशोधन किया जाना चाहिए और ग्रामीण समुदाय को हस्तक्षेप और क्षति से बेहतर सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए। संभवतः, वार्डन की एक टुकड़ी स्थापित करना आवश्यक हो सकता है।

खरगोशों, किश्ती और कबूतरों जैसे कीटों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा जाना चाहिए; और यद्यपि मैदानी खेलों के प्रति कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा, फिर भी ऐसे खेलों को कृषि या मनोरंजक गतिविधियों में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

जनता को ग्रामीण इलाकों का सम्मान करने और उसकी सराहना करने तथा उसकी गतिविधियों में बुद्धिमानी से रुचि लेने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए।

हम एक ऐसी जाति हैं जो अपनी ज़मीन को लेकर ज़्यादा भावुक नहीं होती। हम मातृभूमि शब्द का इस्तेमाल बहुत कम करते हैं, लेकिन पितृभूमि शब्द का इस्तेमाल कभी नहीं करते। एक सदी की अहस्तक्षेपवादी उदारवाद और वित्तीय रूढ़िवादिता ने हमारी धरती के प्रति एक अदूरदर्शी, व्यावसायिक दृष्टिकोण को जन्म दिया है।

फिर भी, हमारे सपनों का ब्रिटेन, हमारी राष्ट्रीय भावना का साकार रूप, सड़कों और कारखानों या यहाँ तक कि पार्कों और सार्वजनिक भवनों वाला ब्रिटेन नहीं है, बल्कि मुस्कुराती घाटियों और लहराते ऊँचे मैदानों, जुते हुए खेतों और आरामदायक घरों का ब्रिटेन है। पूरी दुनिया में एक शहर एक शहर ही होता है; और दुनिया के शहर हर साल मानकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन ग्रामीण ब्रिटेन विशिष्ट रूप से हमारा अपना है, हमारे राष्ट्रीय चरित्र से अविभाज्य। हमें इसे उत्साहपूर्वक संरक्षित करना चाहिए, स्ट्रैटफ़ोर्ड-ऑन-एवन के संग्रहालय जैसे वातावरण में नहीं, बल्कि उत्पादकता की स्वाभाविक ऊर्जा में।

हममें से बहुत कम लोग इस धरती से कुछ पीढ़ियों से ज़्यादा दूर हैं। प्रेस और रेडियो द्वारा थोड़ी-सी पुनः शिक्षा हमें फिर से देशवासी बना देगी, कम से कम अपने फुर्सत के पलों में: किसी पेशेवर स्कूलमास्टर जैसी शिक्षा नहीं, जिसकी "कृषि" उपयोगी लेकिन नीरस प्राथमिक विज्ञान से बनी हो, बल्कि वह शिक्षा जो हमें खुली आँखों और जिज्ञासु मन के साथ गलियों और खेतों की पगडंडियों पर ले जाएगी। ग्रामीण इलाकों के इतिहास और रोज़मर्रा के जीवन से परिचय न केवल शहरवासियों को कृषि की समस्याओं को समझने के लिए प्रोत्साहित करेगा, बल्कि उनके ग्रामीण भ्रमणों को भी दिलचस्प बना देगा। बुद्धिमान ग्रामीण सोच शहरी जीवन के तनाव का सबसे बेहतरीन उपाय बन सकती है, क्योंकि धरती माँ शरीर के साथ-साथ आत्मा को भी आराम दे सकती है।

जोन मोर्गन द्वारा हिटलर्स बेर्चटेस्गैडेन एन आइडिल ऑफ न्यू जर्मनी

ई अगर आप बवेरिया को अच्छी तरह जानते हैं, और भले ही आपको याद हो कि विटेलबाक परिवार ने पूरे बवेरिया और फ़्यूहरर परिवार ने पूरे जर्मनी में अपने ग्रीष्मकालीन आवासों के लिए बर्ख्तेसगाडेन को चुना था, तो भी आपको इस जगह के लिए कोई भी चीज़ पूरी तरह से तैयार नहीं कर सकती, जो एक ही समय में पुराने बवेरिया का दिल और नए जर्मनी की आत्मा दोनों है। बवेरिया के सबसे परीकथा जैसे और राष्ट्रीय समाजवाद के सबसे बेहतरीन सपने, पहाड़ों से घिरे इस बाज़ारी कस्बे में समाहित हैं, जिसकी आबादी लंदन के सबसे नए फ्लैटों के बराबर है।

ट्रेन बैड रीचेनहॉल से रवाना होने के बाद पहाड़ों में और भी गहराई तक जाती है, जब तक कि आपको ऐसा न लगे कि वे आपको पूरी तरह से अपने आगोश में ले लेंगे, और आप उस गहरी घाटी में पहुँच जाएँगे जो जर्मनी से ऑस्ट्रिया की ओर जाती है। (ऑस्ट्रिया तक तीन दिशाओं में से किसी भी दिशा में पैदल जाना संभव है, और एक रोमांचकारी अनुभव भी।)

पहली छाप तो हलचल जैसी ही लगती है। दो साल से ऊपर के सभी बच्चे एक तरह की उत्सुकता में इधर-उधर घूम रहे हैं। चाहे यह ऊँचाई की वजह से हो, बवेरियन उत्साह की वजह से हो या इस बात की वजह से कि फ़्यूहरर कभी भी वहाँ से गुज़र सकते हैं, मैंने कभी पता नहीं लगाया; सच तो यह है कि हवा में स्फूर्ति का संचार होता है।

इस मनमोहक संगीतमय-हास्यपूर्ण सेटिंग में राष्ट्रीय समाजवाद बहुत मनोरंजक लगता है।
कभी-कभार होने वाली बैठकों को छोड़कर, जो सरल और आश्चर्यजनक रूप से प्रेरणादायक होती हैं, आप इसकी गहन रहस्यमय गंभीरता के बारे में इतना जागरूक नहीं होते; संपन्न किए गए कार्य की विशालता और आगे आने वाले कार्य के बारे में नहीं।

आप महसूस करते हैं कि अपनी आकर्षक वर्दी, फ्यूहरर के साथ संपर्क और सुंदर वातावरण में स्वस्थ जीवन के साथ एसएस एक बहुत ही सुखद व्यवसाय है, और एसएस वास्तव में एक शानदार संगठन है, जो देशभक्ति के सामान्य आधार पर सभी उम्र और वर्गों के लिए खुला है।

जर्मनी में कहीं और से ज़्यादा, यहाँ आप देखते हैं कि कैसे सबसे बुजुर्ग एसएस सदस्य से लेकर विंटर रिलीफ़ बैज बेचने वाले सबसे छोटे बच्चे तक, हर किसी का देश में हित जुड़ा है; कोई भी अवांछित महसूस करने की आत्मा को तोड़ने वाली पीड़ा से नहीं गुज़रता। हर उपलब्धि उनकी उपलब्धि है; हर असफलता उनकी। आप महसूस करते हैं कि कैसे राष्ट्रीय समाजवाद ने, आशा की किरण जगाकर, अपने देश के भविष्य में विश्वास जगाकर, लोगों को जीने के लिए कुछ दिया है।

इस जगह का सदियों पुराना जीवन हमेशा की तरह चलता रहता है, साथ ही राष्ट्रीय समाजवाद भी; और इसीलिए, बर्कटेसगाडेन में जीवन एक अनवरत तमाशा है। जब एक नाटक का पर्दा गिरता है, तो दूसरा शुरू हो जाता है। आपको अपनी खिड़की के पास से एक नीरस गुनगुनाहट सुनाई देती है, जिसमें सैकड़ों किसान महिलाएँ राष्ट्रीय पोशाक पहने, छोटे काले-हरे-लाल बुने हुए कोट पहने, जिन्हें वे बर्कटेसगाडेनर कहती हैं, आती हैं। उनके साथ एक पुजारी भी है, और वे धीरे-धीरे, मंत्रोच्चार करते हुए, झुकी हुई आँखों से आगे बढ़ती हैं। बाद में आपको युवा बीडीएम (हिटलर गर्ल्स) की तीखी आवाज़ें सुनाई देती हैं, जो अपने छोटे भूरे कोट पहने, या हिटलर जुगेंड की एक टुकड़ी, बैनर लिए हुए, विशाल, मर्दाना लड़कों की टोली। हवा में हमेशा एक मार्चिंग गीत गूंजता रहता है।

जब सब कुछ विफल हो जाता है, तो वे अग्नि-अभ्यास करते हैं। सौ अग्निशामक (या हर तीस निवासियों में से एक) अंगरखे, हेलमेट और प्लस-फोर जैकेट पहने आपकी खिड़की के सामने साहसपूर्वक प्रदर्शन करते हैं। हालाँकि, रविवार ही वह दिन है। मार्कट प्लात्ज़ में, जो शहर का शिखर है, किसान इकट्ठा होते हैं; पुरुष, अपनी हरी टोपियों में, फव्वारे के एक तरफ, ब्रशों की विशालता में एक-दूसरे से होड़ करते हैं।

एक तरफ बवेरियन शेर, दूसरी तरफ चोटीदार मुकुटों पर चपटी काली टोपियाँ पहने औरतें। दस बजे वे बीयर और सूप में सॉसेज के लिए न्यूहाउस (हॉफब्रौहाउस का छोटा भाई) जाते हैं, जहाँ शाहबलूत के पेड़ों के नीचे बीयर का बगीचा है, जहाँ विटल्सबाक श्लॉस की बाड़ पर आपका बिस्तर बिछाया जाता है, एक बियरस्ट्यूब है जिसमें बेजोड़ गेमुटलिचकेइट है, जहाँ पार्टी के नेता गाइडों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं; एक महत्वपूर्ण शहर का महत्वपूर्ण केंद्र।

ग्रैंड होटल, किसी के लिए भी पर्याप्त भव्य। कुर्हाउस अपने उत्कृष्ट ऑर्केस्ट्रा और म्यूनिख से आए कलाकारों के साथ। पीज़ेंट थिएटर, अपनी अपरिष्कृत बुद्धि और आकर्षक संगीत के साथ। यहाँ नृत्य स्थल हैं; हॉफशैफ़र अपने आत्मीय वातावरण के साथ, जेब-रूमाल से भरे फर्श के साथ, जो किसी लंदन के मैत्रे डे होटल के सपनों से भी ज़्यादा भरा हुआ है, और कुर कैफ़े, जहाँ एसएस बॉडीगार्ड के विशाल, सुंदर लड़के उस जगह पर नृत्य करते हैं जो कभी बवेरिया के शाही विला हुआ करता था। यहाँ कलाकार हैं, फ़्रिट्ज़ रिक्टर अपने विचित्र प्रेरित वुडकट्स के साथ, और आधुनिक अल्पाइन शैली के प्रथम श्रेणी के लैंडस्केप चित्रकारों में से एक।

खुले में आने पर: सबसे पहले, फ्यूहरर का घर है, दुनिया की सबसे ऊँची जगह पर, जिसकी काँच की दीवार से पहाड़ों का एक समूह दिखता है, इतनी खड़ी जगह पर बना है कि मानो पीछे की ओर झुका हुआ हो। घर घाटी पर उसी तरह हावी है जैसे फ्यूहरर शहर पर।

यहाँ कोनिगसी है, जो सभी अल्पाइन झीलों में सबसे सुंदर है, चारों ओर से गहरी हरियाली से घिरी खड़ी पहाड़ियों से। यहाँ ज़ाउबरवाल्ड है, एक जादुई जंगल, जहाँ हिंटरसी से आने वाली जलधारा हरी-भरी चट्टानों से होकर बहती है।

वहाँ नमक की खदान है जहाँ (वर्दी के इस देश में) आप काला अंगरखा और सफ़ेद प्लस-फोर (जो सुनने में जितना आकर्षक और आकर्षक लगता है, उतना नहीं है) पहनकर एक भूमिगत झील तक टोबोगन से उतरते हैं जिसके किनारे पर रोशनियों का हार और एक स्वस्तिक का निशान बना है। वहाँ श्लॉस प्लात्ज़ है जहाँ युद्ध स्मारक है।

यहां अल्पाइन घास के मैदान हैं, जिनमें प्रकृति की विभिन्न रंग योजनाएं हैं, एक सप्ताह गुलाबी, अगले सप्ताह नीला और पीला, जो लंदन, पेरिस और न्यूयॉर्क के फूल विक्रेताओं को ईर्ष्या से विचलित कर देगा।

यहाँ जंगल हैं, एक समान, सीधे और मज़बूती से बर्फ़ की रेखा तक बढ़ते हुए। पहाड़; जर्मनी में दूसरा सबसे ऊँचा, सुंदर वाट्समैन; उदास गॉल और ऊबड़-खाबड़, किंवदंतियों से भरा अनटर्सबर्ग। साहसी लोगों के लिए अनटर्सबर्ग के अंदर छह हज़ार फीट ऊपर, फ्लडलाइट से जगमगाता बर्फ़ का गड्ढा है, और साथ ही अल्मबाक क्लैम भी है, एक गर्जना करती, अद्भुत घाटी, जहाँ आपको लगता है कि आप जितना ऊपर गए थे, उससे कहीं ज़्यादा नीचे गिर गए हैं, जो तभी खत्म होता है जब आप उम्मीद छोड़ चुके होते हैं और "भावनात्मक अनुभव" शीर्षक के अंतर्गत आता है, न कि "दृश्य"।

बर्कटेसगाडेनर लैंड में वे आपका स्वागत समान रूप से "ग्रास गॉट" और "हेल हिटलर" कहकर करते हैं! इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, ईश्वर को नमस्कार, जिसने इतनी प्यारी चीज़ बनाई और हिटलर को नमस्कार, जिसने इसे उन लोगों के लिए बचाकर रखा, जो इसे अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करते हैं।

विडकुन क्विस्लिंग द्वारा एक नॉर्डिक विश्व संघ

नॉर्वेजियन नैसजोनल सैमलिंग के नेता

ए पुरानी दुनिया ढह रही है, एक नई दुनिया जन्म ले रही है। पिछले साल स्टावेंजर में हमारी तीसरी वार्षिक रैली के साथ ही, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की सातवीं विश्व कांग्रेस का उद्घाटन मॉस्को के पूर्व "रईसों के क्लब" में हुआ, जो 1928 में हुई पिछली विश्व कांग्रेस के बाद सात साल की अंतरिम अवधि के बाद हुआ था।

यह कांग्रेस 25 जुलाई से 21 अगस्त तक चली। इसका प्राथमिक उद्देश्य यह समीक्षा करना था कि सोवियत रूस के अंदर और बाहर यहूदी अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवादी षड्यंत्र ने उन सात वर्षों के दौरान दुनिया के बोल्शेविकीकरण के लिए स्टालिन के कार्यक्रम के क्रियान्वयन के संबंध में क्या हासिल किया था, जो पिछले विश्व कांग्रेस में चर्चा का विषय रहा था।

दूसरे, इसने राष्ट्रीय प्रतिरोध की शक्तियों को नष्ट करने और साम्यवादी विश्व क्रांति की आग जलाने के अपने कार्यक्रम की कार्यनीति की पुष्टि की। विशेष रूप से तथाकथित संयुक्त और लोकप्रिय मोर्चे की कार्यनीति पर ज़ोर दिया गया, जिसे हमने फ्रांस, स्पेन, बेल्जियम और अन्य जगहों पर विकसित होते देखा है। हम यहाँ नॉर्वे में किसान पार्टी के साथ तथाकथित "संकट समझौते" और बुर्जुआ और राष्ट्रीय छद्मवेश धारण करके लेबर पार्टी की नई छद्म रणनीति से भी भली-भांति परिचित हैं। एक और मामला जो हमारे देश को सीधे तौर पर प्रभावित करता है, अर्थात् राष्ट्र संघ में सोवियत रूस की भागीदारी, भी उन्हीं लोकप्रिय मोर्चे की कार्यनीति का एक लक्षण है जो लंबे समय से कोमिन्टेम के कार्यक्रम में शामिल रही हैं।

इस वर्ष, जब हम नेशनल सैमलिंग के लोग अपनी वार्षिक रैली के लिए एकत्र हुए हैं, हम देखते हैं
एक और विश्व कांग्रेस का आह्वान।

इस बार राष्ट्र संघ की दिवालिया संस्था के शेयरधारक अपनी विशेष आम बैठक आयोजित कर रहे हैं, जिसमें इस उपक्रम के परिसमापन या शरद ऋतु में इसके संभावित पुनर्निर्माण पर चर्चा की जाएगी, जब सभा अपनी पारंपरिक वार्षिक बैठक आयोजित करेगी।

मैं इन घटनाओं का उल्लेख कर रहा हूँ, जो हमारी पिछली दो राष्ट्रीय रैलियों के साथ-साथ घटित हुई हैं, न केवल इसलिए कि ये घटनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं, बल्कि इसलिए भी कि ये घटनाएँ आज हमारे सामने मौजूद विदेशी राजनीतिक स्थिति को बहुत स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।

एक ओर हमारे पास अथक रूप से सक्रिय विश्व बोल्शेविज्म है, जो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से, पुरानी दुनिया के अवसान का एक भयावह लक्षण है, तथा भयावह शक्तियों द्वारा विश्व विकास को अपने विनाश के मार्ग पर ले जाने का निरंतर प्रयास है, अर्थात यहूदी तानाशाही के अधीन एक सार्वभौमिक भौतिकवादी गणराज्य की ओर।

दूसरी ओर, हम पुरानी दुनिया के वर्तमान समय की अनिवार्य माँगों, राष्ट्रों के बीच शांति और सहयोग की माँगों को हल करने के उद्देश्यहीन प्रयास देखते हैं। यह पूरा मामला व्यक्तिगत हितों के टकराव से विफल हो रहा है, ठीक उसी तरह जैसे आंतरिक राष्ट्रीय सहयोग, जिसकी परिस्थितियाँ माँग करती हैं, वर्ग युद्ध और स्वार्थी दलीय संघर्षों से नष्ट हो रहा है। विघटन की इस प्रक्रिया के साथ अशांति और संकट, युद्ध और गृहयुद्ध भी होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीयवादी शक्तियां हस्तक्षेप करती हैं और पूरा मामला धीरे-धीरे मार्क्सवाद और विनाश की ओर अग्रसर होता है, ठीक उसी तरह जैसे बुर्जुआ-उदारवादी राज्य धीरे-धीरे नष्ट होता जा रहा है।

मार्क्सवाद, जैसा कि हम अपने देश में स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। इन सबके बीच, मानवता की चिरयुवा पीढ़ी नई कोंपलें फूट रही है; पुनर्जागरण और एकीकरण के राष्ट्रीय आंदोलन नए युग का सूत्रपात कर रहे हैं, एक नए राज्य और एक नई विश्व व्यवस्था की शुरुआत कर रहे हैं। इस देश में भी यह नई व्यवस्था चल रही है।

प्रतिबंध और लीग का पतन

एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उस बुर्जुआ संसदीय पूंजीवादी संस्था, राष्ट्र संघ का पतन, केवल उसकी अपनी अस्वस्थता और मार्क्सवाद की भूमिगत गतिविधियों या संघ के संगठन में मौलिक और औपचारिक त्रुटियों के कारण नहीं हुआ है।

इसे नए युग के संगठित समुदायों के प्रतिनिधियों में से एक, फ़ासीवादी इटली ने तहस-नहस कर दिया है। पचास प्रतिबंधवादी राज्यों और संपूर्ण लोकतांत्रिक व मार्क्सवादी विश्व के विरोध, और फ़ासीवाद व इटली के विरुद्ध लामबंद विश्व जनमत के बावजूद, राष्ट्रीय एकता सबसे मज़बूत शक्ति साबित हुई।

इतालवी फ़ासीवाद या इतालवी हितों से किसी भी तरह से जुड़े बिना, नैशनल सैमलिंग के नेताओं ने शुरू से ही इथियोपियाई संघर्ष के प्रति एक स्पष्ट और निश्चित रुख अपनाया है। वे नॉर्वे की तटस्थता के पक्ष में और तथाकथित प्रतिबंधों में उसकी भागीदारी के खिलाफ खड़े रहे हैं।

इसमें हम पूरी तरह से अपने देश के हितों के प्रति चिंतन से प्रभावित थे। हालाँकि, मेरा मानना है कि यहाँ जनमत, कई अन्य स्थानों की तरह, उस दुष्प्रचार का शिकार हुआ जो वास्तव में उन उच्च आदर्शों के बजाय, जिनका वह दावा करता था, अन्य हितों की पूर्ति करता था।

हालाँकि, हमारे आंदोलन ने किसी का पक्ष नहीं लिया। हमने नॉर्वे की तटस्थता की माँग की, और पूरे प्रतिबंधवादी खेल के पाखंड और उद्देश्यहीनता को उजागर किया। आज हम कह सकते हैं कि हमने स्थिति का सही आकलन किया।

सैन्य दृष्टि से हम सही थे। आम राय के बावजूद, हमने आधुनिक युद्ध सामग्री के महत्व के साथ-साथ इथियोपिया और इंग्लैंड की प्रतिरोध शक्ति, और ऐतिहासिक तथा राष्ट्रीय आधार पर एकजुट प्रयास के लिए संगठित लोगों में उत्पन्न अपार नैतिक और भौतिक शक्ति का भी सही मूल्यांकन किया।

राजनीतिक रूप से भी हमने सही निर्णय लिया। प्रतिबंधात्मक नीति की निरर्थकता और गंभीर गलतफहमियाँ अब स्पष्ट हो चुकी हैं। अपनी अदूरदर्शी लीग नीति के कारण शक्तिशाली इंग्लैंड की दुखद पराजय पर गौर कीजिए; अमेरिका को खोने के बाद से यह ब्रिटिश साम्राज्य की सबसे बड़ी नैतिक और व्यावहारिक पराजय है।

सोवियत रूस, जो राष्ट्र संघ का नया और उल्लेखनीय सदस्य था, ने प्रतिबंध नीति में पहले मुसोलिनी और फिर हिटलर के साथ झगड़ा करने की संभावना देखी, लेकिन जब उनकी गणना विफल होने लगी तो धूर्त बोल्शेविक यहूदी चुपचाप पृष्ठभूमि में चले गए और खुद को मुक्त कर ब्रिटिश सरकार को दोष और अपमान सहने के लिए छोड़ दिया।

राष्ट्रवादी नीति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

विश्व युद्ध के बाद पहली बार नॉर्वे को विदेश नीति में वास्तविक कठोर तथ्यों का सामना करना पड़ा है, जिससे सामान्य संकीर्ण राजनीति को जारी रखना बहुत कठिन हो गया है।

इस संबंध में, मैं एक तथ्य पर जोर देना चाहता हूं जिसे इस देश में दुर्भाग्यवश कम करके आंका जाता है:

अर्थात् लोगों के जीवन पर विदेश नीति का प्रभुत्व है, घरेलू राजनीति का नहीं।
किसी राष्ट्र की अपनी "जीने की इच्छा" के बाद, उसकी आंतरिक परिस्थितियाँ और उसकी संरचना पर अर्थव्यवस्था और शक्ति की अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ हावी होती हैं। ये परिस्थितियाँ लोगों और राज्यों की आदिम और अनिवार्य आवश्यकताओं, उनके अस्तित्व और रहने की जगह के संघर्ष से निर्मित होती हैं। लेकिन विदेशी राजनीति में किसी राज्य का प्रभाव हमेशा उसकी आंतरिक शक्ति के विकास की मात्रा के अनुरूप होता है।

इस प्रकार, युद्ध की स्थिति में आत्मनिर्भरता की आवश्यकता और, सबसे बढ़कर, विश्व अर्थव्यवस्था के ढांचे का पुनर्निर्माण, समुदायों को राष्ट्रीय श्रमिक राज्यों के रूप में आर्थिक आधार पर संगठित होने के लिए बाध्य करता है। दुनिया भर में बदली हुई परिस्थितियाँ प्रत्येक राष्ट्र को अपने पड़ोसियों के साथ एक संगठित आर्थिक इकाई के रूप में व्यवहार करने के लिए बाध्य करती हैं, जिसमें अपने सभी संसाधनों पर पूर्ण और सक्षम नियंत्रण और उनका सर्वोत्तम संभव उपयोग करने की शक्ति हो। इस दृष्टि से, वर्तमान संकट मुख्यतः विश्व उत्पादन और व्यापार में पुनर्समायोजन का संकट है।

तथापि, इन एकीकृत और सुदृढ़ विशेषताओं वाली आर्थिक राष्ट्रीय इकाइयों के लिए युग की मांग और योजनाबद्ध अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की मांग के बीच कोई अंतर्निहित विरोध नहीं है, जो आर्थिक कारणों के साथ-साथ शांति बनाए रखने के विचार से अदम्य बल के साथ आगे बढ़ता है।

ऐसे संगठित राष्ट्रीय व्यक्तित्वों का निर्माण ही ईमानदार राष्ट्रीयता लाएगा।
और पक्षपात या उत्पीड़न से मुक्त, प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।

यूरोप और दुनिया में दो शत्रुतापूर्ण शिविर

स्थिति यह है कि दुनिया में, खासकर यूरोप में, विश्व युद्ध से पहले की तरह ही दो विरोधी खेमे बन रहे हैं। सोवियत रूस, फ्रांस और चेकोस्लोवाकिया, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय यहूदी समुदाय का समर्थन प्राप्त है और जो उन्हें राष्ट्रीय समाजवादी जर्मनी के खिलाफ युद्ध के लिए उकसा रहा है, पहले से ही उस देश के खिलाफ एकजुट मोर्चा बना रहे हैं और जर्मनी को राजनीतिक और सैन्य दोनों ही रूपों में और घेरने की कोशिश कर रहे हैं।

इन परिस्थितियों में नॉर्वे की स्थिति अत्यंत उजागर हो गई है, क्योंकि यह रूस, जर्मनी और इंग्लैंड के चौराहे पर स्थित है और इसकी आंतरिक नीति पहले से ही मार्क्सवादियों के नियंत्रण में है।

रूस, एशियाई हितों वाली एक महान यूरोपीय शक्ति से, यूरोपीय हितों वाली एक महान एशियाई शक्ति बन गया है, खासकर अटलांटिक महासागर की ओर। लेकिन, सबसे बढ़कर, यह विश्व क्रांति का आधार है।

विश्व बोल्शेविज़्म नॉर्वे और उसके साथ पूरे स्कैंडिनेविया को जर्मनी और इंग्लैंड के विरुद्ध अपने यूरोपीय आक्रमण के दक्षिणपंथी मोर्चे में बदलने का प्रयास कर रहा है। इस योजना में हमारे देश के लिए भयावह संभावनाएँ निहित हैं। जर्मनी और सोवियत रूस के बीच संघर्ष की स्थिति में, लेबर पार्टी का पूरा दृष्टिकोण नॉर्वे को जर्मनी के विरोध में बोल्शेविकों का पक्ष लेने के लिए प्रेरित करेगा, और यह हमारी तटस्थता की प्रतिज्ञा के विपरीत होगा।

लेबर पार्टी के गैर-ज़िम्मेदार तानाशाह ट्रानमल ने हाल ही में इस दिशा में काफ़ी स्पष्ट रूप से बात की है। जब तक नॉर्वे और सोवियत रूस वर्तमान राष्ट्र संघ के सदस्य हैं और जर्मनी नहीं, तब तक ऐसा लगता है कि इस दिशा में युद्ध का हमें गंभीर ख़तरा है, क्योंकि जर्मन-रूसी संघर्ष की स्थिति में हमें लाल सेना और वायु सेना को देश में स्वतंत्र रूप से आने-जाने की अनुमति देनी होगी।

यूरोप की वर्तमान परिस्थितियों में यह भी संभावना है कि जर्मनी और इंग्लैंड के बीच युद्ध छिड़ जाए। उदाहरण के लिए, यह जर्मनी और इंग्लैंड के बीच संघर्ष के संदर्भ में हो सकता है।

फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया और सोवियत रूस के त्रिपक्षीय गठबंधन में, चेकोस्लोवाकिया ऑस्ट्रिया से भी ज़्यादा संवेदनशील स्थिति में था। ऐसे में फ्रांस का जर्मनी के खिलाफ युद्ध में उतरना इंग्लैंड को युद्ध के लिए उकसाएगा, जो विमानन के व्यापक विकास से पहले की तुलना में अब और भी ज़्यादा निश्चित है।

इंग्लैंड और जर्मनी के बीच ऐसा युद्ध नॉर्वे के लिए एक भयावह संभावना है, क्योंकि विश्व युद्ध के बाद अब पूरी स्थिति बदल चुकी है।

ब्रिटिश विश्व नीति के एक साधन के रूप में राष्ट्र संघ के माध्यम से हमें सीधे युद्ध में उतरने के लिए बाध्य किया जाएगा और यदि राष्ट्र संघ टुकड़े-टुकड़े हो भी जाए, तो भी लॉर्ड लॉयड जैसे अधिकारी के अनुसार, हमें निश्चित रूप से दंडात्मक बमबारी का सामना करना पड़ेगा, यदि, जैसा कि विश्व युद्ध में हुआ था, हमने अपने व्यापारी बेड़े को इंग्लैंड के लिए माल ले जाने की अनुमति दी, जिस पर वह निस्संदेह अब भी उतना ही जोर देगा जितना उसने तब दिया था।

नॉर्वेजियन लेबर पार्टी—सरकारी पार्टी—जर्मनी के विरुद्ध इस नीति का सक्रिय रूप से समर्थन कर रही है। अगर नॉर्वे इस पर सहमत होता है, तो इसका मतलब है कि हम कम से कम 99 प्रतिशत नॉर्वेजियन जनता की इच्छा के विरुद्ध इस युद्ध नीति में सीधे तौर पर घसीटे जा रहे हैं। नॉर्वे तब तक आगे नहीं बढ़ सकता और न ही बढ़ेगा जब तक कि हमारी अपनी स्वतंत्रता और हमारी अपनी सीमाएँ खतरे में न पड़ जाएँ।

इंग्लैंड और जर्मनी के साथ शांति

मैं पहले ही इस बात पर ज़ोर दे चुका हूँ कि जर्मनी और इंग्लैंड के बीच शांति हमारे अपने देश के लिए एक ज़रूरी ज़रूरत है। हमें सबसे ज़रूरी यह रोकना है कि जर्मनी और इंग्लैंड एक नए युद्ध में एक-दूसरे के ख़िलाफ़ खड़े न हों। हमारे लिए यह घातक होगा; बल्कि, इसका मतलब विनाश होगा।

इसलिए, यह हम पर निर्भर करता है कि हम इन दोनों देशों के बीच शांति और सद्भावना स्थापित करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगाएँ, जो हमारी तरह ही नॉर्डिक मूल और विचारधारा वाले हैं। भले ही हम इस संबंध में बहुत कुछ न कर पाएँ और हमें दूसरे देशों के मामलों में दखल न देने के लिए सावधान रहना पड़े, फिर भी हमारा यह तत्काल कर्तव्य होना चाहिए कि हम उन लोगों का हर संभव तरीके से विरोध करें जो हमारे इन रिश्तेदारों के बीच, आमतौर पर झूठे और बेईमानी भरे आधारों पर, फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं।

हम उन शक्तियों को जानते हैं जिनके हितों के लिए ये प्रयास वास्तव में किए जा रहे हैं। उनमें से एक है विश्व बोल्शेविज्म। जर्मनी और इंग्लैंड के बीच शांति और सुलह के लिए काम करना, नॉर्वे की विदेश नीति का हमारा लक्ष्य होना चाहिए, बिना किसी दलीय हितों की परवाह किए। यह पूरी तरह स्पष्ट है कि नॉर्वे के हित इसकी माँग करते हैं। युद्ध और अराजकता से बचने का एकमात्र तरीका दक्षिण और पश्चिम में हमारे इन महान पड़ोसियों के बीच शांति और समझ बनाए रखना है, जिनके साथ हमारे सबसे बड़े व्यापारिक संबंध भी हैं।

लगभग 40 साल पहले, आज की तरह, महान नॉर्डिक लोगों के बीच एक स्थायी समझ बनाने के लिए एक ईमानदार प्रयास का अवसर था। इस अवसर को नज़रअंदाज़ कर दिया गया या ठुकरा दिया गया, और इस चूक के बाद जो तबाही मची, उसमें पूरी दुनिया शामिल थी। अब जो कोई भी उसी विनाशकारी नीति को बढ़ावा देने की हिम्मत करता है, उसे अपनी आँखें खुली रखनी चाहिए।

लेकिन जो भी व्यक्ति इस समय को समझता है, उसे मजबूत और सकारात्मक प्रतिक्रिया करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा।

हमारी विदेश नीति की मुख्य धाराओं के बारे में एक और निर्णायक विचार हमें इसी निष्कर्ष पर पहुँचाता है। पतनशील उदारवाद और उसकी संतान और उत्तराधिकारी, मार्क्सवाद, का लक्ष्य राष्ट्रीय समुदायों के विरुद्ध, मुख्यतः नॉर्डिक समुदायों के विरुद्ध है।

सचेतन या अचेतन रूप से, इस नीति का उद्देश्य प्राकृतिक राष्ट्रीय व्यवस्था को तोड़ना है। अंतर्राष्ट्रीय विश्व गणराज्य को साकार करने के लिए लोगों का संगठन।

तब राष्ट्रों की आंतरिक एकता नष्ट हो जाएगी। वे उस राष्ट्र के शिकार बन जाएँगे जो अन्य सभी राष्ट्रों के विपरीत, पूरी पृथ्वी पर फैला हुआ है और अन्य राष्ट्रों पर परजीवी की तरह रहता है; इसीलिए उसे दुनिया पर अपनी प्रबल इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करने के लिए ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है । क्योंकि इसी प्रभुत्व में यहूदी राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद का रहस्य निहित है।

यहूदी धर्म और नॉर्डिक भावना के बीच द्वंद्व अवश्यंभावी है, क्योंकि मार्क्सवाद और अंतर्राष्ट्रीयतावाद वास्तव में यहूदी राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद हैं, जो निश्चित रूप से नॉर्डिक यूरोपीय सभ्यता के विरुद्ध यहूदी धर्म द्वारा प्रेरित और संचालित एक षड्यंत्र है। यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय की क्षयकारी प्रक्रियाएँ जीवन के आदर्शों के लिए सबसे गंभीर खतरा हैं और हमारे समय के सबसे शक्तिशाली विरोध यहूदी धर्म और नॉर्डिक-यूरोपीय सिद्धांत के बीच संघर्ष तक सीमित हो गए हैं। ऐसे में, हमें यह समझना होगा कि वर्तमान पतन और मार्क्सवादी भौतिकवाद की गुप्त गतिविधियों का सबसे प्रभावी उपाय नॉर्डिक जाति और विशिष्ट स्वभाव की जीवंत या प्राणवान नींव पर हमारे लोगों के लिए एक राष्ट्रीय पुनर्जागरण में मिलेगा।

और, दूसरी ओर, व्यापक अर्थों में नॉर्डिक और नॉर्डिक रूप से निर्धारित लोगों के बीच पूरे विश्व में घनिष्ठ सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सहयोग होना चाहिए: स्कैंडिनेवियाई देशों में, हॉलैंड, फ़्लैंडर्स, ब्रिटिश साम्राज्य, जर्मनी और अन्य देशों में जहां नॉर्डिक परिवार के सदस्य तुलनात्मक रूप से कम संख्या में हैं।

इसलिए, "नॉर्डिक" शब्द का अर्थ स्कैंडिनेवियाई लोगों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सभी महान नॉर्डिक जातियों पर लागू होता है, और हम अब एक असुरक्षित उत्तरी सहयोग पर विचार नहीं कर रहे हैं।

इसके विपरीत, एक ओर तो यह इस अहसास का एक आवश्यक परिणाम है कि राष्ट्रीय चरित्र और संगठन को बनाए रखना सभी रचनात्मक लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण जीवन-मुद्दा है। केवल इसी तरह राष्ट्रीय और सार्वभौमिक, दोनों क्षेत्रों में नॉर्स संस्कृति और विशेषताओं का स्वतंत्र और शांतिपूर्ण विकास सुनिश्चित करना संभव है। साथ ही, यह अन्य जातियों के मूल्य और सांस्कृतिक योगदान की गहरी मान्यता की एक शर्त है और इस प्रकार यह सभी राष्ट्रों को विघटन और अराजकता के विरुद्ध मज़बूत करेगा।

दूसरी ओर, यह इस तथ्य का एक अनिवार्य परिणाम है कि वर्तमान समय में जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग स्थापित किया जाना चाहिए, वह नॉर्डिक लोगों पर आधारित होना चाहिए, जो नस्ल, भाषा, संस्कृति और हितों में एक-दूसरे से बहुत निकट से जुड़े हुए हैं। उनका जीवन स्तर और जीवन के प्रति दृष्टिकोण एक जैसा है, और वे भौगोलिक रूप से भी एक साथ समूहित हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी वे एक दूसरे के सर्वोत्तम ग्राहक हैं।

नॉर्डिक लोगों का एक संघ

इन लोगों का एक समूह-गठबंधन, नॉर्डिक लोगों का एक संघ, अजेय होगा। ऐसा संघ, जिनेवा के दिवालिया उदारवादी-मार्क्सवादी लीग की तुलना में, विश्व बोल्शेविज़्म के विरुद्ध एक मज़बूत दीवार के रूप में कार्य करने और विश्व के शांतिपूर्ण विकास की गारंटी देने में कहीं अधिक सक्षम होगा। संगठित मानवता का मार्ग, नॉर्डिक लोगों के महान परिवार के ऐसे समूह-गठबंधन में, एक समान मुद्रा, आंतरिक मुक्त व्यापार और एक समान सीमा शुल्क नीति के साथ, एक संघ में ही मिलेगा; उनका उद्देश्य अन्य देशों और शक्ति समूहों को इस व्यवस्था में शामिल करना होगा।

ऐसी विदेश नीति दुनिया में नॉर्वे की स्थिति और बोल्शेविज़्म के विरुद्ध उसकी सर्वोत्तम गारंटी होगी। और यह हमारे और दूसरों के लाभ के लिए विदेशों में गतिविधि का एक क्षेत्र तैयार करेगी।

यदि हमारे अपने संसाधन अपर्याप्त हैं तो इस देश में ऊर्जा की अधिकता की अपेक्षा की जानी चाहिए।

राष्ट्रीय आंदोलनों पर आधारित सहयोग

नॉर्डिक साझा नियति पर ज़ोर देते हुए, हमें दूसरों के महत्व और उपलब्धियों या अपनी साझा मानवता को कम नहीं आंकना चाहिए; और सबसे बढ़कर, हमें सामान्य यूरोपीय और सार्वभौमिक सहयोग के महत्व को कम नहीं आंकना चाहिए। लेकिन यह अंतर्राष्ट्रीय भाईचारा राष्ट्रीय राज्यों की एक प्रणाली पर आधारित होना चाहिए। इसे यूरोप और दुनिया भर के लोगों के राष्ट्रीय उत्थान द्वारा निर्मित किया जाना चाहिए, न कि राष्ट्र संघ, अखिल-यूरोप और सोवियत रूस, जो विश्व सोवियत गणराज्य का केंद्र था, जैसे उदारवादी और मार्क्सवादी प्रयोगों के परिणामस्वरूप।

जीवन का इतिहास दर्शाता है कि समस्त प्रगति स्वतंत्रता और विवेक के मेल, भाईचारे और संगठन पर निर्भर है। विश्वव्यापी राजतंत्र और विश्व गणराज्य अराजकता और विघटन में परिणत होते हैं। किसी एक राष्ट्र का आधिपत्य दूसरों के लिए और स्वयं उसके लिए भी विनाशकारी होता है।

सभी राष्ट्रों और जातियों का बाबेल जैसा मिश्रण, जो उदारवाद और मार्क्सवाद का लक्ष्य है, प्रत्येक की व्यक्तिगत विशेषताओं और मूल्यों का विनाश है। इतिहास हमें सिखाता है कि सच्चा सामंजस्य अलगाव और विकास का परिणाम है।

संगठित निर्माण के लिए मानवजाति की प्रवृत्ति राष्ट्रीय जीवन और राष्ट्रीय एकताओं के सहयोग की ओर उन्मुख है। इसी कारण उदारवाद और मार्क्सवाद से विकसित सभी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ अपने कथित उद्देश्यों में विफल रही हैं, जिनका उद्देश्य राष्ट्रों के बीच एक अच्छी समझ स्थापित करना और उनकी प्रगति को बढ़ावा देना था।

उदारवादी लीग के विचारों और अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवाद की विफलता को देखते हुए, यह अत्यावश्यक है कि यूरोपीय और विश्वव्यापी चरित्र वाले राष्ट्रों का एक नया संघ बनाया जाए, जो समुदायों के संगठन के लिए नए विचारों पर आधारित हो, जिन्हें 16 और 17 दिसंबर, 1934 को मॉन्ट्रो में नई व्यवस्था के सम्मेलन द्वारा निर्धारित किया गया था। कांग्रेस का पहला विचार आध्यात्मिक और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति सम्मान का है।

पुरानी कूटनीति के पाखंडी और तकनीकी तरीकों के स्थान पर, सभी युवा और स्वस्थ राष्ट्रीय आंदोलनों और उनके द्वारा पुनर्निर्मित राष्ट्रीय राज्यों के बीच एक सहज और सम्मानजनक सहयोग विकसित होना चाहिए ताकि दुनिया भर में एक सामान्य आध्यात्मिक नवीनीकरण और राजनीतिक व आर्थिक पुनरुत्थान प्राप्त हो सके। लेकिन इस सार्वभौमिक योजना के ढांचे के भीतर, एक ही मूल से उत्पन्न और एक ही संस्कृति और सभ्यता को साझा करने वाले राष्ट्रों को अपने निकटतम हितों के अनुसार एक साथ समूहबद्ध होना चाहिए।

नॉर्डिक विश्व आंदोलन

राष्ट्रीय सामलिंग जिस मुख्य सिद्धांत पर अपना रुख रखता है, वह यह है कि हमारी राजनीति, आधुनिक परिवर्तनों द्वारा अनिवार्य की गई माँगों को पूरा करने के अलावा, हमारे राष्ट्र परिवार की सभी आवश्यकताओं और इच्छाओं के अनुरूप होनी चाहिए। जब तक हम नॉर्स भावना की ज्वाला को पुनः प्रज्वलित नहीं करते और जीवन के प्रति आध्यात्मिक और ज़िम्मेदार दृष्टिकोण का निर्माण नहीं करते, तब तक राष्ट्रीय पुनरुत्थान की आशा करना व्यर्थ है।

यदि हम नॉर्डिक नस्ल को मिश्रित नहीं रखते हैं तो कोई प्रगति की उम्मीद नहीं की जा सकती है; यदि हम ऐसा नहीं करते हैं
यदि हम अपने विशिष्ट चरित्र को सुरक्षित रखें, तो हम उसे खो देंगे और राष्ट्रीय विलुप्ति की ओर बढ़ेंगे।

तथाकथित नॉर्डिक विचार, कि नॉर्डिक लोगों को केवल एक नए राज्य के निर्माण से ही बहाल किया जा सकता है

आधुनिक मांगों के अनुरूप तथा राष्ट्रीय स्टॉक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण की दोहरी नींव पर, संबंधित नॉर्डिक देशों में इसका प्रभाव और प्रचलन लगातार बढ़ रहा है और यह व्यावहारिक राजनीति में पहले से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

इस प्रकार, एक अखिल-नॉर्डिक सहयोग के लिए बीज और ज़मीन पहले से ही मौजूद हैं। लेकिन, इस विचार को तेज़ी से फैलाने के लिए, इसे एक निश्चित और पर्याप्त रूप से संगठित अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए।

इन परिस्थितियों में, मेरा मानना है कि अब समय आ गया है कि हम निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ नॉर्डिक लोगों और विश्व भर में नॉर्डिक दृष्टिकोण रखने वाले अन्य लोगों के बीच सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सहयोग को बढ़ावा दें:

- एक अंतर्राष्ट्रीय नॉर्डिक आंदोलन का निर्माण।
- नॉर्डिक लोगों का संघ का गठन।

विश्व के संगठन और उसके शांतिपूर्ण विकास के कार्यों में सक्रिय भागीदारी; और वर्तमान में चल रही क्रांतियों और नए संविधानों में अपने देश का स्थान और योगदान सुनिश्चित करने के लिए। यह सहयोग, हमेशा की तरह, विचारों के क्षेत्र से शुरू होना चाहिए, ताकि राजनीतिक रूप से एक ठोस आर्थिक आधार पर इसे प्राप्त किया जा सके।

इसलिए, यदि मुद्रा के मौजूदा आधार को नॉर्डिक लोगों के बीच एक स्थापित मुद्रा संघ में विस्तारित किया जा सकता है, और यदि राजनीतिक वित्तीय सहयोग के माध्यम से इन लोगों के बीच एक सीमा शुल्क संघ को प्रभावी बनाया जा सकता है, तो हमारे घोषित उद्देश्यों की राजनीतिक प्राप्ति के लिए नींव पूरी तरह से रखी गई होगी: विश्व-बंधुत्व में नॉर्डिक लोगों का एक महान संघ।

यह आदर्श काफी समय से नैशनल सैमलिंग के कार्यक्रम का हिस्सा रहा है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अखिल-नॉर्डिक सहयोग वास्तव में उत्तरी राज्यों के बीच संकीर्ण अर्थों में सहयोग को और तीव्र करने का संकेत देता है: नॉर्वे, स्वीडन, डेनमार्क, फ़िनलैंड और उत्तरी सागर में स्थित नॉर्स द्वीप। डेनमार्क और फ़िनलैंड की स्थिति नॉर्वे और स्वीडन की तुलना में इतनी अधिक उजागर है कि नॉर्वे, किसी भी स्थिति में, इंग्लैंड और जर्मनी के साथ शांतिपूर्ण और सुनिश्चित संबंधों से प्राप्त होने वाले समर्थन के बिना, स्वेच्छा से इन देशों के साथ अपना भाग्य जोड़ने से वंचित है। लेकिन, इसकी सुरक्षा के बाद, यह भी वांछनीय है कि उत्तरी देश नॉर्डिक दुनिया में एक स्वाभाविक समूह के रूप में अपनी जगह लें - ब्रिटेन, जर्मनी, नीदरलैंड और अन्य देशों के साथ सहयोग करें।

इस संबंध में, मैं इस तथ्य पर जोर देना चाहता हूं कि यदि इस देश में बहुत से लोग ब्रिटिश और जर्मन नीति के विभिन्न विवरणों से असहमत हैं, तो इससे मामला नहीं बदलता।

आज जो परिस्थितियां हमारे इन रिश्तेदारों के साथ और उनके बीच सहयोग को आवश्यक बनाती हैं, वे उन परिस्थितियों से अधिक महत्वपूर्ण हैं जो हमें अलग कर सकती हैं।

कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो हमारी किसी भी विदेश नीति पर आपत्ति करते हैं, और हमारे अपने मामलों को उतना ही मानते हैं जितना हम संभाल सकते हैं। मैं उन्हें याद दिलाना चाहूँगा कि हमारे समय की विशेषता यह है कि दुनिया एक बड़ी आर्थिक इकाई बनती जा रही है और कोई भी देश अब अपने आप में पर्याप्त नहीं रह सकता; वह दूसरों पर निर्भर है; और, यदि वर्तमान राजनीति में ऐसा सहयोग हमारे देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, तो यह हमारे आंदोलन के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है। चूँकि हमारे राष्ट्रीय विनाश के लिए काम करने वाली ताकतें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठित हैं, इसलिए हमारा दायित्व है कि हम उनका सामना एक ऐसे संगठन से करें जिसका लक्ष्य राष्ट्रीय हितों से परे हो। इस प्रकार का एक पूर्णतः प्रभावी संगठन केवल हमारे लोगों के साझा महत्वपूर्ण आधार, नॉर्डिक सिद्धांत पर ही निर्मित किया जा सकता है।

नॉर्डिक सिद्धांत

नॉर्डिक सिद्धांत नॉर्डिक परंपराओं, नॉर्डिक विचारों और रचनात्मक सहयोग पर आधारित है, जबकि यहूदी उदारवाद और मार्क्सवाद अपने स्वार्थों के लिए घृणा, ईर्ष्या और वर्ग युद्ध के ज़रिए अपने विनाशकारी उद्देश्यों को बढ़ावा देते हैं। एक ईश्वर से जुड़ा है; दूसरा शैतानी से।

इसलिए, नॉर्डिक सिद्धांत की आध्यात्मिक शक्ति, अस्तित्व के उस मार्क्सवादी-भौतिकवादी दृष्टिकोण से कहीं अधिक प्रबल और गहन है जो हमारी जाति और सभ्यता को विनाश की धमकी दे रहा है। वास्तव में, यह हमारा अंतर्निहित राष्ट्रीय सिद्धांत है जिसका हमें पालन करना चाहिए और जिसे हमें अटल निरंतरता के साथ साकार करना चाहिए।

मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि जब हम ऐतिहासिक अतीत के साथ-साथ ऐतिहासिक वर्तमान के गहन सत्यों को पहचानेंगे, और नॉर्डिक जाति के लोगों द्वारा इतिहास के आरंभ से लेकर आज तक, जब वे पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, किए गए महान कार्यों को देखेंगे; और साथ ही, जब हमें यह विश्वास हो जाएगा कि ईश्वरीय इच्छा विश्व विकास के ऐतिहासिक क्रम में प्रकट होती है, तो हमें दूसरों के महत्व और योगदान को कम करके आंके बिना, विश्व में नॉर्डिक लोगों के निरंतर ऐतिहासिक और दिव्य मिशन में विश्वास करने की अनुमति मिलनी चाहिए। अतीत की तरह, हमारे महान जन-परिवार का मिशन एक अप्रचलित दुनिया को समाप्त करना और एक नई दुनिया का निर्माण करना होना चाहिए जो पूरे मानव परिवार को ऊपर की ओर ले जा सके।

नेशनल सामलिंग प्रत्येक देश में नॉर्डिक जाति और दृष्टिकोण के सभी लोगों को आमंत्रित करता है - नॉर्वेजियन, स्वीडिश, डेन, आइसलैंडर्स, ब्रिटन, जर्मन, डच और नॉर्डिक रक्त और आत्मा के सभी अन्य लोगों को - एक नॉर्डिक विश्व आंदोलन में एकजुट होने के लिए दुनिया भर में सभी नॉर्डिक लोगों के बीच शांति और सहयोग बनाने और हमारी सभ्यता के उद्धार और प्रगति के लिए संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए।

क्लॉड सटन द्वारा फासीवाद की व्याख्या

एफ इस लेख में जिस अर्थ में ASCISM का प्रयोग किया जाएगा, वह उस विश्व आंदोलन का वर्णन करने के लिए एक अटपटा और असुविधाजनक शब्द है जो हमारे समय में मार्क्सवाद और उदार-लोकतंत्र के साथ मानवीय निष्ठा के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए उभरा है। निस्संदेह, इसे इटली में इस आंदोलन के विशेष रूप का नाम देने तक ही सीमित रखा जाना चाहिए। फिर भी, आम जनता, यह महसूस करते हुए कि इतालवी फ़ासीवाद में कुछ नया और विश्वव्यापी महत्व का उदय हुआ है, इस शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में करने पर अड़ी हुई है।

फ़ासीवाद साम्यवाद की तरह अंतरराष्ट्रीय नहीं है, इस अर्थ में कि यह एक ऐसा सिद्धांत है जिसे हर राष्ट्र पर थोपा जा सकता है, चाहे उसका इतिहास और परिस्थितियाँ कुछ भी हों। यह दृष्टिकोण की एक अंतर्निहित समानता है जिसे विभिन्न आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलनों में देखा जा सकता है, और जिसे हमारी यूरोपीय संस्कृति की वर्तमान स्थिति से एक प्रकार की आवश्यकता के रूप में उभरता हुआ देखा जा सकता है। हम इंग्लैंड में यूरोप की साझी सांस्कृतिक विरासत में भागीदार हैं; जिस प्रकार हम फ्रांसीसी क्रांति के विचारों से सबसे अधिक प्रभावित हुए थे, उसी प्रकार हम फ़ासीवादी आंदोलन के विचारों से भी गहराई से प्रभावित होने और इन विचारों पर अपने विशिष्ट राष्ट्रीय तरीके से प्रतिक्रिया करने के लिए बाध्य हैं।

इस आंदोलन को जन्म देने वाले दो कारक हैं उदार-लोकतंत्र का पतन और मार्क्सवाद का उदय।

यह समझने के लिए कि उदार-लोकतंत्र में कुछ भी अपरिहार्य या शाश्वत नहीं है, इतिहास से थोड़ा-सा परिचय ही काफ़ी है। अन्य शासन-प्रणालियों की तुलना में, लोकतांत्रिक सरकारें न तो सर्वमान्य रही हैं, न ही स्थिर, और न ही उन्होंने मानव संस्कृति में उतना स्थायी योगदान दिया है जितना कुलीन और राजतंत्रीय सरकारों ने दिया है। बेशक, लोकतंत्र को इस तरह परिभाषित करना संभव है—और अक्सर किया भी जाता है—कि उसमें शासन के सभी सहनीय स्वरूपों को शामिल किया जा सके, उदाहरण के लिए, महारानी एलिजाबेथ या पिट के अधीन इंग्लैंड को लोकतंत्र कहना। लेकिन यह भाषा का घोर दुरुपयोग और बौद्धिक क्षमता का ह्रास है। "लोकतंत्र" का प्रयोग हर उस सरकार के लिए नहीं किया जाना चाहिए जो लगभग सभी शासितों की सहमति से शासन करती है; न ही ऐसी सरकार जो सचेत रूप से संपूर्ण जनता के कल्याण का प्रयास करती है; न ही ऐसी सरकार जो विभिन्न मतों के प्रति सहिष्णु है और स्वतंत्र चर्चा को प्रोत्साहित करती है; न ही ऐसी सरकार जो स्थापित और ज्ञात कानून के अनुसार, निष्पक्ष रूप से लागू होकर शासन करती है। कई लोकतांत्रिक सरकारें इन मामलों में स्पष्ट रूप से विफल रही हैं; कई गैर-लोकतांत्रिक सरकारों ने इन गुणों का उच्च स्तर पर प्रदर्शन किया है। किसी भी ऐसी सरकार को "लोकतंत्र" कहना बेतुका है जो अत्याचारी न हो; लोकतंत्र सरकार का एक विशिष्ट ऐतिहासिक रूप है, जिसने कभी आम जनता की संतुष्टि के लिए काम किया है, कभी नहीं। इसकी मुख्य विशेषता सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों का निर्णय बहुमत से, चाहे वह पूरी जनता का हो या बड़ी प्रतिनिधि सभाओं का, होना प्रतीत होता है।

पश्चिमी यूरोप और अमेरिका में हम जिस लोकतंत्र को जानते हैं—जिसे मैं आगे "उदार-लोकतंत्र" कहूँगा—वह फ्रांसीसी क्रांति की एक विशेष उपज है और उस युग के कुछ प्रभावशाली विचारकों के विशिष्ट सिद्धांतों पर आधारित है। मानव स्वभाव का वह अंतर्निहित दर्शन, जिस पर यह आधारित है, विचारशील लोगों द्वारा हमेशा स्वीकार नहीं किया गया है, और यह मानने का कोई कारण नहीं है कि मानव मन पर इसका प्रभाव शाश्वत रहेगा। इसके विपरीत, इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि "मनुष्य और नागरिक के अधिकारों" का यह दर्शन अब मान्य नहीं है।

इस विश्वास पर आधारित शासन प्रणाली का अंत होना निश्चित है।

अन्य राजनीतिक दर्शनों की तरह, इसे भी बिना संघर्ष के आम स्वीकृति नहीं मिली। लेकिन आज, रूढ़िवादियों, उदारवादियों और दक्षिणपंथी (गैर-मार्क्सवादी) लेबर के आदर्शों या उन्हें साकार करने के उनके तरीकों के सामान्य स्वरूप के संदर्भ में, कौन अंतर कर सकता है?

उदार-लोकतंत्र की इस प्रणाली की दार्शनिक मान्यताएं या स्वयंसिद्ध बातें क्या हैं?
पहला यह है कि सभी मनुष्य समान हैं, कम से कम इस हद तक कि उन्हें सरकार में समान हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। दूसरा यह है कि सरकार केवल इसलिए अस्तित्व में है ताकि कोई भी व्यक्ति दूसरों की समान स्वतंत्रता में हस्तक्षेप न करे (जे.एस. मिल); या जैसा कि एक छात्र ने मुझे और ज़ोर देकर कहा: "सरकार केवल इसलिए अस्तित्व में है कि हर व्यक्ति अपने तरीके से नरक में जाए"। तीसरा यह कि ऐसी व्यक्तिगत स्वतंत्रता सभी को अधिकतम संभव संतुष्टि प्रदान करती है।

[1]

फ़ासीवाद इन सभी सिद्धांतों के खंडन पर आधारित है। पहले सिद्धांत के प्रति उसका उत्तर है कि सभी मनुष्य सहयोगात्मक उद्यमशीलता की क्षमता में समान नहीं हैं, और सरकार एक सहयोगात्मक उद्यम है।
साहस, निष्पक्षता, निष्ठा, सत्यनिष्ठा और चरित्र के अन्य गुणों के मामले में, जो किसी भी कॉर्पोरेट उपक्रम के लिए आवश्यक हैं, पुरुषों में स्पष्ट रूप से भिन्नता होती है। ऐसे गुणों पर किसी एक वर्ग का एकाधिकार नहीं है, न ही वे शब्द के सामान्य अर्थ में शिक्षा पर निर्भर हैं। कुछ पुरुषों में इन गुणों की स्पष्ट रूप से कमी होती है—उदाहरण के लिए, यदि हम उनके स्वीकारोक्ति पर विश्वास करें, तो सभी पुराने बोल्शेविक नेताओं में; हममें से कोई भी उन्हें किसी भी संगठन में सत्ता से बाहर करने की कोशिश करेगा जिसके लिए वह ज़िम्मेदार हो।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व वास्तविक समूहों की एक चुनिंदा प्रणाली पर आधारित होना चाहिए, जिनके सदस्य एक-दूसरे से व्यक्तिगत रूप से परिचित हों। एक अच्छी राजनीतिक व्यवस्था को यह सुनिश्चित करने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए कि सभी विचारों को समान महत्व दिया जाए।

दूसरे सिद्धांत के अनुसार समान स्वतंत्रता असंभव है, क्योंकि सभी लोग एक जैसा काम नहीं करना चाहते; कानून की प्रत्येक प्रणाली कुछ सकारात्मक विचारों को पूर्वकल्पित करती है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए वस्तुगत रूप से क्या अच्छा है या क्या बुरा; यह सिद्धांत या तो अर्थहीन है या विनाशकारी है।

तीसरा, मनुष्य और समाज की प्रकृति के कारण, अधिकतम व्यक्तिगत स्वतंत्रता की व्यवस्था से संतुष्टि की अधिकतम संभव मात्रा प्राप्त नहीं की जा सकती; न ही यह "अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख" है, जिसमें सभी को एक के रूप में गिना जाए और किसी को भी जीवन के अंत से अधिक के लिए नहीं गिना जाए। मनुष्य को अपने परिवार, अपने पेशे, अपने पड़ोस, अपने राष्ट्र के कल्याण में अधिक रुचि होनी चाहिए; और अच्छी सरकार को इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए। हम इन बिंदुओं पर बाद में चर्चा
2 एक" – करेंगे।

उदार-लोकतंत्र एक आलसी दर्शन है। क्या करना चाहिए, यह तय करने और उसे साकार करने के लिए डटकर संघर्ष करने के बजाय, एक अच्छा लोकतंत्रवादी यह मानकर प्रतीक्षा करता है कि बहुमत किस ओर जाएगा, कि जनता की आवाज़ ही ईश्वर की आवाज़ है। हमें आज के लोगों को यह समझाने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए कि उदार-लोकतंत्र की प्रेरक शक्ति हर जगह कमज़ोर पड़ गई है। बहुत कम लोग इसके नारों पर पूरे दिल से विश्वास करते हैं। इसके आज के आधे समर्थक वास्तव में डरपोक मार्क्सवादी हैं। उनका घोषित लक्ष्य सभी के लिए समान धन है, और लोकतंत्र केवल इसका एक साधन है। वे कल्पना करते हैं कि यह लक्ष्य केवल मतदान से, बिना किसी बल प्रयोग के, कम से कम दूर भविष्य में, प्राप्त किया जा सकता है। वे अक्सर व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति अपनी अवमानना प्रदर्शित करते हैं। वे ईर्ष्यालु होते हैं, लेकिन उन्हें अपनी जान की परवाह होती है। ऐसे ही हैं लिब-लैब सोशल-डेमोक्रेट।

कम्युनिस्टों और डेमोक्रेटों के बीच अपवित्र गठबंधन का दार्शनिक आधार क्या है?
जहाँ कहीं भी फासीवाद दिखाई देता है, हमें अब इस समस्या की ओर ध्यान देना चाहिए।

साम्यवाद—या बेहतर कहें तो मार्क्सवाद, क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी के बाहर भी कई मार्क्सवादी हैं—कुल मिलाकर उदार-लोकतंत्र के व्यक्तिवादी, समतावादी दर्शन की उपज है। इतिहास में कमज़ोर वर्गों के क्रांतिकारी आंदोलन अक्सर होते रहे हैं; इसने उस प्रारंभिक विक्टोरियन युग की विशिष्ट विचारधारा को अपनाया है जिसमें इसका जन्म हुआ था। यह भी समुदाय को एक समूह और सामाजिक सुख को एक योग मानता है। यह उदार-लोकतंत्र के पहले दो सिद्धांतों को स्वीकार करता है; सभी मनुष्य समान हैं—हालाँकि ईश्वर नहीं है—और इसलिए उनके पास न केवल समान राजनीतिक अधिकार होने चाहिए, बल्कि समान धन भी होना चाहिए ।3 फिर, सुख सभी को समान धन देकर और फिर उन्हें उससे अपनी इच्छानुसार काम करने देकर प्राप्त किया जाना है; जब एक बार आर्थिक समानता प्राप्त हो जाती है, तो राज्य "विलुप्त" हो जाता है। लेकिन यह उदार-लोकतंत्र के तीसरे सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज करता है, कि लोगों को अकेला छोड़ देने से ही यह खुशहाल स्थिति प्राप्त होती है। जब एक बार आर्थिक समानता प्राप्त हो जाती है, तो अंतिम लक्ष्य 'लेसर-फ़ेयर' है; लेकिन यह सर्वहारा वर्ग, यानी अकुशल कारखाना-मजदूर की बलपूर्वक तानाशाही द्वारा प्राप्त किया जाना है।

इसका केंद्रीय सिद्धांत सर्वहारा और पूँजीपतियों के बीच वर्ग-युद्ध है। यह पूरी मानवजाति को इन दो बाड़ों में ठूँसने पर अड़ा है, हालाँकि अब कोई भी अर्थशास्त्री उस "अतिरिक्त मूल्य" सिद्धांत को गंभीरता से नहीं लेता जिस पर यह भेद आधारित था। ये दोनों बाड़े कितने अवास्तविक हैं! समूहों के बीच वास्तव में संघर्ष होता है, और ऐसा संघर्ष एक जीवंत समुदाय का सार है। लेकिन आधुनिक राज्य के निवासियों का एक बड़ा हिस्सा, जो अपने काम की संयुक्त आय और उस काम को फलदायी बनाने के लिए आवश्यक संपत्ति पर निर्भर रहते हैं, उन्हें किसी भी बाड़े में बिना किसी जबरदस्ती के ठूँसा नहीं जा सकता। और क्या नगरवासियों और ग्रामवासियों के बीच, निर्माताओं और वित्तपोषकों के बीच, शिल्पकारों और अकुशल श्रमिकों के बीच, जातीय समूहों और धार्मिक समूहों के बीच हितों का संघर्ष उतना ही वास्तविक और महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि पूँजीपतियों और सर्वहारा वर्ग के बीच का यह कथित संघर्ष?

मार्क्सवाद का मूलमंत्र वर्ग-युद्ध है, जिसमें सभी तरीके स्वीकार्य हैं। इसीलिए, जहाँ भी यह अपना सिर उठाता है, राजनीति इतनी कटु और गंदी हो जाती है कि वह राष्ट्र की नैतिक एकता की सारी भावना को नष्ट कर देती है, जो पहले समूहों के बीच संघर्षों को कम करती थी। इसीलिए इसे मरते दम तक लड़ना होगा।

लेकिन, यह कहा जाएगा कि क्या रूस में कम्युनिस्ट प्रयोग से कोई मूल्यवान उपलब्धि हासिल नहीं हुई? और क्या साम्यवाद और फासीवाद की "तानाशाही" में कोई समानता नहीं है?

रूस में साम्यवाद के विकास को समझना असंभव है, जब तक कि हम "पीछे हटते बोल्शेविज्म" के वर्तमान चरण को, जैसा कि इसे कहा गया है, उस प्रारंभिक चरण से अलग न करें जिसमें सिद्धांतवादी साम्यवाद का पूर्ण प्रभुत्व था। यह प्रारंभिक चरण वर्ग-युद्ध सिद्धांत के लिए राष्ट्र के मानवीय और भौतिक संसाधनों—किसानों, तकनीशियनों और शिक्षकों, मवेशियों, मशीनों, इमारतों और कला-खजानों—के अभूतपूर्व विनाश से चिह्नित था। यही घटना स्पेन और अन्यत्र, जहाँ भी बोल्शेविज्म ने सत्ता हथिया ली है, प्रकट हुई है। जब लगभग दस वर्षों के बाद उत्पादन इतने निम्न स्तर पर पहुँच गया कि ऐसा लगा कि मानव सहनशीलता की सीमा पार हो गई है, तो सिद्धांतों को बड़े पैमाने पर त्याग दिया गया; और पूँजीवादी ऋणों, विदेशी तकनीशियनों और मशीनों, और स्टाखानोविस्ट श्रमिकों को धकेलने की मदद से, फिर से निर्माण की शुरुआत की गई। निश्चित रूप से हृदय परिवर्तन अभी पूर्ण नहीं हुआ है। इसका एक लक्षण काकेशस के हट्टे-कट्टे और अधर्मी डाकू स्टालिन और उस यहूदी गिरोह के बीच वर्तमान संघर्ष प्रतीत होता है, जो अब तक रूस पर नियंत्रण रखता था और अब काफी हद तक समाप्त हो चुका है। रूस ने कॉमिन्टर्न और विश्व-क्रांति के मार्क्सवादी आदर्श को नहीं छोड़ा है। लेकिन अपने लिए ऐसा लगता है कि उसने चुपचाप धन के समकरण और सर्वहारा वर्ग की तानाशाही को त्याग दिया है, और एक शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण कर रहा है।

राष्ट्रवादी राज्य। स्टालिन के राज में, एक तरह के शर्मनाक फ़ासीवाद के संकेत मिल रहे हैं, जिसमें एक अपराधबोध उभर रहा है। अगर यही अंत होना था, तो इसकी क्या कीमत चुकानी पड़ी! 4

"फ़ासीवाद" उदार-लोकतंत्र के पतन और बोल्शेविज़्म के खतरे की प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुआ है। बोल्शेविज़्म के विपरीत, यह किसी अकादमिक सिद्धांत का व्यवहारिक रूप नहीं था; यह एक वास्तविक परिस्थिति की प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुआ था, और इसलिए इसे केवल उन दो विश्व-आंदोलनों के प्रकाश में ही समझा जा सकता है जिनका यह स्थान लेने के लिए नियत है। मूलतः यह अव्यवस्था, भौतिकवाद, धनिकतंत्र और विश्वबंधुत्व की शक्तियों के प्रति यूरोपीय मनुष्य की एक प्रकार की सहज प्रतिक्रिया थी। यह साम्यवाद के साथ एकरूप है क्योंकि यह इस बात को पूरी तरह से नकारता है कि कोई पूर्व-स्थापित सामंजस्य है जो प्रत्येक की अधिकतम स्वतंत्रता से सभी के सर्वोत्तम सुख का परिणाम बनता है। लेकिन साम्यवाद के साथ इसकी यही समानता है। राज्य द्वारा प्राप्त "सुख" के संबंध में यह साम्यवाद और उदार-लोकतंत्र दोनों से मौलिक रूप से भिन्न दृष्टिकोण रखता है। क्योंकि यह राष्ट्र को कई विभिन्न कार्यात्मक समूहों की एक जैविक एकता के रूप में मानता है; इनमें से प्रत्येक राष्ट्र के लिए एक विशिष्ट अद्वितीय योगदान का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका अपना एक जीवन प्रकार है जिसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए। यदि इन समूहों के बीच सही संबंध बिगड़ जाते हैं, तो राज्य में कोई स्थायी खुशी या सुदृढ़ता नहीं हो सकती। प्लेटो ने कहा, "हम अपने कुम्हारों को आग के सामने सोफे पर लेटने, खाने-पीने और जब उनका मन करे तब चाक घुमाने की अनुमति देकर उन्हें अधिक खुश कर सकते हैं। लेकिन हमें ऐसा करने की सलाह न दें, क्योंकि हमारे कुम्हार अब कुम्हार नहीं रहेंगे, न ही हमारे किसान किसान।" 5

इसके अलावा, बर्क के शब्दों में, यह राष्ट्र को "न केवल जीवितों की साझेदारी के रूप में, बल्कि जीवितों की मृतकों और उन लोगों के साथ साझेदारी के रूप में भी देखता है जो अभी तक पैदा नहीं हुए हैं"। यह ऐसी चीज़ है जो मानव और प्राकृतिक संसाधनों के साथ स्थायी है, जिन्हें बर्बाद किया जा सकता है या जिन्हें और उपजाऊ बनाया जा सकता है।

प्रत्येक "फासीवादी" देश में एक आंदोलन सत्ता में आया है, जिसमें राष्ट्रीय संपत्ति से सर्वोत्तम लाभ उठाने की इच्छा है, जैसा कि पुराने कुलीन ज़मींदार अपने परिवार और संपत्ति से करते थे।
इसे ही रक्त और मिट्टी का धर्म कहा गया है।

यह स्पष्ट है कि ये आंदोलन बहुसंख्यकों के असीमित अधिकारों को स्वीकार नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए, वे वर्तमान बहुसंख्यक नगरवासियों को देशवासियों का अस्तित्व मिटाने की अनुमति नहीं दे सकते, न ही भविष्य की सत्ता की कीमत पर वर्तमान धन का अधिकतम उपयोग करने की अनुमति दे सकते हैं। अदूरदर्शी बहुसंख्यकों का शासन जो बुराइयाँ लाता है—सार्वजनिक ईमानदारी और आत्म-सहायता की भावना का ह्रास, परिवार का ह्रास, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का ह्रास, भूमि, जंगल और जहाजों का ह्रास—उनका समाधान केवल नेताओं को व्यापक अवसर और स्वतंत्रता देकर ही किया जा सकता है।

फ़ासीवाद को स्पष्टतः अपना मुख्य प्रयास राष्ट्रीय श्रृंखला की सबसे कमज़ोर कड़ियों को मज़बूत करने में लगाना चाहिए, और लगाता भी है, यानी उन समूहों की स्थिति सुधारने में जो सबसे ज़्यादा दबाव में हैं। हालाँकि, यह आलसी और सक्रिय, कल्पनाशील और नियमित काम के बीच समानता को, दूर के आदर्श के रूप में भी स्वीकार नहीं कर सकता। "फ़ासीवाद मनुष्यों की अपरिवर्तनीय, लाभकारी और फलदायी असमानता की पुष्टि करता है।" (मुसोलिनी।)

उदार-लोकतंत्र कार्यात्मक समूहों की प्रतिद्वंद्विता से पंगु हो जाता है, जिनके अस्तित्व को वह नज़रअंदाज़ करने का दिखावा करता है। फ़ासीवाद इन्हें पहचानता है और अपनी प्रतिनिधि व्यवस्था को इन्हीं पर आधारित करता है, यह मानते हुए कि वह राष्ट्रीय एकता की मज़बूत भावना और "नेतृत्व-सिद्धांत", यानी व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के सिद्धांत के माध्यम से इन संभावित संघर्षों पर नियंत्रण पा सकता है। "लोकतंत्र" - गुमनाम बहुमत द्वारा नियंत्रण का सिद्धांत - "राजनीतिक क्षेत्र से कम औद्योगिक क्षेत्र में भी अपनी परीक्षा की घड़ी में नहीं है।" 6

आर्थिक क्षेत्र में फासीवाद का उद्देश्य, उसके सामान्य दृष्टिकोण के अनुरूप, सभी उत्पादकों के लिए अधिकतम संभव सुरक्षा और स्थिरता प्राप्त करना है - न कि अधिकतम विकल्प की स्वतंत्रता।

उपभोक्ताओं के लिए। इस उद्देश्य से, राष्ट्रीय नियोजन के हित में, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को एक अधीनस्थ और सहायक स्थिति में लाना होगा। और नैतिक विचार—इस बारे में विचार कि किस प्रकार के जीवन को प्रोत्साहित या हतोत्साहित किया जाना चाहिए—अक्सर आर्थिक विचारों पर हावी होने चाहिए।

फ़ासीवादी राष्ट्रवाद में ऐसा कुछ भी नहीं है जो अन्य राष्ट्रों के सुविचारित हितों के साथ असंगत हो। इसकी विदेश नीति अपने काम से काम रखने और कुछ सुविख्यात महत्वपूर्ण हितों के लिए लड़ने के लिए वास्तव में तैयार रहने के सिद्धांत पर आधारित है। यह स्वाभाविक रूप से राष्ट्र संघ के लोकतांत्रिक, समतावादी और सार्वभौमिक सिद्धांतों का विरोधी है। यह उन समन्वयकारी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण सहयोग चाहता है जिनके साथ वास्तव में उसके समान हित हैं, जो संभावित मतभेदों के योजनाबद्ध उन्मूलन पर आधारित है। यह अंतरराष्ट्रीय मामलों में भी अपने देश की तरह नेतृत्व चाहता है। यूरोप में इसका कार्य यूरोप के उस समन्वय का पुनर्निर्माण करना है जिसे राष्ट्र संघ के संस्थापकों ने नष्ट कर दिया था।

अंततः हम उस आपत्ति का उत्तर देने का प्रयास कर सकते हैं जो अक्सर सुनी जाती है कि फ़ासीवाद व्यक्ति को पूरी तरह से राज्य के अधीन कर देता है, एक जीवित प्राणी को एक अवास्तविक अमूर्तता के अधीन। इसका उत्तर पूर्वोक्त में निहित है। फ़ासीवादी मानते हैं कि सरकार केवल व्यक्तिगत नागरिकों के सुख को बढ़ाने के लिए नहीं होती। यह स्थायी राष्ट्रीय संस्कृति और उसके आवश्यक आधार बनाने वाले भौतिक संसाधनों का संरक्षक है। इसके बिना व्यक्ति कुछ भी नहीं होगा; और न ही वह राज्य के क्षेत्र को छोड़कर भी खुद को इससे वंचित कर सकता है; यह पैतृक परंपराओं का संपूर्ण योग है जो उसे पाषाण युग के मनुष्य से अलग करता है। एक ऐसी सरकार जो विभिन्न संस्कृति-धारक समूहों के सामंजस्यपूर्ण विकास को सुनिश्चित करती है और उन्हें एक-दूसरे का विनाश करने से रोकती है, हमारी निष्ठा का दावा करती है। लेकिन राज्य केवल एक मशीनरी का टुकड़ा है, जैसा कि हिटलर ने कहा था, लोगों के लिए एक मात्र "कंटेनर", जिसे एक स्थायी जैविक और सांस्कृतिक इकाई के रूप में माना जाता है। फ़ासीवाद राज्यवादी नहीं है; हेगेलवादियों के विपरीत, यह राज्य की पूजा नहीं करता।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो यह प्राचीन यूरोपीय राज्य-रूप के साथ समानताएँ प्रस्तुत करता है, जैसा कि "ओरोंटेस के टाइबर में प्रवाहित होने से पहले" था—अमूर्त व्यक्तिवाद और दूसरे जीवन में मोक्ष की कामना के उदय से पहले। पुनः, यह सामंतवाद के साथ समानताएँ प्रस्तुत करता है, जिसकी अवधारणा थी कि शासन मनुष्य की मनुष्य के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा पर आधारित होना चाहिए— कॉमिटेटस का आदिम ट्यूटनिक विचार। इसके अलावा, यह मध्ययुगीन संघों के उस उद्देश्य की याद दिलाता है जिसके तहत सभी प्रकार के उत्पादकों के हितों में उत्पादन को विनियमित किया जाता था। हर बड़े आंदोलन की तरह, इसकी जड़ें अतीत में हैं। लेकिन यह केवल पुरानी व्यवस्थाओं की ओर लौटने जैसा नहीं है। यह राष्ट्रीयता, नस्ल, स्वैच्छिक व्यापार संघों, प्रबंधन से स्वामित्व के विच्छेद, दोषरहित उत्तरदायित्व के विचार, "एकल-मार्गी" सभ्यता के विपरीत परस्पर क्रियाशील संस्कृतियों—और कई अन्य जैसी मूलतः आधुनिक अवधारणाओं के अलावा समझ से परे है।

[7] यह पूरी तरह से आधुनिक है, और हमारे समय की उपज है। पाँच साल पहले, हममें से कई लोगों को लगता था कि व्यक्तिवादी उदार-लोकतंत्र और मार्क्सवादी समाजवाद के बीच कोई विकल्प नहीं है, जो ज़्यादा पसंद नहीं किए जाने वाले विकल्प हैं। अब एक तीसरा विकल्प मौजूद है।

---

[1] जैसा कि एम. हाल्डव ने बताया है, यह तीसरा सिद्धांत दो रूपों में आता है। एक दृष्टिकोण के अनुसार, अधिकतम सामाजिक संतुष्टि अधिकतम व्यक्तिगत स्वतंत्रता से स्वतः ही प्राप्त होती है, चाहे समाज के कानून और संस्थाएँ कुछ भी हों। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार, संतुष्टि की इस अधिकतम मात्रा को प्राप्त करने के लिए कुछ कानूनी प्रतिबंध आवश्यक हैं। अधिकांश लेखक एक या दूसरे दृष्टिकोण पर पूरी तरह से अड़े नहीं रहते; लेकिन उन्हें न तो साध्य के बारे में कोई संदेह है, न ही साधन के बारे में—व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर यथासंभव कम प्रतिबंध।

(ई. हेलेवी: दार्शनिक कट्टरवाद का विकास.)

[2] जे. बेंथम: नैतिकता और विधान के सिद्धांत। फोलेट: द न्यू स्टेट, पृ. 27.

[3] अरस्तू से तुलना करें। राजनीति III, 9 और 12: न्याय का अर्थ है "समानों के साथ समान व्यवहार करना और असमानों के साथ असमान व्यवहार करना। लोग अपनी सुविधानुसार एक या दूसरे कारक को छोड़ देते हैं; क्योंकि वे अपने मामले में अच्छे न्यायाधीश नहीं होते।" लेकिन इससे हमें यथासंभव न्याय करने के कर्तव्य से मुक्त नहीं होना चाहिए।

[4] स्टालिन खुद रूस के "पुराने बोल्शेविक" यहूदी आकाओं से बिल्कुल अलग किस्म के लगते हैं। यह बात चौंकाने वाली है कि दोनों वास्तव में

रूसी क्रांति ने जिन बड़े लोगों को जन्म दिया है, वे 'यहूदी नहीं हैं।' लेकिन हमें स्टालिन के प्रभाव की सीमा का पता नहीं है।
ससुर, लाजरस मोइसेविच कागनोविच, जो राज्य में दूसरे नंबर के व्यक्ति लगते हैं।

[5] प्लेटो: सितम्बर 420ई. बर्क: फ़्रांसीसी क्रांति पर विचार.

[6] मिलर और कैम्पबेल: वित्तीय लोकतंत्र, लिवरपूल विश्वविद्यालय के दो अर्थशास्त्रियों द्वारा वित्तीय लोकतंत्र के संचालन पर किया गया एक हालिया शोध।
ब्रिटिश औद्योगिक कम्पनियां.

[7] ए. टॉयनबी: इतिहास का एक अध्ययन। खंड 1, पृष्ठ 149 फ़्ल.

मेजर-जनरल जेएफसी फुलर द्वारा स्पेन में युद्ध

एच एक सैनिक या पत्रकार के रूप में चार युद्धों में भाग लेने के बाद, अर्थात् दक्षिण अफ्रीकी युद्ध, विश्व युद्ध, इटालो-एबिसिनियन युद्ध और अंत में वर्तमान स्पेनिश युद्ध, मैंने पाया है कि प्रत्येक युद्ध असाधारण रूप से भिन्न था।

इसका कारण स्पष्ट है, कि उनके कारण अलग-अलग हैं; फिर भी, आम धारणा में ऐसा नहीं है। यह स्पष्ट है कि ये कारण युद्ध के स्वरूप को काफी हद तक प्रभावित करते हैं।

उदाहरण के लिए, इनमें से अंतिम युद्ध के मामले में, यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि इसके कारण राजनीतिक हैं; यानी, यह दो स्पष्ट रूप से परिभाषित लेकिन परस्पर विरोधी विचारों वाली शासन प्रणालियों के बीच टकराव है। क्या यह सच है? मुझे नहीं लगता; क्योंकि, हालाँकि राजनीति किसी भी तरह से एक नगण्य भूमिका नहीं निभाती, लेकिन निश्चित रूप से संस्कृति इसमें मुख्य भूमिका निभाती है, जिसका अर्थ है, अगर मैं सही हूँ, तो इस युद्ध के कारण उस राजनीतिक झाग से कहीं अधिक गहरे हैं जो इसकी सतह को ढँक रहा है।

इसलिए, मेरा मानना है कि हम यह समझने में असफल रहेंगे कि क्या हो रहा है, जब तक कि हम इसे संस्कृतियों के बीच टकराव के साथ-साथ राजनीतिक सिद्धांतों और सशस्त्र बलों के बीच टकराव के रूप में नहीं देखेंगे।
इनमें से तीन संस्कृतियाँ हैं:

पहला, इतिहास का प्रतिक्रियावादी स्पेन—एक जड़ चर्च, एक क्षीण अभिजात वर्ग और एक मरणासन्न बुर्जुआ वर्ग। दूसरा, क्रांतिकारी स्पेन—इस जड़ता के विरुद्ध प्रतिक्रिया, जिसका प्रतिनिधित्व समाजवादियों, अराजकतावादियों और कम्युनिस्टों ने किया है, जिन्होंने अपने आदर्शों को बड़े पैमाने पर विदेशी स्रोतों—मार्क्स, बाकुनिन, ट्रॉट्स्की और अन्य—से उधार लिया है। तीसरा, भविष्य का काल्पनिक स्पेन; जिसका सपना प्रिमो डी रिवेरा ने नहीं, जो एक सैन्य तानाशाह से ज़्यादा कुछ नहीं था, बल्कि उनके बेटे जोस एंटोनियो ने देखा था, जिनकी कुछ समय पहले लाल सरकार ने हत्या कर दी थी।

1933 में, इस युवक ने, हालाँकि वास्तव में स्पेनिश फ़ासीवादी आंदोलन की स्थापना नहीं की थी, फ़लांगे एस्पानोला डे लास जोंस (जुंटास ऑफ़ेंसिवस नाडोनल सिंडिकलिस्टा - सक्रिय राष्ट्रीय सिंडिकलिस्टों की समितियाँ) को संगठित किया और उसे जीवन और स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने इसके चार्टर को सत्ताईस बिंदुओं में विस्तृत किया, जिन्हें निम्नलिखित चार मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत संक्षेपित किया जा सकता है:

राष्ट्रीय आधार। स्पेन सभी स्पेनवासियों की सर्वोच्च वास्तविकता है। सभी अलगाववाद एक अपराध है। इसलिए स्पेन की एकता ही लक्ष्य है, और यह एकता न केवल अंतर्राष्ट्रीय अलगाव या विदेशी मध्यस्थता को स्वीकार करती है, बल्कि यह सैन्य गुणों के समावेश और एक शक्तिशाली सेना और बेड़े के निर्माण की भी मांग करती है।

राजनीतिक आधार। राज्य का स्वरूप अधिनायकवादी होना चाहिए, जिसमें सभी राजनीतिक दलों का उन्मूलन कर दिया जाएगा। संसदीय व्यवस्था का स्थान निगमीय व्यवस्था ले लेगी। राजनीतिक अनुशासन की माँग है, फिर भी निजी पहल आवश्यक है, बशर्ते वह राष्ट्रीय-संघवादी राज्य के सामूहिक हितों के अनुकूल हो।

आर्थिक आधार। पूँजीवादी व्यवस्था "जो जनता की ज़रूरतों की अनदेखी करती है, निजी संपत्ति का अमानवीयकरण करती है और मज़दूरों को दुःख और निराशा में डूबे हुए निराकार जनसमूह में बदल देती है" का खंडन किया जाता है। मार्क्सवाद का भी यही हाल है। अब ताकतवरों को कमज़ोरों पर हावी नहीं होना है।

निजी संपत्ति को मान्यता दी जाए और काम करने के अधिकार को भी। पारिवारिक जोत स्थापित करके किसानों के जीवन स्तर को ऊपर उठाया जाए और कृषि एवं पशुपालन को तर्कसंगत बनाया जाए।

नैतिक आधार। राज्य का आधार एकता, अनुशासन और सैन्य प्रशिक्षण है।
शिक्षा को इस तरह व्यवस्थित किया जाना चाहिए “ताकि आर्थिक साधनों के अभाव में कोई प्रतिभा नष्ट न हो।” राजनीति से मुक्त कैथोलिक भावना को समाहित किया जाना चाहिए, और जीवन को एक कर्तव्य माना जाना चाहिए “जिसे उच्च सेवा और त्याग की भावना से जिया जाए।”

स्पेन में युद्ध

ब्रिटिश प्रेस में जो कुछ भी लिखा गया है, उसके विपरीत, इस आंदोलन का पिछले साल जुलाई में शुरू हुए विद्रोह से कोई खास लेना-देना नहीं था। उस समय यह अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही था, फिर भी पिछले आठ महीनों में इसकी वृद्धि चमत्कारिक रही है। आज इसके सदस्यों और समर्थकों की संख्या लाखों में है, जिनमें से 1,80,000 एक मिलिशिया का गठन कर चुके हैं। इस वृद्धि की व्यापकता इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि यह आंदोलन अब उन्नीस दैनिक और तीस साप्ताहिक समाचार पत्र प्रकाशित करता है।

जब विद्रोह शुरू हुआ तो जनरल फ्रेंको का उद्देश्य कुछ अस्पष्ट प्रतीत होता है।
यह असहनीय परिस्थितियों के विरुद्ध विद्रोह था—वास्तव में अराजकता के विरुद्ध व्यवस्था का; क्योंकि अब जीवन और संपत्ति का सम्मान नहीं किया जाता था और गिरजाघरों को प्रतिदिन लूटा या जलाया जा रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका उद्देश्य लगभग पूरी तरह से सैन्य था, अर्थात् व्यवस्था बहाल करना, लेकिन किस प्रकार की सरकार के लिए, यह अनिश्चित है। यदि उनकी जीत शीघ्र होती, तो पूरी संभावना थी कि इससे प्राइमो डे रिवेरा जैसी सैन्य तानाशाही स्थापित हो जाती।

स्पेन पहुँचने पर उन्हें न केवल पूर्ण भ्रम का सामना करना पड़ा, बल्कि उन गुटों में एकता और उद्देश्य का घोर अभाव भी देखने को मिला जो उनका समर्थन चाहते थे। उदाहरण के लिए, एक्सियन पॉपुलर, या गिल रोबल्स पार्टी, कट्टर कैथोलिक थी और ईसाई समाजवाद में डूबी हुई थी; इसकी कोई निश्चित नीति नहीं थी, यह राजनीतिक रूप से अस्पष्ट थी और चर्च का हथियार थी। फिर रिक्वेट्स, या कार्लिस्ट थे, जिनका आदर्श वाक्य था, "ईश्वर, देश और राजा"। वे पूर्ण संप्रभुता, कॉर्पोरेट राज्य में विश्वास करते थे और संसद-विरोधी थे। इनके अलावा राजतंत्रवादी भी थे - और अन्य गुट, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण फलांगे था। इन सभी विभिन्न दलों और आंदोलनों को उन्हें आत्मसात करना पड़ा।

फिलहाल यह मुश्किल नहीं था, क्योंकि रेड्स ने एकजुटता को मजबूर कर दिया था। लोकतंत्रवादियों, गणतंत्रवादियों, साम्यवादियों, अराजकतावादियों और न जाने किन-किन लोगों का मिश्रण, उनका एकमात्र दुश्मन स्पेन, जर्मनी और उसके सहयोगी इटली की ओर उसी तरह आकर्षित हो रहा है जैसे फ्रांस रूस और उसके अर्ध-सहयोगी इंग्लैंड की ओर आकर्षित है। दरअसल, फ्रांस को सुरक्षित करने के लिए जर्मनी के खिलाफ एक बार फिर एक गुप्त युद्ध लड़ा जा रहा है, जैसा कि एक साल पहले इटालो-एबिसिनियन संघर्ष के दौरान लड़ा गया था।

इस आंतरिक संघर्ष के बारे में प्रेस में बहुत कम सुनने को मिलता है; लेकिन इसका नाम "अहस्तक्षेप" है, जिसका वास्तविक अर्थ जर्मनी पर प्रहार करने के लिए बर्गोस के साथ असहयोग और वैलेंसिया के साथ फ्रांस का सहयोग है। यदि स्पेन की अंतर्राष्ट्रीय "नाकाबंदी" निष्पक्ष होती, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि यह राष्ट्रवादी हितों के पक्ष में होती; लेकिन ऐसा होने से कोसों दूर है, क्योंकि ईमानदारी आधुनिक फ्रांस की विशेषता नहीं है।

यद्यपि सत्य का पता लगाना, विशेष रूप से युद्धकाल में, हमेशा अत्यंत कठिन होता है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि लालों को फ्रांसीसी सहायता अत्यधिक और लाभदायक रही है, क्योंकि प्रत्येक सहायता का भुगतान सोने से किया गया है। श्वेत स्पेन में जहाँ भी जाएँ, एक ही कहानी सुनने को मिलती है, अर्थात्, लालों को फ्रांसीसी सहायता रूसी सहायता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण रही है। पिछली जुलाई से फ्रांस ने तीस से चालीस हज़ार लाल अंतर्राष्ट्रीय लड़ाकों को पाइरेनीज़ के पार भेजा है, और यह आवागमन अभी भी जारी है। फ्रांसीसियों ने अकेले बोर्डो में स्पेनिश पासपोर्ट छापे हैं, और वे "विशेषज्ञ" श्रमिकों को लाल स्पेन में प्रवेश करने में सक्षम बनाने के लिए पूर्व-दिनांकित अनुबंध प्रदान करते हैं। इसके अलावा, बड़ी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय लोगों को के पार भेजा जाता है।

उन्हें या तो स्वदेश भेजे गए शरणार्थियों के रूप में सीमा पार भेजा जाता है, या फिर मालवाहक नौकाओं के सदस्यों के रूप में कैटेलोनिया के बंदरगाहों पर भेजा जाता है, जिनमें वे यात्रा करते हैं। गोला-बारूद अंडोरा के माध्यम से भेजा जाता है; पेट्रोल से लदे ट्रक प्रतिदिन सीमा पार करते हैं; फ्रांस में एक रेड एविएशन स्कूल है, और हथियारों की तस्करी बिलबाओ तक की जाती है।

इन सबके बावजूद, निश्चित रूप से संभावना यही है कि नेशनल स्पेन जीतेगा; क्योंकि फ्रेंको की नीति रचनात्मक है जबकि रेड्स की नीति ऐसी नहीं है।

जनरल फ्रेंको का भाषण

1 अक्टूबर, 1936 को राज्य प्रमुख की शक्तियाँ ग्रहण करने पर प्रसारित

जी आप सभी को शुभकामनाएं, जो अपने घरों में युद्ध की खबरें सुन रहे हैं, या मोर्चे पर, अपने घरों के बारे में सोच रहे हैं, या लाल क्षेत्रों में, हमारे सैनिकों के आगमन की लालसा से प्रतीक्षा कर रहे हैं, या हमारी सीमाओं से परे, उत्सुकता से हमारे भाग्य का अनुसरण कर रहे हैं - रेडियो कैस्टिले के माइक्रोफोन से नमस्कार!

मैं युद्ध के बारे में बात नहीं करने जा रहा हूं, क्योंकि राज्य के दायित्व, जो मैं मान रहा हूं, के कारण यह आवश्यक है कि मैं आपको हमारे आगे के कार्य के बारे में कुछ बताऊं।

हमें किसी स्वप्नलोक की चर्चा करने की ज़रूरत नहीं है, न ही अपनी आशाओं की पूर्ति को कठोर चरणों में बाँटने की। लेकिन, अपने इरादों के बारे में बात करने के लिए, पहले अतीत की संक्षिप्त जाँच करना ज़रूरी है, ताकि हम अपने अनुभवों से लाभ उठा सकें और अपने निर्णयों को उपयोगी ढंग से लागू कर सकें।

स्पेन, जिसका नाम मैं अपनी आत्मा की पूरी श्रद्धा से लेता हूँ, कई वर्षों से अनेक बुराइयों से ग्रस्त रहा है, जिनमें से सबसे घातक असंतुलित बुद्धिजीवियों का प्रभाव रहा है, जिन्होंने हमारी जाति के विचारकों की प्रतिष्ठा को कम करने की कोशिश की है, और हमारी सीमाओं से परे जाकर स्पेन में हर तरह के विदेशी और विनाशकारी विचारों को लाने की कोशिश की है जो दूसरे देशों में जड़ें जमा रहे थे। मनोबल गिराने वाला साहित्य, भड़काऊ सिद्धांत, कटु नस्लवाद, पराजयवादी विचारों की घुसपैठ, और इतिहास का विकृतीकरण—इन सबने और भी बहुत कुछ ने हमारी देशभक्ति की नींव हिला दी, जिससे हम अपने लोगों की मुख्य विशेषताओं को खो बैठे, अपने वर्तमान पर शर्मिंदा होने लगे, अपने अतीत को भूल गए, और अपने भविष्य से डरने लगे।

जाति का नैतिक पतन कर लेने के बाद, इन लोगों के लिए देश को नीलाम करना और उसे सबसे ऊँची बोली लगाने वाले विदेशी को बेचना कोई मुश्किल काम नहीं था। हमारे व्यापार में जमा राशि के बजाय ऋण राशि दिखाई देने लगी, और हमारी धरती की उपज के साथ ऐसा व्यवहार किया जाने लगा मानो वे किसी विजित उपनिवेश की उपज हों, जबकि किसी भी संभावित मुक्तिदाता की तलवार जैसी भुजा को कमज़ोर करने के लिए छद्म शांतिवाद को बढ़ावा दिया गया। झूठे पैगम्बर पैदा हुए, जिन्होंने नफ़रत और वर्ग-युद्ध बोते हुए, किसानों को ज़मीन, मज़दूरों को तानाशाही और हमारे प्रांतों को स्वायत्तता का वादा किया।

ये लोग पूरी तरह से सनकी हैं, अगर उन्हें सत्ता मिल जाती तो वे किसानों से जमीन, मजदूरों से आजादी और प्रांतों से स्वायत्त लचीलेपन की सारी उम्मीदें छीन लेते।

और अब हमारा नया स्पेन, अपने कार्य की महत्ता को ध्यान में रखते हुए, अपनी मुक्ति की ओर अग्रसर है, सामाजिक सहयोग की भावना से यह दिखाने के लिए दृढ़ संकल्पित है कि कानून और व्यवस्था की पुनः स्थापना ही प्राथमिक शर्त है और स्वतंत्रता का सुनिश्चित मार्ग है, जिसका लाभ मातृभूमि की सीमाओं के भीतर और बाहर, उसके सभी लोगों को मिलेगा।

स्पेन खुद को मुख्यतः एक अधिनायकवादी अवधारणा के तहत संगठित कर रहा है, जिसमें उसकी मूल संस्थाएँ उसकी राष्ट्रीयता, उसकी एकता और उसकी निरंतरता सुनिश्चित करेंगी। सत्ता के इन नए तरीकों के प्रयोग का अर्थ यह नहीं है कि हमारा शासन केवल सैन्य चरित्र का होगा; इसके विपरीत, हमारी व्यवस्था एक पदानुक्रमित शासन स्थापित करेगी जिसमें देश की सभी क्षमताएँ और ऊर्जाएँ अभिव्यक्त होंगी।

स्पेन के प्रांतों की पहचान का सम्मान किया जाना चाहिए, हमारे सबसे महान वैभव के समय में पुरानी राष्ट्रीय परंपरा के अनुरूप; बशर्ते कि इससे राष्ट्रीय एकता में योगदान मिले।

स्पेनिश नगरपालिका अपने ऐतिहासिक महत्व को पुनः प्राप्त करेगी, ताकि वह हमारे सार्वजनिक जीवन में एक इकाई के रूप में इसका प्राचीन कार्य।

सार्वभौमिक मताधिकार को, इसके विनाशकारी स्थानीय और राष्ट्रीय प्रभावों को, तथा यूनियनों और राजनीतिक हितों के माध्यम से इसके उत्पीड़न को समाप्त करने के बाद, हम यह सुनिश्चित करेंगे कि राष्ट्र की इच्छा उन तकनीकी और निगमित अंगों के माध्यम से अभिव्यक्त हो, जिनमें देश की आवश्यकताओं और आदर्शों का सर्वोत्तम विकास हो।

जैसे-जैसे नये स्पेनिश राज्य की शक्ति बढ़ेगी, वैसे-वैसे विकेन्द्रीकरण भी प्राप्त होगा, जिससे जिलों, नगर पालिकाओं, संघों और व्यक्तियों को राज्य के सर्वोच्च हितों के अंतर्गत यथासंभव अधिकाधिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

अपने सामाजिक पहलू में, श्रमिक को इस बात की पूर्ण गारंटी मिलेगी कि वह पूंजीवाद का गुलाम नहीं होगा, बशर्ते कि वह उन कटु और संघर्षशील तरीकों को न अपनाए जो आपसी सहयोग को असंभव बना देते हैं। श्रमिक अपने पारिश्रमिक का हकदार है: न केवल मजदूरी की सुरक्षा स्थापित की जाएगी, बल्कि अब तक प्राप्त मजदूरी में सभी अग्रिम राशियाँ भी बरकरार रखी जाएँगी। इस प्रकार श्रमिक के अधिकारों को मान्यता मिलने के साथ, राष्ट्रीय संपदा का निर्माण करने वाले तत्वों के साथ निष्ठापूर्वक सहयोग करने की उसकी ज़िम्मेदारियाँ भी कायम रहेंगी।

सभी स्पेनवासी अपनी क्षमता के अनुसार काम करने के लिए बाध्य होंगे। नया राज्य ऐसा नहीं कर सकता किसी भी परजीवी को स्वीकार न करें।

राज्य कैथोलिक चर्च को उसके उचित अधिकार और विशेषाधिकार प्रदान करेगा, इस प्रकार हमारी परम्परा और स्पेन के अधिकांश लोगों की आस्था का सम्मान करेगा; लेकिन राज्य सरकार के विशिष्ट कार्यों में किसी बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेगा।

राजस्व के संबंध में, राज्य करों का न्यायोचित वितरण सुनिश्चित करेगा, तथा यह सुनिश्चित करेगा कि उनका बोझ उन कंधों पर पड़ता है जो उसे सबसे अच्छी तरह से उठा सकते हैं।

कृषि के संबंध में, पारिवारिक जोत का निर्माण किसान को भूमि पर स्थापित करके किया जाएगा, किसी काल्पनिक स्वामित्व प्रणाली द्वारा नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष और निरंतर सहायता द्वारा, जिसका उद्देश्य किसान को उसकी स्वतंत्रता प्रदान करना होगा। हमारे कार्य का एक स्थायी पहलू इसी उद्देश्य से निर्देशित होगा। कृषि मजदूर को शहर द्वारा आज अपनी व्यावसायिक और लिपिकीय सेवाओं के भुगतान के रूप में जो प्राप्त होता है, उसका एक हिस्सा प्राप्त होगा।

अंतर्राष्ट्रीय मामलों के संबंध में, हम सभी लोगों के साथ शांतिपूर्वक रहने की आशा करते हैं, जिससे पूरी दुनिया के साथ मित्रता का एक व्यापक क्षितिज खुलेगा। इसमें एक स्पष्ट अपवाद है: हम समाजवादी सोवियत गणराज्यों के संघ के साथ कोई संपर्क नहीं रखेंगे, जिसकी नीतियों के मानवता और सभ्यता पर इतने विनाशकारी परिणाम हुए हैं।

मुझे विश्वास है कि वीरों और शहीदों की यह भूमि अपनी कठिनाइयों का सामना करते हुए इतिहास का एक और गौरवशाली पृष्ठ लिखेगी, तथा ऐसा समाधान खोजेगी जो न तो पूर्व से आएगा और न ही पश्चिम से, बल्कि वास्तविक रूप से स्पेनिश होगा।

स्पेनवासियों, स्पेन अमर रहे!

एज्रा पाउंड द्वारा लिखित टुवर्ड्स एन इकोनॉमिक ऑर्थोलॉजी

डी तथाकथित रूढ़िवादी अर्थशास्त्र की प्रकृति के बारे में , यानी इसे एक ईमानदार जाँच माना जाए या एक आपराधिक और भ्रामक झूठ, आज कम से कम 50 साल पुराना कहा जा सकता है। आज रूढ़िवादिता के अनुयायियों में केवल भोले-भाले, अंधे और बुरे इरादे से काम करने वाले लोग ही शामिल हो सकते हैं।

जो कोई भी किसी विषय पर गंभीरता से शोध करता है, उसे दृश्यमान और सामान्य घटनाओं के बारे में जागरूक होने में 15 वर्ष नहीं लग सकते।

यह कहना कि अर्थशास्त्र विज्ञान नहीं है, केवल पराजयवाद है, और इससे केवल भ्रम ही पैदा होगा। पिछली सदी के मध्य तक वैमानिकी और रेडियो को विज्ञान नहीं कहा जा सकता था (हालाँकि 1864 के अंत में एक लूमिस ने बिना तारों के एक नाव से दूसरी नाव तक विद्युत संकेतों को प्रेषित करने में सफलता प्राप्त की थी)।

आज गंभीर लोग जो कर सकते हैं, वह यह है कि अर्थशास्त्र के उस भाग के बीच अंतर करें जो विज्ञान है (ज्ञान का क्षेत्र - एपिस्टेम) और उस भाग के बीच जो टेक्नी या कौशल का क्षेत्र है (अक्सर चालाकी का)।

यह कहा जा सकता है कि जहाज चलाने की कला कोई सच्चा विज्ञान नहीं है: फिर भी जहाज चलाने का विज्ञान नेविगेशन का विकास हो रहा है और इसे और भी बेहतर बनाया जा रहा है: साधारण जहाज के कंपास से लेकर जाइरोस्कोप तक।

यह स्वाभाविक ही लगता है कि आर्थिक शोध-पत्रों में भ्रम की स्थिति तब पैदा होती है जब हम यह मानते हैं कि अर्थशास्त्र का अध्ययन वास्तव में अनुभववादियों द्वारा किया गया है, ऐसे लोगों द्वारा जिनके पास गंभीर पारिभाषिक तैयारी का अभाव है। उदाहरण के लिए, एंग्लो-सैक्सन दुनिया के गंभीर और ईमानदार लेखकों पर विचार करें जिन्होंने एक जीवंत आर्थिक विज्ञान का निर्माण किया है। सोडी, भौतिकी में नोबेल पुरस्कार विजेता; डगलस, इंजीनियर, भारत में वेस्टिंगहाउस के प्रमुख; लारानागा, सड़क इंजीनियर; ओरेज, डगलस द्वारा धर्मांतरित पत्रकार; किटसन, किटसन लैंप के आविष्कारक; गेसेल, व्यवसायी; आदि। सभी व्यावहारिक व्यक्ति!

यह कहना कि उन्होंने चंद्रमा की खोज कर ली है, कुछ भी अर्थ नहीं रखता, लेकिन उन्होंने असली चंद्रमा की पुनः खोज कर ली है, जबकि प्रोफेसर मंच पर रखे चंद्रमा के साथ अपना बचकाना खेल जारी रखे हुए हैं; जादूगर, जो केवल अपने बूथ के अंदर ही जनता को गुमराह कर सकते हैं।

तथाकथित रूढ़िवादी अर्थशास्त्र के संस्थापकों की मानसिकता का अंदाजा लगाने के लिए, आइए हम रिकार्डो के एक वाक्यांश को लें (बेशक, इस तथ्य को नज़रअंदाज़ किए बिना कि उन्होंने कागज़ी मुद्रा के मूल्य को पहचाना था): "कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसके उत्पादन के लिए कम या ज़्यादा श्रम की आवश्यकता न हो।" ऐसा लगता है कि डेविड रिकार्डो कभी मुर्गीघर में नहीं गए थे, और अंडे को उनकी आर्थिक व्यवस्था से बाहर रखा गया था। पोषण मूल्य (जीवन मूल्य) के माप के रूप में, अंडा मूल्य सूचकांक से पहले आता था। प्राकृतिक घटनाओं के प्रत्यक्ष अवलोकन से औसत आदमी अपने दिमाग को लघुगणक और बैंकिंग पौराणिक कथाओं से भरने की तुलना में कम ग़लतियाँ करता है। और मैं मज़ाक नहीं कर रहा! अंडे का मूल्य भूख और तृप्ति के संबंध में बढ़ता और घटता है।

अरस्तू ने हमें एक अस्पष्ट और जटिल अर्थ वाला शब्द दिया: एक्सपीया, उपयोगिता, वांछनीयता, जिसका अनुवाद कैम्ब्रिज के रैकहम, स्वाभाविक रूप से माँग करते हैं। विद्वान हमें ज्ञान नहीं देते। अरस्तू सही थे, लेकिन उनका आशय यह था कि एक मौद्रिक इकाई का मूल्य "उससे प्राप्त होने वाली राशि के बराबर है।" बिल्कुल सच है, लेकिन आप इसे वैज्ञानिक शब्दावली नहीं कह सकते।

छात्र पुस्तकालय में जाकर अर्थशास्त्र पर 500 काल्पनिक ग्रंथों को देख सकता है, लेकिन उसे एक भी ऐसा नहीं मिलेगा जो आर्थिक प्रश्नों पर चर्चा के लिए सबसे सामान्य, बुनियादी और आवश्यक शब्दों की परिभाषाओं की यूक्लिडियन तालिका से शुरू होता हो।

उदाहरण के लिए, आइए "धन" शब्द से शुरुआत करें। अरस्तू ने इसे गलत तरीके से परिभाषित किया है, या यूँ कहें कि इसे बिल्कुल परिभाषित नहीं किया है, बल्कि इसे सही ढंग से परिभाषित किए बिना ही इसके बारे में बात की है। और मनुष्य 20 शताब्दियों से इस अर्ध-अस्पष्टता की स्थिति में रहा है।

मैं कुछ परिभाषाएँ देने का प्रयास करूँगा, यद्यपि मुझे पता है कि जब तक कोई अकादमी या कांग्रेस, या इससे भी बेहतर, गंभीर और आधिकारिक विशेषज्ञों का एक समूह, इस शब्दकोश संबंधी कार्य की वैधता को मान्यता नहीं देता, तब तक वे कोई विशेष उपयोगी नहीं हो सकतीं।

बिना सिक्के वाला सोना मुद्रा नहीं है; अन्य वस्तुओं के बदले मौद्रिक सोने का विनिमय मूलतः एक प्रकार का वस्तु विनिमय है: एक निश्चित मात्रा में वस्तुओं या एक निश्चित वजन के माल का विनिमय, धातु के बदले में, जिसे पहले से तौला और मापा गया है।

मुद्रा का अनिवार्य गुण यह है कि वह मापी जा सके और एक मापक के रूप में काम कर सके। यहाँ तक कि कीमती धातु की एक डिस्क को वस्तुओं के बदले में देने में भी, राज्य की छाप ही उसके मुद्रा होने का निर्धारण करती है। जो सरकार कहती है, "हम सड़कें नहीं बना सकते क्योंकि हमारे पास पैसा नहीं है," वह उतनी ही हास्यास्पद होगी जितनी वह सरकार जो कहती है, "हम सड़कें नहीं बना सकते क्योंकि हमारे पास किलोमीटर नहीं हैं।"

आइए, मुद्रा को परिभाषित करने का प्रयास करें। "मुद्रा एक मापा हुआ दावा है।" मुद्रा एक शीर्षक या मापा हुआ दावा है। "मुद्रा एक सामान्य दावा है।" मुद्रा एक ऐसी उपाधि है जो विशिष्ट नहीं होती (जैसे रेल टिकट, सराय चेक, स्टीमर टिकट जिसमें परिवहन, भोजन, केबिन आदि का अधिकार होता है)। यह सामान्य है। इसके अलावा, मुद्रा विनिमय योग्य होती है, अर्थात इसे बिना किसी औपचारिकता के एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित किया जा सकता है। इस पर राज्य-बंधपत्र, रेल-बंधपत्र या किसी "सोसाइटी एनोनिम" के बंधपत्र जैसा ब्याज नहीं लगता।

आइए "क्रेडिट" शब्द पर विचार करें। ऐसा कहा जाता है कि किसी व्यक्ति को क्रेडिट तब मिलता है जब यह माना जाता है कि वह नकद भुगतान कर सकता है और जब यह माना जाता है कि वह भुगतान से बचने या उसे टालने की कोशिश नहीं करेगा। "ऋण" वास्तव में "क्रेडिट" का बिल्कुल विपरीत नहीं है। वास्तव में, क्रेडिट अक्सर ऋण लेने की संभावना को दर्शाता है, और इसका हमेशा पहले से लिए गए ऋण के विपरीत अर्थ नहीं होता है। इसलिए, हम एक अस्पष्ट शब्द के सामने हैं।

अंत में, आइए "मुद्रास्फीति" पर विचार करें। रूढ़िवादी ढोंगों के अर्धसत्यों में से कुछ प्राकृतिक और बार-बार घटित होने वाली घटनाओं पर आधारित होते हैं। तथाकथित मुद्रास्फीति को सबसे पहले वास्तविक मुद्रास्फीति से अलग करना होगा, जो तब होती है जब धन उन वस्तुओं या सेवाओं के "अनुरूप" जारी किया जाता है जिनकी किसी को आवश्यकता नहीं होती या जो वांछित मात्रा से अधिक होती हैं। धन का कोई मूल्य नहीं होता जब उसे उन वस्तुओं या सेवाओं के "प्रति" (अर्थात छद्म-अनुरूप) जारी किया जाता है जो वितरण योग्य या प्राप्त करने योग्य नहीं हैं। उदाहरण के लिए, 1917 में फटे एक गोले के "प्रति" धन जारी करना मुद्रास्फीति होगी, और उस धन का स्वयं कोई मूल्य नहीं होगा, क्योंकि उस गोले को कोई नहीं चाहता, और कोई उसे वितरित भी नहीं कर सकता।

मान्य परिभाषाओं की एक संक्षिप्त सूची से आम आदमी को बड़े सूदखोरों और एकाधिकारवादियों के छल-कपट और पूर्णतया निंदनीय और सड़े हुए विश्वासघात से बचने में मदद मिलेगी।

वास्तव में, एक परिभाषा के साथ, या यूँ कहें कि धन की एक गंभीर और न्यायसंगत अवधारणा के साथ, सोड्डी ने कई अस्पष्ट पुस्तकें (पाठक के लिए अस्पष्ट, हालाँकि प्रोफेसर सोड्डी के लिए अत्यंत गहन और प्रिय) प्रकाशित करने के बाद टुमॉरोज़ मनी में लिखा है , "जिस प्रकार यह अकल्पनीय है कि निजी लोगों के पास कर लगाने की शक्ति होनी चाहिए, उसी प्रकार यह भी हास्यास्पद है कि बैंक, इसके विरुद्ध सभी संवैधानिक सुरक्षा उपायों के बावजूद, मात्र एक चाल से इस कार्य को हड़प लें।

संसद के किसी भी अधिकार के बिना, समुदाय की संपत्ति पर जबरन कर लगा दिया जाता है।”

आइए आज इटली की स्थिति और एंग्लो-सैक्सन देशों की स्थिति के बीच अंतर करें। आइए उन देशों के बीच अंतर करें जहाँ धन की प्रचुरता संकट पैदा करती है, और उन देशों के बीच जहाँ कुछ सामग्रियों का गंभीर अभाव है; आइए थोड़ा पीछे मुड़कर "नए अर्थशास्त्र" के इतिहास की रूपरेखा तैयार करें, जिसमें अभी भी पुराना ज्ञान या चेतना बहुत अधिक मात्रा में समाहित है।

आज के आर्थिक चिंतन में चार जीवंत धाराएँ हैं: (1) डगलसवाद; (2) गेसेलवाद; (3) कैनोनिक अर्थव्यवस्था जिसका उद्गम एस. एम्ब्रोस में है और एस. एंटोनिनो के साथ विकसित हुआ; (4)
कॉर्पोरेट अर्थव्यवस्था अपनी सुधार नीति (दलदल जल निकासी, आदि), ला बटाग्लिया डेल ग्रेनो, बचत, पारिवारिक चेक, खाद्य चेक, कार्य चेक, राज्य नियंत्रण, एकत्रीकरण, आदि के साथ।

हमें जिस ऑर्थोलॉजिकल अर्थशास्त्र की शुरुआत करनी चाहिए, उसे तथाकथित रूढ़िवादिता से छिपे कुछ तथ्यों पर विचार करना होगा। वस्तुओं की स्थायित्व असमान होती है, जैसे कुर्सियाँ, पनीर: फेडियास, प्रैक्सीटेल्स या बोटीसेली की कृतियों की स्थायित्व विविधतापूर्ण है। आदिम मनुष्य एक उपकरण का उपयोग करता था, जबकि सभ्य मनुष्य एक दर्जन उपकरण का उपयोग करता है।

मुझे लगता है कि हमें उन गंभीर लोगों की सूची बनानी चाहिए जो आज अर्थशास्त्र के विज्ञान में सहयोग कर रहे हैं, भले ही वे अनुभववादी हों, भले ही उन्होंने अपने कार्यकलाप में एक भी खोज की हो, और वे इसे इतिहास के साथ, तथा अन्य विचारधाराओं, या अन्य समयों, या अन्य आर्थिक संप्रदायों के न्यायसंगत और मान्य विचारों के साथ समन्वयित करने की प्रक्रिया में न हों।

आइए हम तुरंत यह मान लें कि अमुक व्यक्ति ने चाय की केतली का ढक्कन उठाने में भाप की शक्ति का अवलोकन किया था। यह मूल्यवान है, भले ही आविष्कारक ने कोई विश्वकोश या भौतिकी पर कोई विशाल ग्रंथ प्रकाशित न किया हो।

आइए हम यह समझें कि सीएच डगलस ने स्वयं औद्योगिक प्रणाली द्वारा (और उसके भीतर) वितरित क्रय शक्ति की अपर्याप्तता का पता लगाया था। उनके कारखाने ने क्रय शक्ति का वितरण "कीमतों" यानी बाज़ार में फेंकी गई वस्तुओं के निर्माण की तुलना में धीमी गति से किया। इसलिए, एक महीने में कीमतों की मात्रा वितरित क्रय शक्ति से अधिक हो गई।

अपराधी, मूर्ख और एकाधिकारवादी, जो दूसरों के भूखे रहकर जीते हैं, वे किसी व्यक्ति को उसकी कीमत के हिसाब से काटना चाहेंगे। इसके बजाय, डगलस ने लोगों द्वारा वितरित और वांछित वस्तुओं की मात्रा के अनुरूप क्रय शक्ति जारी करने की संभावना देखी। इसमें नया कुछ नहीं था और ईमानदारी ज़्यादा थी। डेविड ह्यूम पहले ही देख चुके थे कि समृद्धि किसी भी राष्ट्र के पास मौजूद धन की मात्रा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि यह मात्रा बढ़ती रहे। आइए हम स्पष्ट करें कि यह वृद्धि धीमी और निरंतर होनी चाहिए।

उपयोगी लेखकों में मैकनेयर विल्सन का नाम ज़रूर लें, जिन्होंने अपनी जनता को यह सिखाया कि बैंक पैसा उधार नहीं देते, बल्कि सिर्फ़ चुकाने का वादा करते हैं। (भुगतान का वादा)। गेसेल ने मुक्त विनिमय के दृष्टिकोण से शुरुआत करते हुए, मध्ययुगीन बिशपों के ब्रैक्टीएट (ब्रैक्टियेट) का पुनः स्मरण किया।

अपने विलंब शुल्क (डाक टिकट, जिसे नोट के घोषित मूल्य को बनाए रखने के लिए हर महीने नोट के साथ जोड़ा जाना चाहिए) के साथ, उनका इरादा प्रचलन की गति को प्रोत्साहित करना था, और वोर्गल में मेयर उंटरगुग्गेनबर्गर ने इस प्रणाली की दक्षता का प्रदर्शन किया।

गेसेल ने अपने लैपिडरी वाक्यांश द्वारा मार्क्स के मृत भाग को नष्ट कर दिया: "मार्क्स ने कभी सवाल नहीं किया
अर्थात्, मार्क्स ने कभी भी धन की प्रकृति पर सवाल नहीं उठाया, न ही उसका विश्लेषण किया।

गेसेल प्रणाली के लाभ कम से कम निम्नलिखित हैं: (1) छद्म लोकतांत्रिक देशों में यह राष्ट्र को मुक्त कर सकता है; अर्थात, सरकार और लोगों (सभी उत्पादकों सहित, चाहे वे नियोक्ता हों या नियोजित) को बैंकों और सूदखोरों की शक्ति से मुक्त कर सकता है।

फिर भी किसी भी शुद्ध नस्ल के गेसेलाइट ने कभी भी राज्य और कॉर्पोरेटिव दृष्टिकोण से विलंब शुल्क राशि पर विचार नहीं किया है।

मासिक आधार पर नोट के मूल्य के एक प्रतिशत के अनुपात में स्टाम्प जोड़ने से, 8⅓ अरबों के प्रचलन से राज्य को प्रति वर्ष एक अरब का राजस्व प्राप्त होगा, तथा संग्रह के लिए व्यावहारिक रूप से कोई व्यय नहीं होगा, जो स्वचालित होगा और नौकरशाही की बंदरबांट या हस्तक्षेप से लगभग पूरी तरह मुक्त होगा।

रूज़वेल्ट की तरह राष्ट्रीय बांडों के ज़रिए कर्ज़ों (खगोलीय कर्ज़ों) का ढेर लगाने के बजाय, राज्य का हर कर्ज़, राज्य की संपत्ति पर हर अधिकार, दोगुना होने के बजाय, 100 महीनों में रद्द कर दिया जाएगा। (अंग्रेज आज भी वाटरलू की लड़ाई के लिए कर चुका रहे हैं।)

ट्रेजरी बांड निजी हाथों में रखे जा सकते हैं, जो उन लोगों के लिए बचत का एक तरीका है जो वृद्धावस्था और अपने परिवारों के लिए प्रावधान करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें नागरिकों के एक योग्य वर्ग के लिए राज्य का लाभांश माना जाएगा, न कि एक सरकार के लिए अपरिहार्य आवश्यकता के रूप में जो अपने क्रेडिट का उपयोग करना चाहती है।

मैं इस बात पर जोर देता हूं: राज्य को अपने ऋण के लिए "किराया" देने की आवश्यकता नहीं है; अर्थात्, उसे बड़े पेशेवर सूदखोरों से उधार लेने की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि लगभग हर देश में अज्ञानता और पूर्वाग्रहों के कारण किया जाता है; उदाहरण के लिए, मेरे दुर्भाग्यपूर्ण देश में, फ्रांस में अपने वर्तमान गंभीर नैतिक संकट में, इंग्लैंड में दुनिया में नई घटनाओं के संज्ञान के बिना स्वीकार की गई परंपराओं की शक्ति के माध्यम से।

अनुभववादियों और आविष्कारकों के बाद, सामाजिक ऋणदाताओं की दूसरी पीढ़ी ने बुचार्ट को जन्म दिया, जिन्होंने एआर ओरेज से प्रेरित होकर, आर्थिक शब्दावली की पहली पुस्तक, " मनी" प्रकाशित की। अपने दूसरे खंड, " टुमॉरोज़ मनी" के साथ, बुचार्ट कम सफल रहे; उन्होंने वास्तव में, अलग-अलग विचारों वाले सात लेखकों को एकत्र किया है, और ये सभी प्रशंसनीय हैं, लेकिन वे इन लेखकों को एक-दूसरे के निबंध पढ़कर सुनाने और उनमें सहसंबंध स्थापित करने में असफल रहे हैं। यह पुस्तक मुख्यतः डगलस के कुछ लेखों के पुनर्मुद्रण और इस लेख में पहले ही उद्धृत सोड्डी के एक पृष्ठ के कारण मूल्यवान है।

लोकप्रिय लेखकों में इरविंग फिशर और क्रिस्टोफर हॉलिस का नाम ज़रूर लिया जाना चाहिए। लेकिन एक बात और स्पष्ट करनी होगी: फिशर एक पत्रकार हैं (आधिकारिक तौर पर प्रोफ़ेसर, लेकिन दिल से पत्रकार) जो अच्छा लिखते हैं।
उनके स्टाम्प स्क्रिप के चालीस पृष्ठ प्रत्येक गंभीर व्यक्ति के साथ-साथ प्रोफेसरों का भी ध्यान आकर्षित करने वाले हैं।
फिशर इस लड़ाई में बहुत गहराई से शामिल नहीं होता। शायद वह आशावादी है और बड़े अमेरिकी सूदखोरों को शाइलॉक से आखिरी टुकड़ा और एक ग्राम मांस छीनने के बजाय आधा पाउंड मांस से संतुष्ट होने के लिए राजी करना चाहता है।

क्रिस्टोफर हॉलिस ने एक बहुत ही मूल्यवान पुस्तक, द टू नेशंस, लिखी है, और विभिन्न पुस्तकों में जनता के लिए लड़ाई जारी रखी है, जिनमें उनके बारे में कहा जा सकता है कि उनका स्पर्श सुखद है; वास्तव में, वे उन कुछ अर्थशास्त्रियों में से हैं, जो मौद्रिक विज्ञान और सूदखोरी की विभिन्न समस्याओं को इस तरह से समझने में सफल रहे हैं कि उनकी पुस्तकें बिकती हैं और तीसरे संस्करण तक पहुँचती हैं। ये चरण लोकप्रिय शिक्षा से संबंधित हैं, जो उन देशों में काफी आवश्यक है जहाँ तथाकथित "बहुमत" वाली सरकारें बनी रहती हैं।

विंडम लुईस अंग्रेजी सरकार को नकली पुरातनपंथी कहते हैं। हालाँकि वे मुख्यतः एक साहित्यकार और व्यंग्यकार हैं, उन्होंने हाल ही में एक उच्च समाजशास्त्रीय मूल्य की पुस्तक लिखी है, जो चुनिंदा लोगों के लिए है: काउंट योर डेड, दे आर अलाइव (कुछ नहीं के बारे में एक और महायुद्ध की तैयारी)। मैं इसे अर्थशास्त्र के रूप में उद्धृत नहीं कर रहा हूँ, बल्कि यह बताने के लिए कि ये समस्याएँ किस लय के साथ प्रथम श्रेणी के जीवित लेखकों के काम में प्रवेश कर रही हैं। आज के चार सर्वश्रेष्ठ अमेरिकी कवि आर्थिक समस्याओं को लेकर चिंतित हैं (अब पुराने "गुलाबी" वेबबाइट, फेबियन, मैनचेस्टरियन या विलार्डियन के साथ नहीं), जैसा कि वास्तव में, दांते, शेक्सपियर, अरस्तू, ह्यूम, बर्कले, मोंटेस्क्यू आदि जैसे महान लेखक थे।

इन विचारों पर केंद्रित एक और विचारधारा उन लोगों के लेखन में दिखाई देती है जिन्होंने उत्तरी अमेरिकी गणराज्य की नींव रखी, यानी जेफरसन, जैक्सन, वैन ब्यूरन के लेखन में। मेरे जेफरसन और/या मुसोलिनी, डब्ल्यूएल वुडवर्ड की किताबें, "ए न्यू अमेरिकन हिस्ट्री", फादर कफलिन और बक के लेख, या ज़्यादा सटीक तौर पर कफलिन की किताब का सबसे अच्छा हिस्सा, जिसका नाम है "मनी" (पृष्ठ 211-213)।

यह कहना मुश्किल होगा कि किसी विदेशी को कौन सी अंग्रेज़ी और अमेरिकी समीक्षाएँ पढ़नी चाहिए, क्योंकि इन देशों में बौद्धिक जीवन क्षणिक प्रकाशनों में प्रकट होता है जो केवल दो या तीन साल (या उससे भी कम) तक चलते हैं और फिर अचानक समाप्त हो जाते हैं या एक प्रकार की साहित्यिक या वैचारिक नौकरशाही में बदल जाते हैं, एक सुरक्षात्मक रंग धारण कर लेते हैं और मनगढ़ंत विचारों में सहज हो जाते हैं। हालाँकि, हमें यह अवश्य कहना चाहिए कि अंग्रेज़ी फ़ासीवादियों ने एक साल पहले एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक पत्रिका: द फ़ासीस्ट क्वार्टरली का प्रकाशन शुरू किया था। यह एकमात्र अंग्रेज़ी समीक्षा है जिसमें मैं अन्य योगदानकर्ताओं, जिनमें जनरल फुलर, जॉयस, विंडहैम लुईस, ए.के. चेस्टर्टन, जे. जेन्क्स शामिल हैं, के लेखन को पढ़ पाया हूँ।

ह्यूगो फैक, जिन्हें टेक्सास में गेसेली द्वारा लिखित द नेचुरल इकोनॉमिक ऑर्डर को अपने खर्च पर प्रकाशित करने का महान श्रेय प्राप्त है , जब बड़े प्रकाशकों को नहीं लगता था कि इस तरह का प्रकाशन अच्छा व्यवसाय है, उन्होंने अपने छोटे से पेपर, द वे आउट को स्कार्सिटी इकोनॉमिक्स से बचे विचारों के साथ रंग दिया, भले ही लोएब के चार्ट ऑफ प्लेंटी का प्रकाशन हो (देखें ओडोन पोर का रिविस्टा डेल लावोरो, मार्च, 1936 में पुनर्पाठ)।

उदारवादी नस्ल के इन संप्रदायों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभाव है। न तो गेसेलाइट्स के प्रकाशन और न ही डगलसवाद के आधिकारिक प्रकाशन आर्थिक विचारों पर खुलकर चर्चा की अनुमति देते हैं। वे पतित मुसलमानों की तरह सम्मोहित और कठोर प्रतीत होते हैं। वे आपस में झगड़ते हैं। डगलस का मानना है कि विलंब शुल्क पर डाक टिकट एक दमनकारी कर है—बेकार और स्थायी, हालाँकि यह डगलस के ऋण को "रद्द" करने या उसकी छूट और जारी किए गए ऋण को रद्द करने के अन्य तरीकों से ज़्यादा समझ में आता है।

गेसेलाइट्स इस विचार से लगभग क्रूर रूप से क्रोधित हो जाते हैं कि पूरी मानवजाति उन लोगों के काम से, जो पहले ही मर चुके हैं, और वैज्ञानिक खोजों से लाभ उठा सकती है। (मूल्य काम से प्राप्त होता है, लेकिन हमारे पूर्वजों ने बहुत सारा काम किया है, जिन्होंने इसका फल खाने के लिए यहाँ नहीं खाया।)

द फिग ट्री (डगलसवादी) गैर-डगलसवादियों की प्रगति की ओर इशारा नहीं करता—गेसेलाइट्स की ओर या कॉर्पोरेटिव सिस्टम की ओर। द न्यू इंग्लिश वीकली अंग्रेजी उपनगरीय मिजाज में डूबा हुआ है, और इसलिए एक विशिष्ट और परिभाषित विचारधारा के बजाय उस पीले जीवन से बदरंग हो गया है। न्यू डेमोक्रेसी (न्यूयॉर्क) उपयोगी था, लेकिन अब मौजूद नहीं है। कफ़लिन एक साप्ताहिक के माध्यम से आम जनता के लिए लोकप्रिय शिक्षा का काम कर रहे हैं, न कि दीक्षित लोगों के लिए (सोशल जस्टिस)। लेकिन जून के महीने में, मुझे उनके अखबार में ऐसी खबर मिलती है जो या तो कहीं और नहीं छपी होती या उसे कुछ पंक्तियों में ही दिया जाता है, जो बदनामी और छलावे के स्तंभों के बीच छिपी होती है। एक सामान्य चरित्र वाली पत्रिका प्रेस के संपादकों से मुझे अक्सर यह निमंत्रण मिलता है: क्या आप अर्थशास्त्र के अलावा किसी और चीज़ के बारे में नहीं लिख सकते?

मैं गंभीर पाठकों की सहूलियत चाहता हूं: मैंने बहुत विविध चीजों के बारे में बात की है।

इस लेख में दो भाग हैं: पहले भाग में मैंने अर्थशास्त्रियों से सटीक शब्दावली की तत्काल आवश्यकता पर विचार करने का लगभग अनुरोध किया है; दूसरे भाग में मैंने कुछ ऐसे कार्यों का संक्षेप में उल्लेख किया है, जो खंडित हैं, लेकिन ईमानदार हैं, जिन्हें कई बिखरे हुए लेखकों से चुना गया है, जो समन्वित नहीं हैं, लेकिन समन्वित किए जा सकते हैं, यदि एक नाभिक पाया जा सके जो कि कोश-लेखन की जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार तकनीशियनों से बना हो।

मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूँ कि ठोस नैतिकता के बिना कोई भी विवेकपूर्ण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं हो सकता।

अर्थशास्त्र। मौद्रिक नीति के लक्ष्य और उद्देश्य को ध्यान में रखे बिना, केवल गतिशीलता पर विचार करने से अराजकता पैदा होगी। इच्छाशक्ति की दिशा अर्थशास्त्र के अध्ययन के घटकों में से एक है। बाडोग्लियो का यह कथन कि, "हमारा सोना हमारे सैनिकों की इच्छाशक्ति और हथियार हैं," लंदन के सभी प्रोफेसरों से भी ज़्यादा अर्थशास्त्री हैं।

मंदी के कारण, ए. रेवेन थॉमसन द्वारा

मैं फ़ासीस्ट क्वार्टरली और ब्रिटिश यूनियन क्वार्टरली में आने वाली मंदी के बारे में कई बार लिखा है , जो पुराने अर्थशास्त्रियों द्वारा बढ़ावा दिए गए अल्पकालिक सुधार के बाद आने वाली थी। मैंने दिखाया था कि कैसे पिछले सौ वर्षों से, पूंजीवाद की स्थापना के बाद से, तेजी और मंदी का व्यापार चक्र चल रहा था, और औसतन नौ वर्षों की एक नियमित अवधि दिखाई देती थी, जो कभी-कभी सात या ग्यारह वर्षों तक गिर जाती थी। औसतन अगला संकट वर्ष 1938 होना चाहिए था, और मंदी की असामान्य गहराई के कारण इसके 1939 तक टलने की संभावना थी। वास्तव में, संकट सामान्य से एक वर्ष पहले ही आ गया है, और अगली मंदी 1937 में ही शुरू हो चुकी है।

यह बात हममें से उन लोगों के लिए भी आश्चर्य की बात है जो इस बात पर अड़े थे कि "समृद्धि" स्थायी नहीं हो सकती। त्रैमासिक पत्रिका के पिछले अंक में ही मैंने आने वाले संकट पर पुनःशस्त्रीकरण और सस्ते धन के प्रभाव पर चर्चा की थी, और हालाँकि मैंने माना था कि अत्यधिक सट्टेबाजी ने समय से पहले ही तेजी ला दी थी, फिर भी मैंने सोचा था कि पुनःशस्त्रीकरण की प्रेरणा हमें 1938 की शरद ऋतु तक बचा ले जाएगी, जब मैंने तर्क दिया कि संचित हथियारों को खत्म करने के लिए युद्ध ही मंदी को रोक सकता है। वास्तव में, मैंने वित्तपोषकों द्वारा जानबूझकर मंदी के विकल्प के रूप में युद्ध की तलाश करने के खतरे के प्रति आगाह किया था।

दरअसल, मैंने वित्तीय लोकतंत्र की सिकुड़ती दुनिया में अमेरिकी अर्थव्यवस्था के महत्व और अमेरिका में किसी बड़े पुनःशस्त्रीकरण कार्यक्रम के अभाव को कम करके आंका था।
पिछली मंदी की तरह ही, यह अमेरिका से ही नई मंदी फैल रही है, तथा पुनः शस्त्रीकरण लाभ का सारा प्रोत्साहन, वॉल स्ट्रीट पर शेयर मूल्यों के नाटकीय पतन पर प्रतिक्रिया करने से थ्रोगमॉर्टन स्ट्रीट को रोकने के लिए अपर्याप्त है।

हालाँकि 1907 की तरह यह समय से पहले आई मंदी कम तीव्रता की हो सकती है, और इस प्रकार पूँजीवादी स्थिरता के लिए बाद में आए और अधिक तीव्र आघात की तुलना में कम आघातकारी हो सकती है, लेकिन इसका एक फायदा यह है कि यह युद्धोन्मादी लोगों द्वारा अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद हमें युद्ध में धकेलने से पहले ही आ गई है। जैसे-जैसे मंदी तीव्र होगी, जनता की रुचि विदेशी मामलों से हटकर घरेलू समस्याओं की ओर लौटेगी, और अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष का खतरा कम होता जाएगा। मंदी की रोकथाम के रूप में युद्ध का खतरा पहले ही टल रहा है।

वॉल स्ट्रीट पर दहशत

हमारे प्रेस द्वारा इसे छुपाने की कोशिशों के बावजूद, इस पतझड़ में वॉल स्ट्रीट पर दहशत उतनी ही भयावह रही जितनी 1929 की पतझड़ में थी। पूंजीगत कार्यों के लिए स्टील की मांग में गिरावट निर्णायक कारक रही है, और यूनाइटेड स्टेट्स स्टील और अन्य स्टील शेयरों ने मूल्यों में गिरावट का नेतृत्व किया है। इस साल की शुरुआत में यूएस स्टील के 100 डॉलर वाले शेयर का मूल्य 129¼ था। अप्रैल में सोने के संकट के बाद भी इसका मूल्य 100 से कहीं ज़्यादा था। सितंबर में लगातार गिरावट के कारण यूएस स्टील के शेयर

स्टील 80 तक पहुँच गया। फिर अक्टूबर में मंदी आई, और दिन-ब-दिन कीमतें गिरती गईं। अमेरिका नीचे चला गया।
स्टील 70 के दशक से 68 तक। एक छोटी सी तेजी, और फिर "काले मंगलवार" को घबराहट में हुई बिकवाली ने कीमत को 54 तक पहुंचा दिया। उसके बाद से इसमें और सुधार हुआ, जिससे यूएस स्टील वापस लगभग 65 पर आ गया, लेकिन नवंबर में ही स्टील उत्पादन में कमी की नई रिपोर्टों के कारण कीमत फिर से 50 के दशक में पहुंच गई, जो अब क्षमता के 50 प्रतिशत से भी कम है।

इन सबको महज स्टॉक एक्सचेंज की "घबराहट" कहकर खारिज नहीं किया जा सकता। वॉल स्ट्रीट की मंदी के पीछे बुनियादी कारण हैं। उपभोग वस्तुओं की मांग अभी भी अच्छी बनी हुई है, लेकिन पूंजीगत वस्तुओं की मांग तेजी से गिर रही है। अति-उत्पादन, भले ही अभी वास्तविक न हो, कम से कम संभावित तो है ही, और उद्योगपति संयंत्रों का विस्तार बंद कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, पूंजीगत वस्तुओं के उत्पादक, जिनमें अब इस्पात भी बढ़ती हुई हिस्सेदारी में शामिल हो रहा है, पहले से ही बुरी तरह प्रभावित हैं, और इस्पात शेयरों के मूल्य में गिरावट, जिसने बाजार को अव्यवस्थित कर दिया है, महज बाजार की चालबाजी नहीं है, बल्कि कम उत्पादन पर कम मुनाफे की उचित आशंका है।

क्या रूजवेल्ट मदद कर सकते हैं?

पिट्सबर्ग जैसे इस्पात शहरों में बेरोजगारी पहले से ही बढ़ रही है, जिसका निश्चित रूप से उपभोग वस्तुओं की मांग पर प्रभाव पड़ेगा, तथा निवेश पर दोगुना प्रभाव पड़ेगा।
अमेरिका एक बार फिर एक पारंपरिक मंदी की ओर बढ़ रहा है, पिछली मंदी से पूरी तरह उबरने से पहले ही। अगर रूज़वेल्ट हस्तक्षेप करते हैं, जैसा कि वे अभी तक करने के लिए अनिच्छुक प्रतीत होते हैं, तो वे धारा के विपरीत तैरेंगे, जैसा कि हूवर ने 1929 से 1932 तक करने का प्रयास किया था। इस बार अमेरिका को सामान्य विश्व सुधार की धारा पर लाना, 1933 की तरह, कोई आसान काम नहीं होगा। इस बार शक्तिशाली राष्ट्रपति को अपनी पूरी ताकत लगानी होगी।

मौद्रिक हेरफेर, सार्वजनिक कार्य, इत्यादि, संकट से निपटने के लिए अपर्याप्त होंगे, वास्तव में, अपने संदर्भ की शर्तों के तहत रूजवेल्ट केवल विशाल राज्य खरीद के माध्यम से ही मदद कर सकते हैं, जो इतनी गहन हो सकती है कि अमेरिकी उद्योग का बड़ा हिस्सा सरकारी स्वामित्व में आ जाए।

चूँकि रूज़वेल्ट के पास उद्योगों पर राज्य नियंत्रण के फ़ासीवादी विकल्प को लागू करने की शक्ति नहीं है, उनकी न्यू डील सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसलों से बदनाम और काफ़ी हद तक ध्वस्त हो चुकी है, इसलिए उन्हें राज्य पूँजीवाद लागू करने के कम्युनिस्ट तरीक़े को अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। उनके यहूदी सलाहकार इस दिशा में कितनी दूर तक काम कर रहे हैं, यह हमें अभी देखना है। अमेरिका और सोवियत संघ दो महान भौतिकवादी गणराज्यों के रूप में और भी नज़दीक आ सकते हैं, जहाँ यहूदी नियंत्रण सर्वोपरि है।

ब्रिटिश प्रतिक्रिया

हमारे रूढ़िवादी राजनेता, स्टॉक एक्सचेंज के पतन के तमाम सबूतों के बावजूद, हमें भरोसा दिलाते हैं कि "मंदी" (जनता को आश्वस्त करने के लिए गढ़ा गया एक विशेष शब्द) आने का कोई संकेत नहीं है, ब्रिटेन अमेरिका जैसी आर्थिक समस्याओं से प्रभावित नहीं है, और पुनः शस्त्रीकरण हमें इससे उबार लेगा। यह सब बकवास है, क्योंकि सभी वित्तीय लोकतंत्र अंतरराष्ट्रीय वित्त से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, और वॉल स्ट्रीट दुनिया का वित्तीय केंद्र है और रहेगा।

वहाँ जो कुछ भी घटित होता है, उसका प्रभाव अन्यत्र भी अवश्य पड़ता है, ठीक उसी तरह जैसे 1937 में 1929 में हुआ था। क्या हमने त्रिपक्षीय समझौते के ज़रिए "महान लोकतंत्रों के एकीकरण" पर ज़ोर नहीं दिया है? क्या हमारी सरकार, "पुराने गिरोह" दलों की वाहवाही के बीच, अमेरिका के साथ घनिष्ठ व्यापारिक संबंधों पर बातचीत नहीं कर रही है? यह आखिरी पैंतरा किसी तैराक द्वारा जानबूझकर डूबते हुए आदमी को गले लगाने जितना ही उपयोगी प्रतीत होता है। अगर हमारा उद्देश्य यहूदी-अमेरिकी वित्त को बचाना है तो यह अच्छा है, लेकिन अगर हम ब्रिटेन को एक नई मंदी की लहरों में डूबने से बचाना चाहते हैं तो यह बुरा है।

जहाँ तक पुनःशस्त्रीकरण का सवाल है, इसने हमें मंदी से बचाने के बजाय, निस्संदेह संकट को और भी बढ़ा दिया है, न केवल यहाँ बल्कि अमेरिका में भी। सट्टेबाज़ों ने, जो निश्चित रूप से लोकतंत्र की पूर्ण स्वतंत्रता का आनंद लेते हैं, पुनःशस्त्रीकरण और युद्ध की संभावना में लाभ के अनगिनत अवसर देखे, और बेहद सस्ते पैसे का फायदा उठाकर, हर तरह का स्टॉक खरीद लिया, जिसकी उन्हें लगा कि पुनःशस्त्रीकृत राष्ट्रों को ज़रूरत है, या जो युद्ध के समय दुर्लभ हो सकते हैं।

परिणामस्वरूप, सभी वस्तुओं, विशेषकर धातुओं की कीमतें अठारह महीनों के भीतर इतनी बढ़ गईं कि कुछ मामलों में तो 100 प्रतिशत तक पहुंच गईं: एक अभूतपूर्व सट्टा उछाल जो इतिहास में के दौरान हुआ।

शांति काल में यह उपलब्धि, वास्तव में, केवल पिछले युद्ध के सबसे बुरे दौर के दौरान ही प्राप्त हुई थी।

सौभाग्य से, सट्टेबाजों ने अपनी सीमा पार कर ली। वामपंथी युद्ध-प्रेमियों के प्रयासों के बावजूद, जिस युद्ध की उन्होंने आशंका जताई थी, वह स्पेन और चीन तक ही सीमित रहा, और, उन सभी की तरह जो उत्पादों पर कब्ज़ा करने की कोशिश करते हैं, वे जल्द ही नए उत्पादन से शर्मिंदा हो गए, जो अधिक लाभदायक मूल्य स्तरों से आकर्षित था। वास्तव में, उन्होंने आधुनिक उद्योग की अपार उत्पादक क्षमता को पूरी तरह से कम करके आंका, और ऊँची कीमतों से उत्पन्न वस्तुओं की बाढ़ में बह गए। वर्तमान उपभोग के सापेक्ष अधिक उत्पादन करने के लिए अब बहुत कम प्रोत्साहन की आवश्यकता है। कीमतों में अभूतपूर्व वृद्धि के अपार प्रोत्साहन ने न केवल सट्टेबाजों को, बल्कि वैध व्यापार को भी पूरी तरह से डुबो दिया है, जो पुनः शस्त्रीकरण के बावजूद, अतिशयोक्ति का सामना नहीं कर सकता। वास्तव में, मंदी के पूरी तरह से शुरू होने से पहले ही, उत्पादन के कोटे में कमी की माँग फिर से शुरू हो गई है। इस तरह की कटौती बेरोजगारी और उसके परिणामस्वरूप क्रय शक्ति की कमी पर क्या प्रतिक्रिया देगी, यह हम अपने पाठकों को कल्पना करने के लिए छोड़ देते हैं।

अगस्त की तुलना में इस समय 80,000 अधिक बेरोजगार हैं।

मूल कारण

इन सभी बाहरी लक्षणों के पीछे, पुनःशस्त्रीकरण और युद्ध की आशंकाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के साथ, एक मूलभूत कारण छिपा है, जो आधुनिक औद्योगिक उत्पादन और सामान्य जन उपभोग के बीच चिरकालिक असमानता है। जब तक यह बेतुका अंतर मौजूद है, हमारी आर्थिक व्यवस्था स्पष्ट रूप से एक अंतर्निहित अस्थिरता के अधीन है, जो इसे वित्तीय पूंजीवाद के बार-बार आने वाले उछाल और मंदी में शामिल करती है। वास्तव में, जैसे-जैसे विज्ञान उत्पादन की शक्ति को बढ़ाता है, और ट्रेड यूनियनवाद वित्तीय गठबंधनों के बढ़ते प्रतिरोध के खिलाफ श्रमिकों की मजदूरी बढ़ाने में और अधिक शक्तिहीन होता जाता है, यह अंतर और भी बढ़ता जाता है, और, जैसा कि मोस्ले ने बताया है, पूंजीवाद के पतन के साथ, उछाल कम और कम होते जाते हैं, और मंदी लंबी और लंबी होती जाती है।

हर मंदी की तरह, इसका भी मूल कारण जनता के हाथों में क्रय शक्ति का अभाव है, और इस बार कीमतों में अभूतपूर्व वृद्धि के कारण यह संकट असामान्य रूप से जल्दी ही पैदा हो गया है, जिसने न केवल उत्पादन की अधिकता को बढ़ावा दिया है, बल्कि लोगों की क्रय शक्ति को और भी कम कर दिया है, जिनकी मज़दूरी जीवन-यापन की बढ़ती लागत के साथ तालमेल बिठाने में विफल रही है। इस परिणामी मंदी को केवल स्थायी रूप से ठीक किया जा सकता है, मितव्ययिता और मज़दूरी में कटौती से नहीं, जैसा कि "पुराना गिरोह" मानता है, बल्कि सार्वजनिक कार्यों और रचनात्मक मज़दूरी वृद्धि से, जब तक कि राज्य और लोग आधुनिक उद्योग के उत्पादन का उपभोग न कर लें। यह सच है कि राज्य वर्तमान में पुनःशस्त्रीकरण के माध्यम से असामान्य दर पर उत्पादन का उपभोग कर रहा है, लेकिन यह भी किसी भी तरह से अधिकांश लोगों की क्रय शक्ति की कमी की भरपाई नहीं करता है, जो हाल ही में वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के कारण दरिद्र हो गए हैं।

प्रतिकार

आम तौर पर जिन उपायों पर विचार किया जाता है, वे हैं मौद्रिक सुधार और आर्थिक नियोजन। पहला उपाय अपना सबसे मज़बूत तर्क खो चुका है, क्योंकि 1937 में मुद्रा उतनी ही सस्ती थी जितनी 1929 में महँगी थी, और फिर भी मंदी पहले जितनी ही बुरी है। मौद्रिक समस्याएँ स्पष्ट रूप से उपभोग और उत्पादन के बीच आर्थिक असंतुलन की प्राथमिक समस्या के मुकाबले गौण हैं, और मौद्रिक सिद्धांत का कोई भी रूप उपयोगी नहीं है जो यह स्पष्ट न करे कि मुद्रा उपभोक्ता तक कैसे पहुँचे। सामाजिक ऋण इस दिशा में रुचि रखता है और विचारणीय है, लेकिन सामाजिक ऋण समर्थकों को वर्तमान वित्तीय तानाशाही को उखाड़ फेंकने के लिए अत्यधिक अधिकार की आवश्यकता को समझना चाहिए। इस संबंध में, अल्बर्टा में सामाजिक ऋण सरकार द्वारा बैंकों और यहाँ तक कि प्रेस को नियंत्रित करने के लिए उठाए गए कदम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक नियोजन स्पष्ट रूप से आवश्यक है, लेकिन इसके लिए अधिकार की भी आवश्यकता है, और प्रश्न यह उठता है कि यह अधिकार अपनी उपाधि कैसे प्राप्त करे। वित्तपोषकों के अनुसार, जो पीईपी के इज़राइल मोसेस सीफ़ की तरह, औद्योगिक और वितरण गठबंधन के पक्षधर हैं, नियोजन का अधिकार पूँजीवादी खरीद और एकीकरण से प्राप्त होता है। वास्तव में, खरीद द्वारा नियोजन । समाजवादियों के अनुसार, जो उत्पादन, वितरण और विनिमय के साधनों के राष्ट्रीयकरण के पक्षधर हैं, नियोजन का अधिकार सिविल सेवा के तहत राज्य द्वारा ज़ब्ती द्वारा प्राप्त होता है। इस मामले में ज़ब्ती द्वारा नियोजन ।

ब्रिटिश संघ योजना बनाने का अधिकार प्राप्त करने के लिए कम भौतिकवादी तरीकों का पक्षधर है, न कि संयुक्त पूंजीवादी खरीद या निजी संपत्ति की राज्य पूंजीवादी जब्ती के जरिए, जो बहुत करीब से समान हैं, बल्कि लोगों से निजी और सार्वजनिक उद्यम दोनों पर आर्थिक योजना लागू करने के लिए प्राधिकरण द्वारा। सहमति से योजना बनाना। जिन तरीकों से राज्य प्राधिकरण और निजी स्वामित्व को बड़े पैमाने पर स्वशासित आर्थिक प्रणाली में विलय किया जाता है, उनका अध्ययन कॉर्पोरेट राज्य पर पहले से प्रकाशित कई पुस्तकों में किया जा सकता है। हालांकि, यह समझना आवश्यक है कि कॉर्पोरेट राज्य उद्योग के उत्पादों को लोगों तक वितरित करने के लिए मौजूद है, और वित्त पूरी तरह से इस प्रमुख उद्देश्य के अधीन है। अस्थिरता को रोकने के लिए और उत्पाद का उचित हिस्सा उत्पादक को हस्तांतरित करने में सक्षम बनाने के लिए विशेष रूप से सभी सट्टेबाजी और पूंजी पर अत्यधिक लाभ निषिद्ध है।

आगे की गिरावट से इन्सुलेशन

कॉर्पोरेट राज्य को न केवल पूँजी और उपभोग वस्तुओं के उत्पादन में संतुलन स्थापित करना होगा, सट्टा निवेश की अस्थिरता को समाप्त करना होगा और लोगों को आधुनिक विज्ञान के उत्पादन का उपभोग करने में सक्षम बनाना होगा; बल्कि उसे जापान से आने वाले सस्ते विदेशी श्रम द्वारा बाहरी प्रतिस्पर्धा से राष्ट्र की रक्षा भी करनी होगी। इस उद्देश्य के लिए एक पृथक साम्राज्य नीति लागू की जानी चाहिए, जिसमें शाही बाज़ारों को घरेलू और शाही उद्योग के लिए आरक्षित रखा जाए, और उपनिवेशों और अधिराज्यों को कच्चे उत्पादों की घरेलू बाज़ार की माँग का पूरी तरह से संरक्षित हिस्सा प्रदान किया जाए।

केवल इन्हीं उपायों से हमारे आर्थिक मामलों की एक पूर्ण योजना को क्रियान्वित किया जा सकता है, और केवल इसी प्रकार हम अपने लोगों को उस भयावह मंदी की पुनरावृत्ति से बचा सकते हैं जिससे वे अभी जूझ रहे हैं। वॉल स्ट्रीट पर व्याप्त दहशत को ब्रिटिश उद्योग को फिर कभी मंदी में नहीं धकेलने देना चाहिए। आइए, जर्मनी की तरह, पूंजीवादी दुनिया के पागलपन भरे उतार-चढ़ाव से खुद को बचाएँ, और इस पूर्ण ज्ञान के साथ अपने मामलों की योजना बनाएँ कि हमारे नियंत्रण से बाहर कोई भी अज्ञात कारक अचानक हमारे द्वारा किए गए सभी कार्यों को बर्बाद नहीं कर सकता। एक पृथक साम्राज्य के भीतर कॉर्पोरेट राज्य की ब्रिटिश संघ की नीति ही तेजी और मंदी से सुरक्षा प्रदान करती है, और आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों के लाभों का ब्रिटिश लोगों तक वितरण सुनिश्चित करती है।

एज्रा पाउंड द्वारा क्रांति को धोखा दिया गया

टी जिस क्रांति के साथ विश्वासघात किया गया है, वह मूलतः 1776 की "हमारी" अमेरिकी क्रांति है, न कि उसके स्थानीय और विशेष चरणों के रूप में, और निश्चित रूप से अंग्रेजी जाति के पूर्णतः अनावश्यक विभाजन के रूप में भी नहीं।

उस विभाजन से चाहे जो भी अच्छा हुआ हो या नहीं, यह विभाजन पूरी तरह से अनावश्यक था और काफी हद तक अनैच्छिक भी। इससे ब्रिटेन को कोई फ़ायदा नहीं हुआ। यह शायद क्रॉमवेल द्वारा छोड़े गए गिरवीदारों द्वारा आपके देश पर लगाया गया पहला बड़ा घाव था।

उन्नीसवीं सदी वही थी जिसे ला टूर डू पिन कहते थे, वह सब जिसे मौरा और फ्रांसीसी राजभक्त विदूषक भूलने की कोशिश करते रहे हैं कि ला टूर डू पिन उसे क्या कहते थे। यह सूदखोरी की सदी थी। यह विघटन की सदी थी। यह किसी भी अन्य सदी से भी नीच थी जिसके बारे में मैं सोच सकता हूँ कि यह शब्दों के साथ विश्वासघात, शब्दों के अर्थों को बिगाड़ने और बिगाड़ने का युग था।

द रिवोल्यूशन बेट्रेड कोई ऐसी क्रांति नहीं है जो जो स्टालिन या किसी एक सरकार के एक या दो झूठे कदमों से एक या दो साल में धोखा खा गई हो।

जिस क्रांति को धोखा दिया गया, वह टस्कनी में लियोपोल्डाइन सुधारों से पैदा हुई क्रांति थी, और जेफरसनियन प्रक्रिया में स्पष्ट रूप से प्रकट हुई, जिसकी परिणति एंडी जैक्सन और मार्टिन वैन ब्यूरन की जीत के साथ हुई - जो कि बहुत ही अल्पकालिक थी।

उनसे पहले लियोपोल्डाइन सुधारों ने निरंकुशता की अवधारणा को जन्म दिया था, तथा यह विश्वास स्थापित किया था कि किसी राष्ट्र का अनाज मुख्यतः इसलिए होता है ताकि राष्ट्र (अपने प्रत्येक नागरिक के रूप में) खा सके।

उस क्रांति को डैन वेबस्टर्स, बिडल्स, मोर्गन्स, बारूक्स, सभी प्रकार के छद्मवेशियों, ट्रॉट्स्की, वालेस, पर्किन्स, रूजवेल्ट के सलाहकारों के दो समूहों, मोर्गेन्थाऊ जैसे जीवों, जो जन्म से ही अतिशयोक्तिपूर्ण पूर्वधारणाओं में डूबे हुए हैं, तथा कंजूस आर्यो-कीक्स की पीढ़ियों द्वारा स्पष्ट रूप से धोखा दिया गया है।

मैं इस शब्द पर ज़ोर देता हूँ। सेमिटिक ज़हर सेमिटिक अस्थिरता से शांत हुए सेमिटिक में है,
सेमाइट का एक अति से दूसरी अति की ओर लड़खड़ाना।

यह अस्थिरता उसे स्थिर और पंगु मानसिकता वाली जातियों के लिए ख़तरा बनाती है। लेकिन रूज़वेल्ट के पूरे घिनौने, ख़तरनाक और विध्वंसक दल में, यहूदी, एम. एज़ेकील ही है, जिसने अपनी 2,500 डॉलर प्रति वर्ष की आय के साथ, सबसे पहले ABUNDANCE की अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढ़ाया है।

यह किताब अप्रिय है, यह किसी भी सेमिटिक लेखन की तरह ही गोलमोल है, यह वास्तविक धन की समस्या से बचती है। यह यहूदी समझौता है, इसमें जे. साइमन की सहज समझौते और सामान्य शांति की सारी इच्छाएँ हैं, लेकिन यह वालेस और पर्किन्स से बेहतर है। और कोई भी उचित, वस्तुनिष्ठ यहूदी-विरोधी यह भी स्वीकार करेगा कि मोर्दकै एज़ेकील जिन तथ्यों के साथ समझौता करने की कोशिश कर रहा है, वे खेल-प्रेमी यहूदी, लोएब (श्री हेमिंग्वे के अहंकारी) की अध्यक्षता वाली एक समिति की रिपोर्ट से उभरे हैं।

यदि आप मानते हैं कि एक पूरी जाति को उसके कुछ सदस्यों के पाप के लिए दंडित किया जाना चाहिए, तो मैं स्वीकार करता हूं कि न्यूयॉर्क में दो मिलियन यहूदियों का निष्कासन, अमेरिका में अंग्रेजी जाति को यहूदी वित्त द्वारा पहुंचाई गई हानि के लिए अत्यधिक सजा नहीं होगी।

कॉमरेड विन्धम लुईस ने यहूदियों द्वारा इंग्लैंड पर अच्छे से शासन करने के बारे में जो भी कहा हो, यहूदी अमेरिका पर संतोषजनक ढंग से शासन नहीं करते, लेकिन यहूदी वित्तपोषक हमारी सबसे बड़ी बुराई नहीं है।

हमारी सबसे बड़ी बुराई आर्यो-कीके है, जो गंदी रेखा को अपनाकर उस पर बिना किसी विचलन या मोड़ के टिके रहने में सक्षम है, तथा यहूदियों की तरह उसमें दया, उत्तेजना या भव्य प्रदर्शन की आवश्यकता का कोई भी क्षण नहीं है।

किसी जाति को अपने सबसे बुरे लोगों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है। यहूदी जाति ने सदियों से अपने क़ानून के पालन की ज़िम्मेदारी नहीं ली है। सुसमाचार की कहानी में, चाहे आप इसे तथ्य मानें या उदाहरणात्मक कल्पना, यीशु की हत्या की ज़िम्मेदारी किसी और पर डालकर की गई थी। क़ानून का पालन रोमनों के हाथ में था। अगर कोई व्यक्ति यहूदी-विरोधी होना चाहता है, तो उसे निष्पक्ष रूप से यहूदी-विरोधी होना चाहिए। उसे जितने हो सके उतने तथ्य इकट्ठा करने चाहिए, और उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

यहूदी ने संगठन की कमी, और किसी भी तरह से यहूदी विरोधी भावना को नकार कर अपने ऊपर ला दिया है।
जिम्मेदारी लेना.

अगर यहूदी प्रबुद्ध लोगों के बीच एक पड़ोसी दुनिया में रहना चाहता है, तो उसे यहूदी कानून तोड़ने वालों के अनुशासन का पालन करना होगा। जहाँ तक मुझे पता है, वह पिछले 2,000 सालों से ऐसा करने को बिल्कुल तैयार नहीं है। कोई भी अन्य जाति यह नहीं चाहती कि कोई देश उसके लिए दौड़े, या उसके लिए विजय प्राप्त करे, कम से कम पश्चिम में तो नहीं। अगर ब्राह्मण ऐसा करते हैं, तो वे "गंदे नीग्रो" कहलाने के हकदार हैं, और शायद कुछ चीनी मूल के गैर-कन्फ्यूशियन भी।

रूजवेल्ट के मंत्रिमंडल में दो बीमारियाँ हैं। न्यूयॉर्क का सूदखोरी, जो लंदन के सभी सूदखोरी से जुड़ा हुआ है और फिर बासेल तथा पेरिस के सीवरों से भी जुड़ा हुआ है।

लेकिन इसमें पर्किन्स की अरि-ओ-कीक जैसी क्षुद्रता और कंजूसी भी है। यह "गोल-सिर" की क्षुद्रता है और इसमें गोल-सिर की दृढ़ता, कंजूसी के झूठे नैतिक मूल्य हैं, जो संभवतः ईर्ष्या से पैदा हुए हैं, लेकिन फिर भी निंदनीय हैं।

नवंबर 1937 में न्यूयॉर्क ट्रिब्यून ने जिन "दर्जन अर्थशास्त्रियों" को सूचीबद्ध किया था, जिन्होंने रूजवेल्ट को मंदी समाप्त करने की सलाह दी थी, वे अपनी सलाह के लिए किसी मानवीय दया के पात्र नहीं हैं, चाहे वह क्रूर अज्ञानता या विशुद्ध द्वेष से दी गई हो।

"सार्वजनिक विश्वास को मजबूत करें," आदि। इन लोगों के पास उपलब्ध आवश्यक वस्तुओं के लिए सार्वजनिक क्रय शक्ति को बराबर करने की समस्या से निपटने का मौका था, और वे इसे लेने में विफल रहे, और वे नीमेयर, बारूक या निगमित सूदखोरी के किसी भी दामाद की तरह दया के लायक नहीं हैं।

इस पर और उस पर देखो!

संगठित राज्य की बात करें तो हमारे यहां निगमित पूंजी पर कर लगाया जाता है।

इस ज़बरदस्त कदम का छद्म-लोकतांत्रिक देशों के गुप्त प्रेस पर ज़रा भी असर नहीं पड़ा। कातर लालों ने इसे विचारों की विजय नहीं माना। ऋण-पूंजी वाले अखबारों ने इसे ऐसे पेश किया मानो यह निजी संपत्ति पर कर हो।

किसी भी बड़े दैनिक समाचार पत्र ने संपत्ति (ज़मीन, मकान, फ़र्नीचर) और "ब्याज और संपत्ति" के विरुद्ध दावे या ब्याज के विरुद्ध दावे "और ब्याज का तुरंत भुगतान न होने पर पूर्ण कब्ज़ा" के बीच अंतर नहीं किया है। स्वाभाविक रूप से, उन्होंने ऐसा नहीं किया है, वे एक विरासत हैं, कब्र से निकला एक मृत और सड़ा हुआ हाथ, उन्नीसवीं सदी की आम खाई से।

वह सदी शब्दों से गद्दारी करने वाली थी। उसने पिछली सदी के हर उज्ज्वल विचार को कलंकित कर दिया। आस्तिक वोल्टेयर को नास्तिक बताकर पेश किया गया।

स्वतंत्रता - जिसका अर्थ था ऐसा कार्य करने का अधिकार जो दूसरों को चोट न पहुंचाए - को इस रूप में प्रस्तुत किया गया
दूसरों का खून बहाने का अधिकार.

जेफरसन के शब्दों में, समानता का अर्थ था कि कानूनी तौर पर सभी लोगों के समान अधिकार थे; कोई भी व्यक्ति किसी दुर्गम विकलांगता के साथ पैदा नहीं होता। इसमें बर्न्स के "एक आदमी बस एक आदमी है" की झलक थी, लेकिन जेफरसन के समय में इसका अर्थ सार्वभौमिक मताधिकार भी नहीं था। मताधिकार योग्यता का पुरस्कार हो सकता था।
इसे पार्टी सदस्यता के रूप में कड़ाई से परिभाषित नहीं किया गया था, लेकिन इसे अनजाने में सूअरों पर नहीं थोपा गया था।
इससे पहले कि इन विवेक को बदनाम और अपवित्र किया जा सके, सूदखोरों के गिरोह के लिए संचार के साधनों को ही धोखा देना ज़रूरी था। भाषा को तारपीडो से नष्ट करना ज़रूरी था। हर उस शब्द को, जिसे महान बनाया गया था, खोखला करके बैंक-मुद्दे, 'लेइहकैपिटल' के छुपे हुए गुंडों को ढकना था।

व्यवस्था के बिना स्वतंत्रता असंभव है, और व्यवस्था संगठन से आती है।

एक कृषि प्रधान राष्ट्र, जैसे कि जेफरसन का देश, को तुरंत किसी गिल्ड संगठन की ज़रूरत नहीं थी, जैसा कि मध्ययुगीन शहरों को थी और उन्होंने इसे विकसित किया था। कोई भी व्यवस्था न तो मूर्खतापूर्ण होती है और न ही समय की कसौटी पर खरी उतरती है। एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था विकसित करें और उसे अमल में लाएँ, और नरक के लोग छेनी चलाना शुरू कर देंगे; जोंक खून चूसना शुरू कर देंगे और कीड़े-मकोड़े उन कोनों को संक्रमित कर देंगे जहाँ कोई ध्यान नहीं दिया गया।

इंग्लैंड और अमेरिका में एंग्लो-सैक्सन पाठकों को प्रेस ने किस हद तक भ्रमित कर रखा है, यह कल और अभी मेरे डेस्क पर आए एक पत्र से स्पष्ट है, जो किसी भी तरह से मूर्ख नहीं है। मैं यह दिखाने के लिए इसे उद्धृत कर रहा हूँ कि क्या हो सकता है:

अपनी नवीनतम पुस्तक में क्रिस्टोफर हॉलिस कहते हैं कि मुसोलिनी ने निजी बैंकरों से फाउंटेन पेन से मनमाने ढंग से मुद्रा या ऋण बनाने की शक्ति छीनकर इटली को एक सभ्य मुद्रा प्रणाली प्रदान की है। उनका तात्पर्य है कि सरकार वहाँ मुद्रा के निर्गमन को नियंत्रित और संचालित करती है।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में ऐसे क्रांतिकारी सुधार के लिए, जिसके लिए बैंकरों को जी-जान से लड़ना होगा, सिर्फ़ उनके शब्दों पर भरोसा करने से हिचकिचाते हुए, मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि क्या ऐसा है। अगर ऐसा है, तो इटली जाना एक बेहतर विकल्प होना चाहिए।

यह नवंबर 1937 की बात है; यानी इतालवी बैंक सुधार के दो साल बाद। तथ्य तो मौजूद हैं, लेकिन यह युवक लीहकैपिटल प्रेस से इतना प्रभावित हो चुका है कि वह अपने किसी दोस्त के निजी बयान के बिना उन पर यकीन ही नहीं कर सकता।

नीचे कैफ़े में दिख रहे जेंट, जो अभी-अभी इंग्लैंड से लौटे हैं, उन्हें नहीं पता था कि यह कर निगमित पूँजी पर लगाया गया था, निजी पूँजी पर नहीं। उन्हें लगा कि उन्हें पता है कि क्या हुआ था। उन्होंने अपने लंदन के अख़बार में संक्षिप्त, बिना उच्चारण वाला नोटिस पढ़ा था।

रूसी क्रांति इस चक्र का अंत थी। इसने उन्नीसवीं सदी में शब्दों के साथ की गई धोखाधड़ी को जारी रखा, इसने "सर्वहारा वर्ग की तानाशाही" जैसे झूठे शब्दों का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ था कुछ लोगों की तानाशाही, वगैरह। बोल्शोई अब शब्दों की परिभाषा भी नहीं देंगे। वे क्रांति नहीं चाहते। कम से कम जिनसे मैं छपी पत्रिकाओं में मिला हूँ, या जिन दिनों उनसे जवाब माँगा था, उनमें से किसी ने भी नहीं चाहा। वे स्पष्ट शब्दों, अर्थों की स्पष्ट परिभाषा के लिए लड़ाई नहीं लड़ेंगे, इसलिए कोई चाहे कितनी भी नापसंद क्यों न हो, जिन चीज़ों को वे नष्ट करना चाहते थे, वे बस उनके साथ स्थिर, स्थिर नहीं रह सकते।

हम, या कम से कम मैं, इस समय रूस से कोई स्पष्ट जानकारी नहीं पा सकता कि स्टालिन का आर्थिक अर्थ क्या है। कोई यह दावा भी नहीं करता कि वह, स्टालिन, जानता है। कम से कम मैंने ऐसा कोई दावा नहीं देखा है, और उनके प्रतिद्वंद्वी, श्री ब्रोंस्टीन भी इससे ज़्यादा स्पष्ट नहीं हैं। इसलिए गुलाबी बुद्धिजीवी वर्ग।

वे शब्दों को परिभाषित करने में नहीं लगे हैं। वे जानकारी इकट्ठा करने में नहीं लगे हैं। वे इस प्रायद्वीप की वास्तविक घटनाओं, जैसे रॉसोनी के कृत्य और स्पष्ट घटनाओं, पर रिपोर्ट करने का प्रयास नहीं करते हैं।
बयान.

"अनाज के इस ढेर में एक और राजनीतिक कारण छिपा है: हर इतालवी को रोटी की गारंटी मिलनी चाहिए, बिना बेतुके दामों में उछाल के, बिना अनैतिक सट्टेबाजी के।" रॉसोनी मानते हैं कि

यह कोई नई अर्थव्यवस्था नहीं है, या यूँ कहें कि उनके शब्द हैं, "हम कोई नई अर्थव्यवस्था हासिल नहीं कर पा रहे हैं।" हालाँकि, हम निश्चित रूप से "नाक के आगे गाजर"वाद (खुशी की "खोज") से आगे बढ़ चुके हैं।

एक अर्थ में, यह कमोबेश मेन्सियस द्वारा प्रशंसित नौ-क्षेत्रीय प्रणाली की ओर वापसी है। नकारात्मक पक्ष यह है कि यह सीधे तौर पर धन को उपभोग्य वस्तुओं के समूह के बराबर नहीं मानता। लेकिन, दूसरी ओर, यह प्रभावी है, क्योंकि जनता और सार्वजनिक हित के लिए मूल्य का प्रत्येक ईमानदार नियंत्रण, मौजूदा धन की क्रय शक्ति को प्रभावित करता है। दो साल पहले, एक इतालवी, जो रॉसोनी जितना ही प्रसिद्ध था या शायद उससे भी ज़्यादा प्रसिद्ध था, लेकिन कैबिनेट में नहीं था, ने मुझे लिखा था:

"आधुनिक समाज की दो बीमारियाँ हैं बैंकों के माध्यम से सूदखोरी का वैधीकरण, और सीमित देयता कंपनी कानूनों में चोरी को वैध बनाना।"

यह एक निजी पत्र था और मुझे कभी समझ नहीं आया कि मैं इसे उद्धृत कर पाऊँगा या नहीं। अब मैं ऐसा करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र महसूस करता हूँ, क्योंकि ऐसा विचार अब अविवेकपूर्ण नहीं रहा। चाहे वह पत्र मूल रूप से एक निजी राय थी या उपयुक्त समय पर सार्वजनिक होने वाली बात का संकेत, मूल विचार इटली में क्रियान्वित हो चुका है।

आप फासीवादी पाठ्यक्रम को डिग्री से माप सकते हैं:

1. कॉन्सेग्ना, एनो XII में: "आर्थिक ताकतों को अनुशासित करें और उन्हें समान करें राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा करना होगा।"

2. अगली शरद ऋतु में मिलान का भाषण: "उत्पादन की समस्या हल हो गई, अर्थशास्त्रियों ने आगे बढ़ना जारी रखा राज्य द्वारा वितरण की समस्या का समाधान किया जाना चाहिए।

3. निरंकुश शासन। सीएच डगलस का सिद्धांत। जेफरसन की नीति के साथ सादृश्य। सुदृढ़ अर्थशास्त्र के आधार सहस्राब्दियों से एक जैसे रहे हैं। 'निश्चित रूप से कोई राष्ट्र तब तक उचित और ईमानदारी से लाभांश का भुगतान नहीं कर सकता जब तक उसके पास विभाजित करने के लिए कुछ न हो।'

क्रय शक्ति के वितरण के विभिन्न संभावित तरीकों के लिए एक संपूर्ण अंक की आवश्यकता होगी इस पत्रिका में उनका वर्णन कीजिए।

प्रशंसा को सही मात्रा में बनाए रखने के लिए, लोकतंत्र-विरोधी को यह स्वीकार करना होगा कि अमेरिकी संविधान अमेरिकी सरकार को अपनी मुद्रा को केंद्रीय बनाने का पूरा अधिकार देता है। संवैधानिकता के बारे में गुब्बारे फुलाना रूजवेल्ट की बकवास और बरूचियन बकवास के अलावा कुछ नहीं है। अमेरिकी कांग्रेस, अगर ईमानदार होती और मान लेती कि उसके सैकड़ों वानरों में कुछ दर्जन लोग भी शामिल हैं, तो कल डॉलर की क्रय शक्ति एक बुशल या किसी भी तरह के गेहूँ, छह पाउंड बेहतरीन बीफ़ स्टेक, दो गज सर्ज या किसी खास किस्म के चार पाउंड ऊन, या राष्ट्रीय संसाधनों के उचित सर्वेक्षण के बाद जो भी मिले, उस पर तय कर सकती थी।

इसे कोई भी व्यक्ति, सिवाय एक झूठा व्यक्ति या व्यक्तिगत राजनीतिक लाभ के लिए प्रयासरत व्यक्ति ही छुपा सकता है। अमेरिका में यह सरकार के मौखिक उपकरण का दोष नहीं है, बल्कि इच्छाशक्ति की जड़ सड़न या विशुद्ध पाशविक अज्ञानता है जो इन सुधारों में बाधा डालती है।

अगर ऐसा सुधार फ़ासीवाद है, तो यह जैक्सोनियन फ़ासीवाद ही होगा। किसी भी देश को किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था की आवश्यकता होती है। स्पेनिश-अमेरिकी युद्ध के दौरान, जब हम बच्चों (मेरे समय के बच्चों) को प्रशिक्षण दिया जा रहा था, खुली व्यवस्था की एक शब्दावली प्रचलित हुई। हो सकता है कि अंतिम द्वीप और अमेरिकी महाद्वीप एक खुली व्यवस्था की माँग करें, न कि यूरोप महाद्वीप के लिए अनुकूलित। लेकिन किसी भी हालत में, आइए हम यह देखने की कोशिश करें कि क्या है और क्या रहा है, और आइए हम इन वास्तविकताओं को मिलॉर्ड्स बंकम और वंकम द्वारा बताई गई बातों और अपने शोधपत्रों में हमें बताई गई बातों से अलग रखने का प्रयास करें।

खुले स्वरूप में सैनिकों का अनुशासन ब्रैडॉक के अधीन सैनिकों के अनुशासन से भिन्न है, जिन्होंने 1776 से पहले भारतीयों से लड़ने की कोशिश की थी। अगर यह शिष्टाचार की बात हो, तो मैं सैन्य तुलना के लिए क्षमा चाहता हूँ।

मुझे ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मैं किसी तरह अपनी बात रखना चाहता हूँ। मैं "स्वतंत्रता", "व्यवस्था", "ज़िम्मेदारी", "चंचलता" जैसे शब्दों के बीच एक सही अंतर स्थापित करना चाहता हूँ।

मुसोलिनी का हालिया बयान कि "पूंजी राज्य की सेवा में है", एडम स्मिथ के इस वाक्य का उत्तर है: "एक ही व्यवसाय के लोग आम जनता के खिलाफ साजिश के बिना कभी एक साथ नहीं मिलते।"

रख-रखाव वाले प्रेस और किराए के छद्म अर्थशास्त्रियों की सबसे बुरी बात यह है कि वे उन लेखकों की वास्तविक महानता को कभी उजागर नहीं करते जिनकी वे प्रशंसा करने का दावा करते हैं और जिन्हें वे अपने घातक सिद्धांतों का श्रेय देते हैं। स्मिथ का यह वाक्य सच था।

उन्नीसवीं सदी को इसका सामना कभी नहीं करना पड़ा। इसका समाधान और संतुलन पाने के लिए उसे सौ साल और रोमाग्ना के एक लोहार के बेटे की ज़रूरत पड़ी। इसीलिए विभिन्न निगमों, या उच्च केंद्रीय संघ संगठनों की स्थापना हुई, जिनमें "दूरदर्शिता और ऋण" निगम भी शामिल था। ऋण को जीवन रक्त घोषित किया गया।

इस लेख का शेष भाग ईमानदार लेखकों के विविध वक्तव्यों का उत्तर देने के लिए प्रयुक्त किया गया है।
किसी को वर्तमान विचारों को सहसंबंधित करने का प्रयास करना चाहिए, कुछ गलतफहमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए, भले ही वे सभी विषय के एक ही भाग से संबंधित न हों ।

इटली द्वारा अपनी मुद्रा स्वयं बनाने के बारे में पूछे गए पत्र के उत्तर में एक फुटनोट के रूप में। इटली अपनी मुद्रा स्वयं बनाता है, लेकिन ऋण एक स्वाभाविक मानवीय उत्पाद है। जब तक कोई व्यक्ति किसी अन्य पर भरोसा करता है, तब तक कोई भी राज्य व्यक्तिगत ऋण के छोटे-छोटे टुकड़ों को, जो स्वभाव से ही परोपकारी और भाईचारे वाले होते हैं, घास की तरह उगने से पूरी तरह नहीं रोक सकता।

इटली में कोई राज्य-पूजा नहीं है। "राज्य की पूजा" मुहावरा अज्ञानता में और दुष्प्रचार के उद्देश्य से गढ़ा गया है।

आप इसे सीधे स्रोत से समझ सकते हैं। इटली में राज्य व्यक्तिगत पहल को दबाने के लिए नहीं, बल्कि दुरुपयोग को रोकने और तब उचित उपाय खोजने के लिए है जब परस्पर विरोधी हितों में अपना समाधान खोजने की पर्याप्त समझ न हो।

एक दर्जन संवाददाताओं और दो दर्जन बातचीत के अंत में, जवाब में, हाँ, इस समय इतालवी कॉर्पोरेट राज्य में खामियाँ हैं और ये पूर्व एकाधिकारवादियों के अंधविश्वास, बचे हुए विश्वास और गंदी आदतों के कारण हैं। इटली में, सभी देशों की तरह, मानव-सूअर, सुस्त और आलसी दिमाग हैं जो अभी भी पुरानी दलदल में फँसे हुए हैं, तोड़फोड़ करने की कोशिश कर रहे हैं, अपने पड़ोसियों को ठगने की कोशिश कर रहे हैं, सीधे-सादे और भोले-भाले लोगों को अपने लिए और अपनी गतिविधियों से प्रभावित होने वाली जनता के लिए अधिकतम परिणाम प्राप्त करने से रोक रहे हैं।

लेकिन मेरा दृढ़ विश्वास है कि इन कमियों को समय रहते दूर कर लिया जाएगा। मैंने अभी तक किसी भी ऐसे व्यक्ति को हतोत्साहित करने की प्रवृत्ति नहीं देखी है जो इन घटती बाधाओं, या "पवनचक्कियों" से अकेले ही लड़ने का बीड़ा उठाता है।

"रोमन दान माप है," जिससे मेरा तात्पर्य है कि 2,000 और के लिए रोमन प्रतिभा
अधिक वर्षों के उपाय के लिए एक प्रतिभा रही है।

राज्य की शक्ति की सीमाएँ होती हैं (चाहे वह किसी भी सिद्धांत पर आधारित हो), और कुछ चीज़ें राज्य नहीं कर सकता। अत्यधिक रूसी प्रयोग अब यह दर्शाने में व्यस्त है कि जब राज्य अपने प्लिमसोल से बहुत ज़्यादा भार उठाने की कोशिश करता है तो क्या होता है।

उन्नीसवीं सदी के राज्य ने बिना किसी नियंत्रण के काम चलाने की कोशिश की। मुसोलिनी का इटली शायद पहला राज्य है जिसने गंभीरता से खुद से पूछा कि बर्बादी का बीज बोए बिना निजी हाथों में कितनी आज़ादी छोड़ी जा सकती है।
मेरा मतलब है कि किसी अन्य राज्य ने कभी इस प्रश्न की गंभीरता से जांच नहीं की।

जेफरसन के समर्थक विशेषाधिकार की बुराइयों और केंद्रीकृत वित्तीय व्यवस्था की सड़न पर हमला कर रहे थे।

वे जानते थे कि अपने समय में वे इसके विपरीत बहुत दूर तक नहीं जा पाएंगे।

अगर मैं यह नहीं मानता कि इटली में फ़ासीवाद का मतलब पूर्ण विकास और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकतम क्षेत्र है जो एक समझदार सामाजिक व्यवस्था के अनुकूल है, तो मुझे भी उन गुलाबी चाय वाले लड़कों और फ्रांसीसी छद्म साहित्यकारों की तरह फ़ासीवाद-विरोधी होना चाहिए, जिन्हें अभी तक यह पता नहीं है कि इटली में कुछ शुरू हो गया है। व्यवस्था के ज़रिए ही स्वतंत्रता में विश्वास करने की अनुमति है। आपको यह अधिकार सभ्य यातायात नियमों से मिलने की ज़्यादा संभावना है, बजाय इसके कि आप ढीठता या कुटिलता से ऐसा करें, जैसा कि उस नायक ने किया था जिसने ऊँट पर हमला करते समय अपने ही ऊँट को गोली मार दी थी।

आर्थिक और राजनीतिक समाचारों के प्रसारण की कमी, या यूँ कहें कि आर्थिक चिंतन की स्थिति से जुड़ी खबरों की कमी, मुझे आज भी उतनी ही चिंता है जितनी 25 साल पहले किताबों के बारे में वास्तविक खबरों के अभाव को लेकर होती थी। तब ऐसी कोई जगह नहीं थी जहाँ कोई आसानी से जान सके कि विदेश में क्या लिखा जा रहा है। आज एक गंभीर फ़ासीवाद-विरोधी यह जानना चाहेगा कि उसका सामना किससे है, और क्या उसकी प्रिय नफ़रतें किसी मौजूदा और वस्तुगत वास्तविकता से मेल खाती हैं।

कार्ल विंटर ने सिविल्टा फासिस्टा के अक्टूबर अंक में लिखा है, "लोकतांत्रिक दुनिया में एक फासीवाद-विरोधी विचारधारा है जो सिर्फ एक स्थिति और बुरे विश्वास पर आधारित है; एक फासीवाद-विरोधी विचारधारा भी है जो अज्ञानता और सद्भावना से प्रेरित है।"

मैं विंटर के उस लेख की अनुशंसा करता हूँ, और अधिनायकवादी देशों में वामपंथ को एक रचनात्मक तत्व के रूप में प्रस्तुत करने के उनके विचार की भी। बेनियामिनो डी रिटिस ने भी "सीएफ़" के उस अंक में अमेरिका में उत्तर और दक्षिण के बीच शत्रुता के लुप्त होने पर एक लेख लिखा है, जो किसी को एक नए और सुधरे हुए यूरोप की संभावनाओं के बारे में सोचने पर मजबूर कर सकता है।

मैंने बार-बार कहा है कि जो कोई भी नए इटली से समझदारी से प्यार या नफरत करना चाहता है, उसे कम से कम कुछ इतालवी मासिक पत्रिकाएं पढ़नी चाहिए, जैसे कि रॉसोनी की ला स्टिरपे, ला रेविस्टा डेल लावोरो, क्रिटिका फासिस्टा, या रासेग्ना मोनेट अरिया, जिन्हें प्रोफेसर स्पाइनेडी, सीनेटर बेवियोन और फुरिओ लेनज़ी द्वारा संपादित किया गया है।

अंत में, दिसंबर के BUQ में मोंटेग्यू फोर्डहैम के प्रशंसनीय लेख में एक बात है जिसे मैं और स्पष्ट रूप से परिभाषित होते देखना चाहूँगा। जब वे "उपभोक्ताओं के लिए विशेष मुद्रा निर्गमों के मूल्य पर संदेह करते हैं," तो मुझे समझ नहीं आता कि उनका क्या मतलब है। क्या कुछ पाठक यह नहीं सोचेंगे कि ऐसे मुद्दे डगलस के मूल सिद्धांत का हिस्सा थे? ऐसा नहीं है।

उपलब्ध वांछित वस्तुओं के साथ कुल क्रय शक्ति को समान करने के मामले के रूप में, विसंगति, जब एक होती है, सैद्धांतिक रूप से तत्काल बाजार में किसी भी व्यक्ति द्वारा पूरी की जा सकती है जो नया पैसा (या क्रेडिट) बना सकता है और खर्च कर सकता है।

बहुत से डगलस-विरोधी मानते हैं कि सबसे ज़रूरतमंदों को वितरण का मतलब है सबसे तेज़ी से खर्च। ब्रिटिश (लानत) खैरात निश्चित रूप से उन लोगों को दी जाती है जो उत्पादन में शामिल नहीं हैं, यानी अस्थायी तौर पर काम न करने वाले गैर-उत्पादकों को। आठ साल से बिना काम के रहने वाले पुरुषों के मामले में "अस्थायी तौर पर" सिद्धांत बहुत कमज़ोर है।

लेकिन डगलस लाभांश, जैसा कि मुझे याद है, मेजर ने हमें बताया था, राष्ट्र के शेयरधारकों को दिया जाता है। यह हमारे पूर्वजों द्वारा किए गए काम (ज्यादातर आविष्कारशील, लेकिन संयंत्र-निर्माण कार्य भी) के संबंध में दिया जाता है, यानी उन श्रमिकों द्वारा जो अब भोजन करने और घरों का उपयोग करने के लिए मौजूद नहीं हैं।

मैं नहीं जानता कि श्री फोर्डहम इटली में बच्चों के लिए भत्ते को भावी उत्पादकों के लिए या अस्थायी तौर पर गैर-उत्पादकों के लिए मानते हैं; यह निश्चित रूप से तत्काल उपभोक्ताओं और अस्थायी तौर पर गैर-उत्पादकों के लिए दिया जाता है।

कम से कम निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं, जिनमें निम्नलिखित शर्तें शामिल हैं।

ऋण जारी करना - यदि इसे गैर-ब्याज वाले "मापा दावों" अर्थात राज्य नोटों (जैसा कि कम से कम 1816 तक जेफरसन और उसके बाद से सभी जानकार अर्थशास्त्रियों द्वारा समझा गया था) के प्रत्यक्ष मुद्दे के रूप में नहीं बनाया जाता है, तो इसे उधार लेकर और ब्याज का भुगतान करके जारी किया जाता है, और मैं जानना चाहूंगा कि श्री एफ. के अनुसार किसे ऐसा ब्याज मिलना चाहिए, भले ही यह उतना ही कम हो जितना कि श्री रूजवेल्ट को पुराने विचारों के समर्थकों को देना चाहिए।

उधार लिए गए ऋण को ऋण के रूप में दर्ज किया जाता है।

बिना उधार लिए गए ऋण का मुद्दा धन संबंधी मुद्दा है।

श्री फोर्डहम कहते हैं कि "विशेष धन संबंधी मुद्दे", और मैं इसे अनुचित रूप से नहीं पढ़ना चाहता।
जिसका अर्थ है "विशेष प्रकार के" धन का जारी होना।

हालांकि, मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मोनेटा डी'एविग्लियानो या गेसेलाइट स्क्रिप का मुद्दा, इसके विलंब शुल्क के साथ, मापे गए दावों का मुद्दा है, जो 100 महीनों में समाप्त हो जाता है, तथा कोई ऋण नहीं बचता है।

डगलस मासिक स्टाम्प को कर कहते हैं, लेकिन मैं फिर से कहना चाहता हूँ कि राज्य, विनिमय का एक ऐसा उपाय प्रदान करके, जो एक विनिमय योग्य दावा भी है, एक सेवा करता है और मासिक स्टाम्प को ऐसी सेवा का प्रतिफल माना जा सकता है। यह, किसी भी स्थिति में, प्रचलन में मौजूद स्क्रिप के 12 प्रतिशत के बराबर प्रति वर्ष की राशि तक अन्य कराधान की आवश्यकता को समाप्त कर देता है।

यह डगलस की किसी भी रद्दीकरण योजना से ज़्यादा आसानी से समझ में आता है। इसका शैक्षणिक मूल्य बहुत बड़ा है। मेरा मतलब है कि ऐसे पैसे का इस्तेमाल करने वाले साधारण से साधारण लोग भी कैम्ब्रिज के "अर्थशास्त्र" के आम छात्रों की तुलना में पैसे के बारे में ज़्यादा स्पष्ट समझ रखते हैं।

अप्रयुक्त क्रय शक्ति पर विलंब शुल्क के लिए कई वैकल्पिक योजनाएँ हैं, लेकिन उनमें से कोई भी आम तौर पर उतनी शिक्षाप्रद नहीं है। उदाहरण के लिए, मिलहौड योजना केवल कुछ निर्यातकों और आयातकों और उनके कुछ क्लर्कों को ही शिक्षित करेगी।

स्वाभाविक रूप से, यदि आप उपलब्ध वांछित वस्तुओं से अधिक ऋण या धन या यहां तक कि विशेष प्रकार का धन जारी करते हैं, तो आपके पास मुद्रास्फीति है, अर्थात एक बीमारी है, जो मुद्दे के उद्देश्य को पराजित करती है, जब तक कि आपके पास सरकारी मूल्य निर्धारण न हो, जैसा कि आज इटली में डगलस और ऑपरेटिव द्वारा मांग की गई है।

अवमूल्यन एक धोखा है और इसके अलावा, यह कुल मिलाकर क्रय शक्ति में भारी कमी है। जो व्यक्ति अवमूल्यन का समय चुनता है, वह हमेशा किसी और को धोखा दे सकता है।

भले ही उसका इरादा अच्छा हो, वह बदमाशों और कठिनाई में फंसे लोगों को सट्टेबाजी के लिए प्रेरित करता है और ऐसा करने के लिए मजबूर करता है, जो व्यापारीवाद और व्यापारी-सूदखोरी के माहौल में जीने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

सोने के मालिक, आम जनता की तुलना में कहीं अधिक चतुर, धूर्त और खून चूसने वाले होते हैं, उन्होंने स्वाभाविक रूप से, और (यदि हम इतने मूर्ख न होते) तो शिक्षाप्रद ढंग से, स्थिरीकरण कोष की स्थापना की है, ताकि उनके हितों का ख्याल रखा जा सके।

गुलाम वह है जो किसी के द्वारा मुक्त किये जाने की प्रतीक्षा करता है।

मार्क्सवाद, पतन का सिद्धांत, फ्रांसिस मैकेवॉय द्वारा

एम ARXISM जर्मन यहूदी कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित सार्वभौमिक विनाश का सिद्धांत है, जिसे रूस में "साम्यवाद" के नाम से राजनीतिक अभिव्यक्ति मिली है।

यह दूसरा ढोंग, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद से जुड़े छद्म-वैज्ञानिक शब्दजाल और मूर्खों के लिए इसके बकवास—सर्वहारा वर्ग की तानाशाही, मानव बंधुत्व, वगैरह—से मुक्त होकर, खुद को हत्या और आतंक से संचालित निरंकुश राज्य-पूँजीवाद के शासन के अलावा और कुछ नहीं बताता। इसकी सामूहिकता की व्यवस्था में, सामूहिक पिशाचवाद प्रमुख कारक है।

कहने की ज़रूरत नहीं कि अराष्ट्रीय बुद्धिजीवियों का आदर्शवादी समतावाद कहीं भी कभी अस्तित्व में नहीं रहा, लेकिन यह तथाकथित राजनीतिक साम्यवाद नहीं है जो इस देश के लिए तत्काल ख़तरा है। यह अंतिम परिणति होगी, लेकिन पूर्वी कमिसारों के अपनी क्षमता में आने से पहले, संभावित पीड़ितों के मन को इस घटना के लिए तैयार करना होगा, यानी उन्हें आवश्यक ग्रहणशीलता की सीमा तक विकृत और विषाक्त करना होगा। यहीं सांस्कृतिक मार्क्सवाद का कार्य निहित है, मन का प्रारंभिक बोल्शेविकीकरण, जो उदारवाद के अंधाधुंध सहिष्णुता-मनोविकृति द्वारा सुगम बनाया जाता है, जो सामाजिक-लोकतंत्र में निहित है, और इसके अंतिम अपरिहार्य पतन की ओर ले जाता है।

इस प्रकार, रूस में मार्क्सवाद वर्तमान में राजनीतिक प्रभुत्व रखता है और इस प्रकार गतिविधि के हर क्षेत्र को नियंत्रित करता है, जबकि यहाँ और अन्य लोकतंत्रों में, इसका भ्रष्ट प्रभाव अभी भी मुख्यतः सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में ही स्पष्ट है। यह किसी भी मात्र सिद्धांतवादी राजनीतिक गतिविधि से कहीं अधिक कपटी और मौलिक रूप से विनाशकारी है, क्योंकि विध्वंसक भौतिकवाद का सिद्धांत, जिसे लोगों के जीवन में सूक्ष्म रूप से प्रवेश कराया जाता है, समस्त आध्यात्मिकता, नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय संस्कृति का विनाशक है। मोमसेन के शब्दों में, यह "विश्वदेशीयता और राष्ट्रीय विघटन का एक सक्रिय उभार" है। राजनीतिक साम्यवाद के विरोधी और ठगे गए, साथ ही सतही जनता के बड़े हिस्से, अनजाने में ही समकालीन जीवन को संक्रमित करने वाली कई अस्वस्थ धाराओं के साथ सांस्कृतिक बोल्शेविज्म के सारागोसा सागर में बह जाते हैं।

बुराई के अनेक फूल हैं जो संवेदना के साधकों और सुखवादियों को आकर्षित करते हैं।
आधुनिक शहर, अपनी सड़न की इंद्रधनुषी चमक के साथ!

आज कला के नाम से जो जाना जाता है, उसकी तुलना एलिज़ाबेथ युग की आकर्षक उपलब्धियों से, या अन्य और कमतर युगों की उपलब्धियों से, यहाँ तक कि वर्तमान शताब्दी के आरंभ तक, कीजिए। औद्योगिक क्रांति के आगमन और उसके साथ-साथ किसानों के विनाश के साथ लोक-मन का स्तब्धीकरण गंभीर रूप से शुरू हो गया। अब यह अनाकार हो चुका है, और आध्यात्मिक संक्रमण के विरुद्ध प्रतिक्रिया करने में असमर्थ है। फिर भी, सब कुछ के बावजूद, 19वीं शताब्दी अपने पतन के दौर में भी कुछ महान लेखकों और कवियों, अच्छे चित्रकारों और योग्य संगीतकारों को जन्म दे सकी।

आज लोगों का बौद्धिक भोजन क्या है, हमारे धन्य लोकतंत्र का अमृत क्या है?
अतियथार्थवादी चित्रकला और मूर्तिकला, रुग्ण और विकृत कल्पनाओं का एक तांडव, जिसका कर्कश प्रतिरूप मधुर स्वर और गर्म लय में मिलता है—नाइट क्लब के विक्षिप्तता से दूषित जंगल संगीत। उत्तेजना, विश्वव्यापीकरण और प्रचार से भरी फ़िल्में। सनसनीखेज या कामुक, या दोनों तरह की किताबें और पत्रिकाएँ। झूठ, तुच्छ बातों और महिलाओं के चेहरों की बजाय उनके शरीर की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए रची गई तस्वीरों से भरे अखबार। यह अजीब है कि इतनी सारी "सुंदर और आकर्षक मिस फलां" अपनी स्कर्ट ऊपर उठाती हैं

फोटो खींचे जाएं.

आर्थिक क्षेत्र में उदारवाद, जो सभी लोकतांत्रिक दलों का दार्शनिक मूलमंत्र है, शिकारी प्रवृत्तियों को, और ताकतवरों द्वारा कमज़ोर और कम चालाक लोगों पर प्रभुत्व या उनके विनाश को, बेरोकटोक बढ़ावा देता है। अप्रमाणिक मानवतावादी, जो शारीरिक बल के किसी भी प्रयोग की निन्दा करते हैं, सामूहिक धन-बल के प्रयोग या बेईमान "व्यावसायिक क्षमता" के आर्थिक अत्याचार पर कोई रोक नहीं लगाने का आह्वान करते हैं। और फिर भी, क्रूर शारीरिक हिंसा के अलावा भी धमकाने के अन्य और अधिक घृणित रूप हो सकते हैं।

गुलामी और पराधीनता हमेशा केवल शारीरिक नहीं होती। जिन व्यक्तियों के पास एक भी बचाव का साधन नहीं है, और जिनके पास केवल व्यापारिक चालाकी के अलावा कोई प्रतिभा नहीं है, वे अन्य असंख्य रूप से अधिक योग्य और प्रतिभाशाली लोगों को घोर आर्थिक निर्भरता की स्थिति में धकेल सकते हैं, और ऐसा करते भी हैं। वे लड़ाई को उस क्षेत्र में ले आए हैं जहाँ उन्हें विश्वास है कि उनकी जीत निश्चित है, जहाँ धन-संपत्ति का बोलबाला है। धन की तानाशाही में मुनाफ़ा अनिवार्य रूप से पहला और अंतिम लक्ष्य होता है, और जीवन के हर चरण में व्यापक मानकीकरण, जनता की दुधारू गाय को लूटने का सबसे तर्कसंगत और इसलिए लाभदायक तरीका प्रस्तुत करता है। राष्ट्र स्वयं को जन्म से लेकर मृत्यु तक वित्तीय और वाणिज्यिक श्रृंखला-प्रणाली के प्रभुत्व में पाता है। नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आदर्श "लाभदायक प्रस्ताव" नहीं हैं। उन्हें शेयर बाज़ारों में "धौंस" या "सहन" नहीं किया जा सकता। साथ ही, जिन लोगों के पास ये आदर्श हैं, उनमें मानकीकृत शोषण और छल-कपट का शिकार बनने के लिए आवश्यक विनम्रता और उदासीनता का अभाव है।

इस प्रकार मार्क्सवादी आध्यात्मिक विध्वंस, व्यावसायिक भौतिकवाद के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलता है, मूर्खता और पतन का "मुनाफ़ा" कमाता है। एक मिसाल आगे बढ़कर दूसरी मिसाल में बदल जाती है (एक मुहावरा जो आधुनिक लोकतांत्रिक मानसिकता के पतन को स्पष्ट करता है) और लाइसेंस और भी ज़्यादा लाइसेंस को जन्म देता है, और अंततः अनियंत्रित दुरुपयोग में परिणत होता है। कील का शास्त्रीय पतला सिरा यहाँ, वहाँ और हर जगह घुसा हुआ है, और दरार तब तक चौड़ी होती जाती है, जब तक कि "असली" राष्ट्र अपने पतन की ओर नहीं लड़खड़ा जाता।

पतन के दूत इसे "प्रगति" कहते हैं। यह नरक की ओर जाने वाले उनके अपने निर्धारित मार्ग पर प्रगति है। आध्यात्मिक बोल्शेविज्म की धूर्त प्रगति, राष्ट्र के प्राणों को क्षत-विक्षत कर रही मार्क्सवाद की सड़ांध—एक भयावह कामोद्दीपक औषधि जिसे पतन के जादूगर लोकतांत्रिक स्वतंत्रता, आत्म-अभिव्यक्ति और उन्नत विचार के विभिन्न लेबलों के तहत देते हैं। "समय के साथ चलना चाहिए" एक निरर्थक नारा है, मानो वर्तमान सामाजिक अराजकता "अप्रत्याशित घटना" का परिणाम हो, और विश्वव्यापी पतन के दलदल में फँसना ब्रिटिश लोगों की अपूरणीय नियति बन गई हो।

नैतिक और सांस्कृतिक सड़ांध के साथ-साथ, नस्लीय क्षीणता और संकरता का सिद्धांत समकालीन क्षेत्र में प्रवेश कर रहा है, और यही ज़हर फैलाने वाले नस्ल-सीमिति और रंगभेद उन्मूलन के अभियान में सबसे आगे हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य और संस्कृति के स्रोत, ग्रामीण इलाकों के लोगों का आर्थिक रूप से गला घोंटा जा रहा है, और उनके सहज विरोध की बाधा को हटा दिया जा रहा है। बचे-खुचे अवशेषों को कृत्रिम और अप्राकृतिक वातावरण के लिए शहरों में इकट्ठा किया जा रहा है ताकि उन्हें प्रकृति से कटे, जड़ से उखड़े हुए महानगरीय जनसमूह का हिस्सा बनाया जा सके, और अंतरराष्ट्रीय दुकानों और सिनेमाघरों के अधिक लाभ के लिए वित्तीय लोकतंत्र के निष्क्रिय, अंधे पीड़ितों की संख्या बढ़ाई जा सके।

न तो सप्ताहांत में देहात या समुद्र की यात्राएँ, न ही बगीचे-उपनगरों में अर्ध-पृथक विला में बसना, लोगों के व्यापक विस्थापन, अंग्रेजी किसानों के लगभग पूर्ण विनाश की भरपाई कर सकता है, क्योंकि आर्थिक खतरों के अलावा, नैतिक, शारीरिक और सांस्कृतिक प्रभाव भी अकल्पनीय हैं। हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पूर्ण पुनर्निर्देशन और पुनर्नियोजन की अत्यधिक आवश्यकता के मद्देनजर, सामाजिक लोकतंत्र हमें "हरित क्षेत्र" और "राष्ट्रीय स्वास्थ्य" अभियान प्रदान करता है। बचकाने उपशामक उपाय, रेत के महल और कल्पना। सप्ताहांत के भगोड़े

एक मशीनी सभ्यता से, शहर को अपने मन में बसा लेते हैं, और उसे अपने अवचेतन कर्मों में प्रतिबिंबित करते हैं। यह उनके भाषण और साहित्य में, पोर्टेबल ग्रामोफोन के लिए उनके जैज़ रिकॉर्ड और उनके वायरलेस सेट में, उनके शहरी शिष्टता और दिखावे में उनके साथ रहता है।

स्मार्ट एलिक ने लंबे समय से भुला दिए गए अमीन्टास की जगह ली है, और शॉर्ट्स में एक स्टेटोटिक यहूदी महिला उसकी अमरिलिस है।
("ओ पर्सेफोन की गायिका।") आर्केडिया की तलाश में उन्हें एक सड़क-घर मिलता है। वे पत्तेदार घास के मैदानों में पान की बांसुरी नहीं सुनते, बल्कि एक नीग्रोइड जैज़ गीत या इंटरनेशनेल की धुन सुनते हैं, उन वीरान खेतों में जो "विकास" की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जहाँ से परियाँ भाग गई हैं।

पतन के ऐसे माहौल में, मार्क्सवाद मृत सागर के फल की तरह फल-फूल रहा है, जबकि मनुष्यता, दुर्बलता, लोभ, अहंकार और दुर्गुणों को बढ़ावा दिया जा रहा है और उनका शोषण किया जा रहा है। अस्वास्थ्यकर रुचियों और प्रवृत्तियों को सुझाव और "नेतृत्व देने" के प्रचार से उत्तेजित किया जाता है, और फिर व्यंग्यात्मक रूप से "जनता की माँग" कहा जाता है। हमारी सबसे सुंदर लड़कियाँ फिल्मों में, अंतर्राष्ट्रीय नृत्य मंडलियों में, या विदेशी कैबरे में मानवता के बहुरंगी मैल के सामने अपने आकर्षण का प्रदर्शन करती हैं।

राष्ट्रीय पतन का चरमोत्कर्ष, अगर अनियंत्रित रहा, तो राजनीतिक बोल्शेविज्म का नियंत्रण है। मार्क्सवादियों की योजना इसे छद्म आदर्शवादी समाजवाद के मुखौटे के नीचे चुपके से थोपने की है, जब सामूहिक मन सामूहिक पतन के विषाणु से पर्याप्त रूप से ज़हरीला हो चुका हो। मार्क्सवाद के अनुयायी कस्तूरी-चूहों की महामारी की तीव्रता से इसे कमज़ोर करते हैं, और हर गैर-ज़िम्मेदार सुख-प्रेमी, हर उदासीन अहंकारी, और हर मूर्ख मूर्ख जो हर पारंपरिक, देशभक्तिपूर्ण और स्वास्थ्यप्रद चीज़ की निंदा करना फैशनेबल या चतुराईपूर्ण समझता है, हमारे राष्ट्रीय पतन की गति को बढ़ाने में मदद कर रहा है।

दीवार पर लिखा है। क्या लोगों की नज़रें शेयर बाज़ार की रिपोर्टों, खेल के नतीजों, रोज़मर्रा के तुच्छ सुखों, अत्याचार और उत्पीड़न की झूठी बातों और नफ़रत के फ़ासीवाद-विरोधी ताने-बाने के अलावा और कुछ नहीं देखतीं? गौरतलब है कि जिन लोगों ने उस लिखावट के संकेत देखे और समझे हैं, उनके ख़िलाफ़ ही यह सारी लकड़बग्घे जैसी गुर्राहटें निर्देशित हैं।

मार्क्सवाद हर मूर्खता और कमजोरी से लाभ उठाता है, सभी कवचों में संयुक्तता की तलाश करता है, और सहिष्णुता तथा उससे भी अधिक सहिष्णुता की मांग करता है, जब तक कि उसकी अपनी असीम असहिष्णुता को थोपने का समय नहीं आ जाता।

भले ही उसके बुरे काम आधे-अधूरे ही रह जाएं, फिर भी निश्चित रूप से ब्रिटेन की आत्मा का विनाश एंटी-क्राइस्ट की वेदी पर एक बहुत बड़ी बलि होगी।

जेके हेयडन द्वारा लिखित उदारवाद शत्रु है

भाग एक

टी राष्ट्र एक स्वाभाविक एकता है, जो एक सामान्य प्रेम के आधार पर एक जीवित जीव के रूप में कार्य करता है, जो इसे बनाने वाले व्यक्तियों को एक साथ बाँधता है। यह स्वभाव से ही अस्तित्व में है, क्योंकि मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक और व्यक्तिगत दोनों है; यह सामान्य भलाई के लिए अस्तित्व में है, जो, जैसा कि अरस्तू ने माना है, व्यक्तिगत भलाई से अधिक उदात्त है; और इसलिए यह एक ऐसा जीवन है जो कुछ मामलों में किसी भी विशेष क्षण में इसे बनाने वाले व्यक्तियों के जीवन से भी बढ़कर होता है।

मैं "कुछ मामलों में" कहता हूँ, क्योंकि सत्य हमेशा उन त्रुटियों के बीच संतुलित होता है जो इसके एक पहलू को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती हैं और दूसरे को नज़रअंदाज़ करती हैं। हेगेल के अनुसार यह कहना ग़लत है कि राष्ट्र सभी मामलों में व्यक्ति से परे है, ठीक वैसे ही जैसे उदारवादियों के अनुसार यह कहना ग़लत है कि राष्ट्र अपने व्यक्तियों के अंकगणितीय योग से अधिक कुछ नहीं है। सत्य इन त्रुटियों के बीच स्थित है। राष्ट्र भागों से बनी एक इकाई है, और इसलिए इसका अस्तित्व इसके भागों से बड़ा है; क्योंकि जिससे बना है उसका अस्तित्व उससे बड़ा है जिससे वह बना है। इसमें संरचना का एक सिद्धांत है, वर्तमान मामले में प्रेम, जो इसके घटकों की क्षमताओं को साकार करता है, और इस प्रकार एक महान अस्तित्व का निर्माण करता है। इसके अलावा, राष्ट्र का महान अस्तित्व कई मायनों में स्पष्ट है।

राष्ट्र में एक निश्चित स्वाभाविक अमरता होती है जो उसके व्यक्तियों में नहीं होती; इसमें सृजन की एक निश्चित शक्ति होती है, जो इसकी मूल इकाइयों, परिवारों में निहित होती है; इसे किसी भी व्यक्ति के जीवन को किसी भी उचित कारण से लेने का अधिकार होता है, जो किसी भी व्यक्ति के पास नहीं होता। अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्र, एक आदर्श समुदाय, उन व्यक्तियों से परे होता है जिनसे यह बना है।

लेकिन यह सब केवल प्रकृति के क्रम में ही लागू होता है, जो कि वह क्रम है जिसमें राष्ट्र अस्तित्व में है।
मनुष्य, अर्थात् व्यक्ति, राष्ट्र के विपरीत, एक अलौकिक प्राणी है। सख्ती से कहें तो, उसका कोई प्राकृतिक लक्ष्य नहीं है; उसका केवल एक अलौकिक लक्ष्य है, जिसके अधीन उसका संपूर्ण प्राकृतिक जीवन, चाहे व्यक्तिगत हो या सामाजिक, है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि राष्ट्र, जो केवल प्राकृतिक व्यवस्था में है, अंतिम रूप से व्यक्ति के अधीन है। यह स्वभाव से ही अस्तित्व में है, ठीक इसीलिए कि इसके व्यक्ति अस्तित्व में आ सकें, और फिर उस अलौकिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकें जिसके लिए वे अस्तित्व में आए हैं।

यह मामला अत्यंत महत्वपूर्ण है और फासीवादियों को इसे अपने दिमाग में बिल्कुल स्पष्ट रखना चाहिए, अन्यथा वे अपने मामले की ताकत के मूल को खतरे में डाल सकते हैं। "अधिनायकवादी" शब्द का प्रयोग निंदनीय है, क्योंकि यह बहुत अस्पष्ट है, खासकर यदि मैंने जो अंतर अभी खींचा है वह स्पष्ट रूप से दिमाग में नहीं है। जबकि साम्यवाद पूरी तरह से अधिनायकवादी है, इस बात से इनकार करता है कि व्यक्ति के पास कोई अलौकिक अंत या नागरिक शक्ति के खिलाफ कोई अधिकार है, फासीवादी कभी-कभी धर्म के प्रति कृपालु तरीके से संतुष्ट होते हैं, जैसे कि वे उचित रूप से पूर्ण अधिनायकवाद का दावा कर सकते हैं लेकिन धार्मिक प्रथाओं के मामले में उदारतापूर्वक इसे त्याग सकते हैं। यदि यह उनके वास्तविक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है, तो यह उनके कारण की पूरी ताकत को चकनाचूर कर देगा, इस आरोप को सही ठहराएगा कि फासीवाद सार रूप में साम्यवाद से अलग नहीं है। हमें यह बात दोपहर की तरह स्पष्ट रखनी चाहिए कि हम राष्ट्रीय संगठन को व्यक्तियों से बड़ा मानते हैं, केवल प्रकृति के क्रम में और सामान्य भलाई के उद्देश्य से, जिस सामान्य भलाई को व्यक्तियों की अलौकिक नियति के प्रकाश में समझा जाना चाहिए।

यह स्पष्ट होने के बावजूद, "अधिनायकवादी" शब्द का प्रयोग अभी भी अस्वीकार्य है, क्योंकि इससे

गलतफहमी। यह सुझाव देता है कि राज्य, शासक की नागरिक शक्ति के अर्थ में, बच्चों को उनके माता-पिता के नियंत्रण से मुक्त करने जैसे कार्य करने के अधिकार का दावा कर सकता है, यदि उचित समझा जाए, भले ही माता-पिता ने अपने बच्चों के पालन-पोषण के अपने प्राकृतिक अधिकार को खोने के लिए कुछ भी न किया हो। राज्य द्वारा ऐसे किसी अधिकार का दावा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि परिवार को नष्ट करना प्रकृति के विरुद्ध है, और इसलिए यह संभवतः सामान्य भलाई के लिए नहीं हो सकता है। फ़ासीवादियों का ऐसा कोई अप्राकृतिक दावा करने का इरादा नहीं है; लेकिन वे कभी-कभी ज़ोर देने के लिए खुद को अधिनायकवादी कहते हैं, जिसका अर्थ है सामान्य भलाई के लिए शासन करने का पूर्ण अधिकार दावा करना। इस शब्द का यह प्रयोग उचित है; लेकिन यह गलतबयानी और यहाँ तक कि मासूम गलतफहमी के लिए भी बहुत खुला है।

इसके अलावा, जिस पर ज़ोर दिया गया है वह बिल्कुल अनावश्यक है। नागरिक शक्ति के ठोस सिद्धांत पर ज़ोर देने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह प्राकृतिक नियम के अनुसार शासक के पास नागरिक भलाई के लिए पूरी शक्ति है। कोई भी शक्ति पूर्ण से अधिक पूर्ण नहीं हो सकती, और इस मामले को यहीं छोड़ देना बेहतर है, सिवाय इसके कि नागरिक भलाई का क्या अर्थ है, इस पर विचार किया जाए।

इस संबंध में यह ध्यान देने योग्य है कि राष्ट्रीय संरचना आंतरिक संरचना से रहित नहीं है। इसके विपरीत, यह अपने संपूर्ण द्रव्यमान में जैविक है। प्रेम, इसका जीवन-सिद्धांत है, परिवार में वैवाहिक और माता-पिता के प्रेम से लेकर देशभक्ति तक, जो समग्र रूप से राष्ट्र को व्यक्तित्व प्रदान करती है; और इन सीमित अभिव्यक्तियों के बीच यह राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप, या विभिन्न सामाजिक लेकिन उप-राष्ट्रीय क्षमताओं में व्यक्तियों की आवश्यकताओं के अनुरूप, हर प्रकार और प्रकार की राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक, मध्यवर्ती सांद्रताएँ बनाता है। एक व्यक्ति एक साथ पति, राष्ट्रीय और उप-राष्ट्रीय राजनीति में मतदाता, डॉक्टर, कई कंपनियों में शेयरधारक, गोल्फ खिलाड़ी, प्रकृतिवादी, कला प्रेमी और भी बहुत कुछ हो सकता है; और प्रत्येक क्षमता में, जिनमें से कुछ राष्ट्रीय महत्व की हैं और कुछ नहीं, वह स्वयं को अन्य व्यक्तियों के साथ एक सामान्य प्रेम के बंधन में बंधा हुआ पाता है।

राष्ट्र के भीतर कुछ जैविक संकेंद्रण इतने महत्वपूर्ण हैं कि हम उनकी तुलना केवल मानव शरीर के प्रमुख अंगों से ही कर सकते हैं, जबकि अन्य अधिक सजावटी हैं। इस प्रकार, शासक स्पष्ट रूप से राष्ट्र का मुखिया है, कृषि और उद्योग उसके हाथ हैं, और परिवहन उसका लाल रक्त है; प्रचार राष्ट्रीय कान है, और सेना सुरक्षा कवच है; पुलिस शायद भक्षक कोशिकाएँ हैं, इत्यादि। दूसरी ओर, रॉयल अकादमी एक सुंदर गड्ढा है, वांछनीय और स्वास्थ्य एवं सुख के लिए एक उद्देश्य की पूर्ति करने वाला, लेकिन कम तात्कालिक।

राष्ट्रीय संरचना का जीवन ऐसा ही है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता का अर्थ है, अपने जीवन के उन सभी पहलुओं के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाने का अवसर प्राप्त करना जो उसकी सामान्य और विशिष्ट प्रकृति के अनुसार उसके लिए उपयुक्त हों, चाहे वे पहलू व्यक्तिगत हों या सामाजिक, महत्वपूर्ण हों या महत्वहीन। और इससे भी बढ़कर, इस संबंध में अवसर को सकारात्मक अर्थ में समझना चाहिए, क्योंकि प्रेम सामाजिक जीवन का सिद्धांत है।

अवसर का अर्थ केवल एक ऐसा समायोजन करना नहीं है जो व्यावहारिक रूप से असंभव हो, बल्कि समुदाय को एक व्यक्ति को उसके जीवन के सभी पहलुओं में सामंजस्य स्थापित करने के लिए हर सुविधा और प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए, ताकि उसके अपने प्रेम की कमी के अलावा कोई भी चीज उसे रोक न सके।

अवसर, सक्रिय रोकथाम के अभाव के दूसरे अर्थ में, शायद स्वतंत्रता कहा जा सकता है, लेकिन यह स्वतंत्रता से कोसों दूर है। उदाहरण के लिए, नैतिकता विभिन्न मानदंड प्रदान करती है जिनके द्वारा हम कम से कम लगभग यह अनुमान लगा सकते हैं कि दी गई परिस्थितियों में किसी श्रमिक का उचित वेतन क्या है।

यह मज़दूरी किसी भी हालत में उस मज़दूरी से कम नहीं हो सकती जो व्यक्ति और उसके परिवार का मितव्ययी आराम से पालन-पोषण कर सके, और यह उससे भी ज़्यादा होगी अगर मनुष्य के श्रम से आंशिक रूप से उत्पादित धन, उस धन के उत्पादन में शामिल सभी मानवीय कारकों के लिए एक साधारण प्रतिफल देने के लिए पर्याप्त से ज़्यादा हो। लेकिन उदारवादी सिद्धांत नैतिकता के न्यायोचित मज़दूरी की अवहेलना करता है और श्रम को श्रम बाज़ार में यथासंभव सस्ते दामों पर खरीदी जाने वाली वस्तु मानता है; यह मानता है कि श्रम की माँग और आपूर्ति के मुक्त अंतर्क्रिया से एक स्वाभाविक मज़दूरी उत्पन्न होगी;

और यही मजदूरी का सिद्धांत आज इंग्लैंड के संपूर्ण उदारवादी संगठन में सन्निहित है, भले ही सामाजिक विधानों द्वारा पूर्ण अहस्तक्षेप पर काफ़ी हद तक लगाम लगा दी गई है। इन परिस्थितियों में यह कहना पूरी तरह से बकवास नहीं होगा कि मज़दूर बाज़ार मजदूरी को अस्वीकार करने और उचित मजदूरी की माँग करने के लिए स्वतंत्र है, कि नियोक्ता उचित मजदूरी देने और बाज़ार मजदूरी की उपेक्षा करने के लिए स्वतंत्र है। अर्थशास्त्री मजदूरी अनुबंध को एक स्वतंत्र अनुबंध कहते हैं, और इसका एक अर्थ हो सकता है, ठीक उसी तरह जैसे यह कहना कि मैं चाँद पर चढ़ने के लिए स्वतंत्र हूँ, एक अर्थ रखता है। मज़दूर अनुचित मजदूरी स्वीकार करने या बेरोज़गारों में शामिल होने के लिए स्वतंत्र है; हमारे स्वतंत्र देश में बेरोज़गार होना कोई दंडनीय अपराध नहीं है। और इसी तरह नियोक्ता अनुचित मजदूरी देने या अपने प्रतिद्वंद्वियों की मुक्त प्रतिस्पर्धा के आगे झुकने और नियोक्ता के रूप में अपने सामाजिक कार्य का निर्वहन बंद करने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन न तो मज़दूर और न ही नियोक्ता न्याय की माँग या न्याय प्रदान करने के बावजूद लंबे समय तक अपने सामाजिक कार्य का निर्वहन जारी रख सकते हैं। इसलिए उनमें से किसी को भी स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है।

स्वतंत्रता के लिए न्यूनतम आवश्यकता यह है कि सामाजिक कार्यों के निर्वहन में न्याय हो, क्योंकि न्याय प्रेम से पहले आता है। यदि प्रेम सामाजिक संरचना का जीवन-सिद्धांत है और वह स्वयं को केवल सामाजिक न्याय में प्रदर्शित नहीं कर सकता, तो स्पष्टतः सामाजिक संरचना रुग्ण है और स्वतंत्रता क्षीण है। स्वतंत्रता सामाजिक स्वास्थ्य है, एक सामाजिक वातावरण जिसमें व्यक्ति को अपने जीवन के सभी पहलुओं में सामंजस्य स्थापित करने के लिए हर सुविधा और प्रोत्साहन प्राप्त हो।

यह स्वतंत्रता का सच्चा सिद्धांत है और आइए इसकी तुलना झूठे उदारवादी सिद्धांत से करें, जिसकी मृत्यु-पीड़ा के बीच एंग्लो-सैक्सन सभ्यता अभी भी बहादुरी और दयनीय रूप से फलने-फूलने का प्रयास कर रही है। अपने सर्वोत्तम रूप में, उदारवादी सिद्धांत स्वतंत्रता की तुलना अहस्तक्षेप से नहीं करता; यह पहचान एक ऐसे सिद्धांत से स्वाभाविक विकास था जो मूल रूप से कम स्पष्ट रूप से झूठा था। अपने सर्वोत्तम और सबसे प्रस्तुत करने योग्य रूप में, उदारवादी सिद्धांत स्वतंत्रता को व्यक्तिगत कार्य की स्वतंत्रता और एक सामाजिक अनुबंध के तहत उत्पन्न दायित्वों के बीच संतुलन के रूप में मानता है, जिसे नागरिकों ने अच्छी व्यवस्था के लिए आपस में किया माना जाता है, इस अनुबंध की शर्तों को जनमत के संदर्भ में निर्धारित किया जाना चाहिए, क्योंकि जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है।

व्यक्तिगत स्वार्थ ही एकमात्र ऐसी शक्ति है जिसे सक्रिय माना जाता है, अर्थात् जब व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर विचार किया जाता है तो साधारण स्वार्थ, और जब व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आवश्यक प्रतिबंधों पर विचार किया जाता है तो एक प्रबुद्ध प्रकार का स्वार्थ। प्रेम इस मामले में बिल्कुल भी शामिल नहीं होता, क्योंकि व्यवस्था के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता का जो भी त्याग आवश्यक हो सकता है, उसे प्रबुद्ध स्वार्थ द्वारा पर्याप्त रूप से ध्यान में रखा जाता है।

अब, अगर मनुष्य पूर्ण होते तो यह सिद्धांत बहुत कारगर हो सकता था। यह अपने सूत्रीकरण में बनावटी और पूरी तरह से झूठा होता, लेकिन मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि यह सच्चे सिद्धांत के समान परिणाम क्यों न दे; क्योंकि स्वार्थ, अपनी पूर्णता में, प्रेम के समान ही लक्ष्य रखता है, अर्थात् सर्वोच्च भलाई का चुनाव।

लेकिन हम पूर्ण नहीं हैं। हम मूलतः अच्छे और सत्य-प्रेमी हैं, लेकिन पूर्ण नहीं; हम निश्चित रूप से स्वार्थ की ओर विकृत हैं, जिसे स्वार्थ कहते हैं, जो प्रेम के विपरीत है। यह विकृतता हमें स्वभाव से अच्छा और सुंदर बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है, लेकिन यह एक स्पष्ट और निर्विवाद कलंक है। कोई भी इसके अस्तित्व से इनकार नहीं कर सकता, चाहे वह पतन के ईसाई सिद्धांत का पालन करता हो या हमें वानरों से महामानव की ओर विकसित होता हुआ मानता हो।

ऐसा होने पर, आप उम्मीद कर सकते हैं कि उदारवादी सिद्धांत पूर्ण कार्यप्रणाली से उतना ही विचलित होगा, जितना कि मानवजाति स्वार्थ के अपने आकलन में पूर्ण ज्ञानोदय से विचलित होती है; और आप पूछ सकते हैं कि एक अपूर्ण दुनिया में हम इससे बेहतर कार्यशील परिकल्पना की क्या अपेक्षा या आशा कर सकते हैं। प्रेम को समाज के जीवन-सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत करना बहुत अच्छा है; लेकिन चूँकि प्रेम सिद्धांत की कार्यप्रणाली हमारी स्वार्थपरता की प्रवृत्ति से उतनी ही प्रभावित होगी जितनी कि प्रबुद्ध-स्वार्थ सिद्धांत से, इसलिए एक सिद्धांत को दूसरे के स्थान पर रखने से मुझे क्या लाभ होगा?

ऐसा तर्क दिखावटी हो सकता है, लेकिन यह गलत होगा, क्योंकि प्रेम सिद्धांत सत्य है जबकि

प्रबुद्ध-स्वार्थ सिद्धांत से मुझे क्या लाभ होता है कि झूठा सिद्धांत एक साधारण झूठे सिद्धांत से बेहतर काम करता है, क्योंकि प्रेम उसकी मदद करता रहता है; और मैं मानता हूँ कि सच्चा सिद्धांत उतना कारगर नहीं होगा जितना उसे होना चाहिए, क्योंकि प्रेम स्वार्थ से दूषित होता है। लेकिन इन सबके बावजूद, यह सच है कि उदारवादी सिद्धांत एक झूठा सिद्धांत है, और मानवीय मामलों में एक झूठा सिद्धांत, चूँकि हम अपूर्ण हैं, अंततः विनाश की ओर ले जाता है। अमूर्त सिद्धांतों से ऐसा होना ही चाहिए।

लेकिन मुझे अमूर्त तर्क पर निर्भर होने की ज़रूरत नहीं है। उदारवादी सिद्धांत हमारे साथ इतने लंबे समय से है कि हम वास्तव में चल रही विनाशकारी प्रक्रिया को देख सकते हैं। जब इसे पहली बार प्रतिपादित किया गया था, तो शायद इसके संचालन की अपूर्णता मानव जाति की अपूर्णता से ज़्यादा नहीं थी। वास्तव में, इसका कोई ख़ास प्रभाव नहीं था; यह केवल तब हुआ जब इस सिद्धांत को आर्थिक सिद्धांत और उस पर आधारित राजनीतिक कार्रवाई में अभिव्यक्ति मिली, और इसका संचालन समाज के उदारवादी संगठन के रूप में विकसित हुआ, जिसकी चपेट में अब हम लगभग असहाय हैं।

अर्थशास्त्र और उस पर आधारित राजनीति में उदारवाद की विशुद्ध सैद्धांतिक परिकल्पना की अभिव्यक्ति तर्क का विषय थी; और यही तर्क पतनशील प्रक्रिया की शुरुआत थी। जब तक हृदय मिथ्या सिद्धांत को दरकिनार करने के लिए स्वतंत्र था, तब तक मानवजाति की नीचता से अधिक नीच परिणाम नहीं हो सकते थे; लेकिन एक मिथ्या सिद्धांत पर तर्क करने से असीम नीचता की ओर गति हो सकती है। शुरुआत में, शायद, व्यक्तिगत कार्य की स्वतंत्रता और व्यवस्था के लिए बलिदान के बीच का कथित संतुलन व्यक्तिगत स्वतंत्रता की ओर थोड़ा ही झुका हुआ था; लेकिन जैसे-जैसे लोग उस मिथ्या संतुलन के अभ्यस्त होते गए और इस विषय पर तर्क करने लगे, उनकी स्वार्थपरता ने संतुलन को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के पक्ष में थोड़ा और झुकाने के बहाने आसानी से ढूंढ लिए। और यह प्रक्रिया तब तक चलती रही जब तक हम नग्न अहस्तक्षेप (laissez faire) पर नहीं पहुँच गए, जिसे सर्वोच्च आर्थिक और राजनीतिक बुद्धिमत्ता के रूप में गंभीरतापूर्वक प्रतिपादित किया गया।

उस समय तक हम झूठे सिद्धांत के गुलाम बन चुके थे, कम से कम व्यक्तिगत रूप से तो। दयालु होने का कोई फ़ायदा नहीं था; बेरोकटोक प्रतिस्पर्धा आम बात थी और देश के क़ानून और समाज के पूरे संगठन द्वारा संरक्षित थी; एक दयालु व्यक्ति बस आहें भर सकता था और खुद से कह सकता था कि व्यापार तो व्यापार है, अर्थशास्त्र के नियम जंगल के अटल नियम हैं—खाओ या खाए जाओ।

लेकिन मानव स्वभाव अच्छा और सुंदर बना रहा, और अहस्तक्षेप के परिणाम स्पष्ट रूप से चौंकाने वाले थे। व्यक्ति इसे बदलने के लिए कुछ नहीं कर सकता था, लेकिन समग्र रूप से समुदाय जंगल के कानून को नियंत्रित कर सकता था; और इस प्रकार यह हुआ कि लोग राजनीतिक कार्रवाई की ओर मुड़ गए, जिससे पहले वे मांग करते थे कि उद्योग को अकेला छोड़ दिया जाए, और सामाजिक कानून के माध्यम से उससे अधिक से अधिक हस्तक्षेप करने का आह्वान किया जाए।

थॉमस कार्लाइल - राष्ट्रीय समाजवादी, विलियम जॉयस द्वारा

टी होमस कार्लाइल उन ब्रिटिश विचारकों में प्रथम स्थान पर हैं जिन्होंने अपने पूर्ववर्ती लेखन में फ़ासीवादी दर्शन की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों को दर्शाया, और उनमें से शेक्सपियर और गोल्डस्मिथ ने भी काफ़ी योगदान दिया; लेकिन कार्लाइल के लेखन के विशाल विस्तार में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे राष्ट्रीय समाजवादी मस्तिष्क की उपज के अलावा कुछ और माना जा सके। राष्ट्रीय समाजवाद नाम के अस्तित्व में आने से बहुत पहले ही उनमें इसकी भावना समाहित थी। उनके शब्द हमेशा एक देशभक्त के शब्द होते हैं। देश के प्रति उनका उत्कट प्रेम, उनके अपने समय में, देशभक्ति की कसौटी पर खरा नहीं उतर पाता, क्योंकि वे किसी अमूर्त चीज़ से नहीं, बल्कि जनता से प्रेम करते थे; और यहीं पुरानी और नई देशभक्ति के बीच मूलभूत अंतर निहित है। पुरानी देशभक्ति विचारों और बाह्य स्वरूपों से संबंधित होती है; नई देशभक्ति जनता की वास्तविकता से संबंधित होती है, और देशभक्ति है क्योंकि यह समाजवाद है, और यही एकमात्र सम्मानजनक अर्थ है जो इस शब्द से जोड़ा जा सकता है।

इस छोटे से लेख का उद्देश्य कार्लाइल के बारे में लिखना, उनकी आलोचना करना और उन सामान्यीकरणों के ढेर में इज़ाफ़ा करना नहीं है जो किसी भी महान लेखक के इर्द-गिर्द बुने जाने ही चाहिए। और तो और, हमारा इरादा उस बात पर चर्चा करने का भी नहीं है जिसे अविवेकी लोग "कार्लाइल की राजनीति" कहेंगे। जिनके पास बहुत समय है, वे इस बात पर शोध करें कि यह महान लेखक व्हिग था या टोरी। यह साबित करना मुश्किल होगा कि वह दोनों में से कोई था; लेकिन कठिनाई के अलावा, यह बेकार होगा क्योंकि ये प्राचीन शब्द आज ब्रिटिश राजनीति में मौजूद किसी भी चीज़ का संकेत नहीं देते। इसलिए, अपनी थीसिस को साबित करने की कोशिश करने के बजाय, हम बस एक बार फिर थॉमस कार्लाइल का परिचय देंगे।

जिन लोगों ने नासमझी में उनसे लंबी दूरी तय कर ली है, उन्हें खुद बोलने दीजिए, और उनके शब्द राष्ट्रीय समाजवादी विचारधारा को प्रेरणा और फ़ासीवादी सिद्धांत की पुष्टि दोनों प्रदान करेंगे। फ़ासीवादी राष्ट्रीय समाजवाद का हर समर्थक इस आरोप से वाकिफ़ है कि उनके आंदोलन पर लगातार यह आरोप लगाया जाता है: कि वे स्वतंत्रता को नष्ट करने की साजिश रच रहे हैं। शायद, वास्तव में, राष्ट्रीय समाजवादी विचारधारा पर इससे ज़्यादा बार कोई आरोप नहीं लगाया जाता।

अतीत और वर्तमान के पन्नों पर नज़र डालते हुए हम पढ़ते हैं:—

> "स्वतंत्रता? आप कहेंगे कि मनुष्य की सच्ची स्वतंत्रता, सही मार्ग खोजने में, या उसे खोजने के लिए बाध्य किए जाने में, निहित है और वह उस पर चलता है। वह जो कार्य वास्तव में करने में सक्षम है, उसे सीखना या सिखाया जाना, और फिर अनुमति, अनुनय और यहाँ तक कि विवशता से, उसे करने के लिए तत्पर होना। यही सच्चा सौभाग्य, सम्मान, 'स्वतंत्रता' और अधिकतम कल्याण है। यदि स्वतंत्रता वह नहीं है, तो मुझे तो स्वतंत्रता की कोई परवाह नहीं है।"

संभवतः इससे अधिक स्पष्ट कथन पहले कभी नहीं दिया गया कि अनुशासन के बिना स्वतंत्रता असंभव है।

इसी तरह, हम यहाँ कार्य करने के अधिकार की स्पष्ट माँग देखते हैं। जैसा कि सर ओसवाल्ड मोस्ले कहते हैं, "स्वतंत्रता की शुरुआत आर्थिक अराजकता के अंत से होती है। फिर भी, कार्य करने की शक्ति के बिना आर्थिक अराजकता पर कैसे काबू पाया जा सकता है? संवैधानिक स्वतंत्रता को संरक्षित किया जाना चाहिए, लेकिन यह स्वतंत्रता जनता की संसद और सरकार चुनने की शक्ति में, और इस प्रकार अपनी इच्छानुसार नेतृत्व का रूप चुनने की शक्ति में अभिव्यक्त होती है। इससे आगे वह नहीं जा सकती।" या फिर, संविधान सभा के आधिकारिक घोषणापत्र को उद्धृत करें।

ब्रिटिश यूनियन: फ़ासीवाद राष्ट्र का नेतृत्व है। यह शब्द के पुराने अर्थ में तानाशाही नहीं है, जिसका अर्थ है जनता की इच्छा के विरुद्ध शासन। यह शब्द के आधुनिक अर्थ में तानाशाही है, जिसका अर्थ है जनता द्वारा संचालित सरकार, जो उन समस्याओं पर विजय पाने के लिए कार्य करने की पूर्ण शक्ति से लैस है जिनका समाधान राष्ट्र के अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

कार्लाइल के नेतृत्व और अधिकार के सिद्धांत में पुरानी पार्टियों द्वारा वर्ग के प्रति अपनाए गए किसी भी दृष्टिकोण का समावेश नहीं है। उनके लिए घमंड और वर्ग संघर्ष भी उतने ही घृणित हैं। लंबे उद्धरणों को तब तक उचित नहीं ठहराया जा सकता जब तक कि वे असाधारण मूल्य के न हों, लेकिन यहाँ हम एक लंबा अंश उद्धृत करने की स्वतंत्रता लेते हैं क्योंकि यह हमारी भाषा में लिखे गए अब तक के सबसे महान उद्धरणों में से एक है:

> "मैं दो लोगों का सम्मान करता हूँ, और किसी तीसरे का नहीं। पहला, वह मेहनती कारीगर जो मिट्टी के बने औज़ारों से कड़ी मेहनत से धरती पर विजय प्राप्त करता है और उसे अपना बनाता है। मेरे लिए आदरणीय है वह कठोर हाथ; टेढ़ा, खुरदुरा; फिर भी उसमें एक धूर्त गुण छिपा है, जो इस ग्रह के राजदंड जैसा, अमिट शाही है। वह खुरदुरा चेहरा भी आदरणीय है, जो हर मौसम में काला पड़ जाता है, मैला हो जाता है, अपनी असभ्य बुद्धि के साथ; क्योंकि यह एक ऐसे मनुष्य का चेहरा है जो मनुष्य की तरह जीता है।"
>
> ओह, लेकिन तुम्हारी अशिष्टता के लिए और भी अधिक आदरणीय, और इसलिए भी कि हमें तुम पर दया भी करनी चाहिए और प्रेम भी! कठोर भाई! हमारे लिए तुम्हारी पीठ इतनी झुकी हुई थी, हमारे लिए तुम्हारे सीधे अंग और उंगलियाँ विकृत थीं: तुम हमारे भर्ती हुए थे, तुम पर भाग्य आया था, और हमारी लड़ाइयाँ लड़ते हुए तुम इतने विकृत हो गए थे। क्योंकि तुम्हारे भीतर भी एक ईश्वर-निर्मित रूप था, लेकिन उसे प्रकट नहीं किया जा सकता था; यह श्रम की मोटी चिपकाव और विकृतियों से घिरा हुआ था; और तुम्हारी आत्मा की तरह तुम्हारे शरीर को भी स्वतंत्रता का ज्ञान नहीं था। फिर भी परिश्रम करते रहो, परिश्रम करते रहो: तुम अपने कर्तव्य में लगे हो, जो चाहे उससे बाहर रहो; तुम सर्वथा अपरिहार्य, दैनिक रोटी के लिए परिश्रम करते हो।
>
> मैं एक दूसरे व्यक्ति का सम्मान करता हूं, और उससे भी अधिक ऊंचा: वह जो आध्यात्मिक रूप से अपरिहार्य के लिए परिश्रम करता हुआ दिखाई देता है; दैनिक रोटी के लिए नहीं, बल्कि जीवन की रोटी के लिए। क्या वह भी अपने कर्तव्य में नहीं है; आंतरिक सामंजस्य की दिशा में प्रयास कर रहा है; इसे कर्म या शब्द से, अपने सभी बाहरी प्रयासों के माध्यम से प्रकट कर रहा है, चाहे वे उच्च हों या निम्न? सबसे ऊंचा, जब उसका बाहरी और आंतरिक प्रयास एक हो: जब हम उसे कलाकार कह सकते हैं; केवल सांसारिक शिल्पकार नहीं, बल्कि प्रेरित विचारक, जो स्वर्गीय उपकरण से हमारे लिए स्वर्ग को जीत लेता है! यदि गरीब और विनम्र परिश्रम से हमें भोजन मिलता है, तो क्या उसके बदले में उच्च और गौरवशाली परिश्रम नहीं होना चाहिए, ताकि उसे प्रकाश मिले, मार्गदर्शन हो, स्वतंत्रता हो, अमरता हो? इन दोनों का, उनके सभी स्तरों पर, मैं सम्मान करता हूं:

श्रम की गरिमा को इन पंक्तियों से अधिक निष्ठापूर्वक कभी व्यक्त नहीं किया गया है, जो अकेले कार्लाइल को एक महान राष्ट्रीय समाजवादी विचारक घोषित करती हैं। अनगिनत समाजवादी लेखकों ने इसी विषय पर बहुत कुछ लिखा है, लेकिन उनमें से किसी ने भी इस विषय को इस तरह से नहीं लिया है। सर्वोत्तम रूप से श्रम को एक कठिनाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, और, सबसे खराब रूप से एक अभिशाप के रूप में, उनका सामान्य दृष्टिकोण यह है कि काम एक सुविधाजनक और अपरिहार्य अन्याय है जो मनुष्य पर थोपा जाता है, जिसे अपनी सेवाओं के लिए उच्चतम मूल्य की मांग करके खुद को अपमान से मुक्त करना चाहिए। लेकिन वह चाहे कितनी भी ऊंची कीमत प्राप्त करे, समाजवादी दर्शन में, वह केवल एक "उधार-दास" ही रहेगा। इसलिए, यह पढ़ना दिलचस्प है कि कार्लाइल ने वीरता और उपलब्धि के उद्देश्यों के बारे में क्या कहा है। वह लिखते हैं: "यह कहना मनुष्यों पर एक कलंक है कि वे आराम, सुख की आशा, प्रतिफल—इस लोक या परलोक में किसी भी प्रकार की मीठी मिठाई—से वीरतापूर्ण कार्य के लिए प्रेरित होते हैं। तुच्छतम मनुष्य में भी कुछ अधिक महान है। बेचारा शपथ लेने वाला सिपाही, जिसे गोली मारने के लिए नियुक्त किया गया है, एक सैनिक के रूप में अपना सम्मान अभ्यास के नियमों और प्रतिदिन के शिलिंग से अलग रखता है। आदम का सबसे गरीब पुत्र मीठी चीजों का स्वाद चखने के लिए नहीं, बल्कि नेक और सच्चे काम करने और ईश्वर के स्वर्ग में एक ईश्वर-निर्मित मनुष्य के रूप में खुद को सही साबित

करने के लिए मंद-मंद लालसा रखता है। दिखाएँ

उसे ऐसा करने का तरीका बताकर, सबसे सुस्त दिन-मज़दूर भी एक नायक में बदल जाता है। जो व्यक्ति कहता है कि उसे सहजता से मोहित किया जा सकता है, वे उसके साथ बहुत बड़ा अन्याय करते हैं। कठिनाई, त्याग, शहादत, मृत्यु, ये वे प्रलोभन हैं जो मनुष्य के हृदय पर प्रभाव डालते हैं। उसके आंतरिक सौम्य जीवन को प्रज्वलित करो, तुम्हारे पास एक ऐसी ज्वाला है जो सभी निम्न विचारों को जला देती है।"

ऐसी भावनाएँ कभी भी वित्तीय लोकतंत्र या उसके प्रशंसकों से उत्पन्न नहीं हो सकतीं। ध्यान रहे, कार्लाइल यहाँ केवल काम के लिए नहीं, बल्कि वीरता के उद्देश्यों की चर्चा कर रहे हैं। वे श्रम मूल्य सिद्धांत नामक पुराने मार्क्सवादी सिद्धांत की जड़ पर प्रहार करते हैं और उसे नष्ट कर देते हैं। वे उस बात की सबसे स्पष्ट समझ प्रस्तुत करते हैं जिसे मार्क्स कभी नहीं समझ पाते: कि रचनात्मक बुद्धि और वीरतापूर्ण कार्य श्रम की सामान्य प्रक्रियाओं के साथ बिल्कुल असंगत हैं; और यह कि किसी भी तरह से मनुष्य की सबसे उत्कृष्ट और इसलिए सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों को केवल यांत्रिक प्रयास की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

इस पर आपत्ति की जा सकती है कि कार्लाइल मनुष्य को केवल एक अविवेकी या विवेकहीन प्राणी के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। अगर ऐसा है, तो कार्लाइल सही हैं।

कुछ समाजों में वीरता का ह्रास निम्नतम सीमा तक हो जाता है। आज वित्तीय-लोकतांत्रिक देशों में यहूदी वित्तपोषक इसे कमतर आंकते हैं और इससे घृणा करते हैं क्योंकि यह राष्ट्रीय चरित्र को राष्ट्रीय स्वतंत्रता की मांग करने वाले गौरव से भर देता है; लेकिन वीरता का उद्देश्य अपवाद के बजाय नियम हो सकता है, यह जर्मनी और इटली में सिद्ध हो चुका है, जहाँ, हालाँकि फ़ासीवादी व्यवस्था का पूरा उद्देश्य लोगों की स्थिति को अविश्वसनीय रूप से बेहतर बनाना है, फिर भी अधिकांश लोग भौतिक लाभ के लिए नहीं, बल्कि उन सिद्धांतों के लिए, जिन्हें वे पवित्र मानते हैं, अपना सब कुछ त्यागने को तैयार हैं।

हमारे लेखक ने एक बेहद प्रभावशाली अंश में श्रम और साम्राज्य के बीच के सच्चे रिश्ते को दर्शाया है। जब यह कहा जाता है कि थॉमस कार्लाइल एक साधारण समाजवादी थे, तो हमें उस प्रचार के बारे में सोचना होगा जो अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद ने इतने वर्षों तक साम्राज्यवाद के विरुद्ध चलाया है, और सार्टर रेसार्टस के सबसे प्रभावशाली अंशों में से एक का हवाला देना होगा:

"सच है, गोल्ड-होफ्राथ," प्रोफेसर कहीं और चिल्लाते हैं: "वास्तव में बहुत भीड़ है।" इस बीच, इस तुच्छ भूगर्भीय ग्लोब के कितने हिस्से को तुमने वास्तव में जोता और खोदा है, जब तक कि वह और न बढ़े? अमेरिका के पम्पास और सवाना में; प्राचीन कार्थेज के आसपास, और अफ्रीका के भीतरी भाग में; अल्ताई श्रृंखला की दोनों ढलानों पर, एशिया के मध्य भाग में; स्पेन, ग्रीस, तुर्की, ग्रिम टार्टरी, किल्डारे के कुर्राघ में तुम्हारी आबादी कितनी घनी है? एक आदमी, जैसा कि मैंने समझा है, अगर तुम उसे धरती उधार दो, तो एक साल में अपना और नौ अन्य लोगों का पेट भर लेगा। अफसोस, हमारे अभी भी चमकते, अभी भी फैलते यूरोप के हेंगिस्ट और अलारिक अब कहाँ हैं; जो, जब उनका घर बहुत संकरा हो जाएगा, सेना में भर्ती होंगे, और अग्नि-स्तंभों की तरह, अदम्य जीवंत वीरता के उन अनावश्यक समूहों को आगे बढ़ाएँगे; जो अभी युद्ध-कुल्हाड़ी और युद्ध-रथ से नहीं, बल्कि भाप इंजन और हल के फाल से सुसज्जित हैं? वे कहाँ हैं?—अपना शिकार बचा रहे हैं?

यहाँ अभिजात वर्ग के प्रति दृष्टिकोण का एक उदाहरण देखना दिलचस्प है जिसे कार्लाइल लगभग हर अवसर पर दोहराते हैं। वे इतने गहरे विचारक और असीम रूप से ईमानदार थे कि अभिजात वर्ग को अनावश्यक मानने का दावा नहीं कर सकते थे। उनके लेखन में बार-बार यह स्पष्ट किया गया है कि वे किसी भी ऐसे समुदाय की कल्पना नहीं कर सकते जो एक नेता वर्ग के निर्देशन के बिना एक समुदाय के रूप में कार्य करता हो। लेकिन इस वर्ग से उनकी अपेक्षाएँ भी बहुत स्पष्ट हैं, और यह इस बात से बिल्कुल अलग है कि उनके समय के लोगों को क्या मिला और हमारे समय के लोगों को अभी भी, बहुत कम समय के लिए, क्या मिलना है। वे एक वास्तविक ब्रिटिश साम्राज्य का निर्माण करना चाहते थे, और यह इच्छा उनके अपने शब्दों में स्पष्ट रूप से लिखी गई है:

"इंग्लैंड, बहुत जल्द ही हमारा यह द्वीप अंग्रेजों का एक छोटा सा अंश ही रह जाएगा।

अमेरिका में, न्यू हॉलैंड में, पूर्व और पश्चिम में, बिल्कुल एंटीपोड्स तक, एक सैक्सन साम्राज्य होगा जो दुनिया के बड़े-बड़े हिस्सों को कवर करेगा। और अब, वह क्या है जो इन सबको एक राष्ट्र के रूप में एकजुट रख सकता है, ताकि वे आपस में झगड़ें या लड़ें नहीं, बल्कि शांति और भाईचारे के साथ रहें? इसे ही सबसे बड़ी व्यावहारिक समस्या माना जाता है, जिसे पूरा करने के लिए सभी प्रकार की संप्रभुताएँ और सरकारें यहाँ मौजूद हैं।

आखिर ऐसा क्या है जो इसे पूरा करेगा? संसद के अधिनियम, प्रशासनिक प्रधानमंत्री ऐसा नहीं कर सकते। अमेरिका हमसे उतना ही अलग है जितना संसद उसे अलग कर सकती है। इसे कल्पना न कहें, क्योंकि इसमें बहुत वास्तविकता है। मैं कहता हूँ, यहाँ एक अंग्रेज राजा है, जिसे कोई समय या संयोग संसद या संसदों का समूह गद्दी से नहीं उतार सकता। यह राजा, शेक्सपियर, क्या वह हम सब पर राजसी राजसी राज के साथ सबसे महान, सबसे विनम्र, फिर भी सबसे मजबूत, एकजुटता के प्रतीक के रूप में नहीं चमकता; अविनाशी?"

निष्कर्ष यह नहीं है कि शेक्सपियर एक फ़ासीवादी सम्राट होंगे, बल्कि यह है कि दुनिया के किसी भी कोने में, हमारे लोगों की आध्यात्मिक संस्कृति ही सबसे मज़बूत बंधनों को मज़बूती प्रदान करती है; और, अंततः, इस प्रस्ताव का अर्थ केवल इतना है कि लोगों का आचरण और भाग्य उनके द्वारा अपनाए गए दर्शन से निर्धारित होता है। श्रेष्ठतम दर्शन की पूरी जानकारी होना ही श्रेष्ठ कर्म है; नीग्रोइड और सेमिटिक संस्कृतियों के भ्रष्ट भ्रष्टाचार से अपमानित होना श्वेत व्यक्ति के लिए विनाश है।

कार्लाइल जानते थे कि न तो संधियाँ और न ही सम्मेलन विश्व एकता स्थापित कर सकते थे जिसकी उन्हें इतनी इच्छा थी। यह उपलब्धि केवल आध्यात्मिक एकता से ही संभव हो सकती थी। जैसा कि हमने एक अन्य अवसर पर लिखा है: "जहाँ सामूहिक भावना नहीं है, वहाँ सामूहिक सुरक्षा भी नहीं हो सकती।" लेकिन आध्यात्मिक शक्ति का यह स्रोत, यह संस्कृति और दर्शन, एक सच्चे अभिजात वर्ग से ही आ सकते हैं जो वित्तीय लोकतंत्र जैसी वर्ग परंपराओं पर आधारित न हो। दूसरी ओर, कार्लाइल ने भूमि के स्वामित्व और राष्ट्र की संस्कृति को प्रभावित करने की शक्ति के बीच संबंध पर उचित ही बल दिया। भूत और वर्तमान में यह ठीक ही कहा गया है कि "भूमि ही अभिजात वर्ग का सही आधार है; जिसके पास भी भूमि है, वह किसी भी अन्य की तुलना में अधिक प्रभावशाली ढंग से, भूमि पर रहने वाले लोगों का राज्यपाल और उप-राजा है। यह आज भी वैसा ही है जैसा हेनरी प्लांटैजेनेट और एबॉट सैमसन के समय था, और हमेशा रहेगा। भूमि हम सबकी माता है; हमें पोषण देती है, आश्रय देती है, आनंदित करती है, प्रेमपूर्वक समृद्ध करती है: कितने ही रूपों में, हमारी पहली जागृति से लेकर अपनी धन्य मातृ-हृदय पर हमारी अंतिम निद्रा तक, वह, धन्य मातृ-बाँहों की तरह, हम सभी को आलिंगन में लेती है।"

हालाँकि, कार्लाइल ने औद्योगिक क्रांति के प्रभावों का पूरी तरह से पूर्वानुमान नहीं लगाया था। वह उस दिन की कल्पना भी नहीं कर सकते थे जब सब कुछ बर्बाद हो जाएगा, और कृषक, किसान, ज़मींदार, यहूदी सूदखोरी की ज़ंजीरों में जकड़े हुए, दयनीय नपुंसकता की स्थिति में पहुँच जाएँगे।

उन्होंने कभी सोचा भी नहीं होगा कि इस दयनीय स्थिति में एक ज़मींदार एक उदार अभिजात वर्ग की भूमिका निभा सकता है; क्योंकि उनके लिए अभिजात वर्ग शक्ति था, और शक्ति का अर्थ था ज़िम्मेदारी और सेवा। वे लिखते हैं, "कर्तव्यों के बिना एक उच्च वर्ग, खड़ी चट्टानों पर लगाए गए पेड़ के समान है; जिसकी जड़ों से सारी धरती ढह रही है। प्रकृति ऐसे किसी भी व्यक्ति की स्वामी नहीं है जो शहीद न हो। अगर यही महानता है तो महानता का क्या अर्थ है? दूसरों के लिए वीरतापूर्वक कष्ट सहने में, न कि आलसी होकर दूसरों को अपने लिए कष्ट देने में, महानता कभी निहित होती है।"

कार्लाइल के समय की परिस्थितियों से जुड़े कुछ अंशों को पढ़कर, जो आज की परिस्थितियों पर भी उतने ही लागू होते हैं, आप सोच में पड़ सकते हैं कि पिछले सौ सालों में संसद में क्या कुछ हुआ है?

"संसद को, चाहे जितना भी प्रयास करना पड़े, खुद को उन गहरी, निरर्थक दिनचर्या से बाहर निकालना होगा; और हर तरफ से, अहस्तक्षेप नीति से ज़्यादा शिक्षाप्रद बातें कहना सीखना होगा। अगर संसद यह नहीं सीख सकती, तो संसद का क्या होगा? इंग्लैंड के लाखों मेहनतकश लोग अपने ******ebook converter DEMO Watermarks******* से पूछते हैं।

सबसे पहले, अंग्रेजी संसद, "क्या आप हम पर शासन कर सकते हैं या नहीं? संसद अपने विशेषाधिकारों के साथ शक्तिशाली है; लेकिन आवश्यकता और प्रकृति के नियम उससे भी अधिक शक्तिशाली हैं। यदि संसद यह काम नहीं कर सकती, तो हम भविष्यवाणी करते हैं कि संसद कुछ और करेगी, और ऐसे काम जो, सबसे अजीब और सबसे सुखद तरीके से नहीं, इसके होने को आगे बढ़ाएँगे—शायद संसद के लिए ज़्यादा फायदेमंद नहीं! किसी न किसी तरह से यह काम तो होना ही चाहिए।"

जैसा कि एडॉल्फ हिटलर ने कहा था: "यही तो होना चाहिए।" या जैसा कि ओसवाल्ड मोस्ले ने कहा है: "राज्य के दो बड़े संगठनात्मक दलों की दोनों प्रणालियों का परिणाम अंततः एक ही है, स्थिरता प्रतिक्रिया से भ्रमित है और परिवर्तन का प्रतिरोध, साथ ही प्रगति बाधा डालने वाली बहस और समिति की गैरज़िम्मेदारी से भ्रमित है, दोनों का अंत अराजकता में होता है। दोनों ही कामों को होने से रोकने के साधन हैं और आधुनिक युग की पहली आवश्यकता यह है कि काम किए जाएँ।" द ग्रेटर ब्रिटेन का यह अंश कार्लाइल के साथ एक सहमति दर्शाता है जो विश्वास से आगे बढ़कर अभिव्यक्ति की एक पद्धति पर पहुँचती है।

हमारे लेखक द्वारा लिखी गई किसी भी पुस्तक से यादृच्छिक रूप से कोई भी अंश चुना जा सकता है जो उसकी घिनौनी बातों के प्रति घृणा को दर्शाता हो।
मैनचेस्टर स्कूल का भौतिकवाद:

"इस जटिल समय में," वे लिखते हैं, "जब नकद भुगतान ही मनुष्य और मनुष्य के बीच एकमात्र संबंध है, मानवजाति का मेहनतकश वर्ग अपने भ्रमित लेकिन सबसे ज़ोरदार तरीके से, मेहनतकश वर्ग के सामने घोषणा करता है कि उन पर शासन किया जाएगा; उन्हें चार्टिज़्म, ठगी, लूट-खसोट और इन सबसे भी ज़्यादा काली चीज़ों के दंड के अधीन रहना होगा, जो नकद भुगतान ही एकमात्र संबंध हैं; और ऐसी बहुत सी चीज़ें हैं जिन्हें नकद से नहीं खरीदा जा सकता! नकद एक महान चमत्कार है, फिर भी न तो स्वर्ग में और न ही पृथ्वी पर इसकी सारी शक्ति है।" .. .

कार्लाइल ने जो कुछ लिखा है और उनके बारे में जो कुछ भी लिखा गया है, उसे देखते हुए, इतने छोटे लेख में उनके कार्यों का संपूर्ण विश्लेषण करने का प्रयास करना व्यर्थ और दुस्साहसपूर्ण होगा। उनके लेखन से अंशों को चुनकर उन्हें केवल राजनीतिक आस्था के रूप में देखना भी जल्दबाजी होगी। यही कारण है कि हमने उनके विशाल कार्यों में से यादृच्छिक रूप से उन अंशों को चुनने का दूसरा और अधिक प्रत्यक्ष तरीका अपनाया है, जो केवल राजनीतिक सिद्धांत की शर्तों तक सीमित नहीं हैं; बल्कि जो भावना और तर्क में राष्ट्रीय समाजवादी विचारों की अभिव्यक्ति हैं, जिन पर किसी भी फासीवादी को गर्व हो सकता है।

यदि यह सुझाव दिया जाए कि चयन पक्षपात के कारण बाधित हुआ है, तो इसका एकमात्र उत्तर यह है कि किसी भी ज़िम्मेदार व्यक्ति ने कार्लाइल पर असंगति का आरोप नहीं लगाया है। जो दर्शन हमें एक पृष्ठ पर मिलता है, वही हमें दूसरे पृष्ठ पर भी मिलता है, और इसी तरह पुस्तक के अंत तक। यह मानने के बजाय कि हमारा प्रारंभिक प्रस्ताव पाठक की संतुष्टि के लिए सिद्ध हो चुका है, हमें यह ज़्यादा पसंद करना चाहिए कि वह थॉमस कार्लाइल के आगे के अध्ययन में स्वयं इसका प्रमाण ढूँढ़े, जिनके विचारों की कठोरता और शुद्धता उन लोगों के लिए एक आदर्श स्थापित करेगी जो लौह युग के उस दृढ़ सिद्धांत को मानते हैं, जो मोस्ले के शब्दों में: "भ्रम की शब्दाडंबरपूर्णता को काटकर एक नई वास्तविकता की प्राप्ति कराता है"।

विलियम मॉरिस - नेशनल सोशलिस्ट, आर्थर रीड द्वारा

टी विलियम मॉरिस के प्रति अंग्रेज़ समाजवादियों के रवैये ने उनके प्रशंसकों को लंबे समय से आश्चर्यचकित और निराश किया है। 19वीं सदी के महानतम लोगों में से एक, मॉरिस एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी सत्ता के चरम पर अपने कई पूर्व हितों की उपेक्षा करके खुद को समाजवादी आंदोलन में झोंक दिया। उनके जैसी क्षमता वाला कोई भी अंग्रेज़ कभी भी इस आंदोलन में शामिल नहीं हुआ था।

फिर भी, एक तरह से, वे आंदोलन में हमेशा एक अजनबी ही रहे हैं और उनके साथी समाजवादी भी उन्हें ऐसा ही मानते हैं। उनकी महानता को कई बार उन्होंने असहजता से स्वीकार किया है, उनके कार्यों और उपलब्धियों की प्रशंसा की है, लेकिन उन्होंने कभी उन्हें अपना दिल नहीं दिया, उन्हें कभी अपना नहीं माना, और न ही उन्हें अपना प्रेरक नेता माना। यह पद जर्मन-यहूदी कार्ल मार्क्स के लिए आरक्षित रहा है।

यह एक ऐसा तथ्य है जो समाजवादियों के बीच मॉरिस की उपस्थिति से उत्पन्न शर्मिंदगी पर काफ़ी प्रकाश डालता है। वह वास्तव में, घोर गरीबी और उससे जुड़ी बुराइयों को समाप्त करने की इच्छा रखने में उनके साथ एकमत थे, और यह मानते थे कि समाजवाद, किसी न किसी रूप में, इससे बाहर निकलने का रास्ता प्रदान करता है। लेकिन जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण और समाजवाद की उनकी दृष्टि कई महत्वपूर्ण पहलुओं में "साथियों" से भिन्न थी और उन्हें अपनी हड्डियों में यह एहसास था कि जो समाज उन्हें पसंद है, वह उनके लिए एक कारागार होगा। उन्होंने कर्तव्यनिष्ठा से मार्क्स के साथ संघर्ष किया और पूरी ईमानदारी से उन्हें आत्मसात करने की कोशिश की। "दास कैपिटल" के लिए उनके उत्साह के क्षण भी आए। लेकिन अंततः उनके भीतर, उनके बाहरी व्यक्तित्व से कहीं अधिक प्रबल, कुछ विद्रोह कर गया। वह एक क्रांति चाहते थे—हाँ, लेकिन यह मार्क्सवादी समाज उनकी दृष्टि के अनुरूप जीवन-पद्धति नहीं थी। यह उनके लिए पूरी तरह से यांत्रिक, बहुत अमूर्त, बहुत शहरी; बहुत महानगरीय, बहुत अ-अंग्रेजी था।

मार्क्स और मॉरिस के जीवन-दृष्टिकोण के बीच, वास्तव में, एक गहरी खाई थी। मार्क्स एक महानगरीय यहूदी थे, मॉरिस एक दक्षिणी अंग्रेज़। मार्क्स अध्ययनशील व्यक्ति थे, मॉरिस खुली हवा और कार्यशाला के शौकीन। मार्क्स शहर से जुड़े रहते थे, मॉरिस हमेशा एक ऐसे ग्रामीण इलाके का सपना देखते थे जो "धुँआधार भाप और पिस्टन की आवाज़" से मुक्त हो और एक ऐसे लंदन का जो "छोटा, सफ़ेद और साफ़" हो। मार्क्स एक मशीन-प्रेमी थे, मॉरिस उस व्यक्तिगत शिल्प कौशल को पुनर्जीवित करना चाहते थे जिसने इंग्लैंड को सुंदर बनाया था। मार्क्स एक भौतिकवादी थे, जिनके मन में एक यंत्रीकृत सामाजिक संगठन की कल्पना थी, मॉरिस एक कवि थे, और इस तरह, कुछ हद तक अराजकतावादी भी। मार्क्स ने वर्ग-घृणा और गृहयुद्ध का प्रचार किया। मॉरिस के हृदय की पुकार भाईचारे के लिए थी। "भाईचारा स्वर्ग है, और भाईचारे का अभाव नरक है: भाईचारा जीवन है, और भाईचारे का अभाव मृत्यु है! और जो कर्म तुम पृथ्वी पर करते हो, वह भाईचारे के लिए ही करते हो।"

मॉरिस, चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, दिल से कभी मार्क्सवादी नहीं रहे। विश्वव्यापीकरण, चाहे वह अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद का हो या अंतर्राष्ट्रीय वित्त का, उनके लिए अभिशाप था। वे न केवल स्वप्नदर्शी के रूप में अपने समय से पैदा हुए थे, बल्कि एक समाजवादी के रूप में भी। एक समाजवादी के रूप में वे उस चीज़ के अग्रदूत थे जो अभी भी समय के गर्भ में है। उनका आध्यात्मिक जुड़ाव एक ऐसे आंदोलन से था जो उनकी मृत्यु के बहुत बाद ही उभरा और मजबूत हुआ। उनका असली स्थान मार्क्सवादियों में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय समाजवादियों में है।

मॉरिस एक प्रबल जुनूनी व्यक्ति थे और उनके जीवन में इंग्लैंड के प्रति उनके जुनून से ज़्यादा मज़बूत या स्थायी कोई जुनून नहीं था। वे उसके बाहरी स्वरूप के बारे में कितने प्यार और समझदारी से लिखते हैं।

''यह भूमि एक छोटी सी भूमि है, जो संकीर्ण समुद्रों के भीतर इतनी अधिक बंद है कि इसमें विशालता के लिए अधिक स्थान नहीं है; इसमें कोई विशाल बंजर भूमि नहीं है जो अपनी नीरसता में भारी हो, न ही कोई विशाल बंजर भूमि है जो अपनी नीरसता में भारी हो।

जंगलों के विशाल एकांत, कोई भयानक अनछुए पर्वत की दीवारें नहीं: सब कुछ मापा हुआ, मिश्रित, विविध, एक चीज से दूसरी चीज में आसानी से फिसलता हुआ; छोटी नदियाँ, छोटे मैदान तेजी से बदलते हुए ऊंचे इलाके, सभी सुंदर व्यवस्थित पेड़ों से घिरे हुए; छोटी पहाड़ियाँ, छोटे पर्वत, भेड़-चलनों की दीवारों से घिरे हुए: न तो जेल और न ही महल, बल्कि एक सभ्य घर।''

यही स्नेहपूर्ण प्रशंसा "द अर्थली पैराडाइज़" की कहानियों के परिचयों में, महीने-दर-महीने, अंग्रेजी दृश्यों के मनमोहक वर्णनों को दर्शाती है और एक नए और जागृत इंग्लैंड के उस स्वप्न का निरंतर साथी है जो "न्यूज़ फ्रॉम नोव्हेयर" का विषय है, और "ए ड्रीम ऑफ़ जॉन बॉल" को एक ऐसा रंग और आभा प्रदान करता है। मॉरिस का समाजवाद, वास्तव में, पुराने अंग्रेजी मूल्यों को बचाने या पुनः प्राप्त करने की लालसा से, उसकी वास्तुकला की महिमा, उसके परिदृश्य की सुंदरता, व्यक्तिगत कारीगरी जिसने उसके सबसे विनम्र लोगों को भी शिल्पकार बना दिया, उसके लोगों के चरित्र "देहाती और संकीर्ण सोच वाले, लेकिन गंभीर, सच्चे और सरल आदतों वाले" से प्रेरित था। ऊपरी टेम्स के एक दूर-दराज के कोने में, उन्होंने एक बार बर्मिंघम के दर्शकों को बताया था, उन्होंने अभी-अभी आधा दर्जन "छोटे-छोटे गाँव के चर्च" देखे थे, जिनमें से प्रत्येक कला का एक सुंदर नमूना है। ये टेम्स के किनारे के देहाती लोगों की कृतियाँ हैं, जैसा कि आप हमें कहेंगे—इससे अधिक भव्य कुछ भी नहीं। यदि उसी प्रकार के लोग अब इन्हें डिज़ाइन और निर्माण करें, तो वे साधारण सादे छोटे नॉनकनफ़र्मिस्ट चैपल से बेहतर कुछ नहीं बना सकते, जो नए मोहल्लों में बिखरे हुए दिखाई देते हैं। यही वे हैं जिनसे वे मेल खाते हैं..." और वेस्टमिंस्टर के बारे में उन्होंने लिखा कि "इस महान महाकाव्य के लेखकों ने अपने पीछे कोई नाम नहीं छोड़ा है। क्योंकि वास्तव में यह किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि दक्षिण-पूर्वी इंग्लैंड के लोगों का काम है। यह पुरुषों के एक समूह की अविभाज्य इच्छाशक्ति का काम था, जिन्होंने अपने जीवन के अनुसार काम किया, क्योंकि वे इसके अलावा कुछ नहीं कर सकते थे..." आधुनिक जीवन के संदर्भ में उस उपलब्धि के कुछ समकक्ष, एक पुराने, अधिक खुशहाल इंग्लैंड की उस भावना को खोजना—यही मॉरिस के समाजवाद के पीछे प्रेरक शक्ति थी।

तो, उनका असली स्थान एक ऐसे समाजवाद में है जो अब विश्वव्यापी नहीं रहा और राष्ट्रीय हो गया है। और चूँकि वे मध्य युग में डूबे हुए थे, इसलिए उन्हें राष्ट्रीय समाजवाद के उन सभी पहलुओं में विशेष रुचि होती जो मध्ययुगीन शिल्प संघों की याद दिलाते हैं। उन्हें यह बात सबसे बड़ी समझदारी लगती कि कॉर्पोरेट राज्य को नागरिकता केवल क्षेत्रीय आधार पर नहीं, बल्कि कामगारों के एक बड़े संघ की सक्रिय सदस्यता पर आधारित करनी चाहिए।

उन्हें सचमुच इस बात का अफ़सोस होता कि मध्य युग के व्यक्तिगत कारीगरों की जगह इंजीनियर और तकनीशियन ने इतनी बड़ी हद तक ले ली थी। लेकिन उन्हें लगता कि संगठित मज़दूरों के महत्व को पहचानकर, कॉर्पोरेट राज्य सही विचार से प्रेरित था।

राजनीति को आम आदमी की ज़रूरतों और इच्छाओं से बहुत पहले ही अलग करके उन वकीलों, दुष्टों और पछतावों के विशेष हाथों में छोड़ दिया गया था, जिनके एकाधिकार से "ए ड्रीम ऑफ़ जॉन बॉल" की नाराज़ जनता इतनी बेताब है कि उसे छुड़ाना चाहती है। "न्यूज़ फ्रॉम नोव्हेयर" में संसद भवन बस एक दिलचस्प अवशेष हैं। इंग्लैंड का शासन अंग्रेजों द्वारा और उनके लिए है और वह उन वित्तीय हितों का मोहरा नहीं रहा जो आज वेस्टमिंस्टर में उसकी दलीय राजनीति को नियंत्रित करते हैं।

राष्ट्रीय समाजवाद की एक और विशेषता जिसे मॉरिस ने तहे दिल से स्वीकार किया होगा, वह है कृषि के मूलभूत महत्व पर उसका ज़ोर। मॉरिस, आज के राष्ट्रीय समाजवादियों की तरह, एक खुशहाल समुदाय की कल्पना बड़े शहरों के संदर्भ में नहीं, बल्कि मुख्यतः कृषि प्रधान समाज के संदर्भ में करते थे। ज़मीन उनके लिए एक जुनून है। "धरती और उसकी वृद्धि और उसका जीवन! काश मैं कह पाता या दिखा पाता कि मुझे इससे कितना प्यार है!"

लेकिन सिर्फ़ कविताएँ लिखने के लिए नहीं। बल्कि एक मज़बूत नस्ल को विकसित करने और पोषित करने के लिए भी। मॉरिस के लिए दुनिया के सबसे मनमोहक नज़ारों में से एक था "बढ़ती हुई हरियाली से भरे एकर खेत" और अपने एक पत्र में उन्होंने अगस्त की सुनहरी फ़सल का ज़िक्र किया है।

अंग्रेजी देहात देखने के लिए यह महीना सबसे बेहतरीन महीनों में से एक है। "न्यूज़ फ्रॉम नोव्हेयर" में थेम्स घाटी में घास काटने वालों का एक मनमोहक चित्रण है, जो सभी रंग-बिरंगे कपड़ों में सजे हैं और घास का मैदान किसी विशाल ट्यूलिप के बगीचे जैसा लग रहा है। "सभी लोग सोच-समझकर, लेकिन अच्छी तरह और लगातार काम कर रहे थे, हालाँकि वे पतझड़ के तारों के झुरमुट की तरह हँसी-मज़ाक से भरे शोरगुल से भरे थे।" इस देश को बहुत पहले ही नीची नज़र से, उपेक्षित और नीरस समझा जाना बंद हो चुका था। कहीं और, वे लिखते हैं, "मैं चाहता हूँ कि शहर देश की सुंदरता से सराबोर हो, और देश शहर की बुद्धिमत्ता और जीवंत जीवन से।"

मॉरिस, वास्तव में, आर्थिक निरंकुशता के नाम से प्रचलित पूरे सिद्धांत का उत्साहपूर्वक समर्थन करते। वे व्यापार के रोमांस और उपयोगिता को समझते थे, और पुराने लंदन ब्रिज के नीचे, लहरों की लहरों से टकराती हरी-भरी तस्वीरें भी देखते थे।

> ''कुछ कीलें जिन पर लेवेंटाइन की छड़ें लगी हैं, जो जली हुई पहाड़ी पर यू की लकड़ी से काटी गई हैं, और नुकीले बर्तन जिन्हें भरने के लिए यूनानी हाथों ने मेहनत की है, और दूर समुद्र से लाए गए थोड़े से मसाले, फ्लोरेंस का सोने का कपड़ा, और यप्रेस टेपेस्ट्री, और ब्रुग्स का कपड़ा, और गुइएन के हॉगहेड्स।''

कुछ सुंदर और दुर्लभ वस्तुएँ व्यापार के माध्यम से ही प्राप्त की जानी चाहिए। लेकिन अपने निर्यात पर निर्भर रहने, "अनुकूल व्यापार संतुलन" के लिए सब कुछ त्यागने के आधुनिक आर्थिक सिद्धांत के आगे, उनके मन में घृणा के अलावा कुछ नहीं था। उनके लिए सुखी जीवन का आधार और रहस्य अपनी धरती से वस्तुएँ उत्पन्न करने में निहित था। इस भावना की एक उत्कृष्ट अभिव्यक्ति उस महान प्रेमकथा "द रूट्स ऑफ़ द माउंटेंस" में बर्गडेल के लोगों के जीवन के उनके वर्णन में मिलती है। "न्यूज़ फ़्रॉम नोव्हेयर" में इंग्लैंड ने खुद को विशाल विदेशी व्यापार पर निर्भरता से मुक्त कर लिया है और अपने संसाधनों से ही सुख और प्रचुर समृद्धि प्राप्त की है।

राष्ट्रीय समाजवाद और मॉरिस के बीच एक और कड़ी मॉरिस के "क्राफ्ट डर्च फ्रायड" (आनंद से शक्ति) के दर्शन में मिलती है । यह मॉरिस की काम में आनंद की शिक्षा से काफी मेल खाता है। अधिकांश सामान्य समाजवादी प्रचार काम को एक अभिशाप के रूप में प्रस्तुत करने पर केंद्रित है। यह मॉरिस से कोसों दूर है। वे लिखते हैं, "मैंने सोचने की कोशिश की कि अगर मुझे मेरे सामान्य दैनिक काम करने से मना कर दिया जाए, तो मेरा क्या होगा; और मैं जानता था कि मैं निराशा और थकान से मर जाऊँगा।" लेकिन उनका मानना था कि "कोई भी काम जो आनंद के साथ नहीं किया जा सकता, करने योग्य नहीं है," और उन्होंने अपने समाजवाद के माध्यम से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि उनके सभी साथी-कार्यकर्ता भी अपनी पसंद का काम चुनने और उसे पसंद करने की स्थिति में हों, जैसा कि वे करते थे। टेम्स नदी के किनारे के देहाती लोगों के बारे में, जिनका पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, उन्होंने लिखा, "एक समय था जब हर कोई जो कुछ भी बनाता था, किसी उपयोगी वस्तु के अलावा एक कलाकृति भी बनाता था, और उसे बनाने में उन्हें 'आनंद' मिलता था। मुझे जिस बात पर भी संदेह है, मुझे उसमें कोई संदेह नहीं है।" और वर्तमान समय का ज़िक्र करते हुए, वे कहते हैं: "समाज की एक सुव्यवस्थित स्थिति में, काम करने के इच्छुक हर व्यक्ति को यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए: पहला, सम्मानजनक और उपयुक्त काम; दूसरा, एक स्वस्थ और सुंदर घर; तीसरा, मन और शरीर के आराम के लिए पूर्ण अवकाश।" आज हम इससे कितने दूर हैं! हैमरस्मिथ की एक खिड़की से बाहर देखते हुए, वे "शेक्सपियर और मिल्टन की शानदार ज़बान पर चीख़ें, चीख़ें और तमाम अपमानजनक बातें" सुनते हैं और "क्रूर, लापरवाह आकृतियों और चेहरों को गुज़रते हुए" देखते हैं। "मैं अपनी भावनाओं और इच्छाओं से जानता हूँ कि ये लोग क्या चाहते हैं, क्या उन्हें इस निम्नतम बर्बरता से बचा सकता था: ऐसा रोज़गार जो उनके आत्म-सम्मान को बढ़ाए और उनके साथियों की प्रशंसा और सहानुभूति जीत सके, और ऐसे आवास जहाँ वे आनंद से आ सकें, ऐसा वातावरण जो उन्हें सुकून और शांति दे; उचित श्रम, उचित आराम।" वे अत्यधिक विशेषज्ञता में विश्वास नहीं करते—एक व्यक्ति को कई अलग-अलग चीज़ों में हाथ आजमाने में सक्षम होना चाहिए। और आनंद परिश्रम और मेहनत के साथ-साथ ज़्यादा नाज़ुक और परिष्कृत काम में भी मिलता है। "न्यूज़ फ़्रॉम नोव्हेयर" में एक उत्साहपूर्ण

सड़क की मरम्मत में सक्रिय पुरुषों के एक समूह का वर्णन और उसमें उनकी खुशी, तथा इस बात पर खेद व्यक्त करते हुए कि इन आदर्शवादी समय में कठिन काम बहुत कम होता जा रहा है।

मॉरिस और राष्ट्रीय समाजवाद के बीच संपर्क का एक और बिंदु उनकी उत्कट इच्छा है कि लोग अपनी जड़ों की ओर लौटें। शुरू से अंत तक वे एक महान उत्तरी यूरोपीय थे। हिटलर के नस्ल-भेद के आग्रह को अतिशयोक्तिपूर्ण मानकर वे भले ही असहमत होते, लेकिन वे उस विश्वव्यापीकरण से घृणा करते थे जिसने उस आग्रह को जन्म दिया था और हृदय से गहरे नॉर्डिक थे। हालाँकि उन्हें अंग्रेजी चरित्र और कहानी के निर्माण में सहायक सभी तत्वों से प्रेम था, फिर भी उन्हें उत्तरी लोगों से विशेष लगाव था। इस प्रकार, एक कहानीकार के रूप में उन्होंने शास्त्रीय और सेल्टिक जड़ों के साथ पूरा न्याय किया, जिनसे हम भी अपना रक्त और शक्ति प्राप्त करते हैं, उनकी गाथाओं को स्नेहपूर्ण उत्साह के साथ पुनः कहते हुए, फिर भी उत्तरी गाथा के इर्द-गिर्द ही उनका सबसे प्रबल उत्साह उमड़ता है, और विशेष रूप से उस आइसलैंडिक गाथा के इर्द-गिर्द, जिसके बारे में उन्होंने "पोएम्स बाय द वे" में इतनी स्पष्टता और मर्मस्पर्शी ढंग से लिखा है। इसके अज्ञात लेखकों ने "वह मंत्र खोज लिया था जिससे भय का कोहरा पिघल गया था" और मॉरिस ने अपने जीवन के तनावों को उनके हवाले कर दिया, और पीछे मुड़कर देख कर कह सकते थे, "तुमने मेरी ज़रूरत के समय मेरी मदद की है।" लोगों को ये कहानियाँ पता न चलें, इस बात ने उन्हें शारीरिक पीड़ा पहुँचाई और अपने "सिगर्ड द वोल्सुंग" में उन्हें दोहराते हुए उन्होंने अपनी पूरी शक्ति का परिचय दिया। उन्होंने दो बार आइसलैंड की यात्रा की और उसे हमारी जाति की एक प्रकार की पवित्र भूमि मानने लगे।

आज का हमारा कमजोर इंग्लैंड उस प्रेरणादायी टॉनिक हवा में सांस ले सकता है।

इस संक्षिप्त नज़र से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि मॉरिस का राष्ट्रीय समाजवाद से जुड़ाव अत्यंत प्रभावशाली है। उनकी संभावित आलोचनाओं की कल्पना करना कठिन नहीं है।

वे एक महान कवि थे और कवि में अराजकतावादी का अंश हमेशा मौजूद रहता है। राष्ट्रीय समाजवाद के बारे में उनके लिए सबसे कम आकर्षक बात यह होगी कि यह आमतौर पर राज्य पर बहुत अधिक दबाव डालता है। ऐसा करने में राष्ट्रीय समाजवादी सही हो सकते हैं; कम से कम यह निश्चित है कि किसी बड़े संकट और संक्रमण के दौर में, जब नए रूप गढ़े और आज़माए जा रहे हों, अस्तित्व के लिए एक मज़बूत एकीकृत कमान ज़रूरी है। लेकिन यह ख़तरा हमेशा बना रहता है कि एक अत्यधिक केंद्रीकृत संगठन, क्योंकि यह तनाव के समय सामाजिक स्वास्थ्य के लिए एक आवश्यक साधन है, लंबे समय तक बना रह सकता है और उन दिनों में अपने आप में एक साध्य बन सकता है, जब अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय समाजवाद उस ख़तरे से निपट सकता है, अगर और जब वह ख़तरा पैदा हो। इस बीच, विलियम मॉरिस जैसे प्रबल अग्रदूत द्वारा यह याद दिलाना कोई बुरी बात नहीं है कि, अन्य चीज़ें समान होने पर, राष्ट्रीय समाजवाद, जब एक बार इसके द्वारा रचे गए नए रूप मज़बूती से स्थापित और समेकित हो जाएँ, तो उसे राज्य के हस्तक्षेप को कम करने का लक्ष्य रखना चाहिए, न कि अधिक।

“स्केप्टिकस” द्वारा यहूदी मिथक

ए सितम्बर 1936 में नॉटिंघम में ब्रिटिश एसोसिएशन की वार्षिक बैठक में श्री. एच.जी. वेल्स ने धार्मिक विचारों में यहूदियों की भूमिका के बारे में ऐतिहासिक सत्य बताया, जिसके बारे में उनका दावा था कि उसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया था। जब श्री वेल्स ने अपना भाषण दिया, तो हर वर्ग के यहूदी जवाब देने के लिए आगे आए, और कई गैर-यहूदी हस्तियों ने श्री वेल्स के विचारों का खंडन किया। उनके उत्तरों में मुख्य यहूदी तर्क यह था - जैसा कि शुरू से ही रहा है - कि इब्रानी भविष्यवक्ताओं ने मानवजाति को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी है।

बड़ी समस्या यह है कि क्या यह हिब्रू विवाद क्यूनिफॉर्म दस्तावेजों और शास्त्रीय लेखकों के आधार पर स्थापित किया जा सकता है, जो दोनों हिब्रू मूल और फिलिस्तीन में यहूदी साम्राज्य के काल के साथ मेल खाते हैं।

यह असाधारण बात है कि ऊपर उल्लिखित सभी स्रोत इन दावों के बिल्कुल विपरीत साबित होते हैं।

दो अमेनहोटेप शासकों के अधीन मध्य साम्राज्य (1750-1350 ईसा पूर्व) के मिस्री दस्तावेज़ों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि लगभग 1400 ईसा पूर्व अखेनातेन और उनके दरबार ने एकेश्वरवाद को राजकीय धर्म के रूप में स्थापित करके एक धार्मिक क्रांति की। कैम्ब्रिज प्राचीन इतिहास में इन तथ्यों का सावधानीपूर्वक वर्णन किया गया है।

लैटिन इतिहासकार जस्टिनस का यह प्रमाण कि यहूदियों का मूल दमिश्क से था, अब टेल-अमरना पत्रों से और भी पुष्ट होता है। इस पत्र-व्यवहार से पता चलता है कि कई शताब्दियों तक कनान केवल मिस्र का एक सीमावर्ती प्रांत था, जिस पर अधिकार के लिए हित्तियों द्वारा अक्सर विवाद होता रहता था। इस पत्र-व्यवहार की भाषा बेबीलोनियाई थी।

बोगाज़-केयू के हित्ती अभिलेखों से इन तेल-अमरना पत्रों पर और अधिक प्रकाश पड़ता है। दोनों में हबीरू नामक एक वर्ग का उल्लेख है , जो दासों का एक वर्ग था। हर देश के यहूदी मूल के विद्वान इस बात से इनकार करते हैं कि हबीरू का इब्रानियों से कोई संबंध है। तेल-अमरना पत्रों में रोचक विवरण हैं। मिस्र के फिरौन को लिखे गए छह पत्र उरुसलीम (यरूशलेम) के राज्यपाल अब्दी-हिबा के हैं । मेरा मानना है कि यह अब्दी-हिबा, अब्राहम नाम का ही मिस्री लिप्यंतरण है, जो वैसे भी सीरिया का मूल निवासी था, जबकि पुराने नियम में अब्राहम का उल्लेख कसदियों के ऊर से मिलता है। हबीरू (लगभग 1400 ईसा पूर्व) ने अब्दी-हिबा पर बहुत दबाव डाला। एक के बाद एक पत्रों में वह मिस्र से सैन्य सहायता का अनुरोध करता है। "राजा, मेरे स्वामी, मेरे सूर्य। अब्दि-हिबा, आपके सेवक, राजा के चरणों में, मेरे स्वामी, मैं सात बार गिरता हूँ। वे मेरे विरुद्ध जो आरोप लगा रहे हैं, वह एक कलंक है। देखिए, मैं कोई राजकुमार नहीं हूँ... देखिए, न तो मेरे पिता ने और न ही मेरी माता ने मुझे इस स्थान पर स्थापित किया; शक्तिशाली राजा के भुजबल ने मुझे मेरे पिता के घर में प्रवेश कराया है।"

...

मदद के लिए एक और पत्र में वह फिरौन को लिखता है, "हबीरू राजा के किलों पर कब्ज़ा कर रहे हैं... सभी नष्ट हो गए हैं। राजा, मेरे स्वामी, उसके देश में मदद भेजें।"

पुराने नियम में इनमें से किसी भी तथ्य या बाद के तथ्यों के बारे में कुछ भी नहीं बताया गया है, न ही रामेसेस द्वितीय (1292-1225 ई.पू.) और कादेश के हित्तियों के बीच लड़े गए महान विश्व युद्ध के बारे में कुछ बताया गया है, जिसमें उस समय के सभी संगठित राज्यों ने दो युद्धरत पक्षों में से किसी एक में शामिल हो गए थे।

मौखिक परंपरा को छोड़कर, किसी भी स्रोत से राजा दाऊद या सुलैमान के बारे में एक शब्द भी नहीं मिलता

पुराने नियम के कई शताब्दियों बाद, संभवतः बेबीलोन में बंदी बनाए जाने के दौरान, अर्थात् 585 ईसा पूर्व के बाद लिखे गए। यह तथ्य कि किसी भी स्रोत में उनका कोई उल्लेख नहीं है, उनके अस्तित्व की संभावना और कहानी की अनुमानित सच्चाई को अनिवार्य रूप से नकारता नहीं है; और भी अधिक, क्योंकि सीरिया और फिलिस्तीन में सबसे अधिक रुचि रखने वाला देश, असीरिया, उस समय ग्रहण में था, अर्थात् लगभग 1000 ईसा पूर्व।

निम्नलिखित कीलाकार साक्ष्य जहूर-यहोवा की उत्पत्ति के बारे में प्रश्न उठाते हैं। इस नाम के यहूदी मूल की पुराने नियम की परंपरा सर्वविदित है। लेकिन ज़िंजिरली (मध्य फ़रात घाटी) में पाए गए अरामी शिलालेख स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि तिगलत-पिलेसर तृतीय (740 ईसा पूर्व) द्वारा सामल देश पर आक्रमण के समय, यदी का एक छोटा सा स्वतंत्र राज्य था, जो वास्तव में यदी है। यदी के इस राजवंश की स्थापना स्पष्ट रूप से 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व में केआरएल ने की थी; उनके बाद पारा प्रथम ने शासन किया, जिन्होंने अपने देवता हदद के लिए एक शिलालेख छोड़ा है। इसलिए यदी का राजा अज़्रियन, जिसकी पहचान इस अरामी शिलालेख की खोज तक यहूदा के अजर्याह (2 राजा, 15) के साथ की जाती थी, मध्य फ़रात राजवंश से संबंधित निकला। इस रहस्योद्घाटन ने भी पुराने नियम की कहानी में एक बड़ी गड़बड़ी पैदा कर दी है।

अश्शूर की सैन्य शक्ति के पूरे काल में, असुरनत्सिरपाल द्वितीय (884-860 ईसा पूर्व) से लेकर अश्शूर के अंत (612 ईसा पूर्व) तक, अश्शूरियों द्वारा सामरिया के एक राजा और यहूदा के एक राजा का उल्लेख किया गया है। यह आश्चर्यजनक है कि इस्राएल और कनान का उल्लेख नहीं किया गया है। ये छोटे-छोटे राज्य थे जो हमेशा अश्शूर के अधीन थे, साथ ही निकटवर्ती दमिश्क राज्य के भी। अपने 35 वर्षों के शासन काल में शबुआनासार तृतीय (859-824 ईसा पूर्व) ने सीरिया और फ़िलिस्तीन पर चौदह बार आक्रमण किया। उसने कम से कम पाँच आक्रमणों का उल्लेख किया है जिनमें उसने फ़िलिस्तीन के लोगों को अश्शूर में बंदी बना लिया था। तिग्लत-पिलेसर चतुर्थ (745-728 ईसा पूर्व), सार्गोन द्वितीय (722-705 ईसा पूर्व), संहेरिब (705-682 ईसा पूर्व), अजरहादोन, आदि, सभी ने बारी-बारी से सीरिया और फ़िलिस्तीन पर आक्रमण किया और उन्हें तबाह किया, और लोगों को असीरिया और बेबीलोनिया ले गए। मिस्र के अमेनहोटेप चतुर्थ की तरह, ज़ोरोस्टर भी आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत से ही सूर्य और अहुरमज़्दा, जो एकेश्वरवाद का सबसे शुद्ध रूप है, के भजन गाते रहे थे।

एक ईश्वर अहुरमज़्दा, जो अच्छाई और पवित्रता का स्रोत है, स्वयं ज़रथुष्ट्र की शहादत के बाद भी जीवित रहा—और संभवतः उसके कारण भी। इसका प्रमाण यह है कि अखमीनी लोगों ने (548 ईसा पूर्व से) अहुरमज़्दा को अपना एकमात्र ईश्वर मान लिया था। अब यह सिद्ध किया जा सकता है कि ज़रथुष्ट्र आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के पूर्वार्ध में रहते थे। निर्वासन के दौरान असीरियन साम्राज्य में फैले सीरिया और फ़िलिस्तीन के लोग ज़रथुष्ट्र के एकेश्वरवादी सिद्धांत से पूरी तरह अनभिज्ञ नहीं होंगे।

पुराने नियम में कहा गया है कि बेबीलोन के राजा नबू-कुदुर-उत्सुरी (नबूकदनेसेर) ने यहूदियों को बंदी बना लिया था (लगभग 555 ईसा पूर्व)। बेबीलोन के ग्रंथों में इसका कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन अगर यह सच है, और इसकी सबसे अधिक संभावना है, तो विशेष रूप से यरूशलेम में मंदिर के विनाश के बाद, बेबीलोन में बंदी यहूदी स्वाभाविक रूप से किसी गहन चिंतन की ओर प्रवृत्त हुए होंगे। वहाँ पारसी धर्म काफ़ी प्रचलित रहा होगा।

इस बात के प्रमाण हैं कि असीरिया (612-606 ईसा पूर्व) के पूर्ण पतन और आर्य जातियों के उदय से पश्चिमी एशिया में गहरा आघात पहुँचा था, जो कमोबेश ज़रथुष्ट्र के उपासक थे। एकेश्वरवाद का विचार बेबीलोनवासियों जैसे रूढ़िवादी लोगों में भी व्याप्त रहा होगा। बेबीलोन के अंतिम राजा नबूनैद (553-538 ईसा पूर्व) ने, बढ़ती लहर को भाँपते हुए, इस खतरे को रोकने की कोशिश की।

किसी न किसी बहाने से उसने विभिन्न बेबीलोन शहरों की सभी मूर्तियों और स्थानीय देवताओं की प्रतिमाओं को राजधानी में एकत्रित कर लिया। इस कृत्य से स्थानीय पुजारियों और उनके अनुयायियों में भारी असंतोष फैल गया। संभवतः यही एक कारण है कि जब साइरस ने चुपचाप शहर में प्रवेश किया (538 ईसा पूर्व) और बेबीलोन साम्राज्य का अंत किया, तो बेबीलोन की सेना ने कोई प्रतिरोध नहीं किया।

पुराने नियम की परंपरा कहती है कि कुसू ने यहूदी बंदियों को रिहा किया था। मुझे लगता है कि उस सहज फ़ारसी ने शहर के लोगों की ज़रा भी परवाह नहीं की, जब तक उसे कर मिलता रहा। मेरा मानना है कि यहूदी एकेश्वरवाद बेबीलोन के बंदियों द्वारा फ़िलिस्तीन लाया गया था। एज्रा 1 और इतिहास के अन्य अध्यायों का एक आलोचनात्मक सर्वेक्षण ऐसी ही व्याख्या के लिए अतिसंवेदनशील है। बेबीलोन की बंदी के परिणामस्वरूप यहूदियों में एक जातीय चेतना विकसित हुई—यदि 71 ईस्वी में हुए बड़े पैमाने पर फैलाव से पहले भी—। अनुभव ने साबित कर दिया था कि बहुत सारे देवताओं ने मानवजाति को नहीं बचाया था। एक सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा से मुक्ति की संभावना अधिक थी।

विद्वानों को यह जानकर बहुत हैरानी हुई है कि पूरे हेलेनिस्टिक काल में यहूदियों के बीच संचार का सामान्य माध्यम यूनानी भाषा ही थी। बेशक, महासभा और पुरोहित वर्ग भी थे। ऐसा लगता है कि सेमिटिक मूल निवासियों की मुख्य बोली अरामी भाषा ही रही होगी। यह निश्चित नहीं किया जा सकता कि यहूदी पुरोहित आपस में हिब्रू भाषा बोलते थे या नहीं।

निस्संदेह, सिसरो रोमन गणराज्य के सबसे बुद्धिमान और निष्पक्ष राजनेता हैं। घोर भ्रष्टाचार और स्वच्छंदता की दुनिया में, वे कैटो के साथ अकेले हैं, जिन पर रिश्वतखोरी या कदाचार का कोई आरोप नहीं लगाया गया है। उनके लेख उनकी बौद्धिक क्षमताओं और तर्कशक्ति की व्यापकता को सिद्ध करते हैं। सैकड़ों कौंसल और प्रेटोरों में से, वे एकमात्र कौंसल हैं जो सिलिसिया से एक सम्मानजनक रिकॉर्ड के साथ लौटे। सिसरो एक उच्च राजनीतिक विचारक, निष्पक्ष और ईमानदार हैं। विदेशी राष्ट्रों के संबंध में वे बहुत वस्तुनिष्ठ हैं। उन्होंने यूनानियों की लापरवाही और लिडियन लोगों की दासता के बारे में लिखा, लेकिन उनमें से किसी को भी बोर्न का दुश्मन नहीं कहा। केवल यहूदियों को ही वे बार-बार "हमारे दुश्मन" कहते हैं। सेक्विटुर ऑरी इलिया इनविडिया इउडैसी।

अगली बात यहूदी सोने के बारे में आरोप है... कम ऑरम इयूडेओरम नॉमिन कोटानिस एक्स इटालिया एट एक्स ऑम्निबस नॉस्ट्रिस प्रोविंसिस हिरोसोलिमम एक्सपोर्टरी सॉलेरेट।— इटली और हमारे सभी प्रांतों से यहूदियों द्वारा जेरूसलम को सोना निर्यात किए जाने के संबंध में। .

. . ह्युइक ऑटम बारबरा अंधविश्वासी रेसिस्टेरे सेवेरिबेटिस, मल्टीट्यूडिनम इयूडेओरम फ्लैग-रैंटेम नॉन न्यूक्वाम इन कॉन्टिओनिबस प्राइ रे पब्लिका कंटेम्नेरे ग्रेविटैटिस सुम्माई फ़ुइट।—लेकिन इस बर्बर अंधविश्वास का विरोध करना गरिमा का कार्य था, यहूदियों की भीड़ की निंदा करना सबसे बड़ी बुद्धिमानी का कार्य था, जब अक्सर वे गणतंत्र के हितों की रक्षा के लिए आयोजित सभाओं में सबसे अधिक अनियंत्रित होते थे। .

· · नॉन एनिम क्रेडो रिलीजनम एट इयूडेओरम एट होस्टियम इम्पेडिमेंटा। - हमारे दुश्मन यहूदियों का धार्मिक पंथ कोई बाधा नहीं था। . . आदि आदि।

सिसरो का यह भाषण संभवतः लैटिन की सबसे सुंदर और देशभक्तिपूर्ण रचनाओं में से एक है; हालाँकि, पिछले पचास वर्षों से, इस देश के सरकारी स्कूलों और विश्वविद्यालयों के लिए इसका कोई स्कूल संस्करण नहीं आया है, और इसके स्पष्ट कारण हैं। इसी कारण से, टैसिटस द्वारा रचित "द हिस्ट्रीज़" का भी कोई संस्करण नहीं आया है । टैसिटस (अन्नालियम.इल.85) में उल्लेख है कि सम्राट टिबेरियस के शासनकाल में सीनेट ने एक आदेश जारी किया था जिसमें मिस्र और यहूदियों की पूजा पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और 4,000 यहूदी मुक्त लोगों को रोम से सार्डिनिया भेज दिया गया था, और शेष लोगों को तुरंत रोम छोड़ने का आदेश दिया गया था।

टैसिटस ने वास्तव में एक अनुच्छेद में कहा है कि यहूदी साम्राज्य के सबसे सफल काल (ईसा पूर्व शताब्दी से लेकर 70 ईसवी में टाइटस द्वारा यरूशलेम के विनाश तक) में यहूदी अपने मंदिर में गधे के सिर की पूजा करते थे। (टैसिटस: हिस्टोरियारम V. 2-5)।

होरेस और जुवेनल के पास उनके बारे में कहने के लिए और भी बहुत कुछ है। कॉन्स्टेंटाइन, जिसे महान कहा जाता है, ने 325 ईस्वी में निकेया की पहली चर्च परिषद में पुराने नियम को संत घोषित करने की अनुमति देकर भयावह कृत्य किया। लगभग एक या दो पीढ़ियों तक यहूदी पूरे ईसाई जगत में भविष्यद्वक्ताओं के पुत्रों के रूप में बहुत लोकप्रिय रहे। लेकिन मुश्किल से एक सदी (यानी पाँचवीं शताब्दी के आरंभ से) बीती कि उनमें से बड़ी संख्या में लोगों को कॉन्स्टेंटिनोपल और अलेक्जेंड्रिया छोड़ने का आदेश दिया गया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि ईसाईजगत से बदला लेने के उद्देश्य से यहूदियों ने

इस्लाम के आंदोलन को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी, यह अत्यंत आश्चर्यजनक है कि यहूदियों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बावजूद, पहले खलीफाओं ने उन पर भयंकर कट्टरता थोपी।

"किताब के लोगों" के रूप में अरबों ने ईसाइयों को औपचारिक निमंत्रण के अलावा कभी भी इस्लाम अपनाने के लिए मजबूर नहीं किया। लेकिन अब्बासी खलीफाओं (850 ईस्वी) तक इस्लाम ने यहूदियों को एकेश्वरवादी नहीं माना।

लेवेंट भागों में यहूदियों के पूरे समुदाय को धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया गया, और पुरुषों को इस्लाम की सेनाओं की अग्रिम पंक्तियों में शामिल कर दिया गया।

मुस्लिम विश्व और फिलिस्तीन, ए. यूसुफ अली द्वारा

पी युद्ध के पूर्वार्ध में फ़िलिस्तीन में ब्रिटिश नीति ग्रेट ब्रिटेन और मुस्लिम दुनिया के बीच संबंधों में एक चलता-फिरता नासूर रही है। 1920 के दशक में इसके द्वारा पैदा की गई गलतफहमियाँ काफी बुरी थीं—1930 के दशक में उन्होंने जो गर्मी पैदा की है वह इतनी प्रचंड है कि विस्फोट का खतरा है। और इस अनुग्रह वर्ष 1938 में, विश्व की स्थिति इतनी तेज़ी से बिगड़ी है कि कोई भी भविष्य की विश्व शांति के लिए एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में फ़िलिस्तीन की अनदेखी नहीं कर सकता। ब्रिटिश अधिकारियों ने अस्पष्ट रूप से अपनी असंभव स्थिति को महसूस किया है और दो वर्षों के भीतर समस्या को हल करने में उनकी मदद के लिए दो आयोग भेजे हैं। उन्होंने जो महसूस नहीं किया है वह है मुस्लिम भावना की ताकत और वह अजेय आधार जिस पर वह भावना आधारित है।

यह सच नहीं है कि सिर्फ़ अरब देश ही इस सवाल में रुचि रखते हैं। हर हफ़्ते भारत के अख़बार देश के विभिन्न केंद्रों पर अरबों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करने और ब्रिटेन से फ़िलिस्तीन में अपनी नीति बदलने का अनुरोध करने वाली बैठकों की ख़बरें लाते हैं।

इस प्रश्न में न केवल मुसलमान, बल्कि हिंदू भी रुचि रखते हैं। एक से अधिक बार फ़िलिस्तीन दिवस मनाया गया है, जिन पर कड़े भाषण दिए गए हैं। अधिकारियों पर दबाव डालने के लिए हिजरत (स्वैच्छिक निर्वासन) और सरकार के साथ असहयोग का सुझाव दिया गया है। डच संप्रभुता के अधीन जावा के मुसलमानों ने भी यही गहरी रुचि दिखाई है, और अपनी सरकार को काफ़ी शर्मिंदा किया है। फ्रांसीसी मुस्लिम उपनिवेशों में फ़िलिस्तीन की भावना उन जटिल समस्याओं को और बढ़ा देती है जिनका सामना फ्रांसीसी औपनिवेशिक नीति को करना पड़ता है। और यह स्वाभाविक ही है कि अरब देशों में भी अपने अरब भाइयों के प्रति सहानुभूति और फ़िलिस्तीन में हो रहे दमन और अन्याय के विरुद्ध आक्रोश की भावना प्रबल रूप से अभिव्यक्त हो।

यमन के राजकुमार सैफुल इस्लाम ने 1937 में अपने राज्याभिषेक प्रतिनिधिमंडल के साथ लंदन में एक बैठक में अपनी और अपनी जनता की गहरी भावनाओं को सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया। राजनयिक दल के विभिन्न सदस्यों की उपस्थिति में आयोजित एक स्वागत समारोह में बोलते हुए, उन्होंने कहा: "दुनिया के सभी मुसलमान फ़िलिस्तीन के अरबों के साथ सहानुभूति रखते हैं और तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक फ़िलिस्तीन का प्रश्न अरबों के नागरिक अधिकारों के प्रति पूर्वाग्रह के बिना हल नहीं हो जाता।" और यमन तब से चुप नहीं रहा है, बल्कि समाधान सुझाने के लिए कई प्रयास किए हैं।

इराक तो और भी ज़्यादा ज़िद पर अड़ा रहा है। इराक के वर्तमान प्रधानमंत्री ने कुछ ऐसी घोषणाएँ की हैं जिनकी कुछ हलकों में "तीखी अविवेकपूर्ण" कहकर आलोचना की गई है। अगर वे अविवेकपूर्ण थीं, तो कम से कम वे इस वास्तविक चिंता से प्रेरित थीं कि फ़िलिस्तीन में ब्रिटिश जनमत को और ग़लतियों की ओर न मोड़ा जाए। ऐसा माना जाता है कि उनकी हालिया लंदन यात्रा (1938 की शरद ऋतु में) मुख्यतः फ़िलिस्तीन प्रश्न का कोई उचित समाधान प्रस्तुत करने के उद्देश्य से थी, और बगदाद में उनके अपने लोगों के बीच इस प्रश्न पर मौजूद प्रबल भावना के जवाब में थी। ट्रांसजॉर्डनिया, एक पड़ोसी होने के नाते और कुछ मायनों में उसी भौगोलिक क्षेत्र का हिस्सा होने के नाते, निश्चित रूप से गहरी दिलचस्पी रखता है। सऊदी अरब के राजा अब्दुल अज़ीज़ इब्न-सऊद ने अब तक कूटनीतिक चुप्पी बनाए रखी है, लेकिन उनके प्रजाजन, उत्साही इक्वान, शायद उन सबसे महत्वपूर्ण अरब समूहों में से हैं जो फ़िलिस्तीन की घटनाओं पर सिर्फ़ दार्शनिक रुचि से ज़्यादा नज़र रख रहे हैं।

सीरिया एक संप्रभु अरब राज्य के रूप में अपनी नई स्वतंत्रता की शुरुआत की पीड़ा में है, और फ़िलिस्तीन के बारे में अरबों का दृष्टिकोण दमिश्क से ज़्यादा कहीं और जीवंत मुद्दा नहीं है। ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से फ़िलिस्तीन सीरिया का एक हिस्सा है और इस नवजात सीरियाई गणराज्य में फ़िलिस्तीनी विद्रोह को हार्दिक सहानुभूति और समर्थन प्राप्त है। यरुशलम के ग्रैंड मुफ़्ती सीरिया के एक घटक राज्य में शरणार्थी हैं—दमिश्क फ़िलिस्तीनी अरब आंदोलन के समर्थन के लिए सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक रहा है और है। ब्लूदान (दमिश्क के पास) में एक से अधिक अंतर्राष्ट्रीय मुस्लिम सम्मेलन आयोजित किए गए हैं। इनमें से सबसे हालिया सम्मेलन अक्टूबर 1938 में काहिरा में आयोजित किया गया था। इसमें विभिन्न देशों के मुस्लिम विधानमंडलों के सदस्यों ने भाग लिया था। इसने फ़िलिस्तीन की रक्षा, देश में एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना और फ़िलिस्तीन में एक यहूदी राष्ट्रीय घर के अव्यावहारिक विचार को त्यागने का संकल्प लिया। संसदीय सम्मेलन के तुरंत बाद, मैडम शारवी की अध्यक्षता में, फ़िलिस्तीन में अरब आंदोलन की महिला समर्थकों की एक अंतर्राष्ट्रीय बैठक काहिरा में आयोजित की गई थी। मिस्र के लोग, उनके धार्मिक और संसदीय नेता, पूरे दिल से इस आंदोलन में शामिल हैं। और मिस्र अरबी भाषी दुनिया का बौद्धिक केंद्र है।

इस प्रकार, फ़िलिस्तीन में यहूदी महत्वाकांक्षाओं का विरोध करने में मुस्लिम जगत की लगभग एकमत आवाज़ हमारे सामने है। अरब देशों के ईसाई भी इस मामले में अपने मुस्लिम भाइयों के साथ पूरी तरह एकमत हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस मुद्दे पर पूरा निकट पूर्व क्षेत्र सुलग रहा है, और पूरा मुस्लिम जगत सहानुभूति और सहयोग में है।

ये राज्य धीरे-धीरे अपनी शक्ति और महत्व में बढ़ रहे हैं। उनकी महत्वाकांक्षा एक संगठित गुट बनाने की है , और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई संधियों पर बातचीत की गई है। ईरान और तुर्की इनमें से कुछ संधियों में शामिल हुए हैं। क्या बाल्फोर घोषणा को लागू करने के लिए पश्चिमी एशिया और उत्तरी अफ्रीका की आबादी के ऐसे महत्वपूर्ण तत्वों को अलग-थलग करना उचित है, जो स्वयं अरबों से किए गए वादों के अनुरूप नहीं है? वास्तव में, यदि यहूदियों की माँगें पूरी की जानी हैं, तो वे बाल्फोर घोषणा के एक आवश्यक भाग का उल्लंघन करेंगी, क्योंकि 2 नवंबर, 1917 को प्रकाशित लॉर्ड रोथ्सचाइल्ड को श्री बाल्फोर द्वारा लिखे गए पत्र में नीचे दिए गए इटैलिक अक्षरों में ये शब्द थे:—

> "हम फिलिस्तीन में यहूदी लोगों के लिए एक राष्ट्रीय घर की स्थापना के पक्ष में हैं, और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे, यह स्पष्ट रूप से समझा जाता है कि ऐसा कुछ भी नहीं किया जाएगा जो 'फिलिस्तीन में मौजूदा गैर-यहूदी समुदायों के नागरिक और धार्मिक अधिकारों के प्रति पूर्वाग्रह रखता हो।"

यह घोषणापत्र अस्पष्ट था और अरबों के प्रति ब्रिटिश सद्भावना के अनुरूप नहीं था। व्यवहार में यह अव्यावहारिक पाया गया है और इसने मुस्लिम जगत में ब्रिटिश प्रतिष्ठा को बहुत नुकसान पहुँचाया है। यह वर्तमान समय में विश्व राजनीति में एक नासूर बना हुआ है और भविष्य में बहुत अशांति और अशांति का कारण बन सकता है। इंग्लैंड के शत्रुओं को अपने प्रचार के लिए यह एक आशाजनक क्षेत्र मिल रहा है और संकट या खतरे के समय में वे अपने अवसरों को नहीं चूकेंगे। निश्चय ही, बुद्धिमान और सुविचारित राय ऐसी हास्यास्पद नीति के विरुद्ध दृढ़ता से आवाज़ उठाएगी।

अभी तक हमने केवल नीतिगत प्रश्नों पर ही विचार किया है। आइए इस मामले को न्याय के प्रश्न के रूप में देखें। यरुशलम और पवित्र भूमि केवल यहूदियों के लिए ही पवित्र नहीं हैं; वे ईसाइयों और मुसलमानों के लिए और भी अधिक पवित्र हैं। ईसाई धर्म की नींव रखने वाली केंद्रीय घटना इसी भूमि पर घटित हुई थी। कुरान (xvii. 1, 5, और 7) में उरसजिद अल अक्सा का स्पष्ट रूप से एक पवित्र स्थान के रूप में उल्लेख किया गया है। 70 ईस्वी में टाइटस द्वारा मंदिर के विनाश के बाद से, 1,868 वर्षों से , यहूदियों को देश से खदेड़ा जा रहा है। 2,500 वर्षों से (बेबीलोन की कैद के बाद से)

यहूदियों के पास देश में कोई सर्वोच्च शक्ति नहीं रही है। लगभग छह शताब्दियों तक (जोशुआ के समय से, 1254 ईसा पूर्व, नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम पर कब्ज़ा करने तक, 587 ईसा पूर्व) उन्होंने मिश्रित शासन करने की कोशिश की।

जनसंख्या के आधार पर, वे आपस में बँटे हुए थे। उनकी असली ताकत बमुश्किल दो पीढ़ियों तक रही, यानी: दाऊद और सुलैमान के शासनकाल (1055 से 977 ईसा पूर्व) में। वे कभी भी उस आबादी में बहुसंख्यक नहीं रहे, जिसमें पलिश्ती (जिनके नाम पर फ़िलिस्तीन का नाम रखा गया है) और विभिन्न अरब जनजातियाँ, जैसे एदोमी, अमालेक, मोआबी, आदि शामिल थीं। यहूदी इस देश में कभी-कभार ही रहे हैं, और अल्पसंख्यक के रूप में ही।

क्या इन परिस्थितियों में फ़िलिस्तीन को यहूदियों की भूमि कहना उचित है? इसे जज़ीरत-उत अरब का एक हिस्सा कहना ज़्यादा सही होगा, जो भूमध्य सागर, लाल सागर, अरब सागर, फ़ारस की खाड़ी और फ़रात-दिगरिस घाटी से लगभग घिरा एक अरब द्वीप है।

आर्थिक रूप से, अरब, अगर कभी अपनी ज़मीन पर खड़ा भी हो जाता है, तो वह अपने रेतीले रेगिस्तानों से घिरे उपजाऊ तटीय क्षेत्रों से ही अपना भरण-पोषण कर सकता है। कानूनी तौर पर, फ़िलिस्तीन पर ब्रिटेन का अधिदेश फ़िलिस्तीन को ब्रिटिश क्षेत्र नहीं बनाता, या ब्रिटेन को अपनी इच्छानुसार ज़मीन का निपटान करने का अधिकार नहीं देता। वह एक "स्वतंत्र राष्ट्र" का ट्रस्टी है, और उसका कार्य "प्रशासनिक सलाह और सहायता प्रदान करना" है, न कि अपने भूभाग का कोई हिस्सा विदेशियों को देना, या उसे अपने पास रखना। राष्ट्र संघ की वाचा (अनुच्छेद 22) फ़िलिस्तीन और सीरिया के संदर्भ में कहती है: "कुछ समुदाय जो पहले तुर्की साम्राज्य के थे, विकास के उस चरण में पहुँच गए हैं जहाँ स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में उनके अस्तित्व को अस्थायी रूप से मान्यता दी जा सकती है, बशर्ते कि एक अनिवार्य आदेश द्वारा प्रशासनिक सलाह और सहायता प्रदान की जाए, जब तक कि वे स्वतंत्र रूप से खड़े होने में सक्षम न हो जाएँ। अनिवार्य आदेश के चयन में इन समुदायों की इच्छाओं को मुख्य रूप से ध्यान में रखा जाना चाहिए।"

फ़िलिस्तीन की मूल आबादी के बहुमत, यानी हाल ही में आए विदेशी तत्वों को छोड़कर लगभग सभी की सर्वसम्मत इच्छा यही है कि उन्हें एक संप्रभु स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया जाए। इस लक्ष्य के लिए लड़ते हुए उन्होंने भारी बलिदान दिए हैं और अपना खून बहाया है। इसलिए, ब्रिटेन के लिए एकमात्र सम्मानजनक रास्ता यही है:—

जनादेश का परित्याग करना;

एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में लोगों को क्षेत्र सौंपना, जिसका संविधान तैयार किया गया हो
लोग स्वयं;

भविष्य में किसी भी यहूदी आप्रवासन पर रोक लगाने के लिए;

यहूदी अल्पसंख्यकों की उचित सुरक्षा के लिए नए राज्य के साथ एक संधि करना, जो राज्य के वफादार सदस्य बने रहने और इसके कानूनों का पालन करने का चुनाव करते हैं, स्थानीय स्वायत्तता के लिए ऐसे सुरक्षा उपायों के साथ, जिन पर सहमति हो सकती है, इस सिद्धांत पर कि फैक्टम वेले क्वॉड फिएरी नॉन डेब्यूट;

राज्य में सम्मिलित न होने की इच्छा रखने वालों को वापसी का स्वतंत्र विकल्प प्रदान करना।

ऐसी कोई व्यवस्था भविष्य में शांति और विकास सुनिश्चित करेगी और अंततः प्रताड़ित अरबों के साथ न्याय करेगी। यह वर्साय संधि द्वारा किए गए अंतिम घोर अन्यायपूर्ण कृत्यों में से एक होगा, जिसका समाधान समानता, सद्विवेक और स्थिति के वास्तविक तथ्यों के प्रति उचित रियायत के सिद्धांतों पर किया जाना चाहिए।

फासीवाद और द्वंद्ववाद, ए. रेवेन थॉमसन द्वारा

टी यूरोप में फासीवाद की निर्बाध प्रगति एक नई ऐतिहासिक प्रक्रिया के अस्तित्व का संकेत देती है, जिसे नकारा नहीं जा सकता, लेकिन यह अपने अपरिहार्य निष्कर्ष की ओर अग्रसर है।

मार्क्सवादी, जो यह सोचते थे कि उन्हें पैगम्बर कार्ल से ऐतिहासिक प्रगति की एक आदर्श व्याख्या विरासत में मिली है, अब इस अप्रत्याशित झटके की व्याख्या करने में पूरी तरह असमर्थ हैं, जो उनकी रणनीतिक योजना को उस समय तहस-नहस कर देता है जब जीत सर्वहारा वर्ग की मुट्ठी में नज़र आ रही थी। फ़ासीवाद को "सत्ता में बने रहने के लिए पूँजीपतियों के किसी भी हद तक जाने के दृढ़ संकल्प की संगठित अभिव्यक्ति" कहना तो बिलकुल ठीक है, जैसा कि श्री जॉन स्ट्रेची कहते हैं; लेकिन इससे न तो फ़ासीवादी नेताओं द्वारा सबसे बड़े पूँजीपतियों के साथ किए जाने वाले अत्याचार की व्याख्या होती है, न ही राष्ट्रीय कल्याण के लिए वित्तीय स्वतंत्रता को पूरी तरह से नकारने की।

आइए मार्क्सवादी प्रणाली, "इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या" की जाँच करें, यह देखने के लिए कि इसमें कहाँ गलती हुई है। सबसे पहले हमें हेगेल की ओर लौटना होगा, क्योंकि जैसा कि लेनिन ने कहा था, "हेगेल के बिना मार्क्स समझ से परे हैं।" हेगेल निश्चित रूप से भौतिकवादी नहीं थे; इसके विपरीत, वे एक आदर्शवादी थे। उनका मानना था कि ब्रह्मांड पूरी तरह से आत्मा है, या यूँ कहें कि पूरी तरह से "विचार" है। यह बात यहूदी कार्ल मार्क्स को पसंद नहीं आई; लेकिन घटनाओं की अपनी व्याख्या में हेगेल ने "द्वंद्वात्मकता" नामक एक प्रणाली का आविष्कार किया, जिसने मार्क्स के सूक्ष्म मन को अत्यधिक आकर्षित किया।

हेगेल की "ब्रह्मांड" की अवधारणा मानव बुद्धि का एक अद्भुत प्रयास थी, शायद मानव जाति की सबसे बड़ी मानसिक उपलब्धि। उन्होंने आत्म-ज्ञान की कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया में लगे एक सर्वव्यापी "विचार" का एक अद्भुत तमाशा देखा। इस प्रक्रिया में मानव जाति के अस्तित्व सहित सभी घटनाएँ एक विशाल और जटिल "द्वंद्वात्मकता" या तर्क के टुकड़े थीं, जिसके द्वारा "विचार" परम सत्य, या अधिक सही ढंग से, "आत्म-ज्ञान" की खोज में खुद से विवाद करता था। उन्होंने इस प्रक्रिया को किसी "थीसिस", या सत्य के पहलू की बार-बार की गई धारणा के रूप में माना, जैसे कोई वैज्ञानिक रासायनिक या भौतिक तथ्यों को समझाने के लिए किसी सिद्धांत को प्रतिपादित करता है।

चूँकि यह थीसिस वास्तव में पूर्ण सत्य को स्वीकार नहीं करती, इसलिए यह एक "एंटी-थीसिस" या विपरीत अवधारणा को जन्म देती, जो तब "थीसिस" की अपूर्ण धारणा के साथ एक "द्वंद्वात्मक" संघर्ष में संलग्न हो जाती। ठीक वैसे ही जैसे किसी वैज्ञानिक सिद्धांत के विरोधी उसके विरुद्ध तर्क प्रस्तुत करते हैं।

अंततः इस द्वंद्वात्मकता से एक उभर कर आएगा " सत्य की गहन समझ में थीसिस और एंटी-थीसिस दोनों के पहलुओं को शामिल करते हुए, "संश्लेषण"। चूँकि यह संश्लेषण तब एक नया, लेकिन अभी भी अधूरा, थीसिस का निर्माण करेगा, यह परम ज्ञान की प्रगतिशील खोज में एक और द्वंद्वात्मक संघर्ष, एक और संश्लेषण, इत्यादि को उकसाएगा। फिर से वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रगति के साथ समानता निकट है। स्वाभाविक रूप से हीगेल ने मनुष्य को, और विशेष रूप से संगठित, सभ्य राज्य को, विचार की द्वंद्वात्मक पूर्णता में सबसे उन्नत साधन के रूप में सर्वोच्च सम्मान दिया। यही उस गलत धारणा का मूल है कि हेगेल राज्य की पूजा की वकालत करते थे। वास्तव में हीगेल एक सर्वेश्वरवादी थे; शायद मानव जाति के ज्ञात सबसे प्रखर एकेश्वरवादी।

मार्क्स और द्वंद्ववाद

मार्क्स में हेगेल जैसी बौद्धिक क्षमता नहीं थी, जिनकी प्रणाली को केवल सबसे अपरिष्कृत रूप में ही रेखांकित किया गया है।

ऊपर दिए गए रूप में, लेकिन उन्होंने वर्ग युद्ध की व्याख्या और औचित्य के रूप में द्वंद्वात्मक प्रक्रिया पर ज़ोर दिया। हेगेल के समान ही मनुष्य और संगठित राज्य के प्रति सम्मान को साझा करते हुए, मार्क्स द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के अंतर्गत समाज के विकास में विशेष रूप से रुचि रखते थे। समाज को हेगेल की तरह ज्ञान के साधन के बजाय उत्पादन के एक साधन के रूप में देखते हुए, उन्होंने "श्रमिकों" को समाज का एकमात्र ऐसा वर्ग माना जो सम्मान का हकदार था, और उस समाज की अपूर्णता की निंदा की जो परजीवियों और गैर-उत्पादकों को शक्ति और प्रतिष्ठा प्रदान करता था।

मार्क्सवादी "इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या" समाज के विभिन्न वर्गों के बीच द्वंद्वात्मक संघर्ष पर आधारित है, जिसका अंतिम उद्देश्य एक ऐसे वर्गहीन समाज की पूर्णता है जिसमें सभी "कार्य" करेंगे, अर्थात सभी उत्पादन प्रक्रिया में संलग्न होंगे। यद्यपि यह मार्क्सवादी योजना हेगेलीय दर्शन की उत्कृष्ट सार्वभौमिक अवधारणा से बहुत कम है, फिर भी यह उन सभी यथार्थवादियों के सहानुभूतिपूर्ण विचार का दावा करने में विफल नहीं हो सकती जो आदर्शवाद और भौतिकवाद दोनों को अस्तित्व के पूर्ण दर्शन के रूप में अस्वीकार करते हैं। हम भौतिक उत्पादकों के पक्ष में मार्क्सवादी पूर्वाग्रह को साझा नहीं कर सकते हैं, और सत्य के साधकों के लिए, चाहे वे कला, विज्ञान या धर्म के माध्यम से हों, एक सम्मानित स्थान रख सकते हैं, लेकिन हम किसी भी वर्ग द्वारा समाज पर प्रभुत्व के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, खासकर यदि वह वर्ग न तो सत्य के ज्ञान में योगदान देता है और न ही धन के उत्पादन में।

सभ्यता का प्रकटीकरण

हेगेलीय दर्शन के परम सत्य के बारे में हमारा दृष्टिकोण चाहे जो भी हो, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि थीसिस, एंटी-थीसिस और संश्लेषण का हेगेलीय "त्रय" प्रकृति और समाज दोनों में अस्तित्व की एक मूलभूत लय का निर्माण करता है। प्रोटॉन और इलेक्ट्रॉन के मिलकर परमाणु बनाने से लेकर पति-पत्नी के मिलकर परिवार बनाने तक, यही मूलभूत त्रिक आधार पाया जाता है। समाज में भी यही नियम एक सतत गतिशील प्रक्रिया में लागू होता है, जिसके बारे में मार्क्स का मानना था, निस्संदेह सही ही, कि इसका अंत एक पूर्ण वर्गविहीन समाज में होगा। आइए इस प्रक्रिया को यूरोपीय सभ्यता के विकास के माध्यम से देखें।

आधुनिक यूरोप का सुदूर उद्गम रोमन साम्राज्य पर बर्बर भीड़ के प्रभाव में है। द्वंद्वात्मक प्रक्रिया का इससे अधिक उत्तम उदाहरण और क्या हो सकता है? रोमन सभ्यता की कृत्रिम, भौतिकवादी और पतनशील धारणा को उसकी प्रति-धारणा, जर्मन बर्बरता, जो स्वाभाविक, आदर्शवादी और पौरुषपूर्ण थी, ने चुनौती दी। विजय, पुनर्विजय, दासता और बर्बरता के कटु द्वंद्वात्मक संघर्ष के बाद, लगभग पूर्ण संश्लेषण ही हुआ, जब रोम के खंडहरों पर सामंती व्यवस्था का उदय हुआ, जिसका नेतृत्व बर्बर नेताओं ने किया, जो फिर भी शाही रोम, डक्स (ड्यूक), कम्स (काउंट), इम्परेटर (सम्राट) आदि की पारंपरिक उपाधियाँ धारण करते थे, जो विलेन्स पर शासन करते थे, लेकिन हाल ही में रोमन विला की सेवा से मुक्त हुए थे।

यह सामंती व्यवस्था पूरी तरह से अधिपति की सैन्य सेवा के बदले तलवार से सुरक्षा की सैन्य शक्ति पर आधारित थी। स्वाभाविक रूप से, एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया (जिसे मार्क्स ने पूरी तरह से नज़रअंदाज़ किया) में सैन्य शक्ति ने अपनी पूर्ण प्रतिपक्षी - आध्यात्मिक शक्ति - को उकसाया। सामंती सरदार की शक्ति को पुरोहित की शक्ति ने चुनौती दी, और मध्य युग चर्च और राज्य के महान संघर्ष से भरा रहा; जिसकी परिणति पोप और सम्राट की प्रतिद्वंद्विता में हुई, जिसका अंत कैनोसा में पोप-पद की विजय और धर्मयुद्धों में सैन्य और आध्यात्मिक शक्ति के अद्भुत समन्वय के साथ हुआ।

हालाँकि, इटली पर केंद्रित पोप की सर्वोच्चता प्रांतीय कुलीन वर्ग के लिए असहनीय हो गई, जिसने अंततः धर्मसुधार आंदोलन में रोम की शक्ति को तोड़ दिया और यूरोप के स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की, जिससे ईसाई जगत की पूर्व एकता टूट गई। एक और संश्लेषण तब हुआ जब कुलीन और पादरी निरंकुश राजतंत्र की सेवा में एकजुट हुए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि

यह हेनरी अष्टम के निर्मम तरीकों या लुई चौदहवें की चतुराई से प्राप्त हुआ, जिसने कार्डिनल को अपना प्रमुख राज्य मंत्री बनाया: प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक राष्ट्रों में समान रूप से, राजशाही के संश्लेषण ने लौकिक और आध्यात्मिक शक्ति के द्वंद्वात्मक संघर्ष को समाप्त कर दिया।

हालाँकि, राजशाही जन्म और पादरी वर्ग के विशेषाधिकार की ढाल और औचित्य मात्र थी, वह कुलीन विशेषाधिकार जिसे कार्ल मार्क्स ने ग़लती से "सामंती" कहा था। अब आख़िरकार हम इतिहास के उस छोटे से दौर में पहुँच गए हैं जिसमें मार्क्सवादियों की दिलचस्पी है, वह दौर जब भौतिकवादी उद्देश्य आदर्शवादी उद्देश्यों पर हावी होने लगते हैं, और वर्ग प्रभुत्व का एहसास होने लगता है। अनिवार्य रूप से आम लोगों ने कुलीनता के दावों के ख़िलाफ़ नाराज़गी जताई और विद्रोह किया, और महान विद्रोह, फ्रांसीसी क्रांति, 1848 का "पागल वर्ष", एक विशाल द्वंद्वात्मक संघर्ष की घटनाएँ मात्र थीं जिसका अंत अभिजात वर्ग के पराभव में हुआ। फिर भी संश्लेषण के निर्मम तर्क ने एक विशेषाधिकार को समाप्त करके दूसरे को जन्म दिया, जो पहले से भी बदतर था। धन-संपत्ति के अभिमानी नगरवासियों ने ज़मींदार अभिजात वर्ग का स्थान ले लिया। जन्म के विशेषाधिकार ने धन के विशेषाधिकार का मार्ग प्रशस्त किया।

अभिजाततंत्र का स्थान धनतंत्र ने ले लिया।

पूंजीवाद

इस प्रकार पूंजीवाद का उदय हुआ, और संपत्ति के विशेषाधिकार प्राप्त स्वामियों और अपने प्रतीकात्मक दरांती-हथौड़े से लैस मजदूर-किसानों के वंचित सर्वहारा वर्ग के बीच वर्ग युद्ध की नई द्वंद्वात्मकता का उदय हुआ। सामंती भूस्वामी की तरह, औद्योगिक पूंजीपति ने अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए विशुद्ध शक्ति पर भरोसा किया, और सामंती भूस्वामी की तरह ही, उसे अपने मजदूरों से दक्षिणपंथ की अपील का सामना करना पड़ा, जिन्होंने उसकी सकारात्मक शक्ति के प्रति अपने नकारात्मक प्रतिरोध का विरोध किया। ट्रेड यूनियनों ने मजदूरों को एकजुट किया और हड़ताल करने और अपने श्रम को रोकने के उनके अधिकार को एक शक्तिशाली रक्षात्मक हथियार के रूप में विकसित किया।

संगठन इस कार्य का एक अनिवार्य हिस्सा था, और पश्चिमी दुनिया के सभी देशों में विशाल ट्रेड यूनियन आंदोलन आकार ले चुके थे।

औद्योगिक पूँजीपतियों ने इसका जवाब अपने विशाल ट्रस्ट और गठबंधन बनाकर दिया, जो जल्द ही राष्ट्रीय सीमाओं से परे अंतर्राष्ट्रीय वित्त के अंतिम पूँजीवादी अधिपतियों द्वारा जुड़े अंतर्राष्ट्रीय संघों में बदल गए। इस बीच, मज़दूर भी अपने ट्रेड यूनियनों का विस्तार करते हुए, अपने अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव की तलाश में, और अंततः विश्व क्रांति में नेतृत्व के लिए मास्को और स्टालिन की ओर देख रहे थे। इस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय वित्त और अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद के प्रतिद्वंद्वी संगठन विकसित हुए, जो मार्क्सवादियों की उस सामाजिक सहस्राब्दी के अंतिम संघर्ष के लिए तैयार हुए, जिसकी वे प्रेमपूर्वक आशा करते थे। वास्तव में, यह सम्राट और पोप के अधीन सामंती यूरोप के अंतर्राष्ट्रीय संगठन के साथ एक अजीब समानता थी, जिसकी उन दिनों लाखों लोग कल्पना करते थे कि यह एक धार्मिक सहस्राब्दी होगी।

इस सहस्राब्दी को असहनीय रूप से क्यों रोक दिया गया है? हाल के वर्षों में वैज्ञानिक आविष्कारों और तकनीकी प्रगति से उत्पादन की शक्तियाँ अत्यधिक विस्तारित हुई हैं, फिर भी आम जनता का जीवन स्तर निम्न और सामाजिक परिस्थितियाँ शोचनीय बनी हुई हैं।

इस बीच, उत्पादन की अधिक दक्षता का मतलब केवल बेरोज़गारों की एक विशाल सेना का निर्माण है। इसे कैसे समझाया जाए? सामाजिक क्रांति क्यों रुकी हुई है?

सत्ता का विशेषाधिकार

इसका कारण यह है कि सत्ता के लिए संगठन अपने साथ भ्रष्टाचार भी लाता है। विशाल ट्रेड यूनियन संगठनों के विकास से इन संगठनों के नेताओं को अपार शक्ति प्राप्त होती है।

फिर वे वर्ग युद्ध की परिणति में अपने संगठनों को जोखिम में डालने से हिचकिचाते हैं ताकि एक वर्गविहीन राज्य का निर्माण हो सके, जिसमें ऐसे संगठन अपना मुख्य औचित्य खो देंगे। व्यापार

लाखों लोगों पर नियंत्रण रखने वाले यूनियन प्रमुखों का, ठीक उसी तरह जैसे लाखों लोगों पर नियंत्रण रखने वाले एकाधिकार पूंजीपतियों का, एक ऐसी व्यवस्था को बनाए रखने में निहित स्वार्थ होता है जो उन्हें महान व्यक्तिगत शक्ति प्रदान करती है।

तो हमारे सामने एक नया और भ्रष्ट संश्लेषण है। वित्तपोषक और ट्रेड यूनियन पदाधिकारी समझौता करते हैं, और बाद में उस व्यवस्था की रक्षा के लिए गठबंधन भी करते हैं जो दोनों के लिए बेहद फायदेमंद है। पहला विश्वासघात तब हुआ जब ट्रेड यूनियन नेता, बेन टर्नर, अंतरराष्ट्रीय यहूदी वित्तपोषक, अल्फ्रेड मोंड (बाद में लॉर्ड मेलचेट) से मिले और हड़ताल के हथियार को खारिज करते हुए कुख्यात मोंड-टर्नर समझौते पर हस्ताक्षर किए। दूसरा और ज़्यादा गंभीर विश्वासघात हाल ही में तब हुआ जब ट्रेड यूनियनवाद के आकाओं और विश्व पूंजीवाद के वित्तपोषकों ने "लोकतंत्र की रक्षा" और "स्वतंत्रता की रक्षा" के लिए गठबंधन किया। वर्ग युद्ध के लिए विस्तारित संगठन के साधन के रूप में शुरू में खोजा गया अंतर्राष्ट्रीयवाद अपने आप में एक लक्ष्य बन जाता है, जिसके लिए श्रमिकों को वेतन, परिस्थितियों और जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसी तरह अबीसीनिया और चेकोस्लोवाकिया, चीन और स्पेन के लिए गुहारें आती हैं, जबकि देश में बेरोजगारी और बदहाली बढ़ती जा रही है।

यह सब क्या है, विशेषाधिकार को बचाए रखने का पुराना जाना-पहचाना संघर्ष—इस बार सत्ता का विशेषाधिकार। पश्चिमी दुनिया में मार्क्सवादी वर्ग युद्ध का यही दयनीय अंत है। जन्म के विशेषाधिकार ने धन के विशेषाधिकार को जन्म दिया: अब दोनों ही मनुष्य और धन के मालिकों के पास मौजूद सत्ता के विशेषाधिकार के आगे झुक रहे हैं।

वर्गविहीन क्रांति

हालाँकि, द्वंद्वात्मक प्रक्रिया यहीं समाप्त नहीं होती। इतिहास के लिए "ठहरो" की पुकार उतनी ही तेज़ हो सकती है जितनी कि ज्वार के लिए। एकाधिकार विशेषाधिकार की थीसिस अनिवार्य रूप से अपनी प्रति-प्रस्थापना को उद्घाटित करती है, और यह प्रति-प्रस्थापना वित्तीय और ट्रेड यूनियन अत्याचारों से पीड़ित सभी वर्गों का व्यापक लोकप्रिय आंदोलन है। अंततः एक वास्तविक "वर्गविहीन" राज्य की आशा उभरती है, क्योंकि "मालिक शासन" का प्रतिपक्ष "वर्गविहीन" क्रांति है। सभी वर्ग विशेषाधिकार अब समाप्त हो चुके हैं। लाखों श्रमिकों या लाखों शेयरों द्वारा उन्हें दी गई शक्ति केवल कुछ ही लोगों के पास है, और आज वे उस शक्ति का प्रयोग उस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए करते हैं जो उसे प्रदान करती है। इन लोगों के विरुद्ध वर्गविहीन क्रांति की लहर उठती है।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह नई क्रांतिकारी शक्ति राष्ट्रीय रूप ले ले।
देशभक्ति ही वह भावना रही है जिसने हमेशा से समुदाय के सभी वर्गों को एक साझा कार्य में एकजुट किया है। इसलिए, देशभक्ति ही वह भावना है जिसकी ओर सभी वर्ग खुद को उस अत्याचार से मुक्त करने के लिए मुड़ते हैं जो या तो स्वयं विदेशियों (अधिकांशतः यहूदियों) द्वारा या फिर उन लोगों द्वारा किया जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से जुड़े हुए हैं।

इस प्रकार, फासीवाद समाज के द्वंद्वात्मक विकास में अपनी भूमिका निभाता है। बीसवीं सदी का क्रांतिकारी आंदोलन ऐतिहासिक प्रक्रिया का उतना ही सच्चा हिस्सा है, जितना अठारहवीं सदी का लोकतांत्रिक आंदोलन या उन्नीसवीं सदी का सर्वहारा आंदोलन। वास्तव में, अगला संश्लेषण अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। सत्ता के गैर-जिम्मेदाराना प्रयोग ने जन-विद्रोह को भड़काया है। यह अपेक्षा की जा सकती है कि यह विद्रोह व्यक्तिगत सत्ता के आक्रोशपूर्ण परित्याग में अराजक रूप धारण करेगा। फिर भी, संश्लेषण के अपरिहार्य नियम के प्रत्युत्तर में, जन-विद्रोह सत्ता को अत्याचार को परास्त करने के अपने एकमात्र साधन के रूप में ग्रहण करता है। फासीवाद का सिद्धांत, जनता द्वारा अपने नाम पर कार्य करने के अधिकार से संपन्न लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता द्वारा सत्ता का जिम्मेदारी से प्रयोग है। राष्ट्रीय विद्रोह द्वारा चुनौती दी गई गैर-जिम्मेदाराना सत्ता, राष्ट्र के प्रति अपनी शक्ति के प्रयोग के लिए उत्तरदायी राष्ट्रीय सत्ता के सच्चे संश्लेषण का निर्माण करती है।

संघर्ष का अंत?

अब केवल इस बात पर चर्चा बाकी है कि क्या फ़ासीवाद की वर्गविहीन क्रांति सामाजिक प्रक्रिया को समाप्त करती है और वर्गविहीन राज्य को पूर्ण बनाती है। यह काफी हद तक भविष्य का विषय बना रहना चाहिए। आशा की जा सकती है कि द्वंद्वात्मकता अब राष्ट्र से आगे बढ़कर विश्व व्यवस्था की पूर्णता तक पहुँच सकती है, या राजनीतिक से ऊपर उठकर सांस्कृतिक क्षेत्र तक पहुँच सकती है। किसी भी स्थिति में, यह अपेक्षा करना तर्कसंगत प्रतीत होगा कि एक वर्गविहीन क्रांति, साम्यवाद जैसी जानबूझकर की गई वर्ग क्रांति की तुलना में, एक वर्गविहीन राज्य के निर्माण की कहीं अधिक संभावना रखती है, जिसने सोवियत रूस में एक ऐसे राज्य का निर्माण किया है जो अभी भी वर्ग प्रतिद्वंद्विता से तीव्र रूप से जुड़ा हुआ है और एक बहुत ही शुद्ध साम्यवादी अल्पसंख्यक के अपने नौकरशाही अत्याचार को तेज़ी से स्थापित कर रहा है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक फासीवादी राज्य समाज की एक जैविक संरचना स्थापित करने और सभी कृत्रिम वर्ग भेदों को राष्ट्रीय सेवा के अधीन करने के लिए गहन रूप से चिंतित रहा है।
इससे निश्चित रूप से यह संकेत मिलता है कि वर्गविहीन क्रांति वर्गविहीन राज्य की नींव रखेगी, और इस प्रकार वर्ग विशेषाधिकार के संघर्ष का अंत होगा, जिसकी मार्क्स ने निंदा की थी। यह भी हो सकता है कि राष्ट्रीय क्रांति वह हासिल कर ले, जिसे मार्क्सवाद की अंतर्राष्ट्रीय क्रांति स्थापित करने में विफल रही है।

किसी भी हालत में कोई भी फ़ासीवादी यहूदी "सहस्राब्दी" नहीं चाहता जिसमें संघर्ष समाप्त हो जाए और ठहराव आ जाए। हमारे लिए इतना ही काफ़ी है कि हमें अपने समय की बुराइयों से निपटना है, और उस ऐतिहासिक प्रक्रिया में भाग लेना है जो घिनौने भौतिकवाद में डूबे युग में पुनरुत्थान लाएगी। वर्ग संघर्ष भौतिक स्वार्थ का एक लक्षण है। मध्ययुगीन यूरोप अन्य लक्ष्यों और उच्च आदर्शों को जानता था। आइए हम वर्ग संघर्ष को समाप्त करें ताकि पश्चिमी मनुष्य अपनी दृष्टि उच्चतर चीज़ों की ओर मोड़ सके। हम उन भविष्य के संघर्षों, उन महान संघर्षों का स्वागत करते हैं जो अभी आने वाले हैं।

फ्रांसिस मैकेवॉय द्वारा लिखित द डिसइनहेरिटेड ऑफ द सॉइल

टी हममें से कितने ही लोग हैं, जो आपकी तरह, ब्रिटेन के किसान, खुले मैदान में जन्मे और पले-बढ़े हैं, और जो आधुनिक पूँजीवाद के विनाशकारी अत्याचारों से प्रभावित होकर बंजर शहरों में अपनी आजीविका की तलाश में जाने से पहले, हर सुबह शुद्ध हवा में चिड़ियों के गीत, पेड़ों में हवा की आवाज़, सूरज की चमक, पाले की चुभन या घास पर बारिश की हल्की फुहारों के साथ जागने का आनंद जानते थे। हम प्रकृति से उसके सभी भावों और सभी ऋतुओं में प्रेम करते थे, क्योंकि हम उसका हिस्सा थे। हमने अत्यंत सादगी और इसलिए गहन संतुष्टि का जीवन जिया। मानवता को ईश्वर द्वारा दिए गए सर्वोत्तम उपहार, उत्तम स्वास्थ्य और मन की शांति, हमारे थे, क्योंकि हमने कोई भी मानवीय या दैवीय नियम नहीं तोड़ा। हमने जीवन से बहुत कम माँगा—केवल एक मामूली प्रतिफल के लिए काम करने के लिए, और इस प्रकार अपने पूर्वजों की भूमि पर रहने लायक कमाई करने के लिए।

लेकिन खेती-बाड़ी के काले दिन आ गए। हम उस व्यवस्था से तबाह हो गए जो ब्रिटेन के लोगों को दफ्तरों और कारखानों में ठूँस देती है और खेती-बाड़ी विदेशियों के भरोसे छोड़ देती है। आयातित खाद्य पदार्थों के बदले अंग्रेज़ उत्पाद बनाते थे।

चाहे ऐसी व्यवस्था लोगों को शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक या अन्य रूप से कितना भी नुकसान पहुंचाती हो, युद्ध के समय में उन्हें अकाल के खतरे में डालता है, यह कुछ लोगों के लिए ''भुगतान का प्रस्ताव'' है।

और इस तरह हम बड़े शहरों में, आर्थिक गुलामी में आ गए। हम क्लर्क, फैक्ट्री मज़दूर, चेन-स्टोर सहायक बन गए, हमारे चेहरे का रंग उड़ गया, और हम उजरती गुलामों का बेचैन, निष्प्राण जीवन जीने लगे। हमें बताया गया कि हमें लोकतंत्र द्वारा हमें दिए गए आशीर्वाद के लिए आभारी होना चाहिए, और ज़रूरत पड़ने पर लड़ना भी चाहिए। एक ऐसा लोकतंत्र जो लालच, भौतिकवाद, तुच्छता और हर मानवीय ज़रूरत और प्रवृत्ति के व्यावसायिक शोषण का प्रतीक है। मानवता का एक ऐसा स्तब्धीकरण जो सोवियत रूस के बाहर इतिहास में अब तक अज्ञात था। "हमारे इस इंग्लैंड" में, बड़े पैमाने पर उत्पादित मोटर कार की तरह मानकीकृत, सर्विस फ्लैट्स और उपनगरों से आए "बैबिट्स" के झुंड, प्रचारित, शोषित और क्रूरता से पीड़ित, "छोटे आदमी" की जय हो!

यह सच है कि सभी ने अभी तक ज़मीन नहीं छोड़ी है, लेकिन ये कष्ट सहे हुए बचे हुए लोग कब तक उस आर्थिक व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई जारी रख पाएँगे जो मूलतः शत्रुतापूर्ण है, जो खेतों पर कारखानों का गृहयुद्ध छेड़े हुए है? इंग्लैंड के किसान भाइयों, हमारी ज़मीन निर्यात पूंजीवाद की गुलाम है, जो अपना पूरा ज़ोर कस्बों, औद्योगीकरण और शहरीकरण पर देता है।

यह आपको अपनी घटती संख्या के शोर को शांत करने और अपने भ्रमित वोटों का कर्ज़ पाने के लिए अस्थायी राहत के अलावा और क्या दे सकता है? आपको बताया गया है कि आपके लिए कुछ किया जाएगा; यह आश्वासन शायद उतना ही मूल्यवान है जितना कि "वीरों के लिए उपयुक्त घर" का घृणित स्मृति का नारा। जब आप इसकी निरर्थकता सिद्ध कर लें, तो अपनी ब्रिटिश मर्दानगी और परंपराओं के नाम पर इसे आखिरी बार होने दें। ब्रिटिश संघ की एक नीति है जो आपको और ब्रिटेन को बचाएगी, और उन सभी को, जो ऐसा चाहते हैं, अपने पूर्वजों की भूमि पर लौटने में सक्षम बनाएगी, और उनकी संख्या अनगिनत होगी। आपने निस्संदेह हमारी बदनामी के लिए बहुत कुछ सुना और पढ़ा होगा, लेकिन क्या आपने कभी नहीं सोचा कि इसके पीछे कोई कारण हो सकता है—कि हम उन हितों को चुनौती दे रहे हों जो न आपके हैं, न हमारे, न ही आम जनता के? क्या आपको लगता है कि यह सारा अपमान-प्रचार अभियान इतना निःस्वार्थ है? क्या अब आपको यही बताया जाएगा कि आपको क्या पसंद है और क्या नहीं, क्या आपकी राजनीतिक राय "पुराने गिरोहों" के ढोंग तक ही सीमित रहेगी? हमारी नीति का खुद ही आकलन करें, क्योंकि यह आपको प्रभावित करती है, बिना किसी धोखेबाज़ प्रेस के उकसावे के।

आप पाएंगे कि हम उत्साही राष्ट्रवादी हैं, जो पूरी तरह से ब्रिटेन की धरती के कल्याण के लिए समर्पित हैं। उद्योग भी फलेंगे-फूलेंगे, क्योंकि उन्हें उस धन से मदद मिलेगी जो आज विदेशियों को वित्तपोषित करता है, लेकिन कृषि की कीमत पर नहीं। आज की असंतुलित असामाजिक अर्थव्यवस्था के स्थान पर एक न्यायसंगत और स्वस्थ संतुलन स्थापित होगा।

हम देहात से आए निर्वासित लोग भी अपनी मिट्टी से उतना ही प्यार करते हैं जितना आप सभी करते हैं। यह कहना ग़लत है कि हम अत्याचार का लक्ष्य। हम चाहकर भी ब्रिटेन के लोगों पर अत्याचार नहीं कर सकते।

ग्रामीण इलाकों की मृत्यु राष्ट्र की मृत्यु का पूर्वाभास देती है, क्योंकि मिट्टी से ही भौतिक और आध्यात्मिक, सभी प्रकार के जीवन का जन्म होता है। आप, जो सहज रूप से इन सत्यों को समझते हैं, यह जान लीजिए कि हम गुमराह नहीं हैं, जो इन्हें अपने झण्डों पर अंकित करते हैं।

कॉर्पोरेट अर्थशास्त्र, ए. रेवेन थॉमसन द्वारा

ए वर्तमान आर्थिक व्यवस्था के पतन ने आधुनिक विश्व के लिए एक बड़ी समस्या उत्पन्न कर दी है। हम अब ऐसी व्यवस्था को बर्दाश्त नहीं कर सकते जो मानव जाति द्वारा अब तक ज्ञात सर्वाधिक समृद्धि के बीच हममें से अधिकांश को गरीबी में धकेल दे, जो लाखों लोगों को अपनी जीविका कमाने के अधिकार से वंचित कर दे, और सिकुड़ते विश्व बाज़ारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष में युद्ध के खतरे को और भी निकट ले आए। इस सर्वव्यापी पतन का कारण क्या है? हमसे कहाँ गलती हुई है?

इससे पहले कि हम इस परेशानी के कारण को पूरी तरह से समझ सकें, हमें संगठित समाज की त्रिस्तरीय प्रकृति पर विचार करना होगा: -

- एक केन्द्रीय सरकार को राष्ट्रीय जीवन की योजना बनाने और उसे निर्देशित करने का अधिकार दिया गया।
- विभिन्न उद्देश्यों और हितों वाले अनेक सामाजिक समूह।
- पहल और उद्यम की शक्तियों से संपन्न व्यक्तियों का एक समूह।

उन्नीसवीं सदी का शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत लगभग पूरी तरह से समाज के तीसरे और सबसे कम संगठित पहलू से संबंधित था, जो आर्थिक मामलों में राज्य या समूह के हस्तक्षेप का विरोध करता था। तुलनात्मक रूप से अभाव के पुराने समय में इस दृष्टिकोण के लिए कुछ औचित्य हो सकता था, क्योंकि उस समय उत्पादन की अंतर्निहित शक्तियों के विकास और तकनीकी आविष्कारों को आगे बढ़ाने में व्यक्ति की पहल और उद्यमशीलता का अत्यंत महत्व था। स्पष्ट रूप से, यदि व्यक्ति को अधिकतम संभव आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की जाए, तो वह अपनी पहल और उद्यमशीलता की शक्तियों का सर्वोत्तम प्रभाव से विकास कर सकेगा, और मैनचेस्टर स्कूल के अर्थशास्त्रियों ने ठीक यही माँग की थी, जब उन्होंने "अहस्तक्षेप" और मुक्त व्यापार की वकालत की थी।

अभाव की समस्या के समाधान में आर्थिक स्वतंत्रता के चाहे जो भी लाभ हों, यह प्रचुरता के उभरते युग में सामाजिक कल्याण के लिए एक सकारात्मक ख़तरा बन गई है। शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत की इस प्रकार निंदा करने की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन हमें यह समझना होगा कि सामाजिक संगठन से स्वतंत्र अर्थशास्त्र के कोई भी निरपेक्ष "नियम" नहीं हो सकते। निस्संदेह, अभाव के युग में व्यक्तिवादी व्यवस्था अत्यंत आवश्यक थी, और उत्पादन की समस्या के समाधान के लिए हमें मैनचेस्टर स्कूल का धन्यवाद करना चाहिए, लेकिन अब नए युग की आवश्यकताओं के अनुरूप एक नई आर्थिक व्यवस्था का समय आ गया है। शोषण की पूर्ण स्वतंत्रता से प्रोत्साहित व्यक्तिगत उद्यम ने अभाव को समाप्त कर दिया है, लेकिन वह अपने द्वारा सृजित प्रचुरता को समग्र रूप से लोगों में वितरित करने में पूरी तरह असमर्थ है। उत्पादन अपने स्वभाव से ही एक व्यक्तिगत या अधिक से अधिक एक समूह प्रक्रिया है: दूसरी ओर, वितरण पूरे समुदाय की आवश्यकताओं पर आधारित होता है, और स्पष्ट रूप से व्यापक स्तर पर सचेत सामाजिक नियोजन के बिना सफल नहीं हो सकता।

समाजवाद और वर्ग युद्ध

चूँकि व्यक्तिवाद अब अपनी उपयोगिता की अवधि पार कर चुका है और आर्थिक प्रगति के लिए एक वास्तविक ख़तरा बन गया है, इसलिए समय आ गया है कि आर्थिक हितों का ध्यान सामाजिक समूह पर केंद्रित किया जाए, भले ही समग्र राष्ट्र पर न हो। अब तक जिन लोगों ने वर्तमान व्यवस्था पर सबसे ज़ोरदार हमला किया है, और "समाजवादी" या "साम्यवादी" जैसे सामूहिक शब्दों को अपनाया है, उन्होंने वास्तव में कभी भी

समूह संबंधी विचारों से ऊपर उठना। उत्पादन के साधनों का "राष्ट्रीयकरण" करने के उनके बड़े-बड़े दावों के बावजूद, समाजवादी और साम्यवादी अपील का मूल आधार वर्ग विभेदीकरण की अतिशयोक्ति और "वर्ग युद्ध" पर ज़ोर है। स्पष्ट रूप से ऐसा वर्ग-चेतन सिद्धांत सामाजिक समूह के दायरे से संबंधित है, और पूरे समुदाय को एक जीवित जैविक इकाई के रूप में समझने में विफल रहता है। वास्तव में, समाजवादी द्वारा अंतर्राष्ट्रीयता पर दिया गया ज़ोर और देशभक्ति का उनका खंडन, सामाजिक संगठन के पूर्ण निहितार्थों को समझने में उनकी असमर्थता की पुष्टि करता है, जिसे वर्ग संबंधी विचारों से बहुत ऊपर उठकर राष्ट्रीय उद्देश्य की प्राप्ति तक ले जाना चाहिए। अंतिम "रिडक्टियो एड एब्सर्डम" तब पहुँचता है, जब रूस में सोवियत शासन यह दावा करता है कि यह "सर्वहारा वर्ग की तानाशाही" है, क्योंकि इसका तात्पर्य राष्ट्रीय जीवन पर एक समूह के स्थायी और सचेत प्रभुत्व से होगा।

वास्तव में, प्रचुरता के युग में वर्ग युद्ध एक नितांत बेतुकापन बन जाता है, क्योंकि जब सभी के लिए प्रचुरता हो तो वर्गों के बीच संघर्ष का क्या उद्देश्य हो सकता है? वर्ग युद्ध अभाव के युग का एक भयावह अवशेष मात्र है, जो हमारी वर्तमान आर्थिक व्यवस्था की अक्षमता के कारण वर्तमान युग में भी बना हुआ है। वितरण की समस्या का समाधान हो जाए तो वर्ग युद्ध समाप्त हो जाएगा। बहरहाल, समाज का युद्धरत वर्गों में विभाजन काफी हद तक कार्ल मार्क्स का एक कृत्रिम आविष्कार है, क्योंकि जैसे-जैसे आधुनिक जीवन अधिकाधिक जटिल होता जा रहा है, मालिक और शोषित वर्गों का विभेदन अधिकाधिक कठिन होता जा रहा है।

कार्ल मार्क्स को उन बड़ी स्टॉक कम्पनियों की कोई कल्पना नहीं थी, जो स्वामित्व को उन लोगों की विशाल संख्या तक फैला देती हैं, जो सामान्यतः उद्योग से अपना जीवनयापन करते हैं; न ही उन्होंने बड़ी संख्या में आयोजकों, इंजीनियरों, विशेषज्ञों और तकनीशियनों की कल्पना की थी, जो आधुनिक उद्योग के विकास के कारण नियोक्ताओं और श्रमिकों के बीच आ जाएंगे।

भले ही हम समाज को नियोक्ताओं और श्रमिकों में विभाजित मान लें, फिर भी इसका यह अर्थ नहीं है कि उनके हित परस्पर विरोधी हैं। यह सच है कि नियोक्ता और श्रमिक दोनों ही स्वयं को परस्पर विरोधी हितों वाली विरोधी सेनाएँ मानते हैं, लेकिन यह दोनों पक्षों के लिए सामूहिक संगठन के लाभ को समझने में असमर्थता से उत्पन्न होता है। प्रत्येक व्यावसायिक उद्यम के मामले में, यह स्पष्ट है कि नियोक्ता और श्रमिकों के हित परस्पर विरोधी हैं, और यदि श्रमिक बहुत अधिक मजदूरी की मांग करते हैं, तो नियोक्ता के लिए कोई लाभ नहीं बचेगा, जबकि यदि नियोक्ता मजदूरी को कम करने के लिए बाध्य कर सकता है, तो उसे अधिक लाभ होगा। हालाँकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि नियोक्ता और श्रमिक समग्र रूप से दूसरे वर्ग की कीमत पर अपने वर्ग को लाभ पहुँचा सकते हैं। वास्तव में, वर्तमान की तरह, प्रचुरता के युग में, श्रमिकों और नियोक्ताओं के हित साथ-साथ चलते हैं। स्पष्ट रूप से आधुनिक उद्योग की आवश्यकता बड़े और विस्तारित बाजारों की है। हाल के वर्षों में भ्रामक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में इन्हें खोजने का प्रयास बुरी तरह विफल रहा है, जिसके परिणामस्वरूप अब उद्योगपति घरेलू बाजार की ओर अधिकाधिक रुख कर रहे हैं।

स्पष्टतः घरेलू बाजार की क्रय शक्ति, तथापि, काफी हद तक मजदूरी दरों द्वारा निर्धारित होगी, इसलिए यह वास्तव में नियोक्ता के हित में हो गया है कि श्रमिकों को उच्च मजदूरी मिले ताकि वे आधुनिक उद्योग के उत्पाद खरीदने में सक्षम हो सकें।

निश्चित रूप से समाजवादी श्रमिक वर्ग युद्ध में अपने विश्वास को इस हद तक नहीं बढ़ाएंगे कि वे उच्च मजदूरी लेने से इनकार कर दें, क्योंकि इससे नियोक्ताओं को लाभ होगा!

कॉर्पोरेट अवधारणा

हम देखते हैं कि वर्तमान आर्थिक व्यवस्था इसलिए विफल रही है क्योंकि इसने व्यक्ति के हितों पर बहुत अधिक ज़ोर दिया है, लेकिन समाजवादी और साम्यवादी सिद्धांत भी उतने ही दोषी हैं क्योंकि यह समग्र समुदाय की कीमत पर सामाजिक समूह को बढ़ावा देता है। फ़ासीवाद तीसरे विकल्प की ओर मुड़ता है, और समुदाय को एक संगठित कॉर्पोरेट राज्य के रूप में मानने पर ज़ोर देता है, जिसका नियंत्रण और नियोजन एक केंद्रीय सरकार द्वारा किया जाता है, जिसके पास पर्याप्त अधिकार होते हैं।

समग्र कल्याण की रक्षा और राष्ट्रीय उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए व्यक्ति और समूह पर अधिकार। यह राष्ट्र की एक उच्चतर क्रम के जीव के रूप में सामूहिक अवधारणा है, लेकिन मूलतः मानव शरीर के समान, जिसके अंग और कार्य एक सामूहिक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

यह इटली में फासीवादी शासन के संगठन का आवश्यक आधार है जो प्रसिद्ध श्रम चार्टर के नियमों के अनुसार सामान्य हित के आधार पर इतालवी नियोक्ताओं और श्रमिकों के संबंधों को नियंत्रित करता है।

आर्थिक उद्देश्य की एक बिल्कुल नई अवधारणा पर आधारित ऐसी व्यवस्था के लिए सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप आर्थिक समायोजन के उतने ही नए विज्ञान की आवश्यकता होगी। मेरा मानना है कि यह नया आर्थिक विज्ञान इस देश में विकसित होगा, जो इतने लंबे समय से दुनिया का वाणिज्यिक केंद्र रहा है। इस तथ्य की अनदेखी करना व्यर्थ होगा कि इटली और जर्मनी, दोनों ही, जो फ़ासीवादी राजनीतिक संविधान अपनाने वाले पहले देश थे, को अपने शासन के आर्थिक पक्ष को विकसित करने में सबसे अधिक कठिनाई हुई है, हालाँकि दोनों ने विश्व महामंदी के दबाव का लोकतांत्रिक देशों की तुलना में कहीं बेहतर ढंग से सामना किया है। हमें यह याद रखना चाहिए कि यद्यपि लोकतंत्र और उदारवादी सिद्धांत सबसे पहले फ्रांस और महाद्वीप में आए, लेकिन उदारवाद के आर्थिक निहितार्थों को व्यक्तिवादियों के मैनचेस्टर स्कूल द्वारा ब्रिटेन में ही विकसित किया गया था। चूँकि यह ब्रिटेन ही था जिसने दुनिया को यह खतरनाक, लगभग विनाशकारी, आर्थिक सिद्धांत दिया, इसलिए स्पष्ट रूप से ब्रिटेन का यह कर्तव्य होगा कि वह फ़ासीवाद के नए सिद्धांतों को आर्थिक क्षेत्र में लागू करे, और भविष्य का एक ऐसा वाणिज्यिक ढाँचा तैयार करे जो उदार मुक्त व्यापार के बदनाम अवशेषों का स्थान ले ले।

कॉर्पोरेट सिद्धांत

इस तरह के विज्ञान का आधार निर्धारित करना वर्तमान चर्चा का विषय नहीं हो सकता, लेकिन कॉर्पोरेट अर्थशास्त्र के कुछ सिद्धांत वर्तमान व्यक्तिवाद के विपरीत तुरंत सामने आते हैं। उस "आर्थिक व्यक्ति" के स्थान पर, जिसका व्यक्तिगत स्वार्थ पुरानी विचारधारा का अनिवार्य आधार था, हमारे पास एक "आर्थिक समुदाय" होगा जिसके लिए व्यक्ति देशभक्तिपूर्ण सेवा में संलग्न होगा। अपने साझा "हितों" की रक्षा के लिए एकजुट होने वाले व्यक्तियों के वर्गों के स्थान पर, हमारे पास ऐसे व्यावसायिक समूह होंगे जो समग्र रूप से समुदाय की कार्यात्मक सेवा में एकजुट होंगे। जीविका के लिए संघर्षरत व्यक्तियों की प्रतिस्पर्धा के स्थान पर, जहाँ हर कोई सबके विरुद्ध है और शैतान बाकियों को ले जाता है, हमारे पास अपने साझा लाभ के लिए व्यक्तियों का सहयोग होगा।

इन सिद्धांतों को कैसे लागू किया जाएगा? सबसे पहले, निस्संदेह, सत्ता के प्रयोग से। वर्तमान आर्थिक मामलों की अराजकता में अनुशासन और नियंत्रण लाना होगा।

वर्तमान व्यवस्था की भयावहता, जो वर्ग युद्ध की आग को भड़काती है और समाजवादी आंदोलनकारियों को "पूंजीवाद" पर हमले का आधार देती है, मुख्यतः उस शक्तिशाली व्यक्ति द्वारा आर्थिक शक्ति के अनुचित प्रयोग से उत्पन्न होती है जिसने वाणिज्यिक मामलों पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने और इस प्रकार अनुचित तरीकों से अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त संपत्ति या पूंजी जमा कर ली है। फ़ासीवाद के तहत किसी भी व्यक्ति को अपनी संपत्ति का उपयोग इस अर्थ में अपने लाभ के लिए शक्ति प्रयोग के साधन के रूप में करने की अनुमति नहीं होगी। "शक्ति" सरकार का एकाधिकार है।

यहाँ हमें उस समाजवादी का पूरा जवाब मिलता है जो निजी पूँजी के उन्मूलन और उत्पादन के साधनों के राष्ट्रीयकरण की माँग करता है। यह सच है कि निजी पूँजीपति ने अतीत में अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए पूँजी पर अपने नियंत्रण का दुरुपयोग किया है, लेकिन यह निजी संपत्ति के उन्मूलन को उचित नहीं ठहराता, बल्कि असामाजिक कार्यों को रोकने के लिए उसके उपयोग पर नियंत्रण को उचित ठहराता है। सच तो यह है कि समाजवादी एक असंतुष्ट बुर्जुआ से ज़्यादा कुछ नहीं है, जो पूँजीपति के धन और शक्ति से ईर्ष्या करता है। परोक्ष रूप से, वह इस बुर्जुआ सिद्धांत को स्वीकार करता है कि मालिक जो चाहे कर सकता है।

वह अपनी मर्ज़ी से काम लेता है, और इसलिए पूँजीवादी शोषण के लिए उसे व्यापक ज़ब्ती के अलावा कोई विकल्प नहीं सूझता, जो अच्छे पूँजीपतियों को बुरे पूँजीपतियों से दबा देती है। फ़ासीवाद मानता है कि पूँजी और धन ने व्यक्तियों को वह शक्ति प्रदान की है जिसका उन्होंने अतीत में दुरुपयोग किया है, और वह मतदाताओं से देश के सबसे शक्तिशाली निहित स्वार्थों से निपटने के लिए पर्याप्त अधिकार और कार्रवाई के साधनों की माँग करता है। जैसा कि ओसवाल्ड मोस्ले ने बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा है, "पूँजीवाद के तहत पूँजी राष्ट्र का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए करती है: फ़ासीवाद के तहत राष्ट्र पूँजी का उपयोग अपने उद्देश्यों के लिए करता है।"

यह स्पष्ट रूप से अव्यावहारिक है कि सरकार, चाहे कितनी भी शक्तिशाली और कुशल क्यों न हो, पूरे देश के आर्थिक मामलों की विस्तृत योजना बनाने का प्रयास करे। यह सभी प्रकार के समूह संगठन का खंडन होगा, जो स्वस्थ राजनीतिक व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग है, और नौकरशाही के वर्तमान खतरे को और बढ़ाएगा, जो इस देश का तेज़ी से समाजीकरण कर रहा है। समाजवादी और रूढ़िवादी, दोनों ही व्हाइटहॉल की शक्ति और प्रभाव को बढ़ाने में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जो तेज़ी से "नया निरंकुश शासन" बनता जा रहा है, जिसकी भविष्यवाणी लॉर्ड चीफ जस्टिस हेवार्ट ने की थी। फासीवाद के तहत, इस नौकरशाही नियंत्रण का एक बड़ा हिस्सा कार्यात्मक संगठन की नई तर्ज पर एक बार फिर देश के प्रमुख उद्योगों और उद्योग समूहों को नियंत्रित करने वाले निगमों को सौंप दिया जाएगा। कृषि, मत्स्य पालन, परिवहन, खनन और चिकित्सा निगम व्हाइटहॉल में मंत्रालयों का स्थान लेंगे, और उनमें ऐसे लोग कार्यरत होंगे जिन्होंने अपने उद्योग और पेशे से काम किया है और वे किसी भी स्थायी सरकारी अधिकारी की तुलना में इसे नियंत्रित करने के लिए कहीं बेहतर ढंग से सक्षम होंगे। औद्योगिक स्वशासन की ये नई संस्थाएँ स्थानीय स्वशासन का स्थान लेंगी, जो आधुनिक संचार की तीव्र गति और सार्वजनिक उपयोगिताओं की व्यापक योजना के कारण तेज़ी से पुरानी होती जा रही है। इस प्रकार, समूह संगठन अतीत के अधिक कठोर संरचनात्मक आधार से भविष्य के अधिक लचीले कार्यात्मक आधार में परिवर्तित हो जाएगा।

निगमों को उनके नियंत्रण वाले उद्योगों से संबंधित सभी आंतरिक मामलों को निपटाने के लिए व्यापक स्तर पर स्वशासन प्रदान किया जाएगा, और निगम की परिषद में नियोक्ताओं, श्रमिकों और उपभोक्ताओं, सभी का प्रतिनिधित्व होगा। नियोक्ताओं का प्रतिनिधित्व उनके नियोक्ता संघ के माध्यम से और श्रमिकों का प्रतिनिधित्व उनके ट्रेड यूनियन के माध्यम से होगा, जबकि सरकार आम जनता और उन अन्य निगमों के हितों की निगरानी के लिए उपभोक्ता प्रतिनिधियों की नियुक्ति करेगी जो विशेष रूप से उत्पाद में रुचि रखते हैं। निगम को नियोक्ताओं और श्रमिकों के बीच उद्योग के लिए मजदूरी और कार्य की शर्तों के मानक, और नियोक्ताओं और उपभोक्ताओं के बीच कीमतें और प्रतिस्पर्धा की शर्तें भी निर्धारित करनी होंगी। किए गए सभी समझौते पूरे उद्योग पर कानूनी रूप से बाध्यकारी होंगे और कोई भी नियोक्ता या श्रमिक जो निगम के किसी उप-कानून का उल्लंघन करता है, वह एक अपराध का दोषी होगा जिसके लिए उसे न्यायालय में लाया जा सकता है। वास्तव में नियोक्ता संघ और ट्रेड यूनियन से अपेक्षा की जाएगी कि वे अपने सदस्यों के बीच अनुशासन बनाए रखें, जो संबंधित उद्योग का 100% हिस्सा होंगे। मध्यस्थता के ऐसे पर्याप्त साधनों के साथ, हड़ताल और तालाबंदी दोनों पर, निश्चित रूप से, प्रतिबंध लग जाएगा, लेकिन नियोक्ता, कर्मचारी या उपभोक्ता, सभी औद्योगिक निगमों के प्रतिनिधियों के साथ परिषद में बैठे निगम मंत्री से सामान्य औद्योगिक व्यवहार और राष्ट्रीय कल्याण के अनुरूप न्यायोचित निर्णय के लिए अपील कर सकते हैं। यह देखा जाएगा कि निगमों को अधिकार और स्वशासन के इस हस्तांतरण से केंद्रीय विधानमंडल को विस्तृत विधान बनाने के एक बड़े पैमाने से मुक्ति मिल जाएगी, जो वर्तमान में संसद के कार्य में बाधा डालता है।

कॉर्पोरेट संगठन का उपयोग

अब तक नया अर्थशास्त्र एक दिलचस्प नई अवधारणा प्रतीत हो सकता है, लेकिन व्यावहारिक रूप से संदिग्ध है।

उनकी अत्यधिक जटिलता की भरपाई के लिए मूल्य। हालाँकि, ऐसी प्रणाली केवल एक बौद्धिक अभ्यास के रूप में नहीं बनाई गई है, बल्कि उन जगहों पर इसके अपार लाभ हैं जहाँ वर्तमान प्रणाली विशेष रूप से कमज़ोर है। उदाहरण के लिए, आइए हम सबसे गंभीर समस्या, प्रचुरता के बीच गरीबी, को लें, जो रूढ़िवादी "अति-उत्पादन" कहते थे, लेकिन जिसे "अल्प-उपभोग" के रूप में बेहतर ढंग से वर्णित किया जा सकता है। स्पष्ट रूप से वर्तमान प्रणाली में इस दोष को केवल उच्च जीवन स्तर लाकर ही दूर किया जा सकता है, जब लोग आधुनिक विज्ञान और तकनीक के विशाल उत्पादन का उपभोग करने में सक्षम हों। दुर्भाग्य से, व्यक्तिवादी प्रणाली प्रचुरता के दौर में या तो मजदूरी के रूप में या मुनाफे के रूप में क्रय शक्ति को कम कर देती है, क्योंकि पहले से ही अति-भंडारित बाजार में माल बेचने के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा होती है, जो निर्माताओं को बाजार पर कब्जा करने के लिए गलाकाट प्रयास में कीमतें कम करने के लिए मजबूर करती है। हालाँकि, फासीवाद के तहत, कीमतों और प्रतिस्पर्धा की शर्तों को नियंत्रित किया जाएगा, और किसी भी निर्माता को अपने प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलने के लिए अपने निगम के नियमों के विरुद्ध अपने कर्मचारियों को पसीना बहाने की अनुमति नहीं होगी। इस उपाय से न केवल क्रय शक्ति में गिरावट को रोका जा सकेगा, बल्कि पूरे उद्योग क्षेत्र में एकजुट कार्रवाई से पूरी मजदूरी व्यवस्था को स्थायी रूप से बढ़ाया जा सकेगा। ज़ाहिर है, ऐसी कार्रवाई पूरी तरह से उचित है और हाल के वर्षों में कई जनसेवकों ने इसकी वकालत की है, लेकिन दुर्भाग्य से वर्तमान व्यक्तिवादी व्यवस्था के तहत ऐसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि अगर कोई भी नियोक्ता इतना मूर्ख है कि राष्ट्रीय सुधार के लिए अपने कर्मचारियों की मजदूरी बढ़ाने की कोशिश करता है, तो उसे जल्द ही कई देशद्रोही प्रतिस्पर्धी मिल जाएँगे जो अपनी मजदूरी कम कर देंगे और उसे बाज़ार से बाहर कर देंगे। केवल संगठित फ़ासीवादी शासन के अनुशासन और नियंत्रण में ही ऐसी नीति को सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है।

इसी प्रकार बेरोजगारी की बड़ी समस्या का भी समाधान किया जा सकता है, क्योंकि यह स्पष्ट है कि यह हमारी वर्तमान राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में संगठन के पूर्ण अभाव का परिणाम है।
इस देश में किसी भी समय एक निश्चित मात्रा में कार्य होना चाहिए, जिसकी गणना मानव-घंटों में की जाती है, तथा जिसे पूरा करना आवश्यक होता है, तथा उस कार्य को करने के लिए इच्छुक तथा उत्सुक श्रमिकों की एक निश्चित संख्या होनी चाहिए।
काम के घंटों में पुनर्समायोजन करके काम को निश्चित रूप से कुल श्रमिकों पर फैलाया जा सकता है, जैसा कि वर्तमान में इटली में किया जा रहा है, जहाँ अब 40 घंटे का सप्ताह लागू किया जा रहा है। दरअसल, इस देश की फ़ासीवादी सरकार काम के घंटे कम करने के बजाय लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने जैसे अधिक लाभकारी समाधान की तलाश में है, लेकिन किसी भी स्थिति में, एक नियोजित कॉर्पोरेट राज्य के गठन में बेरोज़गारी की समस्या पूरी तरह और स्थायी रूप से हल हो जाती है।

वित्त का कार्य

वर्तमान व्यवस्था का एक प्रमुख दोष यह रहा है कि यह समाज के विभिन्न व्यवसायों और पेशों में समग्र सेवा के उनके कार्यात्मक उद्देश्य की भावना का संचार करने में विफल रही है। इसके परिणामस्वरूप वित्त के क्षेत्र में सबसे बुरे परिणाम सामने आए हैं, जहाँ बैंकरों और वित्तपोषकों ने अपने लाभ के लिए धन-शक्ति का शर्मनाक तरीके से शोषण किया है। वास्तव में, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यह देश, कई अन्य देशों की तरह, उच्च वित्त की तानाशाही द्वारा शासित है, जिसकी रुचि ब्रिटिश जनता की भलाई से कहीं अधिक विदेशी बॉन्ड बाजार के आकर्षक प्रतिफल में है। फ़ासीवादी सरकार का पहला और सबसे ज़रूरी काम अंतर्राष्ट्रीय वित्त की इस वर्तमान तानाशाही को तोड़ना और उसकी जगह एक ऐसी सत्तावादी व्यवस्था स्थापित करना होगा, जिसे राष्ट्र द्वारा देश के सबसे शक्तिशाली हितों पर भी एक कार्यात्मक और सामाजिक उद्देश्य थोपने का अधिकार प्राप्त हो।

मुद्रा का कार्य, जिसे आजकल अक्सर भुला दिया जाता है, वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान को सुगम बनाना है। यह तथ्य कि हमें अपनी वस्तुओं का आदान-प्रदान करना इतना कठिन लग रहा है,

और आज सेवाओं की कमी इस बात का स्पष्ट संकेत है कि वित्त समुदाय के प्रति अपना प्राथमिक कर्तव्य निभाने में विफल रहा है। हमारे तकनीशियन और आविष्कारक चाहे कितने भी कुशल और चतुर क्यों न हों, लोगों का जीवन स्तर तब तक ऊँचे स्तर तक नहीं उठाया जा सकता जब तक पर्याप्त मुद्रा और विनिमय के अन्य साधन प्रचलन में नहीं आ जाते। अन्यथा, उद्योग के आविष्कार और युक्तिकरण का एकमात्र परिणाम अधिक से अधिक लोगों को बेरोजगार करना होगा। वर्तमान समय में हम मुद्रा पर एक बहुत ही गंभीर प्रतिबंध से पीड़ित हैं, जो बैंकों द्वारा अपनी अपस्फीति की नीति के अनुसरण में लागू किया जाता है। इस नीति के दोहरे कारण हैं। पहला, एक निश्चित जन्मजात रूढ़िवादिता है जो अभी भी वस्तु विनिमय के युग के अंतिम अवशेष के रूप में मुद्रा के स्वर्ण मानक से चिपकी हुई है।

दूसरे, वित्तपोषकों को यह एहसास होता है कि जिस वस्तु का वे व्यापार करते हैं, उसकी मात्रा सीमित करने से वह वस्तु अधिक मूल्यवान हो जाती है और वे स्वयं अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं। इन दो कारणों से, प्रचलन में मुद्रा की मात्रा, जैसा कि होना चाहिए, देश में संभावित उत्पादन की मात्रा के अनुरूप नहीं होती, बल्कि केंद्रीय बैंक के भंडारों में एक निश्चित बहुमूल्य धातु, सोने, की आपूर्ति के एक निश्चित अनुपात तक सीमित रहती है। स्पष्ट रूप से, इस धातु की उपलब्ध आपूर्ति वितरण की उस समस्या से पूरी तरह अप्रासंगिक है जिसका समाधान वित्त को करना है, और वास्तव में, आधुनिक उद्योग की उत्पादन की अपार शक्तियों को वित्तपोषित करने के लिए पूरी दुनिया में सोने की मात्रा दयनीय रूप से अपर्याप्त है। फिर भी, औद्योगिक विकास की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मुद्रा और ऋण का विस्तार करने के बजाय, हमारे वित्तीय स्वामी विश्व स्वर्ण आपूर्ति द्वारा निर्धारित सीमाओं तक उत्पादन को सीमित करके स्वर्ण मानक पर लौटने का प्रयास कर रहे हैं। निस्संदेह, इन तरीकों से अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषक विश्व मामलों पर अपना नियंत्रण बनाए रख रहे हैं और बढ़ा रहे हैं, लेकिन केवल इस कीमत पर कि दुनिया का एक बड़ा हिस्सा प्रचुरता के बीच गरीबी की ओर धकेला जा रहा है।

फ़ासीवादी सरकार उद्योग पर वित्त के इस अस्वाभाविक प्रभुत्व को उलटने पर ज़ोर देगी। यह पूरी तरह स्पष्ट कर दिया जाना चाहिए कि वित्त का कार्य उद्योग की सेवा करना है, और वह उस उद्योग के शासन के लिए किसी भी तरह उपयुक्त नहीं है जिसे उसने हड़प लिया है। न केवल लंदन शहर के विदेशी उत्पादन के माध्यम से हमारे अपने उत्पादन के साथ प्रतिस्पर्धा में विदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित करना बंद करना होगा, बल्कि हमारे वित्तपोषकों और बैंकरों को वितरण की समस्या का सामना करने के लिए मजबूर होना होगा, जिसकी उन्होंने अतीत में लगातार उपेक्षा की है। हम पहले ही बता चुके हैं कि हमारे व्यापार का भविष्य घरेलू बाज़ार के पुनरुद्धार में निहित है, और वित्त को अब लोगों की क्रय शक्ति बढ़ाकर इस पुनरुद्धार को लाने के साधनों पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा।

इसमें बैंकिंग व्यवसाय की सभी पवित्रतम परंपराओं से एक ज़बरदस्त और क्रांतिकारी विच्छेद शामिल है, क्योंकि इस समस्या की मूल विशेषता यह है कि इसमें उपभोग का वित्तपोषण शामिल है। अब तक बैंकरों ने अपने कार्यों को पूरी तरह से वाणिज्यिक क्षेत्र में उत्पादन के वित्तपोषण तक सीमित रखा है, क्योंकि किश्तों में भुगतान का व्यवसाय वास्तव में उपभोग का वित्तपोषण नहीं करता, बल्कि यह केवल तत्काल बिक्री के लिए भविष्य की क्रय शक्ति को गिरवी रखता है।

उत्पादन की शक्तियों को मुक्त करने के लिए हमें उच्च वेतन और वेतन के वित्तपोषण का कोई न कोई तरीका ज़रूर ढूँढ़ना होगा। वर्तमान में, निश्चित रूप से, तीव्र प्रतिस्पर्धा में लगी एक व्यक्तिवादी व्यवस्था में, ऐसी कोई भी कार्यवाही असंभव है, और कोई भी नियोक्ता जो अपने बैंक में जाकर उच्च वेतन देने के लिए ओवरड्राफ्ट की माँग करता है, उसे पागल करार दिया जाएगा, क्योंकि वह इस बात की कोई गारंटी नहीं दे सकता कि उसके प्रतिस्पर्धी भी ऐसा ही करेंगे या उससे बाज़ार हथियाने के लिए अपने वेतन कम नहीं करेंगे। लॉर्ड बीवरब्रुक, जिन्होंने अक्सर उच्च वेतन दरों की वकालत की है, इस अनिवार्य कठिनाई को कभी दूर नहीं कर पाए।

हालाँकि, कॉर्पोरेट अर्थशास्त्र, इस उद्देश्य के लिए एक तत्काल समाधान प्रदान करता है।
निगमों का काम मजदूरी दरों और श्रम की स्थितियों को नियंत्रित और विनियमित करना है, ताकि अगर फासीवादी
यदि सरकार उच्च मजदूरी की नीति अपनाती, तो देशद्रोही या विदेशी नियंत्रित कंपनियों द्वारा अपने प्रतिस्पर्धियों से लाभ उठाने का प्रश्न ही नहीं उठता; सभी

उन्हीं मानकों का पालन करने के लिए बाध्य। यदि नियोक्ता अपने बैंक के पास जाकर अपने कार्यक्रम के हिस्से को पूरा करने के लिए ओवरड्राफ्ट मांगता, तो बैंकर को उसे ऐसा करने में कोई कठिनाई नहीं होती, क्योंकि वह जानता होगा कि पूरे समुदाय की बढ़ी हुई क्रय शक्ति के परिणामस्वरूप उस विशेष फर्म के लिए ऑर्डर बढ़ेंगे और अधिक समृद्धि आएगी जिसके साथ वह व्यापार कर रहा था। इसी माध्यम से फ़ासीवाद लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाएगा, और मुद्रा और ऋण की वह बड़ी मात्रा प्रचलन में लाएगा जो उद्योग की बढ़ी हुई उत्पादक शक्ति को वित्तपोषित करने के लिए आवश्यक है।

स्पष्टतः मौद्रिक विस्तार की इस नीति में स्वर्ण मानक से पूर्णतः अलग होना शामिल है, और अधिक रूढ़िवादी आलोचकों को इसके परिणामस्वरूप मुद्रा की स्थिरता को लेकर चिंता हो सकती है।
हालाँकि, फ़ासीवाद यह बताता है कि धन वास्तव में वस्तुओं और सेवाओं का दावा है, और कोई भी व्यक्ति अपनी सामान्य समझ में बैंक में जाकर अपने नोटों के बदले सोने की मांग नहीं करता: वह पूरी तरह संतुष्ट है यदि वह अपने धन को उन वस्तुओं और सेवाओं के बदले में दे सके जिनकी उसे आवश्यकता है। इस समय इस देश में स्पष्ट रूप से प्रचुर मात्रा में वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध हैं: वास्तव में, गोदाम माल से भरे हुए हैं, और हमारे दो मिलियन से अधिक साथी देशवासी व्यर्थ में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। जब तक हम ऐसे नोट जारी नहीं करते जो उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं से आच्छादित न हों, तब तक मुद्रास्फीति का कोई खतरा नहीं हो सकता; इसलिए फासीवाद मुद्रा को इंग्लैंड के बैंक में सोने के संकीर्ण असुरक्षित आधार के बजाय राष्ट्र के संपूर्ण उत्पादक संसाधनों के व्यापक आधार पर आधारित करेगा।

साम्राज्य निरंकुशता

उद्योग के कॉर्पोरेट संगठन की इस नीति की एकमात्र उचित आलोचना, जो पूरे देश के जीवन स्तर को ऊँचा उठाती है, इस तर्क में निहित है कि यह देश बहुत हद तक अपने विदेशी व्यापार पर निर्भर है, और इसलिए दुनिया के बाज़ारों में अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में बेहतर जीवन स्तर का वहन नहीं कर सकता। हालाँकि, इस तर्क का खंडन हेनरी फोर्ड के उदाहरण का हवाला देकर किया जा सकता है, जिन्होंने दुनिया की सबसे सस्ती मोटर कार बनाई और सबसे ज़्यादा मज़दूरी दी। अमेरिका में विशाल घरेलू बाज़ार ने उन्हें ऐसा करने में सक्षम बनाया, जिसने उन्हें बड़े पैमाने पर उत्पादन के तरीके अपनाने और बहुत कम जीवन स्तर वाले देशों के बाज़ारों में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनाया। दरअसल, हम अपने विदेशी बाज़ार खो रहे हैं, इसलिए नहीं कि हमारे सामान हमारे प्रतिस्पर्धियों के सामान से महँगे हैं, बल्कि इसलिए कि ये बाज़ार दुर्गम टैरिफ़ बाधाओं के कारण हमारे लिए बंद हो रहे हैं, जिनके पीछे देशी उद्योग तेज़ी से विकसित हो रहे हैं। हमारे सामान चाहे कितने भी सस्ते हो जाएँ, हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि दूसरे देश उन्हें खरीदने के लिए अपने उद्योगों को बर्बाद कर देंगे और अपने लोगों को बेरोज़गार कर देंगे। किसी भी मामले में, जब मजदूरी दरों के प्रश्न को ध्यान में रखा जाता है, तो जापानियों की तरह पूर्वी लोग हमसे बहुत अधिक बोली लगा सकते हैं।

निर्यात व्यापार किसी भी देश की भलाई के लिए ज़रूरी नहीं है, क्योंकि इसका मतलब है कि देश से बाहर सामान भेजना ताकि विदेशियों के उपभोग के लिए उसे देश में ही रखा जाए ताकि घरेलू आबादी का जीवन स्तर बेहतर हो सके। निर्यात की अधिकता से लंबे समय में केवल लंदन शहर के बड़े-बड़े धनी लोग ही लाभान्वित होते हैं, क्योंकि इसी अधिशेष के आधार पर वे बड़े विदेशी ऋण जारी करते हैं, जिनसे उन्हें इतना बड़ा कमीशन मिलता है। निर्यात केवल आवश्यक आयातों की पूर्ति के लिए ही उचित है, और इस देश के आयात को उन सभी आयातित वस्तुओं को छोड़कर बहुत हद तक कम किया जा सकता है जिनका हम घर पर उत्पादन कर सकते हैं। यह एक शर्मनाक तथ्य है कि इस देश में बड़ी मात्रा में निर्मित वस्तुएँ आयात की जाती हैं, जिनका यहाँ पूरी तरह से उत्पादन किया जा सकता है, और घरेलू कृषि की उपेक्षा का कोई बहाना नहीं है, सिर्फ़ इसलिए कि हमारे संसाधन हमारी पूरी आबादी का पेट भरने के लिए पर्याप्त नहीं हैं; हमें विदेश जाने से पहले कम से कम ज़्यादा से ज़्यादा घरेलू उत्पाद पैदा करने चाहिए।

शेष राशि विदेश में खर्च की जाएगी।

इस देश में वस्तुओं की अधिकतम विविधता का उत्पादन करने के बाद भी, इस बात से इनकार करना बेकार होगा कि हम स्वयं को पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं बना सकते, लेकिन दूसरी ओर, ऐसी बहुत कम वस्तुएं हैं जिनकी हमें आवश्यकता है और जो ब्रिटिश साम्राज्य में कहीं नहीं मिल सकतीं।

फ़ासीवाद कोई संकीर्ण लिटिल इंग्लैंड नीति नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण साम्राज्य को निरंकुश विकास की एक महान साम्राज्यवादी योजना प्रदान करता है। विस्तारित होते घरेलू बाज़ार का एक बड़ा हिस्सा डोमिनियनों को ओटावा में दिए गए हिस्से से कहीं अधिक दिया जाएगा, क्योंकि विदेशी प्रतिस्पर्धा पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि समग्र साम्राज्य ऐसी आर्थिक व्यवस्था में सहयोग करने के लिए पूरी तरह से तैयार होगा, जो एक पूर्णतः आत्मनिर्भर साम्राज्य का निर्माण करेगी, जो विश्व संकटों और विश्व महामंदियों के प्रभावों से अछूता रहेगा, और जो अब तक ज्ञात जीवन स्तर से भी ऊँचा जीवन स्तर निर्मित करने में सक्षम होगा।

अंततः, हमें फासीवाद के कॉर्पोरेट सिद्धांतों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर लागू करने की कल्पना करनी चाहिए।
अब आयातक को किसी भी बाज़ार से खरीदारी करने की अनुमति नहीं होगी, जिसे वह उचित समझे, बल्कि उसे एक विदेशी व्यापार बोर्ड के माध्यम से काम करना होगा, जो देश की क्रय शक्ति का उपयोग निर्यात बाज़ार हासिल करने के साधन के रूप में करेगा। फ़ासीवाद शुरू से ही यह नीति अपनाएगा कि ब्रिटेन उन्हीं से ख़रीदे जो ब्रिटेन से ख़रीदते हैं, और अगर कोई विदेशी देश हमें ऐसी वस्तुएँ बेचना चाहे जिनकी हमारे पास कमी है, तो उसे बदले में हमारी वस्तुएँ स्वीकार करनी होंगी। जैसे-जैसे अन्य देश भी इसी तरह के तरीक़े अपनाएँगे, हम अंततः एक देश से दूसरे देश में संगठित वस्तु विनिमय की एक सामान्य प्रणाली पर पहुँच जाएँगे, जो नियोजित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एकमात्र व्यावहारिक साधन है, जो अंतर्राष्ट्रीय वित्त के कुचक्रों और अंतर्राष्ट्रीय सूदखोरी के बंधनों से मुक्त है।

कॉर्पोरेट विश्व व्यवस्था

यह नहीं मान लेना चाहिए कि फ़ासीवाद राष्ट्रीय अर्थों में पूरी तरह से आत्मकेंद्रित है। निस्संदेह, अपने देश को सर्वोपरि रखना फ़ासीवादी दर्शन का एक अनिवार्य गुण है, लेकिन इस आधार पर यह मान लेना जल्दबाज़ी होगी कि फ़ासीवाद राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता का प्रतीक है और आर्थिक आधार पर युद्ध का कारण बन सकता है। इसके विपरीत, वर्तमान व्यवस्था का एक बहुत गंभीर ख़तरा यह है कि विश्व बाज़ारों के लिए लगातार बढ़ता संघर्ष युद्ध का कारण बन सकता है। वास्तव में, सुदूर पूर्व में बाज़ारों के लिए युद्ध पहले ही हो चुके हैं, और यूरोपीय शक्तियाँ बड़ी मुश्किल से इस संघर्ष में शामिल होने से बच पाई हैं। वास्तव में, आर्थिक नियोजन की कॉर्पोरेट प्रणाली युद्ध के ख़तरे को कम कर देगी, क्योंकि यह युद्ध के आर्थिक कारणों को सचेत मानवीय नियंत्रण में लाएगी। अब यह प्रत्येक देश द्वारा अपने पड़ोसियों पर अधिकतम निर्यात थोपने का प्रश्न नहीं होगा, बल्कि अपने राष्ट्रीय आर्थिक मामलों पर पूर्ण कॉर्पोरेट नियंत्रण रखने वाली सत्ताधारी सरकारों द्वारा अपने औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक कच्चे माल को साझा करने और आदान-प्रदान करने के लिए एक साथ मिलने का प्रश्न होगा। चूंकि इन कच्चे उत्पादों की कोई कमी नहीं है, और वास्तव में बाजार में इनकी बाढ़ को रोकने के लिए इनके उत्पादन में भारी कटौती की गई है, इसलिए इस तुलनात्मक रूप से सरल समस्या का सौहार्दपूर्ण समाधान निकालने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए, जब एक बार राष्ट्रों ने इस हास्यास्पद विचार को त्याग दिया हो कि वे एक-दूसरे को बर्बाद करके अपना लाभ उठा सकते हैं।

भविष्य की दुनिया में प्रतिद्वंद्विता अवश्य होगी, लेकिन यह प्रतिद्वंद्विता उपलब्धि के लिए होगी, प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं। समाज और आर्थिक जीवन के समन्वित संगठन के अनुरूप ही हम एक व्यवस्थित विश्व में शांति और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। आइए, हम अपने राष्ट्रीय मामलों को व्यवस्थित करके और अन्य राष्ट्रों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करके अपनी भूमिका निभाएँ।

जेम्स ड्रेनन द्वारा नाज़ी आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में

टी महामहिम इतालवी फ़ासीवादियों ने इतालवी राष्ट्रवाद को वह विलक्षण नस्लीय पृष्ठभूमि देने का कभी प्रयास नहीं किया, जिसे हेर हिटलर ने "द्रिते रीच" की बौद्धिक प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया था। यदि किसी भी वर्ग को आधुनिक नीति को अतीत के इतिहास के दावों पर आधारित करने का प्रलोभन था, तो वे रोम के स्वामी ही रहे होंगे, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि सिग्नोर मुसोलिनी का लक्ष्य रोमन क्षेत्रीय गौरव के शाब्दिक पुनरुत्थान के बजाय फ़ासीवाद की अवधारणाओं पर आधारित एक परम अखिल-यूरोपीय संघ का निर्माण करना था। दूसरी ओर, हेर हिटलर ने जर्मन (या आर्य) नस्लीय विशिष्टता के एक आदर्श का विस्तार किया है, जिसकी जड़ें जर्मन इतिहास में गहरी हैं। हालाँकि, इस जर्मन अवधारणा को, यदि ठीक से समझा जाए, तो पश्चिम के पुनरुत्थान का आध्यात्मिक आधार बनाने के लिए नियत पंथ के रूप में फ़ासीवाद की इतालवी समझ के साथ किसी भी तरह से संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं है। न ही इसे ब्रिटिश साम्राज्य की उदात्त अवधारणा के साथ संघर्ष करना चाहिए, जो ब्रिटेन में फ़ासीवाद को प्रेरित करती है, क्योंकि किसी भी बिंदु पर हितों का टकराव नहीं होता है। इसके विपरीत, विश्व फासीवाद के सिद्धांत में सभी विविध योगदान विघटनकारी होने के बजाय पूरक हो सकते हैं।

नाज़ियों द्वारा इतिहास की नस्लीय व्याख्या को अपनाने की समझ हासिल करने के लिए, जिसे पहली बार पिछली शताब्दी में फ्रांसीसी गोबिन्यू और अंग्रेज ह्यूस्टन स्टीवर्ट चेम्बरलेन जैसे गैर-जर्मन लेखकों ने प्रतिपादित किया था, और जिसे नाज़ी नेताओं ने जर्मन जनता द्वारा स्वीकृत एक क्रांतिकारी आदर्श के आधार और जर्मन रीच की वर्तमान राज्य नीति की प्रेरक शक्ति के रूप में अपनाया था, पिछले एक हज़ार वर्षों की पूरी अवधि में जर्मन इतिहास की कुछ स्थितियों और प्रवृत्तियों पर विचार करना आवश्यक है। केवल इस तरह के अध्ययन से ही हम आधुनिक जर्मन जनता के विश्वास के आधारों तक पहुँच सकते हैं, और यह समझ सकते हैं कि जर्मनी के स्वामी अपने विश्वास की वैधता के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त लोगों को किस दिशा में ले जा सकते हैं।

आठवीं शताब्दी में, जर्मनिक जनजातियाँ ही थीं जिन्होंने प्राचीन रोम की साम्राज्यवादी अवधारणाओं को वास्तव में सफल बनाया। शारलेमेन का साम्राज्य—जिसे पश्चिम का सम्राट कहा जाता था—जातीय रूप से फ़्रांसीसी से ज़्यादा जर्मन था, और उसकी मृत्यु के बाद ही फ़्रेंको-गॉलिस्ट तत्व जर्मनों से अलग पहचाने जाने लगे, जब उसके राज्य के विभिन्न हिस्सों के उत्तराधिकारियों ने क्रमशः फ़्रांसीसी और जर्मन बोलियों में शपथ ली। तेरहवीं शताब्दी के अंत तक होहेनस्टौफेन सम्राट पूरे इटली और वर्तमान फ़्रांस के एक बड़े हिस्से को जर्मन साम्राज्य के प्रांत मानते रहे। यह ध्यान देने योग्य है कि हालाँकि उस समय जर्मनी एल्बे के पूर्व में लगभग नहीं फैला था, नीदरलैंड, बरगंडी और सवॉय और फ़्रांशे-कॉम्टे के कुछ हिस्से अलग-अलग समय पर अलग-अलग स्तरों पर शाही राज्यों में शामिल थे।

इस देश में इतिहास शिक्षण की एक खामी यह है कि हम अपने इतिहास को शेष यूरोप के परिप्रेक्ष्य में और उसके सापेक्ष देख पाने में विरले ही सक्षम होते हैं। 825 में लुई जर्मन के राज्याभिषेक और 1250 में फ्रेडरिक द्वितीय की मृत्यु के बीच की चार शताब्दियों तक—जो हमारे अपने इतिहास में अल्फ्रेड महान और हेनरी तृतीय के शासनकाल के बीच का कालखंड है—यूरोप का इतिहास काफी हद तक जर्मनी का इतिहास था। ऐसे समय में जब हमारा अपना इतिहास अत्यंत प्रांतीय था—जब इसकी घटनाएँ यूरोपीय इतिहास की मुख्य धारा से उतनी ही दूर थीं, जितनी कि, उदाहरण के लिए, आधुनिक नॉर्वे का व्यक्तिगत इतिहास वर्तमान यूरोप के इतिहास से है—जर्मनी उन महान संघर्षों का स्थल था, जिनमें

मध्ययुगीन यूरोपीय संस्कृति और उसके सम्राट, जैसे हेनरी द फाउलर, ओटो द ग्रेट और फ्रेडरिक बारबरोसा, पश्चिमी यूरोप के निर्णायक और जुटलैंड से सिसिली और बरगंडी से हंगरी तक की घटनाओं के सूत्रधार बने। आधुनिक जर्मनों के मन पर इस काल के महत्व को समझना आवश्यक है, ताकि उनके इतिहास पर उनके असाधारण गर्व और युद्धोत्तर यूरोप की क्षेत्रीय परिस्थितियों में उनकी निराशा और बंधन की भावना को समझा जा सके।

ओटो द ग्रेट—जिनका निधन लगभग एक हज़ार साल पहले, 973 में हुआ था—पिछले कुछ वर्षों में नाज़ी देवताओं के सर्वोच्च व्यक्तित्व बन गए हैं, और जर्मन किताबों की दुकानों में उनके चित्र हिटलर और गोरिंग की तरह ही अक्सर दिखाई देते हैं। जर्मनी के इतिहास की पूरी प्रक्रिया, वास्तव में, "अवरुद्ध विकास" की परिघटना का एक उदाहरण है, और वे विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ जिन्हें हम समकालीन जर्मन राष्ट्रीय मनोविज्ञान से जोड़ते हैं, "कुंठा ग्रन्थि" से उत्पन्न होती हैं, जो इसका अपरिहार्य व्युत्पन्न है। होहेनस्टौफेन की शक्ति का दायरा और झुकाव ही जर्मन जनता के पतन का कारण बना। इस वंश के प्रतापी सम्राट शारलेमेनियाई अखिल-यूरोपीय साम्राज्य के स्वप्न से मोहित थे, और एक शताब्दी से भी अधिक समय तक उन्होंने अपनी इतालवी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में जर्मनों की शक्ति को नष्ट किया। ओटो द ग्रेट की प्रारंभिक नीति एक महान जर्मन राज्य को सुदृढ़ करने की थी। होहेनस्टौफेन अखिल-यूरोपीय अवधारणाओं से आकर्षित थे, जिनके उत्तराधिकारी हैप्सबर्ग बने। और होहेनस्टौफेन्स के विनाश ने जर्मनी को कमज़ोर और केंद्रीय शक्तिविहीन बना दिया, वह भी ऐसे समय में जब इंग्लैंड और फ्रांस उस राष्ट्रीय राज्यत्व की ओर बढ़ने के कगार पर थे जो अंततः ट्यूडर और वालोइस के अधीन प्राप्त हुआ था। होहेनस्टौफेन की नीतियों की त्रुटियाँ जर्मन दृष्टिकोण से और भी दुखद लगती हैं, जब यह याद किया जाता है कि एल्बे के पार और बाल्टिक के तटों के आसपास जर्मनों का महान "ड्रंग नाच ओस्टेन" फ्रेडरिक द्वितीय के शासनकाल के दौरान ट्यूटनिक शूरवीरों द्वारा चलाया जा रहा था, और यह अभियान अंततः जर्मन केंद्र से प्रोत्साहन के मंद पड़ने के कारण अपनी व्यापक संभावनाओं में विफल हो गया।

1250 में फ्रेडरिक द्वितीय की मृत्यु और 1546 में मार्टिन लूथर की मृत्यु के बीच लगभग तीन शताब्दियाँ हैं, और हालाँकि यह एक मनमाना विभाजन है, फिर भी सामान्यीकरण के उद्देश्य से इसे स्वीकार किया जा सकता है। तीन शताब्दियों की इस अवधि में जर्मन लोगों की संभावनाओं और चरित्र, दोनों में एक पूर्ण परिवर्तन देखा गया। तीन मुख्य ऐतिहासिक धाराएँ हैं जिनका जर्मन ऐतिहासिक जीवन के बाद के विकास पर मौलिक प्रभाव पड़ा।

सबसे पहले, जर्मन और उत्तरी इतालवी शहरों ने वह आर्थिक प्रभुत्व खो दिया जो उन्हें मध्य युग के दौरान प्राप्त था, जब वे यूरोप और बीजान्टिन-सारसेनिक पूर्व के बीच व्यापार के मुख्य पूर्व से पश्चिम मार्ग पर विकसित हुए थे। तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल पर कब्ज़ा करने से इस मार्ग के सभी क्षेत्रों की समृद्धि काफी हद तक नष्ट हो गई, और अमेरिका की खोज और केप मार्ग के खुलने से आर्थिक शक्ति का केंद्र अटलांटिक तट के देशों - स्पेन और पुर्तगाल, इंग्लैंड, फ्रांस और हॉलैंड - में स्थानांतरित हो गया। वास्तव में, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जर्मनी में धर्मसुधार और सत्रहवीं शताब्दी में तीस वर्षीय युद्ध, दोनों की जड़ें आर्थिक अव्यवस्था की उस भयानक प्रक्रिया में थीं जो मुख्य व्यापार केंद्रों के इस स्थानांतरण के बाद हुई होगी।

इस काल की दूसरी महान ऐतिहासिक धारा होहेनस्टौफेन्स के स्थान पर हैप्सबर्ग्स का उदय था। हैप्सबर्ग्स जर्मन राजकुमार थे जिनके जर्मन भूमि पर व्यापक व्यक्तिगत प्रभुत्व थे, लेकिन ऑस्ट्रिया—ओस्टरमार्क मार्क—में जर्मनी के पूर्वी मार्चेस पर उनकी स्थिति ने उन्हें उनके हितों में अनिवार्य रूप से गैर-जर्मन बना दिया था। हैप्सबर्ग्स की पारंपरिक नीति, पैन-जर्मनों और

विशेष रूप से नाज़ियों के लिए, यह समग्र रूप से "ऑस्ट्रियाई सिद्धांत" है। हैब्सबर्ग, पहले के होहेनस्टॉफेन्स की तरह, खुद को रोमन साम्राज्य का उत्तराधिकारी मानते थे, और उन्होंने विश्व प्रभुत्व, या कम से कम, व्यावहारिक राजनीति में, एक अखिल-यूरोपीय वर्चस्व का दावा किया। यह अद्भुत घराना, अपने इतिहास के विभिन्न कालखंडों में, एक इतालवी शक्ति, एक स्पेनिश और दक्षिण अमेरिकी शक्ति, एक स्लाव शक्ति, एशिया और यहाँ तक कि अफ्रीका में भी आकांक्षाओं वाली एक शक्ति थी, लेकिन यह कभी भी ऐसी शक्ति नहीं थी जिसने जानबूझकर विशुद्ध रूप से जर्मन हितों को हावी होने दिया हो।

[1] तुर्कों द्वारा कॉन्स्टेंटिनोपल

पर विजय के बाद की चार शताब्दियों के दौरान, हैप्सबर्ग ने एक महान भूमिका निभाई। उन्होंने तुर्कों की पश्चिम की ओर सैन्य प्रगति को रोका, और बीजान्टिन सम्राटों के बाद पूरे दक्षिण-पूर्वी यूरोप में प्रमुख सभ्यता-निर्माता के रूप में स्थापित हुए। लेकिन उनकी भूमिका यूरोप के लिए जितनी मूल्यवान थी, उतनी ही जर्मन राष्ट्रीयता की अवधारणा के लिए विनाशकारी भी।

भूमध्य सागर में उनकी व्यस्तता ने जर्मनी में एकीकरण की किसी भी प्रक्रिया को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया, और उनकी वंशवादी नीति ने व्यवहार में जर्मन भाषी भूमि के विभाजन को जन्म दिया।

जर्मन इतिहास के विकास पर तीसरा महत्वपूर्ण प्रभाव जर्मन भाषी देशों का विभाजन और खुद को जर्मन कहने वाली आबादी के पूरे नस्लीय चरित्र का परिवर्तन था, जो 1250-1550 की अवधि के दौरान चल रहा था। यह घटना अत्यंत महत्वपूर्ण थी, खासकर जब यह याद किया जाता है कि इसी अवधि के दौरान अंग्रेज, फ्रांसीसी और स्पेनिश, यहाँ तक कि हंगेरियन, चेक और पोलिश जैसे राष्ट्र उभरे और संगठित हुए, और यूरोप ने वे रूप धारण करना शुरू किया जिनसे हम वर्तमान में परिचित हैं।

शारलेमेन के समय में ट्यूटन और फ्रैंक्स के बीच अंतर बहुत स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं थे। सैक्सन आधिपत्य के तहत इंग्लैंड, काफी हद तक एक जर्मन साम्राज्य था, और लोम्बार्डों के अधीन उत्तरी इटली के बारे में भी यही कहा जा सकता है। सबसे पहले इंग्लैंड, पूर्वी फ्रांस और उत्तरी इटली में जर्मन तत्वों का समावेश हुआ। यह प्रक्रिया वास्तव में 1250 में फ्रेडरिक द्वितीय की मृत्यु से बहुत पहले पूरी हो चुकी थी। अगले तीन सौ वर्षों के दौरान जर्मनी की पश्चिमी सीमाएँ राइन की ओर पीछे धकेल दी गईं। बरगंडी और फ़्रांशे-कॉम्टे जैसे क्षेत्र अधिक फ्रांसीसी और कम जर्मन होते जा रहे थे। नीदरलैंड निश्चित रूप से गैर-जर्मन बन गया। स्विट्जरलैंड का गठन हुआ, और काफी जर्मन आबादी स्विस विचार से जुड़ गई। ऑस्ट्रिया में महत्वपूर्ण जर्मन अभियान बड़े पैमाने पर गैर-जर्मन हैप्सबर्ग साम्राज्य का एक अभिन्न अंग बन गए। इन टुकड़ियों के परिणाम आधुनिक यूरोपीय इतिहास में आज भी महत्वपूर्ण हैं। वे ऑस्ट्रियाई प्रश्न की व्याख्या करते हैं।

वे अलसैस-लोरेन प्रश्न की व्याख्या करते हैं—एक ऐसे क्षेत्र पर विवाद जो कभी पूरी तरह से जर्मन नहीं रहा और जो कभी पूरी तरह से फ्रांसीसी नहीं बना। वे नाज़ियों द्वारा अखिल-जर्मन चेतना के पुनरुत्थान के प्रयास की भी व्याख्या करते हैं, न केवल ऑस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया में, बल्कि कुछ हद तक हॉलैंड और डेनमार्क, स्विट्जरलैंड और बेल्जियम में भी।

लेकिन जिस समय जर्मन भाषाई सीमाएँ राइन की ओर पीछे धकेली जा रही थीं, और जहाँ सबसे प्रामाणिक जर्मन रक्त की आबादी स्विस, फ्रेंच और डच में परिवर्तित हो रही थी, उसी समय जर्मन भाषा और जर्मन संस्कृति पूर्व की ओर तेज़ी से फैल रही थी, और उत्तर-पूर्वी यूरोप की आदिम गैर-जर्मन आबादी खुद को जर्मन समझना सीख रही थी। पूर्व की ओर जर्मन उपनिवेशीकरण ट्यूटनिक शूरवीरों का काम था, जिन्होंने एल्बे के पूर्व में और बाद में ओडर के पार स्लाव और फिनिश जनजातियों पर विजय प्राप्त की और उनका धर्मांतरण किया, और जर्मन हैन्सियाटिक शहरों का भी, जो बाल्टिक तट के किनारे व्यापारिक केंद्र स्थापित करने में लगे हुए थे। अंततः, इस दिशा में जर्मन प्रगति को पोलैंड की सैन्य शक्ति, स्कैंडिनेवियाई राज्यों की प्रतिद्वंद्विता, और निश्चित रूप से, बाद में, द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत में रूस के एक महाशक्ति के रूप में उभरने से रोक दिया गया।

अठारहवीं शताब्दी। लेकिन यह एक बड़ी उपलब्धि थी, खासकर जब यह ध्यान में रखा जाए कि यह अभियान तेरहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के बीच अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँचा, जब केंद्रीय जर्मन प्रेरणा कमज़ोर थी, और कई बार तो अस्तित्वहीन भी। बाल्टिक में हंसियाटिक नगरों और ट्यूटनिक शूरवीरों की भूमिका भूमध्य सागर में इतालवी गणराज्यों और लैटिन नाइटली ऑर्डर्स की भूमिका से काफी मेल खाती थी, जिन्होंने पूर्व में एक आक्रामक इतालवी नीति को उस समय बनाए रखा जब कोई केंद्रीय इतालवी शक्ति मौजूद नहीं थी।

मध्ययुगीन "ड्रैंग नाच ओस्टेन" की आधी-अधूरी असफलता में "निराशा-जटिलता" का दूसरा तत्व खोजा जा सकता है, जो आधुनिक जर्मनों द्वारा अपने देश के इतिहास की व्याख्या का आधार है। नाज़ी—खासकर जिसे "प्रशियाई स्कूल" कहा जा सकता है, जिससे जनरल गोरिंग और हेर रोसेनबर्ग संबंधित हैं—पश्चिम में जर्मन आकांक्षाओं के बंधन की भरपाई के लिए बाल्टिक क्षेत्रों में जर्मन घुसपैठ और उपनिवेशीकरण के पुनरुत्थान की लगातार आशा करते हैं।

मध्ययुगीन "द्रांग नाच ओस्टेन" का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम प्रशिया राज्य की स्थापना थी। प्रशिया की स्वदेशी आबादी मुख्यतः स्लाव और फ़िनिश मूल की थी—जो उत्तरी यूरोप की सबसे आदिम प्रजातियाँ थीं—और उनमें युद्धप्रिय और ज़रूरतमंद लोग भी शामिल थे जो जर्मन संस्कृति के पुराने केंद्रों से पूर्व की ओर पलायन कर गए थे। मध्य युग के दो शताब्दियों के सबसे रक्तपिपासु युद्ध के परिणामस्वरूप, प्रशियाई लोग एक जाति के रूप में बिखर गए।

जर्मनी में धर्मसुधार आंदोलन—जिसका इतिहास सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के अधिकांश समय तक चला—को कुछ पहलुओं में हैप्सबर्ग की पैन-जर्मन-रोमन कैथोलिक अवधारणाओं के विरुद्ध कुंठित जर्मन राष्ट्रवाद का एक अचेतन आंदोलन माना जा सकता है। धर्मसुधार आंदोलन की परिणति तीस वर्षीय युद्ध में हुई जिसने लगभग एक शताब्दी तक जर्मनी को बर्बाद कर दिया और हैप्सबर्ग की शक्ति को गंभीर रूप से पंगु बना दिया। 1683 में वियना की घेराबंदी में प्रदर्शित तुर्की शक्ति की पुनः प्राप्ति हैप्सबर्ग के कमजोर होने का एक परिणाम थी, और तीस वर्षीय युद्ध संभवतः दक्षिण-पूर्वी यूरोप में तुर्की शासन को दो शताब्दियों से भी अधिक समय तक लम्बा खींचने का परिणाम था।

फ्रांसीसी राजशाही का उदय किसी भी प्रकार की जर्मन एकता को मज़बूत करने के लिए एक गंभीर और स्थायी ख़तरा था। फ्रांसिस प्रथम ने हैप्सबर्ग के विरुद्ध तुर्कों के साथ मिलकर काम किया, और यह वालोइस ही थे जिन्होंने पूर्व में जर्मनी के विरुद्ध पोलिश मोर्चाबंदी की शुरुआत की। अगली शताब्दी में, तीस वर्षीय युद्ध के दौरान रिचेल्यू ने ही वास्तव में जर्मन मोहरों को आगे बढ़ाया। उनकी नीति का परिणाम यह हुआ कि जर्मनी एक शताब्दी तक बॉर्बन राजशाही की दया पर रहा, जब तक कि फ्रेडरिक महान के नेतृत्व में प्रशिया के उदय ने जर्मन राजनीति में एक बिल्कुल नई शक्ति का संचार नहीं कर दिया।

फ्रेडरिक महान के आगमन के साथ हम जर्मन इतिहास के आधुनिक चरण में प्रवेश करते हैं—और होहेनज़ोलर्न और हैप्सबर्ग के बीच संघर्ष, प्रोटेस्टेंट, अर्ध-जर्मन प्रशिया जो जर्मन बनने की आकांक्षा रखता था, और जर्मन ऑस्ट्रिया जो गैर-जर्मन बनने की आकांक्षा रखता था, और—वंशीय सीमाओं के भीतर—पैन-यूरोपीय संघर्ष, जो पिछले युद्ध के प्रमुख, यद्यपि अप्रत्यक्ष, कारणों में से एक था। सुधार आंदोलन कुछ जर्मन सीमाओं के भीतर, एक पैन-जर्मन आंदोलन था, और इसे पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान व्यापार-मार्गों के परिवर्तन के परिणामस्वरूप जर्मनी में आई आर्थिक पिछड़ेपन की स्थिति के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया भी माना जा सकता है। वालेंस्टीन, जो निस्संदेह अपनी शताब्दी के महानतम जर्मन थे, पैन-जर्मन एकता के व्यापक, यद्यपि अस्पष्ट विचार रखते थे, और हैप्सबर्ग घराने के हितों के विरुद्ध उत्तरी जर्मन राजकुमारों के साथ साज़िश रचने के परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो गई। फ्रेडरिक द ग्रेट ने मध्य यूरोप में हैप्सबर्ग के आधिपत्य को कड़ी चुनौती दी, और उन्होंने क्रांति-पूर्व काल में फ्रांस की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर पूर्व में प्रशिया के ख़िलाफ़ पोलिश मोर्चाबंदी को ध्वस्त कर दिया। नेपोलियन युद्ध प्रतिद्वंद्विता में एक अप्रिय अंतराल से ज़्यादा कुछ नहीं थे।

दो जर्मनिक शक्तियों के बीच। इनके परिणामस्वरूप प्रशिया की स्थिति काफ़ी मज़बूत हुई, क्योंकि उन्होंने जर्मनी में स्वतंत्र रियासतों को कमज़ोर कर दिया, और उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में प्रशिया को छोटे राज्यों को सीमा शुल्क संघों में शामिल होने के लिए मजबूर करने का मौक़ा दिया। फ्रेडरिक महान ने सिलेसिया पर विजय प्राप्त की थी। नेपोलियन युद्धों के दौरान महाद्वीपीय नाकाबंदी में उनके उत्तराधिकारियों की जबरन भागीदारी ने जर्मन विनिर्माण उद्योगों की नींव रखी, जिनकी स्थापना ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार से पैदा हुई कमी को पूरा करने के लिए की गई थी। सीमा शुल्क संघों ने पुराने हंसियाटिक शहरों को प्रशिया के साथ मिला लिया, और एक आधुनिक उत्तरी जर्मनी का सामना ऑस्ट्रियाई साम्राज्य से हुआ, जो वास्तव में पुनर्जागरण का एक अवशेष था।

1866 में ऑस्ट्रिया को जर्मन संघ से बाहर कर दिया गया था और वह एक जर्मन शक्ति नहीं रहा। लगभग उसी समय उसे इटली से भी बाहर कर दिया गया था, जिस पर उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक उसका वास्तविक प्रभुत्व था, और अब वह एक इतालवी शक्ति नहीं रहा। लेकिन यहाँ हैप्सबर्ग राजवंश की अद्भुत राजनीतिक लचीलापन देखा जा सकता है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, ऑस्ट्रिया तेज़ी से एक स्लाव शक्ति बनता जा रहा था, और ऑस्ट्रिया और बोहेमिया में रहने वाले जर्मन नागरिकों के एक छोटे समूह पर शासन कर रहा था। यह संभव है कि अगर फ्रांसिस जोसेफ़ की मृत्यु जल्दी हो जाती और फ्रांसिस फ़र्डिनेंड लंबे समय तक जीवित रहते, तो ऑस्ट्रिया एक मग्यार-स्लाव संघ के रूप में बच जाता। लेकिन जैसा कि उन्होंने राजा एडवर्ड से कहा था, पुराने सम्राट "कभी नहीं भूल सकते थे कि वे एक जर्मन राजकुमार थे।"

युद्ध से पहले के बीस वर्षों के दौरान, ऑस्ट्रिया में एक शक्तिशाली अखिल-जर्मन आंदोलन पनपा, जिसका नेतृत्व वियना के लोकप्रिय बर्गोमास्टर कार्ल लेगर ने किया, जो वास्तव में हैप्सबर्ग साम्राज्य और राजशाही का अंत और साम्राज्य के जर्मन भागों का ग्रेटर जर्मनी में एकीकरण देखना चाहता था। यदि पैन-जर्मन समाधान या आर्चड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड का "संघीय" (स्लाववादी) समाधान प्राप्त हो जाता, तो यूरोप के इतिहास को एक अलग ही गति मिल सकती थी। लेकिन होहेनज़ोलर्न वास्तव में होहेनस्टौफेन और हैप्सबर्ग की भूमिका में आ गए थे। बाद वाले को व्यावहारिक रूप से जागीरदार राजकुमारों की स्थिति में धकेल दिया गया था, और त्रिपक्षीय गठबंधन की नीति के विकास के साथ होहेनज़ोलर्न ने पवित्र रोमन सम्राटों की अखिल-यूरोपीय नीति को एक नई शक्ति और एक नया निर्देश दिया।

एडॉल्फ हिटलर युद्ध-पूर्व वियना के अखिल-जर्मन प्रचार के माहौल में पले-बढ़े थे, और युद्ध के बाद अपने लेखन में उन्होंने उन जर्मन-विरोधी और विशुद्ध रूप से वंशवादी तथा पूंजीवादी-एकाधिकारवादी नीतियों की कटु निंदा की, जिनका श्रेय उन्होंने होहेनज़ोलर्न को दिया था। वे औपनिवेशिक विस्तार की उस नीति के भी विरोधी थे जिसकी शुरुआत होहेनज़ोलर्न ने की थी, और जिसका पालन ह्यूजेनबर्ग और शाख्त जैसे वरिष्ठ राष्ट्रवादी राजनेता आज भी करते हैं। इसलिए, इन दो महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों को ध्यान में रखना आवश्यक है जो राष्ट्रीय समाजवादी नीति को क्रियान्वित करती हैं। पहली, नाज़ी नीति मूलतः राष्ट्रीय है क्योंकि यह हैप्सबर्ग और होहेनज़ोलर्न की विनाशकारी अखिल-यूरोपीय नीति की प्रतिक्रिया है। बिस्मार्क की भावना के अनुरूप, जिन्होंने घोषणा की थी कि "पूरा पूर्वी प्रश्न एक पोमेरेनियन ग्रेनेडियर की हड्डियों के बराबर भी नहीं है," यह गैर-जर्मन क्षेत्रों को जर्मन शासन के अधीन लाने की किसी भी महत्वाकांक्षा को अस्वीकार करती है। दूसरी ओर, यह यूरोप की स्थापित राज्य-व्यवस्था के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है, जब यह जर्मन भाषी आबादी वाले सभी क्षेत्रों को "ड्रिट्स रीच" की संरचना के अंतर्गत लाने की आवश्यकता पर बल देता है।

सतही तौर पर देखा जाए तो, नाज़ी आदर्शवादियों की अखिल-जर्मन पुनर्बहाली यूरोप की निरंतर शांति के साथ असंगत प्रतीत होती है। लेकिन मूलतः, श्री हिटलर जिस बात पर ज़ोर दे रहे हैं, वह इस तथ्य की मान्यता है कि जर्मनी को न केवल महाशक्तियों के बीच समान माना जाना चाहिए, बल्कि इन शक्तियों को जर्मनी के वैध विस्तार की भी अनुमति देनी चाहिए, और यदि आवश्यक हो, तो उसके विस्तार के लिए रास्ते भी खोजने चाहिए। वहाँ

जर्मनी की महत्वाकांक्षी क्षेत्रीय नीति में कुछ भी विशेष रूप से अनैतिक नहीं है। पिछले पंद्रह वर्षों में हमने खुद को फ्रांसीसी लोकतंत्र की एकाधिकारवादी और अड़ियल महाद्वीपीय नीति को सहन करते हुए पाया है, और राष्ट्र संघ का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर पूर्वी यूरोप में एक नए स्लाव समूह के विकास के पक्ष में किया गया है। यह याद रखना आवश्यक है कि यूरोपीय सीमाएँ हमेशा से अत्यंत परिवर्तनशील रही हैं, और यूरोपीय इतिहास के वर्तमान समय में उन्हें विशेष रूप से स्थायी मानने का कोई ऐतिहासिक औचित्य नहीं है।

पूर्वी यूरोप में स्लाव समूह—पोलैंड, चेक और बाल्कन स्लाव, जो रूसियों से अलग थे—को यूरोपीय इतिहास में एक स्थायी तत्व माना जाना चाहिए। पोलैंड और बोहेमिया, दोनों ही प्रशिया से वास्तव में पुराने राज्य थे। दूसरी ओर, रूस एक अपेक्षाकृत नई घटना है, जो अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में ही एक यूरोपीय शक्ति के रूप में उभरा। यह दो महान शासकों—पीटर महान और कैथरीन महान—का कार्य था। पिछले युद्ध में कैथरीन का कार्य विफल हो गया, और रूसी सीमा प्रिपेट दलदलों के पीछे चली गई। बोल्शेविकों ने पूर्व रूसी साम्राज्य के सांस्कृतिक और राष्ट्रीय आधार, दोनों को ही कमजोर करने का बहुत प्रयास किया है। स्थिर संस्थाएँ और विचार नष्ट हो गए हैं, और सोवियत संघ बनाने वाले अनेक लोग उस दर से विघटनकारी प्रवृत्तियाँ विकसित कर रहे हैं जिसका आम तौर पर एहसास नहीं होता। रूस एक राजनीतिक रूप से निर्जन भूमि बनता जा रहा है—एक ऐसा तथ्य जिसे सुदूर पूर्व में जापानियों ने बहुत सराहा है।

इस संबंध में, हालिया जर्मन-पोलिश समझौता महत्वपूर्ण हो जाता है और बाल्टिक राजनीति में एक बिल्कुल नए रुख की संभावना का संकेत देता है। जर्मनी और पोलैंड, दोनों को "किसान विस्तार" के लिए जगह की ज़रूरत है। हेर हिटलर और नाज़ी विचारधारा के अन्य प्रतिपादकों, जैसे डारे और रोसेनबर्ग, ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि नाज़ी जर्मनी का लक्ष्य खाली ज़मीनें हैं जहाँ जर्मन किसान अपनी ज़मीन जोत सकें और जहाँ जर्मन समुदाय जर्मनी के अभिन्न अंग के रूप में अपना जीवन बसर कर सकें। यह होहेनज़ोलर्न के "औपनिवेशिक साम्राज्यवाद" और शैच्ट और ह्यूजेनबर्ग जैसे आधुनिक रूढ़िवादी-राष्ट्रवादियों की अवधारणा से बिल्कुल अलग है। अब पोलैंड के खिलाफ एक सफल युद्ध "किसान विस्तार" की जर्मन समस्या का समाधान नहीं करेगा, क्योंकि पोलैंड स्वयं घनी आबादी वाला है और उसकी जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। लेकिन दोनों देशों की पूर्व में महत्वाकांक्षाएँ हैं, जिन्हें सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी में स्वीडिश हस्तक्षेप और रोमानोव साम्राज्य के उदय ने रोक दिया था। हाल ही में उन्हें इन महत्वाकांक्षाओं की संभावनाओं का अहसास तब हुआ जब युद्ध के दौरान जर्मनों ने बाल्टिक प्रांतों पर कब्जा कर लिया, तथा 1920 में जब पोलैंड ने यूक्रेन पर कब्जा कर लिया।

रूस से अलग होने की इच्छा रखने वाले यूक्रेनी राष्ट्रवादियों के बर्लिन और वारसॉ से बहुत महत्वपूर्ण संबंध हैं, और यह संभव है कि ये तत्व "सुदूर पूर्वी" यूरोप में एक साझा जर्मन-पोलिश नीति की नींव रखने में सहायक हों। युद्ध की कोई भी संभावना स्वाभाविक रूप से चिंताजनक है, लेकिन यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि पश्चिमी यूरोप में भविष्य के युद्ध को अपरिहार्य बनाने का सबसे सीधा तरीका न केवल जर्मन आकांक्षाओं, बल्कि जर्मन आवश्यकताओं की भी अनदेखी करना है। और जर्मन ऊर्जा को पूर्व की ओर मुक्त करना राइन और ऑस्ट्रिया में "जाम" लगाने से कहीं बेहतर प्रतीत होता है—जो कि एकमात्र अंतिम विकल्प है।

नाज़ी जर्मनी में ब्रिटेन के प्रति शत्रुता की भावना उल्लेखनीय रूप से कम है, और ब्रिटेन के विरुद्ध प्रत्यक्ष सरकारी प्रचार की कोई प्रवृत्ति भी नहीं दिखती, बावजूद इसके कि इस देश में प्रेस के कुछ वर्गों द्वारा, और नाज़ियों के सत्ता में आने के बाद से कुछ राजनीतिक समूहों द्वारा, अत्यधिक उत्तेजक रवैया अपनाया गया है। बेशक, अफ़्रीकी उपनिवेशों को जर्मनी में वापस करने के लिए एक आंदोलन चल रहा है, लेकिन इस आंदोलन की प्रेरणा मुख्यतः अब महत्वहीन रूढ़िवादी राष्ट्रवादी हलकों से आती है। इन विशिष्ट उपनिवेशों के मूल्य के बारे में हमारी या जर्मनों की दृष्टि में राय भिन्न हो सकती है, लेकिन हेर हिटलर स्वयं "औपनिवेशिक साम्राज्यवाद" के प्रति तिरस्कार व्यक्त करते हैं, जो राष्ट्रवादी समूहों को प्रेरित करता है।

निस्संदेह, "निर्यात पूंजीवाद" पर आधारित नीति—और यही वह नीति है जो उपनिवेशों की मांग करती है—"निरंकुश राज्य" के आर्थिक सिद्धांत के विपरीत है, और यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि नाज़ी—कम से कम वर्तमान दौर में—अफ्रीका के क्षेत्र में पुनः प्रवेश नहीं करना चाहते। उनके प्रचार का पूरा ज़ोर निरंकुश राज्य के आधार के रूप में किसान जीवन की बहाली और जर्मनी से भौगोलिक रूप से सटे और अधिक ज़मीनों की आवश्यकता पर है जहाँ जर्मन किसान समुदाय फैल सकें और उस जर्मन कॉर्पोरेट जीवन का विकास कर सकें जिसमें नाज़ी सभी चीज़ों का आरंभ और अंत देखते हैं। यदि ऐसी नीति उन्हें उन शक्तियों और हितों के साथ संघर्ष में लाती है जो ब्रिटिश हित नहीं हैं, तो ब्रिटेन का यह काम नहीं है कि वह मानव जाति के इतिहास को कलंकित करने वाले सबसे भ्रष्ट अत्याचार से प्रतिरक्षा बनाए रखने के लिए धर्मयुद्ध करे।

---

[1] संभवतः सम्राट जोसेफ द्वितीय के संक्षिप्त शासनकाल के दौरान को छोड़कर।

जॉन बेकेट द्वारा सामाजिक लोकतंत्र का पतन

ए पिछले आम चुनाव के बाद से उपचुनाव परिणामों के विश्लेषण से पता चलता है कि लेबर पार्टी ने 1929 की तुलना में अपने औसत मतदान में लगभग 15 प्रतिशत की वृद्धि की है। 1929 में इसने 289 सीटें हासिल कीं और पांच स्वतंत्र सदस्यों के समर्थन से इसकी लॉबी की ताकत 294 थी। तेरह और जीत ने इसे शक्ति प्रदान की होती। 1929 के आंकड़ों पर, उपचुनावों के बराबर मतदान में वृद्धि की दर पार्टी को स्पष्ट संसदीय बहुमत प्रदान करने के लिए पर्याप्त होगी। अपने पहले चुनावी मुकाबले में फासीवाद की ओर किसी बड़े बदलाव के अभाव में, कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि ऐसा कोई अन्य कारक नहीं है जो घटनाओं के इस क्रम को रोक सके। पेंडुलम का नियमित झूलना होगा और सदन के दोनों पक्ष हाफ-टाइम में फुटबॉल टीमों की तरह बदल जाएंगे।

अगर यह दुखद न होता, तो इससे ज़्यादा मनोरंजक और कुछ नहीं होता कि हम अपने "राष्ट्रीय नेताओं" और प्रेस द्वारा संसद पर लेबर पार्टी के नियंत्रण के संभावित रुख़ के बारे में व्यक्त की गई विभिन्न राय का अध्ययन करें। वे सर स्टैफ़ोर्ड की अगुवाई में लाल रंग के रास्ते पर ब्रिटेन के दर्शन से लेकर मिस्टर ग्रीनवुड और डॉ. डाल्टन के सौम्य सुख-सुविधाओं तक, जो हमें ब्रिटेन की एक ऐसी तस्वीर दिखाते हैं जिसमें समृद्धि के अलावा कुछ भी नहीं बदला है, जिसमें अविश्वसनीय रूप से 'सज्जन' महापुरुषों की एक अग्रिम पंक्ति मेफ़ेयर के किराए को उसी तेज़ी से बढ़ा रही है जैसे वे हमारे देश के सुंदर चेहरे से झुग्गियों को हटाते हैं।

तीव्र त्रासदी, लाल विनाश और कल्याणकारी दक्षता, इन सभी की बारी-बारी से भविष्यवाणी की गई है। यह आश्चर्यजनक है कि किसी भी भविष्यवक्ता ने सामाजिक लोकतंत्र के उन सिद्धांतों की, जिन पर लेबर पार्टी आधारित है, और उन सभी देशों में इन सिद्धांतों (या सिद्धांतों के अभाव) के भाग्य की, जहाँ इन्हें आजमाया गया है, सावधानीपूर्वक जाँच करने की ज़हमत नहीं उठाई। यह अध्ययन, लेबर पार्टी के पिछले इतिहास के सर्वेक्षण और उसके नेताओं के चरित्र और अभिलेखों की निष्पक्ष जाँच द्वारा समर्थित, अनिवार्य रूप से ऐसे निष्कर्षों की ओर इशारा करता है जो कम नाटकीय लेकिन उन निष्कर्षों से कहीं अधिक भयावह हैं जिन पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं।

मेरा उद्देश्य यह कहना है कि लेबर सरकार का मतलब न तो क्रांति है और न ही विकास। इसका मतलब है बिना किसी मार्गदर्शक सिद्धांत के, तुच्छ लोगों द्वारा संचालित रीढ़विहीन सरकार; इसका मतलब है बकवास कपट के दलदल में दिशाहीन भटकना; इसका मतलब है आर्थिक असुरक्षा और वित्तीय घबराहट के बीच अस्पष्ट चिंता, जिसे घबराए हुए और अनुभवहीन मंत्री बढ़ा रहे हैं।

वंचितों को लाभ पहुँचाए बिना, लेबर पार्टी पर भरोसा किया जा सकता है कि वह शीर्ष नेता पर भौंकेगी और उन्हें डराएगी। इसका परिणाम कोई अचानक आने वाली आपदा नहीं होगी जिसका आसानी से निपटारा किया जा सके, बल्कि राष्ट्र की जीवन शक्ति का क्षय होगा और पतन इतनी तेज़ी से होगा कि उसे रोकना असंभव हो जाएगा। सामाजिक लोकतंत्र का सिद्धांत, वास्तव में, 1933 के लिए लेबर पार्टी के अपने आधिकारिक बचाव में सारगर्भित है: "हम भले ही अप्रभावी रहे हों; लेकिन हम हमेशा सही रास्ते पर रहे हैं।"

आधुनिक मशीनरी और विज्ञान के कारण उत्पादक शक्ति में हुई भारी प्रगति के कारण परिवर्तित आर्थिक परिस्थितियों के सामने, फासीवाद, साम्यवाद और सामाजिक लोकतंत्र के तीन मूल विचार, 1918 से ही सभ्य दुनिया के मन में वर्चस्व के लिए संघर्ष करते रहे हैं।

पहली नज़र में सामाजिक लोकतंत्र सबसे आकर्षक लगता है। साम्यवाद असंभव की माँग करता है

अत्यधिक विवादास्पद परिणाम प्राप्त करने के लिए उथल-पुथल और बलिदान। फ़ासीवाद मानव के उच्चतर, आत्म-त्यागी पक्ष का एक महान आह्वान करता है। औसत आदमी आलसी और आत्म-भोगी होता है। वह काम करना और अनुशासन स्वीकार नहीं करना चाहता; सबसे बढ़कर, वह जाति के हित के लिए सोचना और त्याग करना नहीं चाहता। सामाजिक लोकतंत्र बिना कष्ट के सुख, बिना प्रयास के आदर्शवाद, बिना योजना के समृद्धि और न्याय का वादा करता है। जनता के लिए इससे अधिक प्रभावी नशाखोरी का कोई आविष्कार नहीं किया जा सका, और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि रूस, इटली और जर्मनी में, जहाँ युद्ध के कारण उत्पन्न बर्फ़ीले तूफ़ान की पूरी ताकत महसूस की गई थी, इन राष्ट्रों ने मुक्ति के लिए सामाजिक लोकतंत्रवादियों की ओर रुख किया।

इन देशों में सामाजिक लोकतंत्र की विफलता का, उद्धरणों सहित, विस्तृत परीक्षण करने के लिए जगह की कमी है। यह न केवल अपने वादे के अनुसार, हिंसक पूंजीवाद से समाजवाद में शांतिपूर्ण परिवर्तन लाने में विफल रहा, बल्कि उस लुटेरे पर भी ज़रा भी अंकुश नहीं लगा सका, जिसके साथ जर्मनी में इसने कम से कम एक तेज़ और मज़बूत गठबंधन बनाया था। तीनों देशों में मज़दूरों की स्थिति सामाजिक लोकतंत्र के सत्ता में आने से पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा ख़राब थी, और तीनों देशों में यह सबक उनके लिए लोकतंत्र के ऐसे रूपों से मुँह मोड़ने और एक राष्ट्रीय नेतृत्व में अपनी प्रतिष्ठा और दक्षता पुनः प्राप्त करने के लिए पर्याप्त साबित हुआ। कम विकसित देश रूस ने अब तेज़ी से लुप्त हो रहे साम्यवाद के रूप को अपनाया, जबकि सभ्यता के उच्च स्तर वाले इटली और जर्मनी ने मुक्ति के लिए फ़ासीवाद की ओर रुख किया।

सामाजिक-लोकतांत्रिक सिद्धांत का एक बहुत ही सरसरी परीक्षण यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि
इन तीन देशों में जो कुछ हुआ वह अपरिहार्य था और जहां भी इसकी नीति आजमाई जाएगी, वहां ऐसा होना ही चाहिए।

सोशल डेमोक्रेट जनवाद का तर्कवादी होता है, जबकि उसकी पार्टी हमेशा गुटबाज़ी से भरी होती है, उसके उच्च पद ऐसे लोगों से भरे होते हैं जिनके पास सरल भाषण की शक्ति के अलावा अपनी सिफ़ारिश करने के लिए शायद कुछ भी न हो। इसके सर्वोच्च पद जनवाद के प्रचारक के लिए और केवल उसके लिए ही खुले हैं। जिस प्रकार इसके सिद्धांत अस्पष्ट हैं और इसके विरोधियों के सिद्धांत निश्चित हैं, उसी प्रकार इसके नेताओं में कम्युनिस्ट जैसी कट्टरता या फ़ासीवादी जैसी कठोरता का अभाव है। वोट से सत्ता प्राप्त करें— कार्य करने की शक्ति नहीं, बल्कि पद ग्रहण करने की शक्ति। अमीर और गरीब, दोनों से वादा करें कि आप उनके मित्र होंगे। झुग्गी-झोपड़ियों को ख़त्म करें और झुग्गी-झोपड़ी के मालिक के साथ भोजन करें। मज़दूरी बढ़ाएँ, लेकिन बुरे नियोक्ता को उपाधियाँ दें।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण करो, लेकिन बैंकर की बात मानो। स्वागत के चुंबन से अंतर्राष्ट्रीय पूंजी को परास्त करो।
हर दूसरे देश के कारोबार में दखल देते हुए हथियारों में कटौती करो। ये लेबर पार्टी के उम्मीदवारों के लिए कुछ ज़्यादा उपयुक्त नारे हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस विकट वास्तविकता से भरी दुनिया में, अवसरवाद, आदर्शवाद और चरित्र की घोर कमज़ोरी का यह मिश्रण जब भी ज़िम्मेदारी सौंपी गई, ढह गया।

लेबर पार्टी के इतिहास का अध्ययन दर्शाता है कि व्यवहार में ये प्रवृत्तियाँ कितनी सटीकता से पूरी होती हैं; और, उद्धृत महाद्वीपीय देशों में पतन के अधिक उन्नत चरण को ध्यान में रखते हुए, उनके हाल के इतिहास की तुलना अपने अनुभवों से करने से ज़्यादा प्रभावशाली कुछ नहीं है। सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों ने राष्ट्र की संरचना में बदलाव की आवश्यकता को व्यापक रूप से मान्यता प्रदान की है। सामाजिक लोकतंत्र का प्रतीत होता आसान रास्ता आजमाया गया है; अराजकता और भ्रष्टाचार ने उसका अनुसरण किया है; और नेतृत्व, जिसे गलती से तानाशाही कहा जाता है, का आह्वान करना पड़ा है।

हमारी लेबर पार्टी का अध्ययन ठीक उन्हीं प्रवृत्तियों को दर्शाता है जिनका उल्लेख पहले ही सोशल-डेमोक्रेटिक पार्टियों ने किया है। क्या इसका सबसे आशावादी समर्थक सचमुच यह मान सकता है कि पार्टी के संपूर्ण विश्वासों और नीतियों में दो सुसंगत बिंदु हैं? भले ही हमारे पास इसे साबित करने के लिए उनके पिछले कार्यकालों का रिकॉर्ड न हो, उनके नेताओं के भाषणों और डेली हेराल्ड के स्तंभों में हर संभव असंगति मौजूद है। सोशलिस्ट लीग और सबसे शांत ट्रेड-यूनियन नेता चुनावी जीत की अपनी इच्छा में एकजुट हैं, लेकिन एक भी खोजना असंभव है।

जीत मिलने के बाद सरकार बनाने की उनकी योजनाओं में एकता का एकमात्र बिंदु। किसी भी लेबर मीटिंग में जाएँ जहाँ एक से ज़्यादा वक्ता हों, और अगर वक्ता ऊँची-ऊँची आकांक्षाओं से आगे बढ़कर व्यावहारिक नीतियों पर पहुँचें, तो सबसे ज़्यादा स्पष्ट मतभेद तुरंत सामने आ जाएँगे।

पहली सचमुच बड़ी संसदीय लेबर पार्टी 1922 में वापस आई थी। 1906 की "अजीबोगरीब संसद" में भी, वेस्टमिंस्टर में इतनी विचित्र विलक्षणताओं का जमावड़ा कभी नहीं हुआ था। स्कैनलॉन द्वारा अपनी पुस्तक "डिक्लाइन एंड फॉल ऑफ़ द लेबर पार्टी" में दिए गए वर्णन से बेहतर उनका कोई वर्णन नहीं हो सकता: —

"राजनीति, हालांकि, प्रतिकूल परिस्थितियों की तरह, अजीब साथी बनाती है, लेकिन यह कहना सुरक्षित है कि कभी भी प्रतिकूल परिस्थितियों के सबसे बुरे रूप ऐसे अजीब, विविध प्रकारों को एक साथ लाने में सफल नहीं हुए थे जो 1922 की संसद में हमारे लेबर बेड में खुद को एक साथ ठूंसते हुए पाए गए थे, शिकायत करने वाला हर व्यक्ति इस विश्वास के साथ लेबर पार्टी में शामिल हो गया कि यह केवल व्यक्तिगत गलतियों को ठीक करने के लिए मौजूद है; और जब कोई अमीर व्यक्ति पार्टी में शामिल होता था, तो वह . . . तुरंत महसूस करता था कि उन्हें संसद के लिए अपनाया जाना चाहिए ताकि शिकायत को ठीक से देखा जा सके।.. लेबर नेशनल ऑर्गनाइज़र, श्री एगर्टन वेक को याद करें, जिनका काम उम्मीदवारों को खड़ा करना था, उन्होंने कहा था कि पार्टी का सबसे बड़ा दुख असंतुष्ट जनरलों की अधिकता थी।

मैं

कुल मिलाकर, कुछ विचित्र लोग लेबर पार्टी में शामिल हो गए... हर किसी का एक निश्चित विचार था: कुछ घिसे-पिटे घोड़ों पर ध्यान केंद्रित करते थे, कुछ उत्पीड़ित अल्पसंख्यकों पर, बशर्ते कि अल्पसंख्यक ज़्यादा पास न हों। कुछ जनरल ऐसे थे जिन्हें युद्ध में नज़रअंदाज़ कर दिया गया था और वे पदोन्नति की पूरी व्यवस्था में बदलाव चाहते थे। कुछ अन्य (जनरल नहीं) सब्त के दिन को पवित्र बनाए रखने के लिए अपना समय और ऊर्जा देने को तैयार थे; कुछ अन्य बेरोज़गारों पर लागू कठोर परिस्थितियों को शांति से देखते थे, लेकिन अगर पार्टी ने इस सूची में एक भी मज़दूर क्लब जोड़ने का प्रस्ताव रखा होता, तो वे खुशी-खुशी पार्टी को बर्बाद कर देते। कुछ ऐसे भी थे जो मानते थे कि ईश्वर से रोज़ाना प्रार्थना करने के लिए सामूहिक बैठकें करने से गरीबी की समस्या हल हो जाएगी, और कुछ ऐसे भी थे जिनके किसी भी विषय पर कोई निश्चित विचार नहीं थे।

1906 में जब कुछ लेबर सांसदों ने दुनिया को उन महत्वपूर्ण मुद्दों से अवगत कराया जिनके लिए वे अपना संसदीय जीवन समर्पित करना चाहते थे, तो श्री बर्नार्ड शॉ ने उनसे जुड़े होने के लिए पूरी दुनिया से माफ़ी मांगी। 1922 में उन्होंने क्या कहा, इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है।

एक वर्ष से भी कम समय में यह विविधतापूर्ण सभा देश की आधिकारिक सरकार बन गयी।
कुछ महीनों के कार्यकाल के बाद, देश ने इसे तुरंत बर्खास्त कर दिया।
बाल्डविन ने राष्ट्रीय मानस को किसी भी विकल्प के लिए तैयार कर दिया, और 1929 में एक लेबर सरकार, जो बहुमत से कुछ ही कम थी और लगभग हमेशा सदन के भीतर वास्तविक भौतिक बहुमत के साथ, दो-ढाई साल तक असुविधा और अपमान के साथ शासन करती रही, जब तक कि 1931 के संकट ने उनके अस्थायी चुनावी विलुप्ति का कारण नहीं बना दिया।

रूस में, केरेन्स्की ने उस क्षण तक सावधानी बरतने की सलाह दी जब तक कि वह एक आक्रोशित और निराश राष्ट्र के सामने से भाग नहीं गया, जिसने बोल्शेविकों की ओर उस नेतृत्व की ओर रुख किया था जिसे दिखाने का साहस उनमें कभी नहीं था। इटली में, समाजवादी-जनवादियों ने कारखानों पर कब्ज़ा कर लिया, और उन्हें चलाने की कोई योजना न होने के कारण, उन्होंने खुद को फासीवादियों द्वारा भगाए जाने और नष्ट किए जाने दिया, जिन्होंने इटलीवासियों को भाषणों के बजाय योजनाएँ और षड्यंत्रों के बजाय कार्रवाई दी। जर्मनी में 1919 में समाजवादियों के हाथों में सारी शक्ति थी, लेकिन वे सहायता के लिए भयभीत होकर जंकर्स की ओर भागे ; बारह वर्षों तक वाइमर संविधान के पीछे झुके रहे; और 1933 में, विरोध की एक भी आवाज के बिना, हिटलर और स्टॉर्म ट्रूप्स के अनुशासित नेतृत्व के लिए रास्ता बना लिया।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हम एक अंग्रेज पूर्व समाजवादी सांसद को यह लिखते हुए पाते हैं कि सामाजिक लोकतंत्र अपने अस्तित्व के लिए कभी सत्ता हासिल न करने पर निर्भर करता है। इस लेख की शुरुआत एक चेतावनी के साथ हुई थी कि

यदि उपचुनाव के आंकड़ों का कोई मतलब है तो लेबर पार्टी को अगले चुनाव में पुनः सत्ता हासिल करनी होगी।
पाठक पूछ सकते हैं कि उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए, लाखों मतदाताओं का फिर से लेबर पार्टी को वोट देना कैसे संभव है। इसका उत्तर हर लेबर मंच से दिए जाने वाले दिखावटी बहाने में निहित है: - "हमारे पास कभी बहुमत नहीं था।"

यह आश्चर्यजनक लग सकता है, लेकिन मतदाताओं का बड़ा हिस्सा पूरी ईमानदारी से यह मानता है कि यदि 1929 में बीस और ट्रेड यूनियन नेता या मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी वापस आ गए होते, तो लेबर सरकार अपने चुनाव अभियान के दौरान किए गए अनेक और विविध काल्पनिक वादों को पूरा करने में सफल हो जाती। बहुमत का अभाव श्रमिकों को हाउस ऑफ कॉमन्स में—अक्सर कुछ उदारवादी और रूढ़िवादी वोटों के खिलाफ—पेश करने और जबरदस्ती पारित कराने की व्याख्या कैसे करता है,—मैं यह समझने का दावा नहीं करता कि विसंगति अधिनियम और कोयला खदान अधिनियम जैसे निश्चित रूप से श्रमिक-वर्ग विरोधी कानून बनाए गए। वर्ग घृणा का उपदेश और पूंजीवाद को कुचलने के लिए जनता को लामबंद करना कैसे लंदन शहर के प्रति अनियंत्रित घमंड और रेंगती हुई अधीनता में बदल जाता है, क्योंकि वहां 307 की बजाय 294 सांसद हैं, यह एक रहस्य है जिसे कभी समझाया नहीं गया।

लेबर पार्टी में और चाहे जो भी गड़बड़ हो, उसने मुश्किल सवालों का सामना करने की समस्या को हल करने में बहुत प्रगति की है। उसने पाया है कि सबसे अच्छा तरीका है इनसे मुँह मोड़ लेना। स्पष्टीकरण की जगह निंदा ने ले ली है; व्यंग-विनोद की जगह निंदा ने ले ली है; और अतीत में किए गए वादों को पूरा न कर पाने की नाकामी, भविष्य के लिए किए गए वादों की अतिरिक्त उदारता से मतदाताओं की नज़रों में छिपती हुई प्रतीत होती है।

लेबर पार्टी के शासन न कर पाने का मुख्य प्रमाण उसकी असफलता में नहीं, जो अतीत में घृणित रही है, बल्कि उसके नेतृत्व के मनोविज्ञान और उसके कार्यकर्ताओं की भोलापन में है। ब्रिटेन में हमेशा उन लोगों के प्रति असाधारण उदारता दिखाई जाती है, जिनके बारे में आम तौर पर माना जाता है कि उन्होंने मेहनत करके ऊँचे पदों तक पहुँचने का रास्ता बनाया है, शायद यही वह अजीब तरीका है जिससे सच्चाई जानने की स्थिति में रहने वाले लोग लेबर नेताओं के धार्मिकता के असामान्य मानकों के झूठे दावों को बिना किसी चुनौती के स्वीकार कर लेते हैं।

राष्ट्रीय सरकार के नेता के रूप में श्री मैकडोनाल्ड आज ठीक उसी नीति का पालन कर रहे हैं जो उन्होंने लेबर सरकार के अत्यंत सम्मानित और प्रिय नेता के रूप में अपनाई थी। अंतर केवल इतना है कि वह नीति अधिक सफल है क्योंकि उनके आसपास अयोग्य लोगों के बजाय योग्य लोग हैं। फिर भी, हम देखते हैं कि 1931 से पहले उनके अनुयायी रहे लेबर नेता अब उन्हीं तरीकों के लिए उनकी निंदा और निन्दा कर रहे हैं, जिनका इस्तेमाल पहले, जब उन्होंने किया था, तो उन्होंने दूसरों की निंदा की थी। ईमानदारी का स्तर इतना निम्न है कि पूर्व और वर्तमान लेबर सांसद, जो कभी उनके दरवाजे के आसपास मंडराते रहते थे, इस उम्मीद में कि उन्हें दरवाजा खोलने और "गुड मॉर्निंग" कहने का मौका मिलेगा, अब अतीत के सभी अपराधों का दोष मैकडोनाल्ड, थॉमस और स्नोडेन पर डाल रहे हैं। एक तरफ वे खुद को एक लोकतांत्रिक पार्टी होने का दावा करते हैं; दूसरी तरफ वे कहते हैं कि लगभग 300 सदस्यों वाले एक संसदीय समूह में तीन लोग उस कृत्य के लिए ज़िम्मेदार थे जिसकी वे अब खलनायकी के रूप में निंदा करते हैं।

इस बेईमानी भरे प्रचार का एक सामान्य उदाहरण लेबर पार्टी के मंचों से दिए जाने वाले इस बयान में पाया जा सकता है कि वे ही एकमात्र पार्टी हैं जो बैलेंस-शीट प्रकाशित करती है, और पुरानी पार्टियों पर सम्मान बेचने और आय के गुप्त स्रोतों को छिपाने में भ्रष्टाचार करने का आरोप लगाया जाता है। कई सदस्य निस्संदेह इन बयानों पर विश्वास करते हैं। दूसरी ओर, कई लोगों को यह भी पता होना चाहिए कि कई वर्षों से नेताओं ने बड़ी मात्रा में निजी चंदा प्राप्त किया है और अपनी इच्छानुसार उसका उपयोग किया है—ऐसे चंदे जिनका कभी भी किसी भी जारी किए गए बयान में कोई हिसाब नहीं दिया गया। लेबर पार्टी ने हमेशा उपाधियों के खोखले आडंबर की निंदा की है, लेकिन सत्ता में रहते हुए सम्मान सूचियों की जाँच से इन सूचियों को संकलित करने के पारंपरिक तरीके में कोई बदलाव नहीं दिखता।

लेबर नेतृत्व का बड़ा हिस्सा इन मामलों में जानबूझकर पाखंडी है, और कार्यकर्ता इतने अविश्वसनीय रूप से भोले हैं कि यह तर्क देना मुश्किल है कि वे जो नेतृत्व प्राप्त कर रहे हैं, उसके वे हकदार हैं।

लोकतंत्र का अंत क्या होगा? अन्यत्र सामाजिक लोकतंत्र के इतिहास का अध्ययन करके, ब्रिटेन में लेबर पार्टी का हमारा अध्ययन हमें यह विश्वास दिलाएगा कि जिस प्रकार यह महाद्वीपीय आंदोलनों की सभी विशेषताओं को प्रदर्शित करती है, उसी प्रकार इसकी प्रगति भी अनिवार्य रूप से उन्हीं दिशाओं में विकसित होगी। हो सकता है कि यह कोई उत्साहवर्धक विचार न हो। जब तक राष्ट्र बहुत कम समय में अपने होश में नहीं आता और उसे एक सशक्त और व्यावहारिक विकल्प नहीं दिया जाता, तब तक वित्तीय संकट से जूझ रही कंजर्वेटिव पार्टी के नकारात्मक गुण हमें वेस्टमिंस्टर में लेबर बहुमत प्रदान करेंगे। कंजर्वेटिव पार्टी को कम से कम बारह महीने तक लेबर सरकार को सत्ता में बनाए रखना होगा। मतदाता यह नहीं समझ पाएंगे कि लेबर कितनी बुरी थी, और यह भी नहीं भूल पाएंगे कि उस समय रूढ़िवाद कितना बुरा था।

इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि फ़ासीवाद बिना किसी देरी के वह विकल्प प्रस्तुत करे। अन्य देशों के दुखद इतिहास को यहाँ अपने आप ही पनपने नहीं देना चाहिए। जब अरचनात्मक प्रतिक्रिया और डरपोक समाजवाद ने उन्हें विनाश के कगार पर पहुँचा दिया, तो उन्होंने रचनात्मक योजना और आधिकारिक नेतृत्व को अंतिम उपाय के रूप में अपनाया।

आम जनता की हालत सुधारने का वादा करने वाली एक लेबर सरकार सत्ता में आने पर पाएगी कि उसके सारे खजाने खाली हैं। वे दिन गए जब ज़रूरत से ज़्यादा पैसों से कुछ लाख मज़दूरों को खरीदा जा सकता था। लेबर सरकार द्वारा उनकी मदद करने में पूरी तरह नाकामी से कटुता और उनके बेतुके प्रचार से भड़के मज़दूर दंगों और साम्यवाद को अपना रास्ता बना लेंगे। सत्ता पाने के लिए दिए गए बेतुके भाषणों से घबराकर, निवेशक वर्ग अपनी भोंपू बजाएँगे और हमारी आर्थिक स्थिति पर विनाशकारी परिणाम होंगे। सामाजिक लोकतंत्र को अपनी ऐतिहासिक समस्या का सामना करना पड़ेगा: —अपने विरोधियों पर हमला किए बिना अपने समर्थकों को कैसे संतुष्ट किया जाए। समाजवादी सिद्धांत में इसका कोई समाधान नहीं है। तीन साल से भी कम समय में हम एक ऐसे वास्तविक संकट का सामना करेंगे जो 1931 के संकट को वाकई एक बहुत ही तुच्छ मामला बना देगा।

क्या यह मानना संभव है कि लोकतंत्र, जैसा कि हम वर्तमान में जानते हैं, इस लगातार विनाशकारी दौर से बच पाएगा? फ़ासीवाद को राष्ट्र को अपनी योजनाओं के बारे में अभी समझाने का प्रयास करना चाहिए, न कि तब जब हम पर कोई विनाशकारी संकट आ पड़े।

श्रमिक शासन नहीं कर सकते, और यदि कॉर्पोरेट राज्य को तब तक विलंबित किया जाता है जब तक कि सामाजिक लोकतंत्र अराजकता की फसल नहीं काट लेता, तब भी राष्ट्र का उद्धार इस तथ्य में निहित होगा कि पुरुषों के दिमाग तैयार हो चुके हैं और ब्लैकशर्ट आंदोलन मजबूत हो चुका है।

मेजर-जनरल जेएफसी फुलर द्वारा

फासीवाद और युद्ध

टी युद्ध के प्रति फ़ासीवाद का दृष्टिकोण व्यावहारिक है, क्योंकि फ़ासीवादी एक यथार्थवादी होता है। उसके लिए युद्ध की समस्या को शब्दों और धिक्कारों से दबाना व्यर्थ है, जैसा कि अक्सर वे लोग करते हैं जो युद्ध की समस्या से सफलतापूर्वक बचने में सफल रहे, क्योंकि भावुकता यथार्थवाद का विरोधी है। वह समस्या की जाँच उसी तरह करने के लिए तत्पर है जैसे एक चिकित्सक रोगी की जाँच करता है, लेकिन वह एक ओर "महिमा" या दूसरी ओर "भयावहता" से विचलित होने से इनकार करता है।

यदि समस्या हल करने योग्य है तो उसे वैज्ञानिक तरीके से हल किया जाएगा, अर्थात् सत्य की खोज करके, एक निष्पक्ष मन और व्यवस्थित तरीके से काम करना। उन्माद से निश्चित रूप से इसका समाधान नहीं होगा।

युद्ध का ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के बाद, फ़ासीवादी इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कुछ परिस्थितियों में युद्ध आवश्यक होते हैं और कुछ में नहीं। इसलिए वह यह निष्कर्ष निकालता है कि परिस्थितियाँ ही मुख्य कारक हैं, यही परिस्थितियाँ युद्धों का कारण बनती हैं, और फलस्वरूप, युद्ध स्वयं कोई रोग नहीं, बल्कि शांति की एक रुग्ण अवस्था का चरमोत्कर्ष है। यह सूक्ष्म जीव नहीं, बल्कि सूक्ष्म जीव द्वारा उत्पन्न ज्वर है। इस ज्वर के बिना रोगी आंतरिक विषाक्तता से आसानी से मर सकता है, फिर भी यदि उसका तापमान एक निश्चित सीमा से ऊपर बढ़ जाता है, तो वह निश्चित रूप से गिर जाएगा; किसी भी स्थिति में, जब उसकी बीमारी समाप्त हो जाएगी, तो उसके शारीरिक रूप से दुर्बल होने की संभावना है। दोष ज्वर को नहीं, बल्कि उसके कारण को दिया जाना चाहिए। इसलिए, फ़ासीवादी कहता है: "मैं इस समस्या का कारणात्मक रूप से समाधान करूँगा, और जब तक इसके कारण या कारणों का उन्मूलन नहीं हो जाता, मैं शल्य चिकित्सा उपकरणों और दवाओं का भंडार, अपनी नौसेनाएँ, सेनाएँ और हवाई बेड़े अपने पास रखूँगा, क्योंकि मुझे आस्था के आधार पर इलाज और अन्य ढोंगों पर भरोसा करने का कोई कारण नहीं दिखता। इसलिए, मेरा शांतिवादी जादू-टोने से कोई लेना-देना नहीं होगा, जो मन्त्रों, टोटकों और समझौतों पर भरोसा करता है।" यही कारण है कि वह निरस्त्रीकरण और इसी तरह के अन्य भ्रामक दावों से अपनी सत्य-खोज की गंध को दूर करने से इनकार करता है, क्योंकि हथियार अपने आप में युद्ध पैदा नहीं कर सकते, ठीक उसी तरह जैसे चिमटे और छुरी अपने आप में बीमारियाँ पैदा नहीं कर सकते।

"इसलिए," फ़ासीवादी कहते हैं, "आइए हम शांति की जाँच करें, क्योंकि शांति के असंतोष में ही युद्ध के कारण छिपे होंगे, और जब तक वे समाप्त नहीं हो जाते, मैं अपने शल्य चिकित्सा उपकरणों को फेंकने का इरादा नहीं रखता। वास्तव में, शांति के समर्थक जितने अधिक उन्मादी होते जाएँगे, मुझे उतना ही अधिक विश्वास होगा कि युद्ध फिर से आएगा, इसलिए मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मेरे उपकरण और दवाएँ सर्वोत्तम उपलब्ध हों।"

फिर फ़ासीवादी उस युग की ओर मुड़ता है जिसमें हम रह रहे हैं, क्योंकि अगला युद्ध इसी युग से शुरू होगा, और निष्पक्ष रूप से इसका अध्ययन करने के बाद, वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि आज युद्ध के दो प्रमुख कारण हैं: अति-जनसंख्या और वित्तीय-आर्थिक अराजकता। यही वे कारण हैं जो सैन्य कारणों को जन्म देते हैं—विजय की आवश्यकता, आतंकित करने की आवश्यकता और आक्रमण-रहित सीमाएँ स्थापित करने की आवश्यकता।

इन दो प्रमुख कारणों में से पहले को वह इस प्रकार देखते हैं: यह चाहे कितना भी निंदनीय और कष्टप्रद क्यों न हो, यह एक सच्चाई है कि भूखा आदमी भूख से मरने की बजाय खाना चुराकर कानून तोड़ना पसंद करता है। हर सभ्य और असभ्य देश में यह आम सहमति है कि मनुष्य को अपने जीवन की रक्षा करने का अधिकार है; तो फिर वह आदमी भूख से क्यों मरेगा जब वह चोरी करके अपनी जान बचा सकता है? परिणामस्वरूप, जब किसी देश की जनसंख्या अत्यधिक हो जाती है, तो उसके सामने दो रास्ते होते हैं: वह गृहयुद्ध में आत्महत्या कर सकता है या पड़ोसी क्षेत्र पर कब्जा कर सकता है, जिसका अर्थ है युद्ध, जब तक कि वह आबाद न हो।

संधि-नशे में चूर शांतिवादियों द्वारा। ये ऐसे तथ्य हैं जिनका खंडन नहीं किया जा सकता। जापान की अत्यधिक जनसंख्या को देखते हुए, लीग का जापानी विस्तार पर आपत्ति करना मूर्खतापूर्ण है। ज़्यादा समझदारी की बात यह होगी कि उस देश को हर साल कुछ हज़ार टन गर्भनिरोधक भेजे जाएँ।

भारत में भी यही समस्या हमारे सामने है: श्वेत पत्र हो या न हो, अगर भारतीय इसी दर से प्रजनन करते रहे, जब तक विस्तार संभव न हो, तो इस सदी के खत्म होने से पहले ही भारत का विनाश हो जाना तय है। 1921 में उसकी जनसंख्या 32 करोड़ थी और 1931 में 35 करोड़। इस वृद्धि दर से 2001 में यह लगभग 70 करोड़ हो जाएगी, और जब तक मैरी स्टॉप्स सक्रिय नहीं होतीं या हर मक्के के डंठल पर दो बालियाँ नहीं उग आतीं, तब तक प्रलय निश्चित है। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे कोई कलम, स्याही या पवित्र शब्द मिटा नहीं सकते; फलस्वरूप फ़ासीवादी तथ्यों पर काम करता है—वह एक यथार्थवादी है।

दो प्रमुख कारणों में से दूसरे की ओर मुड़ते हुए, फ़ासीवादी का सामना उस चीज़ से होता है जिसे "आर्थिक राष्ट्रवाद" कहा जाता है, जिसके बारे में बहुत से लोग मानते हैं कि उसमें हड़ताल का शैतान बसता है। शब्दों या नामों से कभी मंत्रमुग्ध न होते हुए, इसकी जाँच करने पर उसे पता चलता है कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है, लेकिन उदार लोकतंत्र में जिसे फुसफुसाना भी एक पाखंड है, वह है अराजक व्यापार: जैसा चाहो वैसा करो, जो कर सको, धोखा दो, रिश्वत दो, छीना-झपटी करो और शैतान सबसे पीछे वाले को ले जाए। इस रक्तहीन, पर्स-कटौती युद्ध में बाज़ार और विदेशी ऋण बहुत बड़े हैं। मैं बारी-बारी से संक्षेप में उनकी जाँच करूँगा।

चूँकि आज सभी राष्ट्र मौजूदा वित्तीय व्यवस्था के तहत अपनी क्षमता से अधिक उत्पादन कर रहे हैं, इसलिए विश्व उत्पादन विश्व माँग से अधिक है। इसलिए, बाज़ार कलह का कारण और असंतोष के साथ-साथ वस्तुओं की डंपिंग के क्षेत्र बन जाते हैं। चूँकि, ज़ाहिर है, हर देश के लिए अपनी क्षमता से अधिक बेचना असंभव है, निजी हित अपनी-अपनी सरकारों को शामिल करते हैं और सरकारें एक-दूसरे को डराने के लिए अपनी तलवारें लहराती हैं—उनकी तलवारें दैनिक प्रेस में अपमान का कारण बनती हैं। लालच ईर्ष्या को जन्म देता है, ईर्ष्या जुनून और घृणा को, फिर कोई ऐसी घटना घटती है जो दबी हुई भावुकता को भड़का देती है और युद्ध छिड़ जाता है। कच्चे माल के संघर्ष में भी लगभग यही होता है।

इससे भी ज़्यादा शक्तिशाली कारण वित्तीय नियंत्रण के लिए बड़े केंद्रीय बैंकों के बीच संघर्ष है। अगर माल से माल का भुगतान नहीं हो पाता, तो कर्जदार मजबूर होकर ऋण लेता है और तुरंत वित्तीय दासता में चला जाता है। जैसा कि एक लेखक अंतरराष्ट्रीय वित्तपोषकों के बारे में कहता है: "आधुनिक दुनिया की अराजकता में छोड़ी गई किसी भी अन्य शक्ति की तुलना में, उन्होंने युद्ध को सबसे ज़्यादा बढ़ावा दिया है।" एक बार उनकी गिरफ़्त में आने के बाद, इससे बाहर निकलने के केवल दो ही रास्ते हैं: अस्वीकृति या लड़ाई। चूँकि पहले का मतलब दिवालियापन और अपमान है, इसलिए आमतौर पर दूसरे का सहारा लिया जाता है।

इस प्रकार, जन-लोकतंत्रों में निहित लालच और भावुकता के कारण, हथियारों को शल्य चिकित्सा उपकरण नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय असंतोषों के बंधन के रूप में देखा जाता है। इनके द्वारा आंतरिक क्रांतियाँ बाधित होती हैं और शत्रुतापूर्ण पड़ोसियों को आतंकित किया जाता है, न्याय को बनाए रखने के लिए नहीं, बल्कि लालच को बनाए रखने के लिए। फिर, टैरिफ़ की दीवार से किलेबंद सीमा तक बस एक कदम की दूरी है, और यदि कोई मौजूदा सीमा कमज़ोर है, तो दूसरी, जो ज़्यादा मज़बूत हो, तलाशने के लिए हर तरह का प्रोत्साहन मौजूद है। पहले राष्ट्रीय अस्तित्व की सुरक्षा के लिए मज़बूत रक्षात्मक सीमाओं की तलाश की जाती थी, अब अंतर्राष्ट्रीय सूदखोरी को सुरक्षित करने के लिए उनकी तलाश की जाती है।

11 जुलाई, 1933 को, श्री चेम्बरलेन ने हाउस ऑफ कॉमन्स में कहा: "हम स्वयं, अब भी उसी मत पर कायम हैं जो हम हमेशा से रखते आए हैं, और वह यह है कि आज दुनिया जिन मुख्य समस्याओं से जूझ रही है, उनकी उत्पत्ति अंतर्राष्ट्रीय है, और उनका समाधान केवल अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई और समझौते से ही हो सकता है।" जहाँ तक उनकी उत्पत्ति का सवाल है, वह सही हैं, लेकिन जैसे शैतान को शैतान को बाहर निकालने से एक अजीब सी नापसंदगी होती है, वैसे ही फ़ासीवादी उसके इलाज को लेकर भी सशंकित हैं। यही कारण है कि वह निरस्त्रीकरण संधियों, शांति समझौतों और अंतर्राष्ट्रीय पुलिस बलों में विश्वास नहीं रखते, जिनकी लीग ऑफ नेशंस के सदस्य या उसके समर्थक पहले तो खुलकर चर्चा करते हैं और फिर खुलकर।

संघ शांति के लिए नहीं, बल्कि यथास्थिति के लिए खड़ा है: यह एक मिथक, जड़ता के लिए खड़ा है, न कि वास्तविकता-परिवर्तन के लिए। दुनिया चलती है और हमें इसके साथ चलना चाहिए; सड़न के बिना कोई ठहराव नहीं हो सकता, और सड़न युद्ध को जन्म देती है, क्योंकि यह सभ्यता को सड़ा देती है। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रिया की समस्या पर विचार करें, जो वर्तमान में यूरोपीय सड़न का केंद्र है: 1918-19 में एक महान साम्राज्य एक विशाल पूंजी वाले छोटे राज्य में सिमट गया; यानी एक करोड़पति की स्थिति से एक कंगाल में, जिसे अभी भी अपने घर - वियना - का किराया चुकाना है - एक करोड़पति का। 1931 में, जर्मनी ने एक सीमा शुल्क संघ का सुझाव दिया, और फ्रांस ने यह महसूस करते हुए कि वह नष्ट होने वाला है, तुरंत उस कभी न चूकने वाले विनाश के हथियार, संघ की परिषद के माध्यम से इस संघ को नष्ट करने का निश्चय कर लिया। मूलतः एक आर्थिक प्रश्न होने के कारण, इसे निर्णय के लिए अंतर्राष्ट्रीय न्याय के स्थायी न्यायालय को भेज दिया गया और राजनीतिक पटल पर रख दिया गया, जिसकी कमान सल्वाडोर, क्यूबा, कोलंबिया और चीन, जो उस समय खुलेआम अराजकता की स्थिति में थे, द्वारा संभाली जा रही थी। अगर क्यूबा या सल्वाडोर ने इसके विपरीत मतदान किया होता, तो संघ एक पूर्ण तथ्य बन जाता; क्योंकि दोनों में से किसी ने भी ऐसा नहीं किया, इसलिए इसे अस्वीकार कर दिया गया।

क्या यह समझदारी है या पागलपन? क्या यही दुनिया को एकीकृत करने और शाश्वत शांति स्थापित करने का तरीका है?
यह समझदारी और अधिक ईमानदारी की बात होती अगर संघ यह घोषणा करता: "ऑस्ट्रिया एक असंभव देश है, वह यूरोप का कंगाल है, और अगर उसे इस संघ में शामिल नहीं होने देना है, तो हमें उसे अपने पास रखना होगा और उसे हर साल लाखों पाउंड का भत्ता देना होगा।" फिर भी संघ को यह मानने का क्या अधिकार होता कि ऑस्ट्रियाई लोग—एक स्वाभिमानी लोग—भिक्षागृह में रहना चाहते थे; क्योंकि वे तो बस आत्मनिर्णय चाहते थे और वे अब भी उसे चाहते हैं, पर उसे प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि वे अपनी पसंद की सरकार के अधीन नहीं, बल्कि एक भ्रष्ट निरंकुश शासन के अधीन रहने को मजबूर हैं।

दरअसल, ऑस्ट्रिया को उसके सही भाग्य को साकार करने से रोकने के लिए उस पर एक गुप्त अंतर्राष्ट्रीय पुलिस बल थोपा जा रहा है—एक ऐसा अंतर्राष्ट्रीय पुलिस बल जिसे विदेशी भाड़े के सैनिकों को खरीदने की कोई ज़रूरत नहीं है; क्योंकि वह हमेशा घरेलू स्तर के सैनिकों को नियुक्त कर सकता है। इसी प्रकार का बल, एक अराष्ट्रीयकृत गलाकाट बल जिसका एकमात्र प्रोत्साहन धन है, राष्ट्र संघ, नया राष्ट्रमंडल आंदोलन और क्षयग्रस्त पूंजीवाद दुनिया पर थोपना चाहते हैं। अगर वे ऐसा कर पाते, तो देर-सवेर इसका परिणाम एक प्रलयंकारी क्रांति होती जो विश्वव्यापी बोल्शेविज्म में परिणत होती। तो क्या यही उनका अंतिम उद्देश्य है?

फिर भी, इस घोर राजनीतिक धूर्तता के बावजूद, फ़ासीवादियों को सबसे ज़्यादा आपत्ति उस कपटी नैतिक हमले से है जो पवित्र बातों और उन्मादी पाखंड के धुएँ के बादल की आड़ में, मानवजाति के पौरुष और आध्यात्मिक गुणों पर किया जाता है। सम्मान, सदाचार और जीवन जीने से बढ़कर किसी भी श्रेष्ठ चीज़ में विश्वास, अंतर्राष्ट्रीय कानूनी नियंत्रण के अधीन होना चाहिए। लेकिन क्या शांति या किसी भी कीमत पर शांति बनाए रखना ही जीवन का अंत है? क्या इस दुनिया में जीवन से बढ़कर कुछ भी प्रिय नहीं है? क्या मनुष्य केवल पशु हैं? जेम्स मार्टिनो के साथ, फ़ासीवादी का मानना है कि:

"मानव जीवन के प्रति श्रद्धा तब अनैतिक मूर्तिपूजा में बदल जाती है जब उसे न्याय और अधिकार से ज़्यादा पवित्र माना जाता है, और जब रक्तपात का तमाशा विनाशकारी अत्याचारों और विजयी पाखंडों के दृश्य से भी ज़्यादा भयानक हो जाता है... इससे कमज़ोर या आत्मघाती कुछ नहीं हो सकता कि एक राष्ट्र के नागरिक यह घोषणा करें कि वे जीवन को न्याय से ज़्यादा महत्व देते हैं। और अगर वह दिन आ जाए जब राष्ट्र हर विवाद, चाहे उसका मूल कुछ भी हो, को अदालत के फ़ैसले के लिए सौंपने को तैयार हों, तो इसका मतलब यह नहीं कि दुनिया बेहतर हो गई है, बल्कि यह है कि लोग और भी नीच और नीच हो गए हैं क्योंकि अब उनके लिए जीवन से ज़्यादा प्रिय कुछ नहीं रहा।"

जीना प्रकृति की प्रेरणा है; लेकिन धार्मिकता से जीना—अर्थात् अपनी गहरी मान्यताओं के अनुसार जीना—निश्चय ही समस्त नैतिकता और धर्म का आधार है। क्या कोई व्यक्ति जो यह मानता है कि वह ईश्वर की इच्छा को प्रतिबिंबित कर रहा है, अपने विश्वास को न्याय के लिए पुलिस अदालत में प्रस्तुत कर सकता है? इसलिए, "खतरनाक तरीके से जियो" जीवन का एक अधिक उत्कृष्ट और धार्मिक आदर्श वाक्य प्रतीत होता है, बजाय इसके कि

"सुरक्षा सर्वप्रथम", जिसे जब मनुष्य के हृदय पर लागू किया जाता है, तो इसका कोई अन्य उद्देश्य नहीं हो सकता, सिवाय इसके कि इससे अध्यात्मविहीन हिजड़ों की एक प्रजाति पैदा होती है।

इस प्रकार यह होता है कि फ़ासीवाद के दर्शन में जीवन को साध्य के रूप में नहीं, बल्कि साध्य के रूप में, एक साधन के रूप में देखा जाता है। व्यक्ति नश्वर है, लेकिन राज्य, न केवल व्यक्तियों का समूह, बल्कि उनके इतिहास में जो महान, प्रेरित और प्रेरक है, दो शब्दों में कहें तो - राष्ट्रीय आध्यात्मिकता, अमर और असीम रूप से महान है। इसी के लिए प्रत्येक व्यक्ति को जीना चाहिए, न केवल इसे बनाए रखने के लिए, बल्कि अपने जीवन, विचारों और कार्यों से इसे बनाए रखने के लिए। यह जो किया जाना है, उसके लिए एक संघर्ष है, न कि केवल जो हासिल हो चुका है, उस पर समय अंकित करना। यदि इस भावना में अभी भी जंगली सूअर की सक्रियता का कुछ अंश है, तो भगवान का शुक्र है कि अभी भी खेत के सूअर की जड़ता का कुछ अंश नहीं है।

इस गतिशीलता, इस अनिवार्य पौरुष के कारण, फ़ासीवाद शांति का पक्षधर है, फिर भी वह युद्ध से नहीं डरता, क्योंकि उसे केवल निष्क्रिय जीवन से डर लगता है। इसलिए शांति और युद्ध पर फ़ासीवादियों का सिद्धांत इस प्रकार है:

युद्ध का वैध उद्देश्य अधिक परिपूर्ण शांति है; क्योंकि युद्ध एक शल्य चिकित्सा उपकरण है।

शांति का वैध उद्देश्य एक अधिक परिपूर्ण मनुष्य है; क्योंकि शांति एक रचनात्मक साधन है।

और मनुष्य का वैध उद्देश्य एक अधिक परिपूर्ण संसार है; क्योंकि मनुष्य एक दिव्य साधन है।

वह इस पंथ को कर्म में कैसे परिवर्तित करता है, क्योंकि कर्म के बिना पुनर्जन्म नहीं हो सकता?
अब मैं इस समस्या की जांच करूंगा।

संघर्ष के इतिहास को दो बड़े शीर्षकों में बाँटा जा सकता है—आंतरिक क्रांतियाँ और बाह्य विदेशी युद्ध; पहला दूसरे को और दूसरा पहले को उर्वर बनाता है। अब मैं बारी-बारी से इनका विश्लेषण करूँगा।

फ़ासीवादी कहते हैं: अंतर्राष्ट्रीय असंतोष असंख्य राष्ट्रीय असंतोषों का योग मात्र है। अगर दुनिया की तुलना एक घर से की जाए, तो चूँकि उसकी ईंटें और गारा सड़ चुके हैं, इसलिए उसकी नींव हमेशा धँसती रहती है और उसकी दीवारें ढहती रहती हैं। इसलिए रचनात्मक विश्व शांति स्थापित करने में पहली समस्या यह है कि प्रत्येक राष्ट्र अपने घर को व्यवस्थित करे; क्योंकि जब तक राष्ट्र आंतरिक रूप से सड़न की स्थिति में हैं, संकट के आसन्न होते ही उनके संबंधित राजनेता असंतोष को बाहरी दिशा में, यानी घर से दूर, विदेशी मामलों की ओर मोड़कर अपनी सत्ता बनाए रखने का प्रयास करेंगे। यह युद्ध का सबसे पुराना और सबसे सुरक्षित रास्ता है।

इसका एक बेहतरीन उदाहरण युद्धोत्तर फ्रांस है। उसकी शासन प्रणाली पूरी तरह भ्रष्ट है, तो उसके राजनेता क्या करते हैं? जनता का ध्यान भटकाने के लिए वे ज़ोर-ज़ोर से घोषणा करते हैं कि फ्रांस खतरे में है और लोगों को "सुरक्षा" शब्द से सम्मोहित करते हैं। अगर फ्रांस को हर तरह के हमले से सुरक्षित करना संभव होता, तो क्या फ्रांसीसी राजनेता कृतज्ञ होते? नहीं, वे भयभीत होते, क्योंकि उन्हें एहसास होता कि चूँकि तब लोगों को विदेशी युद्ध से कोई डर नहीं होगा, इसलिए वे अपना ध्यान आंतरिक सुधार और क्रांति की ओर मोड़ते। "सुरक्षा" वास्तव में जर्मनी की ओर रखी गई ढाल नहीं है, बल्कि वह बुलेटप्रूफ कवच है जिसके नीचे स्टाविस्की रेंगते हैं।

यद्यपि लगभग हर देश में असंतोष का कारण मूलतः आर्थिक होता है, फिर भी इसकी अभिव्यक्ति, जैसी कि होनी चाहिए, नैतिक होती है। गरीबी न केवल अभाव पैदा करती है, बल्कि अन्याय की भावना भी पैदा करती है। यह कि संभावित प्रचुरता के युग में भी वास्तविक और अत्यधिक गरीबी हो, एक आपराधिक कृत्य प्रतीत होता है, और जब किसी सरकार को गुंडों का जमावड़ा समझा जाता है, तो पीड़ित और विचारशील व्यक्ति उसे उखाड़ फेंकने के अपने अधिकार में विश्वास करने लगता है। यही सभी सामाजिक क्रांतियों का मूल कारण है। वितरण की एक पुरानी प्रणाली के कारण उत्पादन में उचित हिस्सेदारी से वंचित होना डकैती से कम नहीं है। यदि कोई चोर आपके घर में घुसकर आपकी जान को खतरा पहुँचाता है, तो आपको उसकी रक्षा करने का अधिकार है।

अपनी ही कीमत पर। हताश आदमी राजनीतिक हत्या को भी इसी नज़रिए से देखता है, और जब उसे एहसास होता है कि यह फाइनेंसर ही है जो राजनेता को उसके और उसके जायज़ हिस्से के बीच एक अड़ंगे की तरह इस्तेमाल कर रहा है, तो हम बैंकरों के इतिहास में पहली मंदी की उम्मीद कर सकते हैं।

फ़ासीवादी कहते हैं: वित्तीय अराजकता की इस समस्या का समाधान सामाजिक अराजकता से क्यों किया जाए? इसके बजाय इसे आर्थिक पुनर्गठन से क्यों न हल किया जाए? गरीबी और, परिणामस्वरूप, क्रांति धन के कुवितरण, सड़ी हुई वित्तीय व्यवस्था, वेतन में कटौती, बढ़ती कीमतों और जीवन स्तर में सामान्य गिरावट से पैदा होती है; तो फिर राष्ट्रीय उद्योगों को इस तरह संगठित क्यों न किया जाए कि वे खुद को नियंत्रित कर सकें, खुद को अभिव्यक्त कर सकें और खुद को सुधार सकें? यह समाजवाद नहीं है, जिसमें राज्य श्रम को नियंत्रित करता है, क्योंकि यहाँ उद्योग पर नियंत्रण का सुझाव उन लोगों द्वारा दिया गया है जो श्रम का सृजन और रखरखाव करते हैं। यह वास्तव में सहकारी लोकतंत्र का शुद्धतम रूप है, जिसे राजनीतिक लोकतंत्रों ने कभी साकार करने का प्रयास नहीं किया। फ़ासीवादी इस नियंत्रण को कॉर्पोरेट राज्य के माध्यम से स्थापित करना चाहते हैं। उद्योग स्वशासी समूहों में विभाजित होंगे, जिनमें से प्रत्येक नियोक्ता, श्रमिकों और उपभोक्ताओं से मिलकर एक औद्योगिक निगम का चुनाव करेगा। ऐसे संगठन में वर्ग युद्ध, हड़तालों और तालाबंदी के लिए कोई जगह नहीं होगी। बढ़ी हुई मजदूरी के लिए लड़ने के बजाय, उद्देश्य जीवन स्तर को ऊपर उठाना होगा क्योंकि विज्ञान और उद्योग उत्पादन की शक्तियों को बढ़ाते हैं। इसका क्या मतलब है? शोषण की जगह संगठन आ जाएगा और एक नया सामाजिक ढाँचा बनेगा।

समृद्धि स्थापित हो जाने के बाद, अगला कदम आर्थिक धूल में नई जान फूंकना है। जैसे मनुष्य आंशिक रूप से शारीरिक, आंशिक रूप से नैतिक और आंशिक रूप से बौद्धिक होता है, वैसे ही मनुष्यों का समाज भी आंशिक रूप से आर्थिक, आंशिक रूप से सांस्कृतिक और आंशिक रूप से राजनीतिक होता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि, मनुष्य की ही तरह, आर्थिक कारकों को भी अंगों और अवयवों में समूहित किया जाना चाहिए; इसी प्रकार सांस्कृतिक कारकों को भी लगभग पूरी तरह से व्यक्तियों पर छोड़ दिया जाना चाहिए और राजनीतिक कारकों को समग्रता पर अधिकार होना चाहिए। मेरा तात्पर्य यह है कि राजनीति की मुख्य गतिविधियाँ व्यक्तियों और समूहों के बीच संबंधों को विनियमित करने और उन अंगों और अवयवों, राष्ट्रीय सेवाओं, जिन्हें केवल वे ही नियंत्रित कर सकते हैं, को निर्देशित करने में निहित होंगी।

इससे हम निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं: व्यक्तियों का निजी जीवन यथासंभव स्वतंत्र होगा; श्रमिक समूहों की समृद्धि कार्यों के अनुसार संगठन पर निर्भर करेगी, और समग्र शासन उच्च बुद्धि, ज्ञान और अनुभव वाले लोगों द्वारा चलाया जाएगा। दूसरे शब्दों में: सांस्कृतिक जीवन व्यक्तिगत है, आर्थिक जीवन सामूहिक है, और राजनीतिक जीवन निर्देशात्मक और सत्तावादी है। जब गतिविधियों के ये तीन समूह - आत्म-अभिव्यक्ति, समूह-अभिव्यक्ति और राष्ट्रीय अभिव्यक्ति - एक साथ काम करते हैं, तो सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन की सर्वोच्च अर्थव्यवस्था का निर्माण होगा। यह अर्थव्यवस्था सच्ची स्वतंत्रता है और असंतोष से मुक्ति राष्ट्रीय शांति का आधार है।

अब मैं युद्ध समस्या के दूसरे भाग की ओर रुख करूंगा, जो राष्ट्रीय क्रांतियों से लेकर
विदेशी युद्ध, और यहाँ फिर से हम पाते हैं कि वास्तविक शांति आर्थिक आधार पर स्थापित की जानी चाहिए।

आज वह आधार क्या है? सोने की अराजकता, जो मौजूदा अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणालियों का आधार है। सोना हासिल करने या स्वर्ण मुद्राएँ स्थापित करने के लिए, राष्ट्रों के पास सक्रिय "अनुकूल" व्यापार संतुलन होना चाहिए। जो ऐसा करने में सफल होते हैं, वे या तो "प्रतिकूल" संतुलन वाले राष्ट्रों से सोना निकाल सकते हैं या उन्हें ऋण के रूप में अंतर उधार लेने के लिए मजबूर कर सकते हैं। जैसा कि इस प्रश्न पर एक लेखक कहते हैं: "अपने पारस्परिक लाभ के लिए वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार करने के बजाय, राष्ट्र 'अनुकूल' संतुलन - यानी सोने - के लिए जी-जान से लड़ने के लिए मजबूर होते हैं, जिसके दंडस्वरूप वे खुद को अपने सफल प्रतिस्पर्धियों के गिरवी रखने की अपमानजनक और दयनीय स्थिति में पाते हैं।" यह युद्ध का सीधा रास्ता है, क्योंकि, जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, अस्वीकृति के अलावा केवल युद्ध ही इस दासता को समाप्त कर सकता है।

स्पष्टतः, इस समस्या का समाधान धन के माप के रूप में सोने को त्यागने और मुद्रा को वास्तविक धन पर आधारित करने में निहित है, न कि किसी एक वस्तु पर जिसे हथियाया जा सके, बल्कि बाजार मूल्य वाली सभी वस्तुओं पर। तब निर्यात का भुगतान आयात से करना होगा अन्यथा वे उन्हें प्राप्त करने वाले राष्ट्र के लिए उपहार बन जाएँगे। जैसा कि उपरोक्त लेखक कहते हैं: तब राज्य-सहायता प्राप्त निर्यात उद्देश्यहीन हो जाएँगे। टैरिफ, जहाँ तक वे आयात को बाहर रखते हैं, उसी सीमा तक निर्यात को भी रोकेंगे। विनिमय अपरिवर्तनीय रूप से स्थिर हो जाएँगे, जिससे सट्टेबाज समाप्त हो जाएँगे, और साहूकार का भय दूर हो जाएगा।

मैं यहाँ इस बात का विस्तार से वर्णन नहीं कर सकता कि मौजूदा वित्तीय अराजकता को कैसे समाप्त किया जाना चाहिए; लेकिन यह स्पष्ट है कि लोकतांत्रिक सरकारों में, जो अपनी शक्ति के लिए स्वर्ण-मानक वित्त के हितों और पूर्वाग्रहों पर निर्भर हैं, इसका समाधान केवल एक विनाशकारी परिणाम हो सकता है। इस देश में मौजूद उस तंत्र पर गौर कीजिए जिसे इतने जटिल सुधारों को लागू करने के लिए कहा जाएगा।

प्रधानमंत्री को इस समस्या को मंत्रिमंडल के पास भेजना चाहिए और मंत्रिमंडल को संसदीय दल के पास भेजना चाहिए, और यदि लेबर सरकार सत्ता में हो, तो संसदीय दल को इसे ट्रेड यूनियन कांग्रेस और लेबर पार्टी सम्मेलन के पास भेजना चाहिए, जबकि इन सभी सभाओं के पीछे निहित स्वार्थी तत्व ही हैं।

एक फ़ासीवादी सरकार के तहत, विशेषज्ञों द्वारा प्रश्न की जाँच-पड़ताल के बाद, प्रधानमंत्री "हाँ" या "ना" कहेगा। अगर "हाँ" होगा, तो वह उपाय कानून बन जाएगा। और अगर अन्य राष्ट्र भी इसमें रुचि रखते हैं, जो कि फ़ासीवादी निर्देशन में होने पर निश्चित रूप से होता है, तो निर्णय लेने की प्रक्रिया समान होने के कारण शीघ्र समझौता संभव हो जाता है।

तर्क के लिए, इस बात पर सहमत होते हुए कि युद्ध का यह मूल कारण समाप्त हो गया है, हमारे पास एक जैविक कारण बचता है, अर्थात् अति-जनसंख्या, जिसे कोई भी आर्थिक समायोजन सीधे प्रभावित नहीं कर सकता है; क्योंकि यह सरकार के नियंत्रण से बाहर है।

जिन देशों में जीवन स्तर ऊँचा है, वहाँ जन्म दर में गिरावट से यह समस्या स्वतः ही हल हो जाती है। लेकिन जिन देशों में जीवन स्तर निम्न है, यानी जिन देशों में औद्योगिक सभ्यता पूरी तरह विकसित नहीं हुई है, वहाँ कई वर्षों तक जन्म दर में वृद्धि की उम्मीद की जा सकती है। विश्व के आँकड़ों पर गौर करें तो हम पाते हैं कि पश्चिमी यूरोप में जनसंख्या वृद्धि घट रही है, पूर्वी यूरोप में नहीं, जबकि रूस और एशिया के विशाल भूभाग में करोड़ों लोगों के लिए जगह है। अगर एशिया में रूस की तरह औद्योगीकरण हो जाए, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि करोड़ों लोग पैदा होंगे और एक समय आएगा जब अधिक जनसंख्या पश्चिम की ओर विस्तार को मजबूर करेगी। इसका क्या मतलब है? एशिया और यूरोप के बीच एक अंतरमहाद्वीपीय युद्ध से कम नहीं। इस युद्ध की तैयारी के लिए यूरोपीय देशों को अपने आपसी झगड़े बंद करके एकजुट होना होगा, और जब तक आर्थिक और वित्तीय असंतोष उन्हें अलग करते रहेंगे, तब तक वे एकजुट नहीं हो पाएँगे। यदि पूर्वी यूरोपीय राष्ट्र अपनी सीमाओं के भीतर अपनी बढ़ती आबादी के लिए जगह नहीं बना पा रहे हैं, तो दो बुराइयों में से एक विकल्प यह है कि उनका विस्तार पूर्व की ओर हो, पश्चिम की ओर नहीं। ऐसा विस्तार न केवल न्यूनतम जनसंख्या-प्रतिरोध की दिशा में होगा, बल्कि यह उस सबसे बड़े युद्ध-खतरे की ओर होगा, न कि उससे दूर, जो पश्चिमी सभ्यता के लिए कभी भी खतरा बन सकता है।

भविष्य की संभावनाओं की इस संक्षिप्त यात्रा से हम देखते हैं, और मुझे लगता है कि यह निर्णायक है, कि युद्ध की समस्या का समाधान शांति समझौतों और शब्दाडंबरपूर्ण सम्मेलनों से नहीं हो सकता। यह एक वास्तविक और सक्रिय समस्या है, जिसका एक हिस्सा संगठन द्वारा हल किया जा सकता है, और एक हिस्से से केवल एक एकजुट और सैन्य रूप से शक्तिशाली यूरोप ही निपट सकता है।

चूँकि इस देश में फ़ासीवाद के सत्ता में आने पर भी, यूरोप के भाग्य को अकेले नियंत्रित करना स्पष्ट रूप से असंभव है, इसलिए हमारे सामने सबसे महत्वपूर्ण सैन्य समस्या हमारे साम्राज्य की सुरक्षा और रक्षा है। यहाँ हम अपनी ज़मीन पर और कुछ ख़ास क्षेत्रों में हैं-

निर्धारित सीमाएँ हम अपनी इच्छानुसार बना सकते हैं। इसका मतलब है नेतृत्व और कार्रवाई।

चूँकि एक सभ्य देश में समस्त सैन्य शक्ति का भौतिक आधार आर्थिक संपदा है, इसलिए साम्राज्य की सुरक्षा में पहली समस्या साम्राज्य का विकास है। हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि चूँकि डोमिनियन आज स्वायत्तशासी राष्ट्र हैं, इसलिए किसी भी गृह सरकार, चाहे वह फ़ासीवादी हो या अन्य, के लिए यह कार्य करना असंभव है। यदि बाध्यता की परिकल्पना की जाती है, तो फ़ासीवादी पूरे मन से सहमत होता है। लेकिन उसके लिए बाध्यता बिल्कुल अनावश्यक है, क्योंकि एक यथार्थवादी होने के नाते उसका मानना है कि चूँकि विकास सहयोग पर निर्भर करेगा, इसलिए सहयोग भी स्वार्थ पर आधारित होना चाहिए।

रक्त बंधुत्व और पारंपरिक बंधनों की बात करना बेकार है, क्योंकि ये स्वीकृत तथ्य हैं और कोई भी उनकी बाध्यकारी शक्ति पर संदेह नहीं करता है; इसके अलावा वे भौतिक क्षेत्र के बाहर हैं और इसलिए आर्थिक प्रश्न में प्रवेश नहीं करते हैं। वास्तविक उपयोग यह सुझाने में है कि एक आत्मनिर्भर साम्राज्य का अर्थ न केवल एक अधिक समृद्ध साम्राज्य है, बल्कि एक सुरक्षित साम्राज्य भी है, क्योंकि राष्ट्रों के समुदाय में, यह शांति का इतना शक्तिशाली साधन बनेगा कि यह युद्ध को वस्तुतः प्रतिबंधित कर देगा। एक आत्मनिर्भर साम्राज्य के लिए, अति-जनसंख्या से उत्पन्न होने वाले युद्धों के अलावा, जो राजनीतिक नियंत्रण से बाहर हैं, हानिकारक हैं। परिणामस्वरूप, यह साम्राज्य के लाभ के लिए है कि विश्व शांति बनी रहे। इसलिए यह उसके लाभ के लिए है कि उसके सभी भाग आर्थिक रूप से सहयोग करें। इसका अर्थ विदेशी निवेश का नुकसान हो सकता है; लेकिन थोड़े समय में इस नुकसान की भरपाई निरंतर बढ़ती समृद्धि से पूरी तरह हो जाएगी।

इस समृद्धि की रक्षा के लिए हमें सीधे रक्षा की समस्या का सामना करना पड़ता है। रक्षा की शक्ति कहाँ निहित है? सबसे पहले, ब्रिटिश नौसेना में, क्योंकि आने वाले कई वर्षों तक डोमिनियन शक्तिशाली युद्ध बेड़े बनाने और बनाए रखने की स्थिति में नहीं होंगे। दूसरे, वायु सेना और थल सेना में।

इन रक्षात्मक उपकरणों में से तीसरे, यानी आधुनिक, यानी यंत्रीकृत, सेना के मामले में, जिसकी हमें ज़रूरत है, डोमिनियनों के सामने लागत की वही समस्या आएगी जो आधुनिक बेड़े के निर्माण में उनके सामने आती है। लेकिन दूसरे, यानी वायु सेना के मामले में, कहानी बिल्कुल अलग है, क्योंकि डोमिनियन, जो विशाल भूभाग पर फैले हुए हैं, नागरिक विमानों के प्राकृतिक प्रजनन स्थल हैं, और नागरिक विमान सैन्य वायु शक्ति की नींव हैं।

इसलिए समस्या का समाधान इस प्रकार है: सबसे पहले ग्रेट ब्रिटेन को अपनी घरेलू वायु रक्षा के लिए ज़िम्मेदार होना होगा, और फिर साम्राज्यिक रूप से सभी समुद्री संचार और एक छोटी लेकिन शक्तिशाली यंत्रीकृत सेना के रखरखाव के लिए ज़िम्मेदार होना होगा, जो युद्ध में एक शाही अग्निशमन दल की तरह काम करेगी। बदले में, डोमिनियनों को अपनी वायु रक्षा के लिए ज़िम्मेदार होना होगा, और परिणामस्वरूप उन्हें मज़बूत और कुशल वायु सेनाएँ स्थापित करनी होंगी।

यदि ऐसी ताकतें उपलब्ध हों, तो समस्या स्वयं ही सहयोग में बदल जाती है, और इसके समाधान में दो मुख्य कारक हैं, अर्थात्: हमारे वर्तमान सुरक्षित कोयला स्टेशनों के नेटवर्क के समान उद्देश्य वाले सुरक्षित लैंडिंग-ग्राउंड के नेटवर्क की स्थापना, और एक इंपीरियल एयर काउंसिल का निर्माण जो साम्राज्य के राष्ट्रों को वायु रक्षा और वायु शक्ति विकास पर सलाह दे सके।

हालाँकि, अगर हमारे साम्राज्य को टिके रहना है, तो यह हमारी सबसे ज़रूरी समस्या है, हमारी सबसे तात्कालिक समस्या अपनी लड़ाकू सेवाओं को पुनर्गठित और पुनः शस्त्रीकृत करना है। युद्ध की समाप्ति के बाद से, लगातार कमजोर सरकारों ने उन्हें नपुंसकता की स्थिति में पहुँचा दिया है। हमारी द्वि-शक्ति नौसेना मानक को त्याग दिया गया है और आज हमारे पास क्रूजर, विध्वंसक और पनडुब्बियों की ख़तरनाक कमी है। इस अंतिम हथियार के मामले में, हम अब फ्रांस की दया पर हैं। हमारी सेना का आकार और दक्षता कम हो गई है, और हालाँकि घुड़सवार सेना की कमी ने हमें आंशिक रूप से मोटर चालित होने के लिए मजबूर किया है, फिर भी पुरातनपंथी दिमागों की अधिकता ने इसे इतना बेकार बना रखा है

पैदल सेना के बारे में कहा जा रहा है कि यह एक बेहद महंगी पुलिस बल से ज़्यादा कुछ नहीं है। इस बीच, रॉयल एयर फ़ोर्स दुनिया की वायु सेनाओं में पहले स्थान से छठे स्थान पर खिसक गई है।

फ़ासीवादी को इनमें से कुछ भी पसंद नहीं आएगा। उसे सत्ता के मानकों और भावनात्मक सीमाओं की कोई परवाह नहीं है। वह एक यथार्थवादी है और कहता है: "अगर मुझे, जैसा कि मैं करता हूँ और मुझे करना पड़ता है, सोने की लूट के शिकार किसी खनन शिविर में रहना पड़े, तो मैं अपनी कमर पर बंदूक रखने का इरादा रखता हूँ।"

उनके विचार इस प्रकार हैं:

हमारे पास हजारों मील लंबे समुद्री मार्गों की रक्षा करने का दायित्व है, तथा सभी संभावित हमलों से नहीं, बल्कि सबसे अधिक संभावित हमलों से उनकी रक्षा करने के लिए हमें इस उद्देश्य के लिए हर तरह से पर्याप्त नौसेना की आवश्यकता है।

हमारे पास उन्नीसवीं सदी की सेना है; इसकी बजाय हमें बीसवीं सदी की सेना चाहिए। टनों मानव मांस से तौली गई सेना नहीं, बल्कि यांत्रिक प्रहार शक्ति से मापी गई सेना: कम आदमी और ज़्यादा मशीनें, क्योंकि यह मशीनों का युग है, मांसपेशियों का नहीं।

हम एक ऐसी वायु सेना चाहते हैं और हमारे पास ऐसी वायु सेना होगी जो इतनी शक्तिशाली होकर हमारी रक्षा कर सके कि कोई भी प्रभावी सीमा के भीतर दुश्मन हम पर हमला करने से पहले कई बार सोचेगा।

अंत में, हम एक रणनीतिक रक्षा मंत्रालय चाहते हैं जो तीनों सेनाओं के लिए इस तरह योजना बना सके मानो वे एक संयुक्त सेवा हों। यानी, हम शांति काल में एक रक्षा तानाशाही चाहते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि युद्ध में एक तानाशाही के अलावा कोई भी एकनिष्ठ तरीके से रणनीति नहीं बना सकता।

अगर दूसरे देश यह दावा करें कि युद्ध के विरुद्ध हमारी सुरक्षा और युद्ध में विजय की हमारी गारंटी सैन्यवाद है, तो उन्हें ऐसा करने दें। हालाँकि हम हथियारों की होड़ में नहीं फँसे हैं, लेकिन हम यह नहीं चाहते कि अगली बार जब हम पर हमला हो, तो हम खुद को ऐसी स्थिति में पाएँ कि हमें अपने दुश्मन के हथियारों से भागने के लिए मजबूर होना पड़े। हम तथ्यों को आँख मूँदकर अनदेखा करने के बजाय, उनका खुलकर और सीधे सामना करना पसंद करते हैं।

मुझे लगता है कि अब मैंने युद्ध और उसकी तैयारी से जुड़ी उन ज़्यादा अहम समस्याओं पर बात कर ली है जिनका हम सामना कर रहे हैं, और यह स्पष्ट कर दिया है कि फ़ासीवादियों और ज़्यादातर दूसरे लोगों के नज़रिए में यही फ़र्क़ है: जहाँ एक ओर वे युद्ध को किसी भी परिस्थिति में अपरिहार्य या टालने योग्य मानते हैं, वहीं दूसरी ओर वे शांति की शर्तों के अनुसार युद्ध को ज़रूरी या अनावश्यक मानते हैं। दरअसल, यह फ़र्क़ वही है जो कीमियागर को विज्ञान के जानकार से अलग करता है।

युद्ध एक वास्तविकता है और इसे इसी रूप में देखा जाना चाहिए। यह समझ में आता है कि पिछले युद्ध के बाद, माहौल बदलने के लिए ही सही, लोगों ने आदर्शवाद की ओर रुख किया। यह भी समझ में आता है कि जनमत पर चलने वाली सभी सरकारें स्वभावतः ही संकटग्रस्त जल में तेल डालने के लिए बाध्य होती हैं। ये ऐसे तथ्य हैं जिनका खंडन नहीं किया जा सकता; लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ये ऐसे तथ्य हैं जिन्हें बदला नहीं जा सकता। हालाँकि फ़ासीवादी युद्ध नहीं चाहता, क्योंकि युद्ध शांति असंतोष का एक पैमाना है, और इसलिए, सरकारी विफलता का एक पैमाना है, वह दूसरे चरम पर नहीं जाता और राजनीतिक छल-कपट और चालाकी पर भरोसा नहीं करता।

इसके अलावा, वह यह नहीं मानते कि यह युद्ध-युग है, और उनका मानना है कि यह विश्वास इस तथ्य से सिद्ध होता है कि सरकारें युद्ध की बातें करना कभी बंद नहीं करतीं। ऐसा कैसे? क्योंकि राष्ट्रीय जीवन में समस्याओं की केवल दो ही बड़ी श्रेणियाँ हैं: एक आंतरिक और दूसरी बाह्य - गृह मामले और विदेश मामले। यदि आप नहीं चाहते कि लोग पहली समस्या पर ध्यान दें, तो उनका ध्यान दूसरी समस्या पर केंद्रित करें। यह युक्ति, जो हर जादूगर में आम है, लोकतांत्रिक राजनीति का मुख्य आधार है।

उनका मानना है कि युद्ध की समस्या वैज्ञानिक है, भावनात्मक नहीं: इसके कारणों का पता लगाएँ, वायरस को अलग करें और बकबक और ज़ुबानी जंग की जगह एक एंटी-टॉक्सिन विकसित करें। जैसा कि वर्तमान में है और यह

ऐसा प्रतीत होता है कि आने वाले कुछ समय तक सार्वभौमिक रूप से उच्च जीवन स्तर के अलावा कुछ भी अति-जनसंख्या से उत्पन्न युद्धों को समाप्त नहीं कर सकता, फ़ासीवादी मानते हैं कि सशस्त्र बलों की आवश्यकता होगी और फलस्वरूप, कुशल बल अप्रचलित बलों की तुलना में अधिक उपयोगी और किफायती साबित होंगे। हालाँकि मनुष्य परंपराओं से प्रभावित होता है, और युद्ध में वीर परंपराएँ अत्यंत मूल्यवान होती हैं, लेकिन हथियार स्पष्ट रूप से नहीं हो सकते। इसलिए, फ़ासीवादी भावनाओं को तोप के गोलों के साथ नहीं मिलाता।

यद्यपि एकीकृत यूरोप एक महान आदर्श है और फासीवादी इसका स्वागत करते हैं और मानते हैं कि यह फासीवादी नियंत्रण में संभव है, क्योंकि तब सभी सरकारें एक संगठित प्रणाली के माध्यम से एक-दूसरे के साथ व्यवहार करेंगी, आज सर्वोच्च तथ्य यह है कि दुनिया में राष्ट्रों का एकमात्र वास्तविक संघ ब्रिटिश साम्राज्य है। तो, रचनात्मक शांति की राह पर हमारा सच्चा प्रस्थान बिंदु यहीं है। एक ऐसा प्रस्थान बिंदु जो लगभग एक चौथाई पृथ्वी को कवर करता है और इसके एक चौथाई निवासियों को अपने आगोश में ले लेता है। शांति हमारे हाथ में है, बशर्ते हम इसे यथार्थवादी तरीके से समझें। क्या हम, एक राष्ट्र के रूप में, सदियों के परिश्रम के बाद, अब आगे बढ़ने की राह से भटककर पिछड़ों का एक समूह बन जाएंगे? फासीवादी उत्तर देता है "नहीं"; इसलिए उसका नारा है "आगे बढ़ो"।

ओसवाल्ड मोस्ले द्वारा फासिज्म में आगे

एफ एएससीआईएसटी का प्रचार हमारे राष्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। दो वर्षों के परिश्रम और बलिदान का प्रतिफल यह हुआ कि जनता ने इस आंदोलन को एक देशभक्त, क्रांतिकारी और मूलतः ब्रिटिश शक्ति के रूप में मान्यता दी।

ब्रिटिश श्रमिक अंततः अपने देश के प्रति स्वाभाविक प्रेम को अपनी राष्ट्रीयता के साथ जोड़ने में सक्षम हो गया है। उसकी स्थिति में मौलिक सुधार के लिए धार्मिक और आवश्यक इच्छा।

साम्राज्यवादी, जिसने पहले अपने ही लाखों लोगों के दुख और अभाव के बारे में नहीं सोचा था, अब यह समझने में सक्षम हो गया है कि इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में बेरोजगारी और गरीबी के लिए न तो कोई बहाना हो सकता है और न ही कोई छूट।

हमारे आंदोलन के जीवन के तीसरे वर्ष में प्रचार में अभूतपूर्व विजयें देखी गईं; लेकिन इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि वैज्ञानिक और पूर्णतः विश्वसनीय संगठन का निर्माण रही है, जिसके बिना कोई भी प्रचार स्थायी मूल्य के परिणाम नहीं दे सकता।

आंदोलन की समग्र संरचना में अब लगभग 500 जिला संरचनाएँ शामिल हैं, जिन्हें संसदीय क्षेत्र के अनुसार संगठित किया जा रहा है, और सभी ब्लैकशर्ट गतिविधि पर आधारित संगठन द्वारा सहसंबद्ध और एकीकृत हैं। इस पूरी तरह से भरोसेमंद मशीन का निर्माण वास्तव में अधिक उल्लेखनीय है क्योंकि इसने आंदोलन की इतनी ऊर्जा अवशोषित नहीं की है कि प्रचार को नुकसान पहुँचाए। इसके विपरीत, इसने आधुनिक ब्रिटिश इतिहास के दो सबसे बड़े प्रचार अभियानों की सफलता में बहुत बड़ा योगदान दिया है। अब प्रसिद्ध "माइंड ब्रिटेन्स बिज़नेस" अभियान ने लोगों के विरोध को एक निरर्थक युद्ध के लिए उकसाया, जिसकी दिन-प्रतिदिन अधिक सराहना की जा रही है, क्योंकि राजनेता उस शानदार और आडंबरपूर्ण रवैये से पीछे हट रहे हैं, जो उन्होंने तब अपनाया था, जब हमारी प्रचार शक्ति से अनभिज्ञ, उन्होंने पहली बार एक ऐसे विवाद में सैन्य और नौसैनिक बल का उपयोग करने पर विचार किया था, जो

हमें चिंता है.

दूसरे महान ऑपरेशन को “फासीवाद अगली बार” के आदर्श वाक्य में याद किया जाएगा। हाल के चुनाव अभियान के दौरान, हमारे आंदोलन ने उतनी ही बैठकें आयोजित कीं जितनी कोई भी पुरानी पार्टी आयोजित कर सकती थी। हमारी बैठकें आम तौर पर पूरी तरह भरी होती थीं, जबकि उनकी बैठकें अक्सर लगभग खाली रहती थीं। हमारी बैठकें, लगभग बिना किसी अपवाद के, शांतिपूर्ण और व्यवस्थित थीं; उनकी बैठकों में अक्सर गुंडागर्दी और हिंसा के दृश्य देखने को मिलते थे, जो किसी भी फ़ासीवादी बैठक में नहीं हो सकते। इस घटना में, हमने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बनाए रखा है; उन्होंने इसे नकारने की कोशिश की और खुद इसे खो दिया।

हमारी बैठकों में चुनावी संघर्ष के बीच बड़ी संख्या में लोगों को शामिल किया गया। हमारा मानना था कि हमें दिलचस्पी के साथ सुना जाना चाहिए; हमें उन पूर्वी उप-पुरुषों द्वारा चुप नहीं कराया जाना चाहिए जिन्हें हम जानते हैं; लेकिन यह कि जनता का बड़ा समूह ठीक उसी समय हमारे साथ शामिल हो जाए जब हमने उम्मीदवारों को नामांकित करने से इनकार कर दिया था, यह सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है जो चुनावी लड़ाई से दूर रहने की बुद्धिमत्ता के लिए दी जा सकती है जब तक कि हम दुश्मन पर उसके क्षतिग्रस्त और विभाजित मोर्चे की लंबाई में आवश्यक उच्च तकनीकी मशीनरी के साथ हमला नहीं कर सकते।

इस प्रकार, जैसे-जैसे वर्ष 1935 समाप्त हो रहा है, हम प्रचार और संगठन में समान सफलता पर विचार कर सकते हैं। यदि हम अपना कार्य पूरा होने तक कभी खुश नहीं हो सकते, तो हम सभी उस हर घंटे के काम पर, उस हर छोटे से छोटे त्याग पर गर्व कर सकते हैं जो हमने उस उद्देश्य के लिए किया है जो ******ebook converter DEMO Watermarks******* है।

राष्ट्रवाद में जो कुछ भी अच्छा है उसे समाजवाद में जो कुछ भी उपयोगी है उसे एकीकृत करके अपने लोगों को बचायें।

पीछे मुड़कर देखें तो, यह भी स्वीकार करना होगा कि यहूदी हमले के प्रति हमारा प्रतिरोध जितना ज़रूरी साबित हुआ, उतना ही विजयी भी रहा। क्योंकि यहूदी ब्रिटिश आंदोलन को सिर्फ़ ब्रिटेन के लिए काम करने, सोचने और महसूस करने की इजाज़त नहीं देते, क्योंकि वे हमें उन महान लोगों के साथ विनाशकारी संघर्ष में धकेल देते, जिनके नेता ने यूरोप को साम्यवाद से बचाया था, इसलिए वे ख़ुद को लगातार कम होती रक्षात्मक स्थिति में पाते हैं, क्योंकि उन्होंने ब्रिटेन में यहूदी-विरोधी भावना को भड़काया, जिसके लिए सिर्फ़ वे ही ज़िम्मेदार हैं। हमें गर्व से सोचना चाहिए कि अगर हमारे आंदोलन में यहूदी अंतर्राष्ट्रीय वित्त और यहूदी बोल्शेविज़्म के ख़तरे को चुनौती देने का साहस नहीं होता, तो यह न केवल लोगों के विश्वास को सही ठहराने में नाकाम होता: बल्कि यह उस निर्णायक परीक्षा से भी बच निकलता, जिसकी आग से यह एक कठोर इस्पात की तरह उभरा है।

हम इस प्रकार के परीक्षणों में आनन्दित होते हैं, क्योंकि केवल वे ही यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी सदस्यता दृढ़, सच्ची होगी, तथा फासीवादी संघर्ष द्वारा उत्पन्न उस उच्च मानवीय गुण "सहने की शक्ति" के उत्कृष्ट प्रकटीकरण में त्याग करने के लिए तत्पर होगी।

आने वाले वर्ष में, सभी प्रयास दोगुने करने होंगे और सफलता के हर कीर्तिमान को तोड़ना होगा। अब हमने अगला चुनाव लड़ने के लिए खुद को समर्पित कर दिया है; और यह प्रतिबद्धता कई सौ निर्वाचन क्षेत्रों में पुरानी पार्टियों से बेहतर चुनावी संगठन बनाने के विशाल कार्य से पूरी होगी। यह कार्य कठिन है; लेकिन हमारी सक्रिय सदस्यता किसी भी पुरानी पार्टी से कहीं अधिक है।

क्रिसमस से ठीक पहले संपन्न हुए तीन सप्ताह के दौरे ने ऐसे कर्मियों और भावना को उजागर किया है जिसका ब्रिटेन में कोई अन्य बल अनुकरण नहीं कर सकता। प्रत्येक जिले के अधिकारी हर शाम और कई दोपहरों में क्षेत्रीय सम्मेलनों के लिए एकत्र हुए। वे उस विशिष्ट ब्रिटिश पुरुषत्व के योग्य प्रतिनिधि थे जिसका वे अपने-अपने इलाकों में नेतृत्व करते थे। महिला अधिकारियों ने भी हमारे आंदोलन की सच्ची ब्रिटिश नारीत्व की निरंतर बढ़ती ताकत का प्रतिनिधित्व किया। संगठन और नीति की स्थानीय समस्याओं की बारीकी से जाँच की गई, जो पुरानी पार्टियों के संक्षिप्त, अस्पष्ट और अल्पविकसित वार्षिक सम्मेलनों में असंभव था। आने वाले वर्ष के लिए राष्ट्रीय योजनाओं पर पूरी तरह और खुलकर चर्चा की गई और पूरे देश में उत्साहजनक सार्वभौमिक उत्साह के साथ उनका स्वागत किया गया। सबसे बढ़कर, आंदोलन के वर्तमान महान विकास में भी वह घनिष्ठ व्यक्तिगत संपर्क और संबंध बनाए रखा गया, जो फासीवादी भाईचारे के शुरुआती दिनों की इतनी स्पष्ट विशेषता थी।

फ़ासीवादी ताकत का एक नया साल हमारे सामने है। वह आंदोलन जो यहूदी अंतर्राष्ट्रीय वित्त की संगठित शक्ति और उसके प्रचार संसाधनों का मज़ाक उड़ाने का साहस रखता है; वह आंदोलन जिसने "निहित शक्ति, लाल मोर्चे और प्रतिक्रिया के व्यापक समूहों" को सफलतापूर्वक चुनौती दी है, अब रक्षात्मक रुख़ से संतुष्ट नहीं हो सकता। अपने रास्ते में आने वाली बड़ी बाधाओं को पार करने के बाद, अब हमें अपनी जीत के लिए काम करना होगा। इस विजय की सीमा और तीव्रता प्रत्येक सदस्य के निरंतर और उद्देश्यपूर्ण प्रयासों पर निर्भर करेगी।

डॉ. रॉबर्ट ले द्वारा आनंद के माध्यम से शक्ति

टी हमारे नेता, एडॉल्फ हिटलर के आदेश पर, राष्ट्रीय समाजवादी " आनंद के माध्यम से शक्ति" संगठन की स्थापना की गई। उन्होंने एक दिन मुझे बुलाया और कहा: "मैं चाहता हूँ कि जर्मन मज़दूरों को पर्याप्त मनोरंजन और छुट्टियाँ मिलें, ताकि राष्ट्र की नसें मज़बूत रहें; क्योंकि अगर राष्ट्र की नसें ही नष्ट हो जाएँ, तो महानतम प्रतिभावान राजनेता के साथ भी कुछ भी हासिल करना असंभव है।" नेता के इस आदेश का पालन करना मेरा कर्तव्य बन गया और नवंबर 1933 में " आनंद के माध्यम से शक्ति" अस्तित्व में आई। मेरे सबसे घनिष्ठ सहयोगियों में से भी कई लोग यह नहीं समझ पाए कि मेरा उद्देश्य क्या था, न ही यह कि नेता का इरादा क्या था। कई लोगों ने सोचा कि यह मज़दूरों की आँखों में धूल झोंकने और सामाजिक न्याय की उनकी वाजिब इच्छा को भटकाने का एक ज़रिया है। कुछ लोगों ने इसे नए पदों के सृजन के लिए एक नया कार्यक्षेत्र माना। उस समय बहुत कम लोगों ने ही उस विशाल उपक्रम को पहचाना जो आज पूरे जर्मनी में व्याप्त है और हमारे अपने देश की सीमाओं से परे दुनिया भर में फैल चुका है। यह एक चमत्कार जैसा लगता है जब हम सोचते हैं कि कैसे एक विचार जिसका कई लोगों ने मजाक उड़ाया, दूसरों ने तिरस्कार किया, विरोधियों ने अपमानित किया और गाली दी, और हमारे सबसे करीबी दोस्तों ने भी जिसे केवल चिंता और संदेह के साथ देखा, उसने दो साल से भी कम समय में लोगों का दिल जीत लिया और खुद लोगों द्वारा इसे व्यवहार में लाया गया।

हमारे सामने जो उद्देश्य है, उसके वर्णन के लिए यह नाम बिल्कुल सही है: राष्ट्रीय समाजवादी समुदाय: आनंद से शक्ति। प्रत्येक शब्द के अर्थ पर ध्यानपूर्वक विचार करना आवश्यक है: राष्ट्रीय समाजवादी समुदाय। समुदाय ही इसका आधार है, और यहाँ एक बार फिर इस तथ्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति है कि केवल समुदाय ही आनंद का वाहक बनने में सक्षम और सक्षम है। इसमें, एक बार फिर हम राष्ट्रीय समाजवादी स्पष्ट रूप से देखते हैं कि संस्कृति और कला राष्ट्र और जाति के समुदाय से जुड़ी हुई हैं, और शून्य में उनका अलग-थलग अस्तित्व नहीं हो सकता। मुझे इसे "कार्य के बाद" कहने की सलाह दी गई थी। लेकिन मैं कभी भी अनुकरण के पक्ष में नहीं रहा, हमेशा यह देखना पसंद करता रहा कि क्या स्वयं कुछ बनाना संभव नहीं है ।

युवा इटली का "डोपोलावोरो" निश्चित रूप से महान परिणाम दिखा सकता है; यह निस्संदेह एक महान उपलब्धि है। लेकिन यह उस उद्देश्य से बिल्कुल मेल नहीं खाता जिसे हम देख रहे हैं। यह एक तटस्थ अभिव्यक्ति है जो न तो हमारी इच्छा को व्यक्त करती है और न ही नेता के आदेश को। नेता ने कहा, "मैं एक मजबूत राष्ट्र चाहता हूँ: यह सुनिश्चित करें कि काम की गति, जिसे तर्कसंगतता और घटनाओं के पूरे रुझान ने किसी भी तरह से निरर्थक बना दिया है, इन लोगों को मिलने वाले मनोरंजन और छुट्टियों से संतुलित हो; और यह भी सुनिश्चित करें कि लोगों का उत्साह कम न हो।" नेता का आदेश राष्ट्र को शक्ति प्रदान करना था, और साथ ही उन्होंने यह भी दिखाया कि यह शक्ति कैसे प्राप्त की जा सकती है: मनोरंजन से, छुट्टियों से, आनंद के माध्यम से।

"आनंद से शक्ति" शायद राष्ट्रीय समाजवाद के संपूर्ण उद्देश्य की सबसे संक्षिप्त और संक्षिप्त अभिव्यक्ति है। यह उस जीवन-दृष्टिकोण का मूर्त रूप है जो राष्ट्रीय समाजवाद ने जर्मनी को दिया है; यह जीवन के प्रति उस सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यक्त करता है जो हमारे भीतर धड़कता है, और जो उस जीवन-त्याग का स्थान लेता है जो पिछली शताब्दी में हमारे राष्ट्र पर हावी था। क्योंकि जो हमने अतीत में जीवन के हर क्षेत्र में देखा था, जो हमारी सभी लुप्त पार्टियों की विशेषता थी, वह जीवन-त्याग था!

हम राष्ट्रीय समाजवादी जीवन को आँसुओं की एक सांसारिक घाटी से गुज़रती एक यात्रा, एक बेहतर परलोक की निरंतर तैयारी नहीं समझना चाहते। हम जीवन को—और ख़ासकर अपने सबसे ग़रीब जर्मन साथियों के जीवन को—जितना हो सके उतना सुंदर और उज्ज्वल बनाना चाहते हैं। हमारा मानना है कि हमारा यह जीवन जीने लायक है; और हम मानते हैं कि हमारे प्रभु ईश्वर ने हमारे जीवन की विविधता इसलिए नहीं बनाई कि उसे फिर से अनंत विनाश और विनाश के लिए छोड़ दिया जाए। वे सभी जो मानते हैं कि अपने जीवन और कार्यों से उन्हें इस दुनिया में एक पवित्र मिशन पूरा करना है, वे सभी जो इस विश्वास से भरे हैं, अपने हृदय में राष्ट्रीय समाजवादी हैं।

इसलिए हमें संघर्ष के लिए शक्ति चाहिए। हमारा जीवन स्वर्ग के धन से भरा नहीं है; हमारे लिए संघर्ष ही मुख्य चीज़ है। जीवन संघर्ष है, और संघर्ष ही जीवन है। हम कोई ऐसा अंत नहीं जानते जहाँ कुछ लोग अनंत आलस्य में अपने सुखों की प्रतीक्षा करते रहें और बाकी लोग हमेशा के लिए अभिशप्त रहें। अनंत काल तक हम केवल संघर्ष को ही अपने विश्वास और अपने जीवन की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। और इस संघर्ष के लिए हम अपने लोगों को निरंतर नई शक्ति प्रदान करना चाहते हैं।

काम वास्तव में संघर्ष की ही एक अभिव्यक्ति है। हमारा हर देशवासी, चाहे वह मज़दूर हो या किसान, कलाकार हो, विद्वान हो या सैनिक, हर पल अपने लोगों और अपने अस्तित्व के लिए इस संघर्ष में लगा रहता है। और चूँकि यह संघर्ष तंत्रिकाओं और शरीर को नष्ट करता है, इसलिए मनुष्य को इस संघर्ष के लिए साधनों की आवश्यकता होती है, और इसलिए इन साधनों की पूर्ति और अपनी शक्ति के नवीनीकरण की भी। परिणामस्वरूप, मनोरंजन और छुट्टियाँ हमारे लिए एक आंतरिक आवश्यकता हैं।

कुछ समय पहले सामाजिक अर्थव्यवस्था के एक महान विदेशी छात्र ने मुझसे पूछा था: "छुट्टियों के सवाल पर आपका क्या नज़रिया है? क्या आप जर्मनी में छुट्टियों की संख्या क़ानून द्वारा तय करेंगे, और साथ ही भुगतान की दर भी क़ानून द्वारा नियंत्रित करेंगे?" मैंने जवाब दिया: हम न सिर्फ़ छुट्टियों की सामान्य शुरुआत को बर्दाश्त करेंगे, बल्कि उन्हें क़ानूनी तौर पर अनिवार्य भी बनाएंगे, क्योंकि यह हमारी माँगों में से एक है।" "लेकिन माफ़ कीजिए," उन्होंने कहा, "हर देश में नियोक्ता अपने कर्मचारियों के ख़िलाफ़ लड़ते हैं, और फिर भी आप जर्मनी में यह मानते हैं कि नियोक्ता भी धीरे-धीरे इन छुट्टियों की माँग करने लगेंगे?" "हाँ, वह समय दूर नहीं जब छुट्टियों और मनोरंजन के सबसे बड़े समर्थक मज़दूर नहीं, बल्कि नियोक्ता होंगे।"

राष्ट्रीय समाजवाद अविवेकी पर तर्क की विजय है, और यह उचित ही है कि एक थका हुआ और क्षीण व्यक्ति स्वयं को पुनः निर्मित करे, ताकि वह अपने भविष्य के कार्य को और भी बेहतर ढंग से कर सके। इसका अर्थ है कि छुट्टियाँ स्वस्थ, विवेकपूर्ण व्यावहारिक बुद्धि की माँग बन जाती हैं। हम दयावश छुट्टियों की माँग नहीं करते, बल्कि इस तथ्य को स्वीकार करते हुए करते हैं कि वे हमारे लोगों की उत्पादक शक्ति को और भी बढ़ाएँगी। श्रम के नियोक्ता को एक थके हुए और क्षीण व्यक्ति को अपने यहाँ काम पर रखने से कोई लाभ नहीं होता; ऐसा व्यक्ति केवल ऊर्जा का उपभोग करता है, जबकि मशीनें चलती रहती हैं, बिजली की खपत करती हैं, धन व्यय करती हैं और घिसती रहती हैं। व्यक्ति भी उत्पादक नहीं रह जाता, जिससे नियोक्ता को दोहरा नुकसान होता है: वह न केवल कम उत्पादकता के लिए मजदूरी देता है, बल्कि अप्रयुक्त मशीन की ऊर्जा और शक्ति के लिए भी भुगतान करता है। दूसरी ओर, यदि व्यक्ति तरोताज़ा है, तो नियोक्ता उन छुट्टियों के अंतर की भरपाई आसानी से कर लेता है जिनके लिए उसने भुगतान किया है। और नियोक्ता देखेगा कि उसका शेष डेबिट नहीं रहेगा, बल्कि इसके विपरीत, क्रेडिट पक्ष में सुधार दिखेगा; वह देखेगा कि उसे, तथा साथ ही श्रमिक को भी लाभ होगा।

यह वास्तव में राष्ट्रीय समाजवाद की विशेषता है कि यह केवल एक पक्ष के लाभ के लिए कुछ नहीं करता। अगर हम ऐसा कुछ करें जिससे केवल मज़दूर को फ़ायदा हो और साथ ही नियोक्ता को नुकसान हो, तो इससे पूरे राष्ट्र को कोई फ़ायदा नहीं होगा; कोई चीज़ व्यक्ति के लिए तभी अच्छी होती है जब वह समग्र रूप से जर्मन लोगों के लिए अच्छी हो, और जर्मन लोगों के लिए यह अच्छा है कि लोगों के पास मनोरंजन और छुट्टियाँ हों। हमारा अक्सर यह अनुभव रहा है, और आज भी ऐसा ही है, कि हम किसी व्यक्ति को यह कहते हुए सुनते हैं: "मैं आठ दिन की छुट्टी चाहता हूँ; मुझे मेरे पैसे दे दो; लेकिन मैं मनोरंजन के लिए बाहर नहीं जाना चाहता, मैं घर पर ही रहूँगा। नहीं, यह ग़लत है; यह

पैसा बर्बाद करना; क्योंकि घर पर आदमी को मनोरंजन नहीं मिल सकता। बात का मूल भाव यही है कि उसे कभी-कभार अपनी अटारी से, जहाँ वह हमेशा सिर्फ़ तंगी और अभाव ही देखता है, घसीटकर बाहर निकाला जाएगा और समुद्री यात्रा पर, या पहाड़ों में, या राइन नदी पर भेजा जाएगा, और उसे आठ दिनों के लिए रोज़मर्रा की ज़िंदगी को भूलना सिखाया जाएगा। मार्क्सवादी जो उपदेश देते हैं, वह काफ़ी नहीं है: "हमें छुट्टियाँ चाहिए"; छुट्टियों के साथ कुछ तो करना ही होगा—यही है आनंद से शक्ति।

पहले वर्ष के अंत में मैं यह कह सका कि " आनंद से शक्ति" ने जर्मनी पर तेज़ी से विजय प्राप्त कर ली है। आज हमारी उपलब्धियाँ इतनी महान हैं कि विदेशी देश भी उन पर ध्यान दे रहे हैं। चाहे वे जर्मनी के पक्ष में हों या विपक्ष में, विदेश में हर कोई हमारे युवा संगठन को दिलचस्पी से देख रहा है, जिसने एक ऐसी चीज़ को संभव बनाया है जिसे अब तक असंभव माना जाता था, जो दुनिया के हर समाजवादी का कई वर्षों से एक सपना था। हम आशा करते हैं कि हम दुनिया को नए जर्मनी के बारे में उस तरह से सोचने के लिए प्रेरित करेंगे जैसा कि एक दुर्भावनापूर्ण प्रेस अक्सर हमें विश्वास दिलाने के लिए कहता है।

उदाहरण के लिए, द डायरियो दा मन्हा, विश्व-मत की बढ़ती अनुकूलता का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है; 12 अक्टूबर, 1935 के एक अंक में, हम " आनंद के माध्यम से शक्ति " समुद्री यात्रा के बारे में निम्नलिखित पढ़ते हैं: "यही वह क्रांति है जिसे जर्मनी, एडॉल्फ हिटलर के इर्द-गिर्द एकजुट अपने लोगों की दृढ़ और अनुशासित इच्छाशक्ति के साथ, अंजाम देने की तैयारी कर रहा है। इसके प्रभाव और अंतिम परिणाम क्या होंगे? अभी उनका आकलन करना जल्दबाजी होगी; लेकिन एक बात निश्चित है, वह यह कि जर्मन भावना नई जीवन-अवधारणाओं के निर्माण और हमारे समय की सबसे अनसुलझी समस्याओं के समाधान के लिए काम कर रही है।" 27 सितंबर, 1935 के नॉर्वेजियन अखबार, कार्मोय पोस्टेन, में एक नॉर्वेजियन और श्री राबिनोविट्ज़ के बीच " आनंद के माध्यम से शक्ति" यात्राओं के मूल्य के बारे में एक दिलचस्प चर्चा प्रकाशित हुई। आपने समुद्री यात्राओं के जो रेखाचित्र दिए हैं, उनके संदर्भ में नॉर्वेजियन लिखते हैं: "... ऐसी यात्रा के दौरान जहाज पर जीवन कैसा होगा, जगह कम होगी और हर तरह से तंग होगा, मैं यह बताना चाहूंगा कि मैंने व्यक्तिगत रूप से ऐसी यात्राओं में भाग लिया है, और जानता हूं कि यह बकवास है।

· आप निश्चित रूप से कभी भी स्ट्रेंथ थ्रू जॉय स्टीमर पर सवार नहीं हुए हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। कोई भी लोकतांत्रिक देश जिसे आप पसंद करते हैं, उस पर गर्व कर सकता है।
न्याय की सारी भावना को किनारे कर दो... स्ट्रेंथ थ्रू जॉय संगठन।” ·

मैं विदेशों से प्राप्त इसी प्रकार के मैत्रीपूर्ण प्रेस वक्तव्यों की सूची को अनिश्चित काल तक बढ़ा सकता हूं; लेकिन हमारे संगठन में गंभीर रुचि लेने वाले सभी लोगों द्वारा किए गए निर्णयों से एक बात स्पष्ट है, वह यह कि ' आनंद के माध्यम से शक्ति' का विचार अन्य देशों में भी निर्विवाद रूप से अपनी उपलब्धियों के बल पर स्थापित हो रहा है।

इसलिए दूसरे देशों की यात्राएँ करके हम सही थे। हम जिस रास्ते से शुरू हुए हैं, उसी पर आगे बढ़ेंगे और इस साल मार्च में हम अपने "आनंद से शक्ति" बेड़े के साथ अटलांटिक पार करके लिस्बन और मदीरा की यात्रा करेंगे। इसके अलावा, 1936 से हर बसंत और पतझड़ में हम दक्षिण की यात्राएँ करेंगे। पुर्तगाल तक की हमारी पहली अटलांटिक यात्रा के दौरान जो अनुभव हुए, वे इतने अनुकूल थे कि हमने इन यात्राओं के उपर्युक्त विकास का संकल्प लिया है। नए जर्मनी का प्रतिनिधित्व उस जर्मन कार्यकर्ता से बेहतर कोई नहीं कर सकता जो " आनंद से शक्ति" के साथ यात्रा करता है।

इसके अलावा, हम इस वर्ष कई महान विशेष परियोजनाओं पर काम करेंगे। जब हम विचार करते हैं कि 1934 और 1935 में "आनंद के माध्यम से शक्ति" नामक यात्रा पर निकले पचास लाख पर्यटक वास्तव में कहाँ गए थे, तो पता चलता है कि इन पचास लाख में से तीस लाख से ज़्यादा हमारे देश के सीमावर्ती ज़िलों में गए थे। वहाँ उन्होंने जर्मन समाजवाद की एक जीवंत दीवार खड़ी कर दी है। सीमावर्ती इलाकों की आबादी से जर्मनी के सभी हिस्सों से जर्मन भाई मिलने आते थे। और यह महान भाईचारा, जो " आनंद के माध्यम से शक्ति" यात्राओं को निजी यात्राओं से अलग करता है, ने सीमा पर इन भाइयों को एक नया आध्यात्मिक सहारा दिया।

हम इस व्यवस्थित कार्य को जारी रखेंगे और इसे काफ़ी आगे बढ़ाएँगे। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हमने एक बड़ा अभियान शुरू किया है और पहले से ही कम " स्ट्रेंथ थ्रू जॉय" की कीमतों को 30 प्रतिशत और कम करने का इरादा रखते हैं। जब यह प्रस्ताव रखा गया था, तो कई विशेषज्ञों ने सिर हिलाया और माना कि यह कभी पूरा नहीं हो सकता। अब, थोड़े समय की तैयारी के बाद, मैं यह कह सकता हूँ कि इसी वर्ष 3,50,000 पर्यटकों के लिए सस्ती दरें उपलब्ध होंगी, और इसके लिए आवास प्रदान करने वालों को स्वीकृत दरों से अलग होने की आवश्यकता नहीं होगी।

इसका मतलब है कि औसत दूरी के लिए जर्मन मज़दूर 12 से 15 या 16 मार्क की लागत पर पूरे एक हफ़्ते की छुट्टी पर जा सकते हैं, जिसमें किराया, पूरा भोजन और आवास, और हर तरह की सामूहिक गतिविधियाँ शामिल हैं। इससे हम मज़दूरों के नए वर्गों को शामिल कर पाएँगे, जो अपनी आर्थिक स्थिति के कारण अब तक " आनंद से शक्ति" यात्रा में शामिल नहीं हो पाए हैं। ये नए लोग सबसे अच्छे छुट्टियाँ मनाने वाले होंगे, क्योंकि वे सबसे ज़्यादा खुश और संतुष्ट होंगे। हम उन्हें खूबसूरत सीमावर्ती इलाकों में ले जाएँगे, जिन्हें राष्ट्रीय समाजवाद द्वारा दी जा सकने वाली देखभाल की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।

" आनंद से शक्ति" आंदोलन की सभी गतिविधियों में, जो हमारी मातृभूमि की सीमाओं से परे फैली हुई हैं, हम विदेश में बसे अपने जर्मन भाइयों का ध्यान रखते हैं। हम उन्हें अन्य देशों से जोड़ने वाले एक जीवंत सेतु के रूप में बनाना चाहते हैं, और हमारे पर्यटक मित्रता के दूत बनकर अन्य देशों को जर्मनी को उसके वास्तविक स्वरूप में देखने में सक्षम बनाएंगे। और इसलिए हम विदेश में बसे अपने भाइयों और उनके बच्चों को जर्मनी लाएँगे, जो अन्यथा जर्मनी जाने के बारे में सोच भी नहीं सकते। हम शीतकाल और मध्यकाल में अपने " आनंद से शक्ति" बेड़े का उपयोग करेंगे, और ये यात्राएँ बहुत सस्ती दरों पर करेंगे। इन सभी उपक्रमों में हम किसी भी औद्योगिक संस्थान से कोई प्रतिस्पर्धा नहीं करेंगे, क्योंकि इन यात्राओं में भाग लेने वाले व्यक्तियों का चयन हम बहुत सावधानी से करेंगे। यदि किसी व्यक्ति के पास जर्मनी जाने के लिए साधारण यात्रा का खर्च उठाने के लिए पर्याप्त धन है, तो उसे साधारण तरीके से यात्रा करने दें।

हम जर्मनी की यात्रा के लिए उपर्युक्त सस्ती सुविधाएं केवल उन लोगों के लिए उपलब्ध करा रहे हैं जो ऐसी भाग्यशाली स्थिति में नहीं हैं।

यात्रा और छुट्टियों के बारे में अपनी टिप्पणी समाप्त करते हुए, मैं एक छोटी सी चिंता पर प्रकाश डालना चाहूँगा जो कुछ क्षेत्रों में व्याप्त है। कुल मिलाकर, सभी लोग " स्ट्रेंथ थ्रू जॉय" अभियानों को लेकर उत्साहित हैं, हमारे मेजबान और साथ ही पर्यटक भी। सभी इस संस्था की प्रशंसा से भरे हैं, जो वास्तव में, जैसा कि सिद्ध हो चुका है, कई मायनों में बहुत ही लाभकारी प्रभाव डालती है। बस एक आलोचना है जो कभी-कभार सुनी जा सकती है: ऐसा कहा जाता है कि पर्यटकों में से एक बड़ा हिस्सा ऐसे लोगों का होता है जो हमारे बिना भी अपनी छुट्टियाँ बिताने जा सकते हैं। लेकिन यह आपत्ति अनुचित है। मेरे सहयोगियों ने बड़ी संख्या में ट्रेनों की संरचना की जाँच की है। यह आसानी से संभव था, क्योंकि प्रत्येक प्रतिभागी से एक विशेष विस्तृत प्रश्नावली के माध्यम से बात की जाती है। चार जिलों से आने वाली सभी छुट्टियों वाली ट्रेनों की जाँच का परिणाम इस प्रकार था: यात्रियों में से कम से कम 50% यात्री उद्योग में लगे श्रमिक थे। शेष यात्री छोटे कर्मचारी, स्वतंत्र व्यापारी, निजी साधन वाले लोग, उदार व्यवसायों के सदस्य आदि थे। मैं "स्ट्रेंथ थ्रू जॉय" पर्यटकों की आय के बारे में भी आँकड़े दे सकता हूँ। इन्हीं ट्रेनों की जाँच से पता चला कि सभी छुट्टियों पर जाने वाले एक तिहाई लोगों की मासिक आय 100 मार्क से भी कम थी। एक तिहाई लोग 100 से 150 मार्क के बीच मासिक कमाई करते थे। बाकी लोगों की आय ज़्यादा थी, लेकिन औसतन 150 से 250 मार्क प्रति माह के बीच थी। केवल 6% लोगों की कमाई 250 मार्क से ज़्यादा थी। इस श्रेणी में मुख्यतः विवाहित जोड़े शामिल हैं जिनके कई परिवार हैं, और जिन पर भारी खर्च का बोझ है, उन्हें " आनंद के माध्यम से शक्ति" यात्राओं में भाग लेने का अधिकार है।

हमें उस बिंदु तक पहुंचना ही होगा - और अब तक की हर बात यही संकेत देती है कि हम उस तक पहुंचेंगे -

जब बर्लिन से रुगेन तक की यात्रा, वहाँ और वापस आने के लिए परिवहन सहित और समुद्र के किनारे आठ दिनों की छुट्टी, 12 मार्क्स से उपलब्ध है। अंतिम लक्ष्य यह है: जर्मनी की वर्तमान जनसंख्या के अनुसार, हमें हर साल 1.4 करोड़ कामकाजी पुरुषों और महिलाओं को 12 से 14 दिनों की मनोरंजक यात्राओं पर भेजने में सक्षम होना चाहिए। परिवहन और आवास की मौजूदा सुविधाएँ इस समस्या से निपटने के लिए पूरी तरह से अपर्याप्त हैं। आज वे पहले ही अपनी सीमा तक पहुँच चुकी हैं। जब हमने दो साल पहले इसकी भविष्यवाणी की थी, तो हमारा मज़ाक उड़ाया गया था।

इसलिए, हम बिना किसी देरी के नई आवासीय सुविधाओं और नए जहाजों के निर्माण में जुट जाएँगे। अगले तीन वर्षों में जर्मन मज़दूर मोर्चा 10 करोड़ मार्क की लागत की इमारतें खड़ी करेगा। इनमें रुगेन द्वीप पर एक समुद्र-स्नानघर भी शामिल होगा, जिसमें 20,000 बिस्तर और मनोरंजन के सभी साधन होंगे। इस अनूठे उद्यम की योजनाएँ और मॉडल पहले ही तैयार हो चुके हैं। हम अपने नेता, एडॉल्फ हिटलर के उदार और समर्पित आदेशों के ऋणी हैं।

इसके अलावा, हम 1,500 लोगों के रहने की क्षमता वाले दो जहाज़ बनाएंगे, जिनमें सामूहिक शयनगृह नहीं होंगे, सभी केबिन दो या चार लोगों के लिए होंगे, प्रत्येक केबिन में एक पोर्ट-होल होगा, और पूरे जहाज़ में अद्वितीय क्षमता वाला डेक होगा। हमारे पास पहले से मौजूद दो जहाज़ों, डेर ड्यूश और सिएरा कॉर्डोबा के अलावा, हम इस वसंत में, समान आकार के चार और जहाज़ खरीदेंगे। इन परियोजनाओं के अलावा, लेबर फ्रंट के स्वामित्व वाले देश के मनोरंजन गृहों में बिस्तरों की संख्या बढ़ाकर 30,000 कर दी जाएगी। जब तीन साल में यह सब पूरा हो जाएगा, तो हम अपने मनोरंजन रिसॉर्ट्स में 12 लाख लोगों के लिए आवास उपलब्ध करा सकेंगे। बेशक, निजी होटल और खानपान व्यवसाय के दावों को हमेशा विशेषाधिकार प्राप्त होगा। इसलिए हम अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ता से काम करेंगे, जब तक कि आखिरी कामकाजी जर्मन मनोरंजन और छुट्टियों के अपने वैध दावे को पूरी तरह से पूरा करने में सक्षम न हो जाए।

राष्ट्रीय समाजवादी सामुदायिक शक्ति से आनंद संगठनों के विभिन्न वर्गों में , खेल एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस कार्यालय पर जर्मन मज़दूरों की आनंदमय शारीरिक शिक्षा में बिताई गई खाली शाम को शक्ति और मनोरंजन के स्रोत में बदलने की एक उत्कृष्ट, लेकिन असीम रूप से कठिन ज़िम्मेदारी है। आज, दो वर्षों के कार्य के बाद, हम संतोष के साथ यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परिणाम हमारी अपेक्षाओं से कहीं अधिक हैं। हमारे द्वारा आयोजित विभिन्न खेल श्रेणियों (तैराकी, जिम्नास्टिक, लाइट एथलेटिक्स, स्कीइंग, आदि) में 8,500 पाठ्यक्रमों में तीस लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया है। खेल, चिकित्सा और शारीरिक रूप से विकलांग लोगों के लिए विशेष पाठ्यक्रम हमारे अंतिम देशवासियों को भी स्थापित करने में सहायक हो रहे हैं। समुद्र में हमारे नौकायन अभियान हमेशा पूरी तरह से बुक हो जाते हैं, और कई आवेदनों को अस्वीकार करना पड़ा है। इस दिशा में भी, हम अपने कार्य का विस्तार करेंगे, और विशेष रूप से पिछले वर्ष की तुलना में अधिक व्यापक दायरे में यात्राएँ करेंगे। इस सर्दी के दौरान, इस लेखन के समय, जर्मनी के सबसे खूबसूरत शीतकालीन खेलों वाले ज़िलों में स्कीइंग के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं; इनमें 35,000 लोग भाग लेंगे। इन पाठ्यक्रमों के साथ 30,000 स्ट्रेंथ थ्रू जॉय स्कीइंग पोशाकें उपलब्ध हैं, जिनमें 35 मार्क्स पर स्ट्रैप, बूट और स्टॉक वाली स्की शामिल हैं। यह आँकड़ा भले ही ज़्यादा लगे, लेकिन पिछले साल सामान्य खुदरा व्यापार में 18,000 पोशाकें बिकी थीं। 42,000 स्ट्रेंथ थ्रू जॉय छुट्टियों पर आए पर्यटकों ने गार्मिश-पार्टेनकिर्चेन में ओलंपिक खेलों का उत्साहपूर्वक आनंद लिया, जिन्हें हमारी स्ट्रेंथ थ्रू जॉय ट्रेनों द्वारा आयोजन स्थल तक लाया गया था ।

अनगिनत जर्मनों के लिए इसका मतलब था एक लंबे समय से संजोए गए और अधूरे से लगने वाले सपने का पूरा होना; क्योंकि आज जर्मनी में खेल अब कुछ चुनिंदा लोगों या आर्थिक रूप से ज़्यादा भाग्यशाली लोगों द्वारा रिकॉर्ड तोड़ने का मामला नहीं रह गया है, बल्कि यह एक राष्ट्रीय शौक बन गया है। उपयुक्त अभ्यास मैदानों की पहले से ही कमी है, और स्ट्रेंथ थ्रू जॉय की ओर लोगों का आना-जाना लगा हुआ है।

खेल पाठ्यक्रमों को लगातार बनाए रखा जा रहा है। पिछले अनुभव के अनुसार, तीसरा वर्ष फिर से एक संतुलन प्रदर्शित करेगा जो साबित करेगा कि जर्मनी में केवल चैंपियनशिप खेल ही नहीं, बल्कि विशेष रूप से, शरीर के प्रशिक्षण को लोकप्रिय बनाया जा रहा है। हम तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक कि 50 और 60 वर्ष के लोग भी खेल या शारीरिक प्रशिक्षण को दैनिक आवश्यकता न मान लें।

स्कूली शिक्षा और जन-शिक्षा के लिए नवगठित "आनंद से शक्ति" विभाग ने अपना व्यावहारिक कार्य कुछ ही समय पहले शुरू किया है। लेकिन अपने अस्तित्व के कुछ ही महीनों में इसने हज़ारों लैंटर्न व्याख्यानों, लाखों पुस्तकों से युक्त पुस्तकालयों और हर तरह के भ्रमण और भ्रमण के माध्यम से जर्मन राष्ट्र की बहुमूल्य सेवा की है।

राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी के सत्ता में आने से पहले, लाखों जर्मन पुरुषों और महिलाओं ने कभी थिएटर को अंदर से नहीं देखा था। न केवल उन्हें थिएटर न जाना स्वाभाविक लगता था, बल्कि मार्क्सवादी प्रभाव के कारण, जिससे वे प्रभावित हुए थे, उनमें इतनी हीन भावना भी थी कि थिएटर जाना उनकी सामाजिक स्थिति के अनुरूप नहीं लगता था। यहाँ भी, एक बुनियादी बदलाव किया गया है। राष्ट्र की सांस्कृतिक संपत्ति अब केवल मालिक वर्गों का विशेषाधिकार नहीं रहेगी। एक यादृच्छिक रूप से चुना गया आंकड़ा, सांस्कृतिक नीति के दृष्टिकोण से, अकेले "ग्रेटर बर्लिन" में किए गए कार्य के अत्यंत महत्वपूर्ण महत्व पर एक प्रभावशाली प्रकाश डालता है: 1 दिसंबर, 1934 से 30 नवंबर, 1935 तक, "आनंद से शक्ति " बर्लिन के डेढ़ लाख से ज़्यादा मेहनतकश पुरुषों को थिएटर तक ले गई। यह आंकड़ा जितना प्रभावशाली है, हम इसकी वास्तविक कीमत का और भी अधिक एहसास तब करते हैं जब हम याद करते हैं कि यह उन पुरुषों और महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो या तो कभी, या लगभग कभी, थिएटर नहीं गए। इसलिए, ये लोग थिएटर के लिए अतिरिक्त संरक्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इससे पहले कभी थिएटर न जाने के उनके मुख्य कारण आर्थिक थे। 100 से 200 मार्क की मासिक आय वाला एक कर्मचारी या मज़दूर अपने और अपनी पत्नी के लिए थिएटर का सामान्य शुल्क वहन करने की स्थिति में नहीं था।

हमारे उदार उपायों के परिणामस्वरूप थिएटर और कॉन्सर्ट हॉल को आम जनता का समर्थन प्राप्त हुआ है—वह जनता जो इन संस्थानों को केवल सुनी-सुनाई बातों से जानती थी और इन्हें पूरी उदासीनता से देखती थी। यह एक ऐसा तथ्य है जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए, और इसका, निस्संदेह, उन निजी थिएटरों पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है जहाँ स्ट्रेंथ थ्रू जॉय का आगमन नहीं होता।

1934 की शुरुआत में सीमेंस वर्क्स में थिएटरों के दौरों से संबंधित हमारे द्वारा किए गए शोध ने इन अवलोकनों की पुष्टि की। एक या दो आँकड़े इसे आसानी से साबित करते हैं: जिन पुरुषों और महिलाओं से पूछा गया उनमें से 87.6% ने कभी ओपेरा नहीं देखा था; जिन पुरुषों और महिलाओं से पूछा गया उनमें से 63.8% ने कभी थिएटर नहीं देखा था। चूँकि ये प्रश्न सीमेंस कंपनी में कार्यरत सभी लोगों से पूछे गए थे, चाहे वे व्यक्ति या पद के हों या नहीं, निदेशक से लेकर सहायक कर्मचारी तक, इसलिए यह कहना उचित होगा कि वर्क्स के जिन कर्मचारियों ने पहले ही नाट्य या ओपेरा प्रस्तुतियाँ देखी थीं, वे आर्थिक रूप से बेहतर स्थिति वाले कर्मचारियों के समूह में पाए जाते थे।

विभिन्न कारखानों में हाल ही में किए गए अवलोकनों से यह सुखद परिणाम सामने आया है कि "स्ट्रेंथ थ्रू जॉय" द्वारा आयोजित गतिविधियों में शारीरिक श्रम करने वालों का विशेष रूप से अच्छा प्रतिनिधित्व है । सांस्कृतिक शिक्षा का एक कार्य किया जा रहा है, जिसके प्रभाव बाद में दिखाई देंगे।

अकेले बर्लिन में, सात थिएटर या तो विशेष रूप से या मुख्य रूप से "स्ट्रेंथ थ्रू जॉय" के लिए सेवाएं प्रदान करते हैं; हालाँकि पूरे रीच में दर्शकों की औसत संख्या उपलब्ध सीटों की संख्या के 60% से 70% के बीच है, फिर भी सौभाग्य से "स्ट्रेंथ थ्रू जॉय" के नाट्य मंचन हमेशा बहुत पहले ही बिक जाते हैं। इस गुणवत्ता के संरक्षण की बराबरी शायद ही कभी की जा सकती है।

जर्मन निजी थिएटर.

"मास्टर कॉन्सर्ट्स", जो एक साल पहले नए शुरू हुए थे, और "म्यूज़िकल आवर्स", जिनमें हम जाते हैं, भी काफ़ी लोकप्रिय हैं। हमारे बेहतरीन कॉन्सर्ट्स, जो सबसे प्रसिद्ध जर्मन कंडक्टरों द्वारा संचालित किए जाते हैं, आमतौर पर शुरू होने से बहुत पहले ही बिक जाते हैं। इन कॉन्सर्ट्स में भाग लेने वाले प्रसिद्ध ऑर्केस्ट्रा में बर्लिन फिलहारमोनिक ऑर्केस्ट्रा, बर्लिन क्षेत्र का स्थानीय ऑर्केस्ट्रा (दास लैंडेसोर्चेस्टर गौ बर्लिन) और जर्मन ओपेरा हाउस का ऑर्केस्ट्रा शामिल हैं। बीथोवेन की नौवीं सिम्फनी दो बार खचाखच भरी हुई दिखाई गई है।

संग्रहालयों में मज़दूर ने अब तक एक निश्चित रूप से बुर्जुआ संस्था देखी है, जहाँ वह सैद्धांतिक रूप से नहीं गया था। चूँकि हमारे लिए भी मज़दूर को संग्रहालय के अंदर लाना मुश्किल था, इसलिए हमने हज़ारों समारोह आयोजित किए। इसके अलावा, हम कलाकृतियों की प्रदर्शनियों के माध्यम से कला को कारखाने में लाए, जो पूरे रीच में बड़े पैमाने पर और उससे भी ज़्यादा सफलतापूर्वक आयोजित की गईं। इसके अलावा, जर्मनी के मज़दूरों के साथ संपर्क, कलाकार को समय के अनुरूप कलात्मक सृजन के लिए प्रबल प्रेरणा प्रदान करता है।

कुछ ही वर्षों में, हर बड़े कारखाने में एक स्थायी प्रदर्शनी की व्यवस्था हो जाएगी। हर साल लाखों जर्मन लोग जर्मन कलाकारों की कृतियों की सराहना कर सकेंगे। हमने जो किया है, वह यह है कि जर्मन कलाकार वहाँ पहुँच गया है जहाँ राष्ट्र की मेहनतकश जनता एक साथ आती है, यानी काम-काज के मैदान और कारखाने में; और अपनी मेहनत और कलात्मक ख़ज़ानों के लिए, जो वह मज़दूरों के लिए लाता है, कलाकार को उस उत्तेजना से भरपूर पुरस्कार मिलता है जो उसकी कलात्मक रचना को मज़दूरों और मशीन-कक्षों के संपर्क से मिलती है।

कुल मिलाकर, हमारे 66,000 ' आनंद के माध्यम से शक्ति' कार्यक्रमों में 25 मिलियन लोगों ने भाग लिया।
अपनी फिल्म वैन के साथ हम जर्मनी के जंगलों और बंजर भूमि में छिपे एकाकी गांवों और अजीब कोनों में गए हैं, ताकि वहां हमारे भाइयों को एक तरह से दिन भर के बोझ और थकान से एक जीवंत बदलाव और विश्राम मिल सके।

लेकिन हमारी गतिविधियाँ इससे भी आगे तक फैली हुई हैं। हज़ारों-हज़ारों फ़ैक्टरियों में, कई सालों में, गंदगी कोने-कोने में जम गई है, और किसी ने कभी कार्यस्थल को सुंदर बनाने के बारे में नहीं सोचा। लोग गंदे, बंद, उमस भरे कार्यस्थलों के इतने आदी हो गए थे कि उन्हें एक स्वाभाविक बात मान लिया गया था।

इसमें, नए साहस और ऊर्जा के साथ, ब्यूटी इन वर्क विभाग ने हाथ बँटाया। सभी कारखानों में एक ताज़ा हवा बही और खिड़कियों से धूल और गंदगी को साफ़ कर दिया और यार्डों और कारखानों के हर कोने से धूल हटा दी। ब्यूटी इन वर्क विभाग की प्रेरणा पर, काम को इंसानों के लिए उपयुक्त बनाने में प्रबंधकों ने, अक्सर खुद निर्माण कर्मचारियों की मदद से, 200 मिलियन मार्क से अधिक खर्च किए। जहाँ पहले पुराना कबाड़ और कूड़ा-कचरा पड़ा रहता था, आज वहाँ छोटे-छोटे बगीचे, हरे-भरे भूखंड, साफ-सुथरे कोर्ट, खेल के मैदान, उज्ज्वल हवादार कार्य-कक्ष, स्विमिंग पूल, शौचालय और वाशरूम हैं। पिछले दो वर्षों में ऐसे कार्यस्थल बनाए गए हैं जिन्हें देखकर खुशी होती है। अब तक लगभग 17,000 कारखानों का काम पूरा हो चुका है। अधिक या कम महत्व के असंख्य सुधारों के साथ 276 खेल मैदान और 93 स्विमिंग-बाथरूम।

यह काम जो आज कारखानों में "आनंद के माध्यम से शक्ति" द्वारा किया जा रहा है , जर्मन मज़दूर के घर पर स्वतः ही प्रतिक्रिया करता है।
क्योंकि जो व्यक्ति काम करने के लिए एक सुंदर और साफ़-सुथरी जगह का आदी है, वह केवल एक सुंदर और साफ़ घर में ही सहज महसूस करेगा।

कारखानों में कार्य समूहों का निर्माण बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। विचार वेल्डिंग का है।

कारखाने के अंदर एनएसडीएपी और उसके शाखा-संगठनों के सदस्यों को 18 से 25 वर्ष के बीच के सर्वश्रेष्ठ श्रमिकों के साथ एक ठोस, अटूट ब्लॉक में संगठित किया गया, ताकि संकट के समय में भी, "सेल" और "ब्लॉक" नेताओं के साथ मिलकर, समुदाय के विचार को जीवित रखा जा सके।

इसके अलावा, इन कार्य समूहों को कारखाने में नई रीति-रिवाजों का निर्माण करना चाहिए, तथा निरीक्षण और सामुदायिक संध्याओं जैसे कार्यों को प्रेरित करना चाहिए।

स्ट्रेंथ थ्रू जॉय के संगठन के संबंध में , निम्नलिखित आँकड़े दिए जा सकते हैं: नेशनल सोशलिस्ट कम्युनिटी स्ट्रेंथ थ्रू जॉय 32 क्षेत्रों, 771 जिलों और 15,051 स्थानीय समूहों में विभाजित है, जिनमें स्थानीय वार्डन भी उतने ही हैं। इनके अलावा, कारखाने के अंदर काम करने वाले वर्क्स वार्डन भी हैं, जिनकी कुल संख्या 57,000 है। ये सभी 75,000 सहयोगी स्ट्रेंथ थ्रू जॉय को अपनी सेवाएँ निःशुल्क देते हैं।

स्ट्रेंथ थ्रू जॉय में केवल 2,547 वेतनभोगी अधिकारी कार्यरत हैं।

यह विशाल उपक्रम, जिसे पहले दो वर्षों में जर्मन लेबर फ्रंट से आर्थिक सहायता की आवश्यकता थी, हमें आशा है कि इस वर्ष स्वतंत्र हो जाएगा। यह शायद सबसे उल्लेखनीय और सबसे दिलचस्प तथ्य है, खासकर जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि स्ट्रेंथ थ्रू जॉय द्वारा जुटाई और प्रचलन में लाई गई धनराशि दस लाख रीचमार्क से भी अधिक है, जबकि इतालवी डोपोलावोरो लगभग इस स्तर तक भी नहीं पहुँचा है, और अमेरिकी अवकाश-समय और शाम के संगठन को बहुत अधिक आर्थिक सहायता की आवश्यकता है; जबकि सभी मार्क्सवादी प्रयास, जो—चाहे पुराने जर्मनी में हों या बोल्शेविक रूस में या पश्चिम के औद्योगिक देशों में—हर जगह पूरी तरह विफल रहे हैं। राष्ट्रीय समाजवाद सही रास्ते पर है।

जर्मन शीतकालीन राहत कार्य

मैक्स हंगर द्वारा

टी शीतकालीन राहत कार्य, जिसका उद्घाटन राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी द्वारा किया गया था, तथा जिसे पूरे राष्ट्र ने उच्च भावना के साथ अपनाया, तीसरे रैह की एक मान्यता प्राप्त संस्था बन गई है तथा लाखों जरूरतमंद, कमजोर और बीमार पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के लिए एक आशीर्वाद बन गई है।

हालाँकि राज्य प्रत्यक्ष कार्रवाई के ज़रिए व्यापक पैमाने पर काम मुहैया कराकर बेरोज़गारी से निपटने और संकट से उबरने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है, फिर भी उसे काम करने के इच्छुक हर सक्षम पुरुष और महिला के लिए काम ढूँढ़ने का पर्याप्त समय नहीं मिला है, हालाँकि उसने दुनिया भर में फैली व्यापारिक कठिनाइयों के बावजूद तीन साल के भीतर बेरोज़गारों की संख्या 70 लाख से घटाकर 20 लाख से भी कम करने का लगभग अविश्वसनीय चमत्कार कर दिखाया है। लेकिन, हर परिवार की तरह, इसके दायरे में हमेशा गरीब लोग रहेंगे।

सामाजिक कानून और सार्वजनिक सहायता ने, और आगे भी, इस समस्या को कम करने के लिए बहुत कुछ किया है। लेकिन ये संस्थाएं अभाव को पूरी तरह से समाप्त नहीं कर सकतीं।

शीतकालीन राहत कार्य की स्थापना उन सभी लोगों की मदद के लिए की गई थी जिनकी जीविका का साधन सीमा रेखा के ठीक नीचे है। शीतकालीन राहत कार्य का उद्देश्य सार्वजनिक सहायता का स्थान लेना नहीं है, बल्कि उसका पूरक बनना है।

जब 30 जनवरी 1933 को राष्ट्रीय समाजवाद ने सत्ता संभाली तो उसने राज्य को डॉ. गोएबल्स ने इसका वर्णन इस प्रकार किया: "खंडहरों का मैदान", एक राजनीतिक अराजकता, खाली खजाने और हर पांचवां आदमी भत्ता पाने वाला।

लगभग निराशाजनक स्थिति पर काबू पाने के लिए दृढ़ हृदय और दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी, जिसे पूर्व सरकारों ने सुधारने की व्यर्थ कोशिश की थी। इन विकराल समस्याओं से निपटने का तरीका इतिहास का हिस्सा बन चुका है, लेकिन इसे साहसिक और रचनात्मक नेतृत्व के एक अद्भुत उदाहरण के रूप में हमेशा याद रखा जाएगा।

महान राष्ट्रीय समाजवादी कल्याण संघ का केंद्र 1932 के वसंत में ही बन चुका था, लेकिन इसकी वास्तविक गतिविधि तब तक शुरू नहीं हुई जब तक पार्टी सत्ता में नहीं आ गई। संघ का पहला आधिकारिक समारोह 6 मई, 1933 को हुआ, जब फ्यूहरर की उपस्थिति में, मुख्य आयुक्त हिल्गेनफेल्ड, जिन्हें संगठन का प्रमुख नियुक्त किया गया था, ने फ्यूहरर के आदेश को सार्वजनिक किया, जिसमें संघ को रीच के लिए पार्टी के भीतर एक आधिकारिक निकाय के रूप में अनुमोदित किया गया था, जिसे जन कल्याण और राहत से संबंधित सभी मामलों से निपटने के लिए अधिकृत किया गया था।

एसोसिएशन को पहली बार 20 अप्रैल को फ्यूहरर के जन्मदिन पर कार्रवाई के लिए बुलाया गया था, जब इसे बेरोजगारों को भोजन के पैकेट वितरित करने का काम सौंपा गया था, और 1 मई को, जब इसने बच्चों के लिए अवकाश निधि के लिए पहली बार सड़क पर धन एकत्र किया था।

उसी वर्ष गर्मियों में, एसोसिएशन को फ़्यूहरर द्वारा नियोजित शीतकालीन राहत कार्य के आयोजन हेतु कार्यकारी शक्तियाँ प्राप्त हुईं, और इसने तुरंत इस महान कार्य की संगठनात्मक तैयारियाँ शुरू कर दीं। 13 सितंबर को, फ़्यूहरर ने अभियान की शुरुआत करते हुए घोषणा की कि जर्मनी में किसी को भी सर्दियों के दौरान भूख या ठंड नहीं झेलनी चाहिए, और डॉ. गोएबल्स ने अपनी विदाई में कहा कि इस शीतकालीन राहत कार्य को पूरी निष्ठा से किया जाना चाहिए।

सबसे स्वच्छ और सबसे सभ्य तरीके, जिनकी कल्पना की जा सकती है, और गरीबों के प्रति सहानुभूति में, पूरे देश को हर महीने के पहले रविवार को "एक-व्यंजन स्टू" का आयोजन करना चाहिए और साधारण रात्रिभोज की लागत के अंतर को ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए देना चाहिए। शीतकालीन राहत कार्य शुरू करने की तारीख 1 अक्टूबर तय की गई, और 16 सितंबर को मुख्य आयुक्त हिल्गेनफेल्ड 36 सहायकों के एक दल के साथ रैहस्टाग की इमारत में अपने लिए निर्धारित कार्यालयों में गए।

11 दिसंबर, 1935 को दिए गए एक भाषण में, हिल्गेनफेल्ड ने उन कुछ कठिनाइयों का वर्णन किया जिनका सामना उन्हें सौंपे गए कार्य के आयोजन में करना पड़ा। शुरू से ही यह स्पष्ट था कि इस कार्य की सफलता संग्रह और वितरण के लिए कुशल तंत्र के निर्माण और पूरे राष्ट्र की सक्रिय भागीदारी पर निर्भर थी। इसलिए, उदासीन और उदासीन लोगों को नागरिकता की उच्चतर भावना और स्वार्थी लोगों को एक नए परोपकारिता की ओर प्रेरित करना आवश्यक था; प्रत्येक जर्मन को यह समझाना आवश्यक था कि सच्ची संगति आत्म-बलिदान और पारस्परिक सहायता पर आधारित होती है। शीतकालीन राहत कार्य की शुरुआत करते हुए, फ्यूहरर ने घोषणा की: "भूख और ठंड के विरुद्ध इस महान कार्य की शुरुआत इस आदर्श वाक्य के तहत की जानी चाहिए: सर्वहारा वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को हमने चकनाचूर कर दिया है। इसके स्थान पर हम जर्मन जनता की जीवंत राष्ट्रीय एकता स्थापित करेंगे।"

हिल्जेनफेल्ड ने शुरू से ही यह माना कि संगठन को प्रभावी होने के लिए, आवश्यकताओं के प्रति अपने आवेदन में लचीला होना चाहिए तथा वास्तविक अभाव की विभिन्न स्थितियों के अनुकूल होना चाहिए, जिन्हें दूर करने का इरादा है।

"किसी को भी भूख और ठंड नहीं सहनी पड़ेगी!" यह फ्यूहरर का अपने विश्वस्त अनुयायियों को दिया गया आदेश था।

यह कैसे किया जाना था? लगभग 1.7 करोड़ लोगों की देखभाल करनी थी: जर्मनी की पूरी आबादी का लगभग एक-तिहाई। सचमुच, यह एक कठिन काम था! हालाँकि, मुख्य आयुक्त हिल्गेनफेल्ड जानते थे कि सबसे पहले तो वे पार्टी के लगभग 30,000 स्थानीय वर्गों के समर्पित सहयोग पर भरोसा कर सकते थे, लेकिन वे यह भी जानते थे कि जब तक हर आकस्मिकता को ध्यान में रखते हुए सूक्ष्म योजनाएँ पहले से तैयार नहीं कर ली जातीं, तब तक वे संतोषजनक ढंग से काम नहीं कर सकते।

इसी कारण उन्होंने वित्त, उद्योग और परिवहन के विशेषज्ञों, और आलू, आटा और कोयला व्यापार के विशेषज्ञों की मदद ली; उन्होंने चर्च मिशन, जर्मन रेड क्रॉस, तकनीकी आपातकालीन कोर से लेकर "एडवेंटिस्ट" नामक उत्साही कार्यकर्ताओं के एक छोटे समूह तक, मौजूदा धर्मार्थ संस्थाओं का भी उपयोग किया। यह जन सहायता कार्य में प्रशिक्षित और अनुभवी सभी ताकतों और पार्टी और सामाजिक प्रतिष्ठा की परवाह किए बिना, मानद कार्यकर्ताओं के रूप में मदद करने के लिए तैयार और इच्छुक लोगों का एक सामान्य जुटान था।

देश भर में पार्टी की हर स्थानीय शाखा ने पूरक सहायता की ज़रूरत वाले सभी लोगों के नाम एकत्र किए और उन्हें अपने पास रखा। जैसे-जैसे काम बढ़ता गया, राष्ट्रीय समाजवादी कल्याण संघ का एक विशेष खंड हर स्थानीय शाखा से संबद्ध होता गया जहाँ सभी वर्गों के पुरुष और महिलाएँ एक ही उद्देश्य के लिए एकमत होकर काम करते थे।

राहत कार्य के आयोजन में विभिन्न क्षेत्रों की विशेष आवश्यकताओं का अध्ययन करना तथा उनकी पूर्ति करना आवश्यक था। चूँकि विभिन्न ज़िलों में जीवन-शैली अलग-अलग थी, यहाँ तक कि खाद्यान्न की स्थिति भी अलग-अलग थी, और चूँकि संकटग्रस्त क्षेत्र मुख्यतः घनी आबादी वाले औद्योगिक केंद्रों से सटे हुए थे, इसलिए एसोसिएशन को इन सभी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यवस्था करनी पड़ी। इन कठिनाइयों को एक ठोस उदाहरण से सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है: उदाहरण के लिए, राइन-वेस्टफेलियाई प्रांत के लोग पीले आलू खाने के आदी हैं; यही बात एस्सेन और हैम्बर्ग पर भी लागू होती है; परिणामस्वरूप, सभी सफेद और लाल आलू जर्मनी के अन्य हिस्सों, खासकर बाडेन, में भेजे जाने लगे जहाँ उनकी मांग थी।

आबादी की असमान स्थानीय आवश्यकताओं के कारण आलू के संग्रह और वितरण ने संगठन के संसाधनों पर असाधारण दबाव डाला। उदाहरण के लिए, बवेरिया, जो आलू के मामले में आत्मनिर्भर है, को शायद ही कोई आपूर्ति की गई, जबकि एसेन जिले के लिए 1.45 मिलियन क्यूबिक मीटर की अतिरिक्त मात्रा की आवश्यकता थी और सैक्सोनी के लिए 0.92 मिलियन क्यूबिक मीटर की आवश्यकता थी। अतिरिक्त आपूर्ति की आवश्यकता वाले अन्य शहरों और जिलों में बर्लिन, मध्य जर्मनी, राइन-वेस्टफेलियन औद्योगिक क्षेत्र, बाडेन और वुर्टेमबर्ग के कुछ हिस्से शामिल थे। 1933/34 के अभियान के दौरान लगभग 60,000 रेलवे ट्रक आलू एकत्र किए गए और वितरित किए गए। इस मात्रा में से अकेले बर्लिन को प्रतिदिन 700-800 ट्रक आलू प्राप्त हुए। वितरित किया जाने वाला मासिक आलू राशन पूरी आबादी के प्रति व्यक्ति लगभग 30 पाउंड के बराबर था। लेकिन, चूँकि केवल एक-तिहाई आबादी को ही अतिरिक्त राहत मिल रही थी, इसलिए वास्तव में सहायता प्राप्त लोगों को प्रति व्यक्ति लगभग 100 पाउंड प्रति माह राशन दिया जा रहा था। ईंधन की ज़रूरतों और वितरण के मामले में भी यही स्थिति थी।

कुछ ज़िलों में मुख्यतः लकड़ी जलाई जाती है, तो कुछ में टर्फ, कोयला या लिग्नाइट ब्रिकेट। स्वाभाविक रूप से, चूल्हे और भट्टियाँ इस्तेमाल किए जाने वाले ईंधन के लिए विशेष रूप से अनुकूलित होती हैं। इसलिए, यह ध्यान रखना ज़रूरी था कि हर इलाके में पर्याप्त मात्रा में आवश्यक ईंधन उपलब्ध हो। प्रत्येक घर के लिए अनुमत ईंधन की मात्रा की गणना इस प्रकार की जाती थी कि वह पूरी सर्दी में एक कमरे को गर्म करने के लिए पर्याप्त हो। जिन परिवारों में तीन या चार बच्चे थे, उन्हें पूरी सर्दी में दो कमरे गर्म करने के लिए पर्याप्त कोयला आवंटित किया जाता था।

1933/34 में आवश्यक सभी ईंधन के परिवहन के लिए लगभग 1,40,000 रेलवे ट्रकों की आवश्यकता थी, जिनमें कोयले की मात्रा जर्मनी में उपयोग किए जाने वाले कुल ईंधन की मात्रा का लगभग 16% थी। सर्दियों के दौरान दो बच्चों वाले एक परिवार को आपूर्ति किए गए कोयले की मात्रा लगभग 9 क्यूबिक मीटर प्रति टन थी, जबकि खनन क्षेत्रों में, जहाँ कोयला अधिक मात्रा में जलाया जाता है, प्रत्येक घर को इसी अवधि के दौरान लगभग 22 क्यूबिक मीटर प्रति टन कोयला प्राप्त हुआ।

कोयले का वितरण स्थानीय कोयला विक्रेताओं द्वारा किया जाता है। राहत पाने के हकदार व्यक्तियों को एक-एक क्यूबिक टन कोयले की आपूर्ति के लिए वारंट दिए जाते हैं। ये वारंट कोयला विक्रेता को सौंप दिए जाते हैं, जो ढुलाई के लिए एक छोटा सा शुल्क देकर कोयला वितरित करता है। जो प्राप्तकर्ता भुगतान करने में असमर्थ हैं, उन्हें कोयला निःशुल्क प्रदान किया जाता है।

यदि यह स्पष्ट किया जाए कि शीतकालीन राहत कार्य के लिए आवश्यक कोयला प्राप्त करने में सार बेसिन के खनिकों को तीन महीने का समय लगेगा, तो इससे कोयला आपूर्ति की मात्रा का बेहतर अंदाजा लगाया जा सकेगा।

शीतकालीन राहत में जूते और कपड़ों की आपूर्ति भी शामिल है। इसके लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री की लंबाई
कपड़ों की कुल लंबाई लगभग 5,000 मील होगी।

आलू के अलावा, अन्य खाद्य पदार्थ भी वितरित किए जाते हैं: चावल, आटा, कोको, दूध, वसा, मांस, मछली और अन्य खाद्य पदार्थ। मुफ़्त भोजन भी उपलब्ध कराया जाता है, और क्रिसमस के समय बच्चों के लिए क्रिसमस ट्री भी उपलब्ध कराए जाते हैं। 1933/34 में, अकेले बर्लिन में 3,00,000 क्रिसमस ट्री वितरित किए गए थे।

इन सभी विशाल आपूर्तियों की खरीद के लिए आवश्यक दानों को इकट्ठा करने के लिए, विभिन्न तरीके अपनाए गए हैं: सड़क पर संग्रह जिसमें उच्चतम राज्य पदाधिकारी भी संग्रहकर्ता के रूप में भाग लेते हैं, लाभ प्रदर्शन, सामाजिक समारोह, सड़क लॉटरी, मासिक "एक-व्यंजन-स्टू" संग्रह, भोजन के पाउंड पार्सल का उपहार, सार्वजनिक सदस्यता, आय पर विशेष शुल्क, निजी संग्रह, बैज की सड़क बिक्री, आदि।

संगठन की संपूर्णता का सबसे अच्छा उदाहरण वह तरीका है जिसमें "एक-व्यंजन-
स्टू" संग्रह बर्लिन में किया जाता है।

बर्लिन शहर में लगभग 1,25,000 घर हैं; प्रत्येक घर के निवासियों की एक सूची तैयार की जाती है, और प्रत्येक घर में प्रत्येक परिवार या स्वतंत्र किरायेदार को बुलाया जाता है और धनराशि एकत्र की जाती है। दानकर्ता अपनी क्षमता के अनुसार सूची में अपना योगदान दर्ज करता है, जो कुछ ही घंटों में एकत्रित राशि के साथ स्थानीय शाखा को वापस कर दिया जाता है। अकेले बर्लिन में ही शीतकालीन राहत कार्य में औसतन 1,40,000 स्वयंसेवी सहायक कार्यरत हैं।

यह भी उल्लेखनीय है कि विशेष अवसरों पर सड़कों पर बिकने वाले बैज और उपहारों के निर्माण से संकटग्रस्त औद्योगिक क्षेत्रों में कई बेरोजगारों को काम और रोटी मिलती थी। उदाहरण के लिए, 1933/34 की सर्दियों में, बवेरियन फ़ॉरेस्ट, थुरिंगिया और सैक्सोनी के निर्माताओं को 40 लाख मार्क के ऑर्डर दिए गए थे, और यहाँ तक कि पूर्वी प्रशिया के एम्बर उद्योग को भी नहीं भुलाया गया था। 1934/35 में इन ऑर्डरों का मूल्य बढ़ाकर 50 लाख मार्क कर दिया गया।

यह राहत सभी पात्र व्यक्तियों को दी जाती है, चाहे उनकी जाति या राष्ट्रीयता कुछ भी हो।

उदाहरण के लिए, 1933/34 में 69,336 विदेशियों की सहायता की गई, जिनमें से 29,108 यहूदी थे। अकेले बर्लिन में ही शीतकालीन राहत कार्य द्वारा 13,818 यहूदियों और 8,054 विदेशियों की देखभाल की जा रही थी। शीतकालीन राहत कार्य के लिए एकत्रित कुल धनराशि और उसका मूल्य इस प्रकार था:

in	1933/34	Mks.	357,136,040.71
in	1934/35		367,425,484.89
in	1935/36		370,000,000.00

सहायता प्राप्त व्यक्तियों की संख्या इस प्रकार थी:

in	1933/34	16,617,681
in	1934/35	13,866,571
in	1935/36	12,923,247

शीतकालीन राहत कार्य में किसानों द्वारा दी गई अद्वितीय सहायता का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए। कुछ आँकड़े इसे स्पष्ट कर सकते हैं: उदाहरण के लिए, 1933/34 में, पोमेरेनिया ने 841,477 क्यूबिक टन आलू की आपूर्ति की।

in Kurmark	1,600,000 cwt.
in Saxony	447,000 cwt.

शीतकालीन राहत कार्य के लिए सभी सामान राज्य रेलवे द्वारा निःशुल्क ले जाया गया।
1933/34 के अभियान में इस संबंध में राज्य रेलवे का योगदान 14,672,957 एमकेएस था, जबकि परिवहन का कुल वजन 59,025,995 सीडब्ल्यूटी था।

शीतकालीन राहत कार्य में लगे मानद सहायकों की संख्या प्रति वर्ष औसतन 1.5 मिलियन तक पहुंच गई, जबकि इस संगठन के प्रशासन में निम्नलिखित संख्या में अधिकारी, क्लर्क आदि कार्यरत थे:

in	1933/34	4,116
in	1934/35	5,398
in	1935/36	about the same number

प्रशासन की सम्पूर्ण लागत कुल प्राप्तियों के 1% से भी कम है।

फ्यूहरर और रीचस्कैन्ज़लर एडॉल्फ हिटलर ने गत 27 मई को मुख्य आयुक्त हिल्गेनफेल्ड से उनके प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ मुलाकात की और संगठन द्वारा किए गए कार्यों के लिए अपनी उच्च प्रशंसा व्यक्त की, और जब उन्होंने यह कहकर समापन किया कि "शीतकालीन राहत कार्य सामाजिक कार्य का एक अद्वितीय ऐतिहासिक कार्य है", तो उन्होंने पारस्परिक सद्भावना और व्यक्तिगत बलिदान के इस महान राष्ट्रीय प्रयास के संबंध में प्रत्येक सच्चे जर्मन की भावना को व्यक्त किया।